चंगीज़ ऐतमातीव
अलविदा, गुलसारी!
ЧЫҢГЫЗ АЙТМАТОВ
гүлсарат

चंगीज़ ऐतमातोव

अलविदा, गुलसारी!

ЧЫҢГЫЗ АЙТМАТОВ

гүлсарат

प्रथम संस्करण, दिसंबर, 2021

अनुवादक : सुधीर कुमार माथुर
डिज़ाइन : मरतीनोव द.

प्रकाशक की ओर से

यह प्रकाशन 'अलविदा, गुलसारी', चंगीज़ ऐतमातोव,
प्रगति प्रकाशन, ताशक़न्द, 1981 द्वारा
प्रकाशित पुस्तक का पुनर्मुद्रण है।
साभार : प्रगति प्रकाशन, ताशक़न्द

ISBN:978-81-85242-95-8

मूल्य: रूपये 220/-

प्रकाशक:
बलराम शर्मा
कामगार प्रकाशन
बी-4838, गली नम्बर-112, संतनगर, बुराड़ी,
दिल्ली-110084, मो. 9212504960

बेबसाइट - www.kamgarprakashan.com
फेसबुक - कामगार प्रकाशन
ई-मेल - kamgarprakashan@gmail.com

मुद्रक:
Comservices, A-73, Group Industrial Area,
Wazirpur, Delhi-110052

एक

एक पुरानी घोड़ागाड़ी में एक बूढ़ा आदमी जा रहा था। कुम्मैत रंग का क़दमबाज़ घोड़ा गुलसारी भी बूढ़ा था, बहुत बूढ़ा...

पठार तक जानेवाला घुमावदार रास्ता बहुत लम्बा और थका देनेवाला था। जाड़े में उजाड़, धूसर पहाड़ियों में सदा बवण्डर आता रहता था और गर्मियों में यहाँ भट्टी की तरह तपता था।

तानाबाय को यह चढ़ाई हमेशा किसी कड़ी सज़ा-सी लगती थी। उसे धीमी चाल से नफ़रत थी, वह उसे बिलकुल असह्य थी। अपनी युवावस्था में, जब उसे अकसर ज़िला-केंद्र जाना पड़ता था, वह वापसी में घोड़े को चढ़ाई पर हमेशा सरपट दौड़ाता ले जाता था। वह उसे चाबुक मारता जाता और उस पर ज़रा भी रहम नहीं खाता। यदि वह किसी के साथ चौपहिया लम्बी गाड़ी, ख़ास तौर से बैलगाड़ी में जा रहा होता, तो चुपचाप अपना कोट उठा चलती गाड़ी से कूद पड़ता और पैदल चलने लगता। इतने ग़ुस्से में चलता, मानो हमला बोल रहा हो और पठार पर चढ़कर ही रुकता। वहाँ हांफ़ता हुआ नीचे से रेंगती आती हुई गाड़ी की प्रतीक्षा करता। तेज़ चाल के कारण उसका दिल ज़ोरों से धड़कने लगता और सीने में टीस-सी उठती। कुछ भी हो, लेकिन यह रेंगती हुई बैलगाड़ी में चलने से तो बेहतर ही था।

स्वर्गीय चोरो अकसर अपने मित्र के सनकीपन का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहता था,

"तानाबाय, तुम्हें मालूम है, तुम इतने बदनसीब क्यों हो? अपनी अधीरता के कारण। ख़ुदा की क़सम तुम्हें हर चीज़ अभी और इसी वक़्त चाहिए। विश्वक्रान्ति भी तुम्हें इसी वक़्त चाहिए! क्रान्ति ही क्या, तुम

में तो यह सीधा-सादा रास्ता, अलेक्सांद्रोवका की चढ़ाई तक गाड़ी में पार करने का धैर्य नहीं है। और लोग आराम से गाड़ी में चलते हैं, लेकिन तुम कूद गये और लगे सिर पर पाँव रखकर पहाड़ी के शिखर की ओर भागने। मानो भेड़िये तुम्हारा पीछा कर रहे हों। फिर तुम्हें इससे मिलता क्या है? कुछ नहीं। हर हालत में तुम्हें ऊपर बैठकर दूसरों का इन्तज़ार करना होता है। विश्वक्रान्ति में भी तुम अकेले नहीं कूद सकते, यह समझ लो, तुम्हें दूसरों के उस स्तर तक पहुँचने का इन्तज़ार करना पड़ेगा।"

लेकिन यह पुरानी, बहुत पुरानी बात है।

इस बार तानाबाय को पता ही नहीं चला कि उसने अलेक्सांद्रोवका की चढ़ाई कब पार की। लगता है वह बुढ़ापे का आदी हो चुका है। गाड़ी न वह तेज़ हांक रहा था, न धीरे। जिस रफ़्तार से घोड़ा चल रहा था, चलने दिया। अब वह सदा अकेला ही सफ़र पर रवाना होता है। किसी ज़माने में जो लोग झुण्ड बनाये इस कोलाहलपूर्ण रास्ते पर उसके साथ चला करते थे, वे अब ढूंढ़े नहीं मिलते। कुछ युद्ध में खेत रहे, कुछ मर गये, कुछ घर में बैठे अपनी उम्र के बचे-खुचे दिन गिन रहे हैं। और नौजवान लोग मोटरगाड़ियों में घूमते हैं। वे अब इस मरियल घोड़े को जोतकर उसके साथ थोड़े ही चलेंगे।

पहिये पुरानी सड़क पर चरमर करते घूम रहे थे। उन्हें अभी काफ़ी देर तक चरमराना है। आगे स्तेपी फैली पड़ी थी और इससे पहले नहर तथा तराई का रास्ता पार करना था।

वह काफ़ी पहले से महसूस कर रहा था कि उसका घोड़ा जवाब देता सा लग रहा है और कमज़ोर होता जा रहा है। लेकिन अपने विषादपूर्ण विचारों में खोये रहने से उसने इसकी अधिक चिन्ता नहीं की। भला घोड़े का रास्ते में थकना कोई बहुत बड़ी मुसीबत है? इससे बदतर भी हो चुका है। किसी तरह घर पहुँचा ही देगा...

फिर वह जान भी कैसे सकता था कि उसके बूढ़े क़दमबाज़ गुलसारी* ने, जिसका यह नाम उसके अनूठे चटकीले कुम्मैत रंग के कारण पड़ा, अपने जीवन में अन्तिम बार अलेक्सांद्रोवका की चढ़ाई पार की है और अब

* गुलसारी—एक प्रकार का पीला फूल।

उसे बस कुछेक अन्तिम किलोमीटर जाना है? वह कैसे जान सकता था कि उसके घोड़े का सिर ऐसे चकरा रहा है जैसे वह नशे में हो, कि उसकी धुंधली आँखों को धरती रंग-बिरंगे गोलों की तरह घूमती, डगमगाती, कभी एक किनारे से, तो कभी दूसरे से आकाश से टकराती नज़र आ रही है, कि समय-समय पर गुलसारी को अपने आगे का रास्ता अचानक अंधकार में डूबे शून्य-सा लग रहा है, और आगे जहाँ उसे जाना है और जहाँ पहाड़ियाँ होनी चाहिए थीं, वहाँ उसे लाल-से रंग का कोहरा या धुआँ छाया दिखाई दे रहा है?

घोड़े के थके-हारे बूढ़े दिल में निरन्तर टीस उठ रही थी। जूए के कारण उसका साँस लेना दूभर होता जा रहा था। उसकी जोत सरककर पुट्ठों से रगड़ खा रही थी, जूए के नीचे बायीं ओर कोई नुकीली चीज़ चुभ रही थी। मालूम नहीं यह कोई कांटा था या जूए के नीचे लगे नमदे को भेदकर निकली किसी कील की नोक। उसके घट्टे पड़े हुए कंधे पर एक पुराने घाव में, जो अब दोबारा खुल गया था, असह्य जलन हो रही थी और खुजली चल रही थी। और उसके पैर निरन्तर वज़नी होते जा रहे थे, मानो वह किसी जुते हुए गीले खेत में चल रहा हो। किन्तु बूढ़ा घोड़ा किसी तरह अपने पर क़ाबू किये आगे बढ़ता ही जा रहा था, और अपने ख़यालों में खोया वृद्ध तानाबाय उसे टिटकारते हुए बीच-बीच में लगाम को झटके मारता जा रहा था। उसके पास सोचने को बहुत कुछ था।

पहिये पुरानी सड़क पर चरमराते घूम रहे थे। अब तक गुलसारी अपनी आदतन क़दमचाल, अपनी उसी ख़ास लयबद्ध दुलकी चाल से चल रहा था, जिसका वह तब से आदी हो गया था जब पहली बार खड़ा होकर घास-स्थली में अपनी माँ के पीछे लड़खड़ाता हुआ भागा था।

गुलसारी जन्मजात क़दमबाज़ था और अपनी प्रसिद्ध क़दमचाल के कारण उसे अपने जीवन में अनेक अच्छे और बुरे दिन देखने पड़े थे। एक ज़माना था, जब उसे गाड़ी में जोतने का विचार तक किसी के दिमाग़ में नहीं आता था, ऐसा करना पाप होता। लेकिन किसी ने ठीक ही कहा है—जब घोड़े के बुरे दिन आते हैं, तो वह लगाम लगाये-लगाये ही पानी पीता है और जब आदमी के बुरे दिन आते हैं, तो वह जूते पहने-पहने ही नदी पार करता है।

यह सब बीती बातें हैं, अब तो केवल यादें रह गयीं। अब क़दमबाज़ अपनी बची-खुची ताक़त बटोरकर अपने अन्तिम लक्ष्य की ओर बढ़ रहा था। वह कभी अपने लक्ष्य की ओर इतनी धीमी गति से नहीं बढ़ा था और लक्ष्य कभी उसके निकट इतनी तीव्र गति से नहीं पहुँचा था। लक्ष्य की सीमा-रेखा उससे सदा एक क़दम आगे रहती थी।

पहिये पुरानी सड़क पर चरमराते घूम रहे थे।

अपने सुमों तले की ज़मीन की अस्थिरता ने घोड़े की धुंधली पड़ी स्मृति में उन पुराने बीते गरमी के दिनों, पहाड़ों की नरम और नम घास-स्थली, उस अद्भुत और आश्चर्यजनक दुनिया की यादें जगा दीं, जिसमें सूरज हिनहिनाता और पहाड़ों पर कुलांचें मारता था, और वह मूर्खों की तरह घास-स्थली, नदी, झाड़ियाँ पार करता, तब तक उसके पीछे भागता रहता था, जब तक झुण्ड का सांड़ ग़ुस्से में अपनी कनौतियाँ खड़े किये उसका पीछा करके उसे लौटने को मजबूर न कर देता था। उन बीते पुराने दिनों में उसे ऐसा लगता था कि घोड़ों के झुण्ड झील में अपने प्रतिबिम्ब के समान सिर नीचे और टाँगें ऊपर किये चलते थे, और उसकी माँ झबरी अयालवाली बड़ी घोड़ी – उष्णिल दूधिया बादल में परिवर्तित हो जाती थी। उसे वे क्षण अच्छे लगते थे, जब उसकी माँ एकाएक वात्सल्यमय फूत्कार करते बादल में बदल जाती। उसके थन तन जाते और मधुर हो उठते, उसके मुंह में दूध झगियाने लगता, दूध की प्रचुरता और माधुर्य के कारण उसका दम घुटने लगता। उसे अपनी झबरी अयालवाली मां के पेट से मुंह सटाकर इस तरह खड़ा रहना बहुत अच्छा लगता। कितना स्वादिष्ट और मादक था वह दूध! उस दूध के एक घूंट में सारी दुनिया – सूरज, धरती, माँ – समा जाती थी। और पेट भर जाने के बावजूद भी उसका एक घूंट और पिया जा सकता था, फिर दूसरा भी, तीसरा भी...

लेकिन अफ़सोस, वे दिन जल्दी बीत गये, बहुत जल्दी। फिर सब बदल गया। सूरज ने आसमान में हिनहिनाना और पहाड़ियों पर कुलांचें मारना बन्द कर दिया, वह धुर पूर्व में उदय होता और निरन्तर पश्चिम की ओर बढ़ता, घोड़ों के झुण्डों ने सिर नीचा, टांगें ऊपर किये चलना बन्द कर दिया, रौंदी हुई घास-स्थली उनके सुमों तले फच-फच करने लगी, काली पड़ने लगी और छिछले पानी के पत्थर खटखट की आवाज़ के साथ

टूटने लगे। झबरी अयालवाली बड़ी घोड़ी बड़ी कठोर मां साबित हुई। जब कभी वह उसे ज्यादा परेशान करता, वह उसके कंधे पर ज़ोर से काट लेती। दूध अब कम होने लगा। उसे घास खानी पड़ने लगी। वह जीवन शुरू हो गया, जो वर्षों चलता रहा और जिसका अन्त अब समीप आता जा रहा था।

क़दमबाज़ की अपनी लम्बी ज़िन्दगी में गर्मियों के वे सदा के लिए बीते दिन फिर कभी नहीं लौटे। उसने ज़ीन कसे हुए न जाने कितने रास्ते पार किये, न जाने कितने घुड़सवारों ने उस पर सवारी की, लेकिन रास्तों का कोई अन्त ही नहीं दिखाई देता था। केवल अब जब सूरज फिर अपने स्थान से हटा, उसके पैरों तले धरती डोलने लगी, उसकी आंखें चौंधियाने लगीं, धुंधली पड़ने लगीं, तब उसे फिर ऐसा लगा जैसे हमेशा के लिए बीते गर्मियों के वे दिन लौटने लगे हैं। अब उसे वे पहाड़ियां, वह नम घास-स्थली, वे घोड़ों के झुण्ड, झबरी अयालवाली वह बड़ी घोड़ी अपनी आंखों के आगे किसी अजीब-से धुंधलके में लिपटे झिलमिलाते दिखाई देने लगे। वह अचानक पुन: दिखाई देनेवाले अपने बीते युग में पहुँचने के लिए निराशोन्मत्त हो पूरी शक्ति लगाकर जूआ और गाड़ी के बम से मुक्त होने की कोशिश करने लगा। लेकिन वह मृग-तृष्णा हर बार आगे सरक जाती और यह बड़ा दुःखदायी लगता। उसकी माँ उसको उसी तरह धीरे से हिनहिनाकर बुलाती, जैसे उसके बचपन में बुलाया करती थी, घोड़ों के झुण्ड भी वैसे ही अपने पुट्ठों से उसे धक्का देते, पूंछों से फटकारते निकल जाते, लेकिन उसमें हिमझंझावात का झिलमिलाता कोहरा पार करने की शक्ति नहीं रह गयी थी। हिमझंझावात का वेग निरन्तर बढ़ता जा रहा था और हवा उसे कड़ी पूँछों की मार जैसी लग रही थी, उसकी आँखों और नथुनों में हिमकण भरते जा रहे थे। उसे गरम-गरम पसीना आने पर भी कंपकंपी छूट रही थी और वह अगम्य संसार हिमझंझावात के बगूलों में निःशब्द खोकर लुप्त होता जा रहा था। पहाड़, घास-स्थली, नदी सब लुप्त हो चुके थे, घोड़ों के झुण्ड दूर भाग चुके थे, केवल उसकी माँ – झबरी अयालवाली बड़ी घोड़ी की धुंधली-सी छाया उसके आगे-आगे चलती दिखाई दे रही थी। वह उसे छोड़कर नहीं जाना चाहती थी। वह उसे बुला रही थी। वह रोते हुए पूरे ज़ोर से हिनहिनाया, किन्तु उसे अपनी आवाज़ सुनाई नहीं दी। सब आँखों से ओझल हो गया, हिमझंझावात भी

विलीन हो गया। पहियों का चरमराना बन्द हो गया। जूए के नीचे लगे छोटे से घाव में भी टीस उठनी बन्द हो गयी।

क़दमबाज़ रुक गया। वह लड़खड़ा रहा था। उस के लिए देखना भी दूभर हो रहा था। उसके सिर में लगातार अजीब-सा शोर हो रहा था।

तानाबाय लगाम अगाड़ी पटककर भोंडे ढंग से नीचे उतरा और अपने सोये हुए पैर सीधे कर भौंहें चढ़ाये घोड़े के पास आया।

"वाह रे नालायक़!" उसने कदमबाज़ की ओर देखते हुए धीरे से गाली दी।

घोड़ा जूए में से अपनी दुबली-पतली लम्बी गर्दन से जुड़ा बड़ा-सा सिर लटकाये खड़ा रहा। हर साँस के साथ क़दमबाज़ की निकली हुई पसलियाँ और दुबले व सूखे पहलू उभर और धंस रहे थे। उसका सुनहला पीला रंग अब पसीने और गन्दगी के कारण मटमैला हो चला था। उस के हड़ीले पुट्ठों से धूसर-सा पसीना साबुन सदृश धारें बनाता हुआ उसके पेट, पैरों और सुमों की ओर बह रहा था।

"मैंने इतने ज़ोर से तो हाँका नहीं था," तानाबाय घोड़े को संभाल करते हुए बड़बड़ाया। उसने घोड़े की तंग ढीली की, गल-छड़ और लगाम खोल दी। लगाम का दहाना गरम-गरम चिपचिपे थूक में सना था। उसने अपने कोट की बाँह से क़दमबाज़ का मुँह और गर्दन पोंछे। फिर वह बची खुची घास इकट्ठी करने गाड़ी की ओर लपका। आधी अंकवार-भर घास लाकर उसने घोड़े के आगे डाल दी। लेकिन घोड़े ने चारे को मुँह भी नहीं लगाया, उसे कंपकंपी छूट रही थी।

तानाबाय थोड़ी-सी घास उठाकर उसके मुँह के पास लाया।

"ले खा ले, तुझे क्या हुआ है?"

क़दमबाज़ के होंठ थोड़े हिले, किन्तु वे घास पकड़ने में असमर्थ रहे। तानाबाय ने उसकी आँखों में झाँका और उदास हो उठा। घोड़े की भीतर धंसी हुई और पलकों की झुर्रियों से अधढकी आँखों में उसे कुछ नहीं दिखा। उनकी चमक जा चुकी थी और वे किसी उजाड़ घर की खिड़कियों की तरह ख़ाली दिख रही थीं।

तानाबाय ने किंकर्तव्य-विमूढ़ हो चारों ओर नज़र डाली। आगे बहुत दूर पहाड़ थे, इर्द-गिर्द खुली स्तेपी थी और रास्ता बिल्कुल सुनसान था। ऐसे मौसम में इस रास्ते से मुश्किल से ही कोई गुज़रता था।

बूढ़ा घोड़ा और बूढ़ा आदमी सुनसान रास्ते में अकेले खड़े थे।

फ़रवरी के अन्तिम दिन थे। मैदानों की बर्फ़ पिघल चुकी थी, केवल खड्डों और सरकंडों से भरे सूखे नालों में सर्दियों की छुपी हुई गुहाओं में ही अन्तिम हिमराशि के भेड़िये की रीढ़ जैसे अवशेष बचे थे। हवा में पुरानी बर्फ़ की हल्की गंध तैर रही थी, धूसर रंग की ज़मीन अभी तक जमी हुई और बेजान थी। जाड़े के अन्त में पथरीली स्तेपी उजाड़ और निरानन्द हो जाती है। तानाबाय उसे देखते ही सिहर उठा।

अपनी अस्त-व्यस्त धूसर दाढ़ी ऊपर किये वह अपने जीर्ण-शीर्ण कोट की आस्तीन की ओट से देर तक पश्चिम की ओर देखता रहा। सूरज धरती के छोर पर बादलों के मध्य टंगा हुआ था। क्षितिज पर निष्प्रभ, धूमिल सूर्यास्त शुरू हो चुका था। मौसम बिगड़ने के आसार न थे, फिर भी वातावरण अवसादपूर्ण और भयावह था।

"मुझे मालूम होता, तो मैं घर से निकलता ही नहीं," तानाबाय दुःखी होकर सोचने लगा। "अब मैं न इधर का रहा, न उधर का, बीच में ही अटका रह गया। और घोड़े की जान भी बेकार में ले रहा हूँ।"

हाँ, वास्तव में उसे कल तक इन्तज़ार करके सुबह ही रवाना होना चाहिए था। दिन में अगर रास्ते में कुछ हो जाए, तो कम-से-कम किसी न किसी के मिलने की आशा तो रहती है। और वह रवाना हुआ दोपहर बाद। भला ऐसे मौसम में ऐसा करना चाहिए था?

तानाबाय यह देखने के लिए टेकरी पर चढ़ गया कि कोई मोटर तो वहाँ से नहीं गुज़र रही है। लेकिन दोनों दिशाओं से न कोई मोटर आती दिखाई दी, न उसकी आवाज़ सुनाई दी। वह फिर धीरे-धीरे अपनी गाड़ी के पास उतर आया।

"मैं बेकार ही रवाना हुआ," तानाबाय ने सोचा और न जाने कौन-सी बार अपनी जल्दबाज़ी की पुरानी आदत के लिए अपने को कोसा। वह खीज रहा था और उसे अपने आप पर और अपने बेटे का घर जल्दी छोड़ने के लिए मजबूर करनेवाले हर कारण पर क्रोध आ रहा था। निस्सन्देह उसे रात वहीं गुज़ारनी चाहिए थी और घोड़े को भी सुस्ता लेने देना चाहिए था। लेकिन उसने क्या किया?..

तानाबाय ने गुस्से में हाथ झटका। "नहीं, मैं किसी हालत में नहीं

रुक सकता था। चाहे मुझे पैदल जाना पड़ता!" वह अपने आप को तसल्ली देने लगा। "भला अपने ससुर से कोई औरत ऐसे बात करती है? मैं कुछ भी सही, आख़िर हूँ तो बाप। वाह रे वाह, कहती है, जब सारी ज़िन्दगी भेड़ें और घोड़े चराते बिताई, तो फिर पार्टी में क्यों शामिल हुए, तिस पर बुढ़ापे में बरख़ास्त कर दिये गये... बेटे की हालत भी देखते ही बनती थी। उसका मुँह तक नहीं खुला, नज़र उठाते भी डरता है। अगर वह उससे कहे–अपने पिता को छोड़ दो, तो छोड़ देगा। दब्बू है और बड़ा आदमी भी बनना चाहता है। अरे, क्या कहूँ! अब वैसे लोग रहे ही नहीं, बिलकुल नहीं।"

तानाबाय को गर्मी महसूस हुई और वह घोड़े, रास्ते और आनेवाली रात के बारे में भूलकर अपनी क़मीज़ के कालर के बटन खोल, बोझिल सांसें लेता हुआ, गाड़ी के चारों ओर घूमने लगा। लेकिन उसे किसी तरह शान्ति नहीं मिल रही थी। वहाँ, अपने बेटे के घर में, उसने अपने आप पर क़ाबू किया था, अपनी पुत्रवधू से बहस करना उसने अपनी इज़्ज़त के ख़िलाफ़ समझा था। पर अब एकाएक उसका ग़ुस्सा उबल पड़ा, इस वक़्त वह वे सारी कड़वी बातें, जो रास्ते में उसके मन में आ रही थीं, उसे सुना देता, "तुमने न तो मुझे पार्टी में शामिल किया था, और न ही उससे निकाला था। फिर तुम कैसे जान सकती हो, बहू, कि उस वक़्त क्या हुआ था? अब उन सब बातों के बारे में अपना फ़ैसला देना आसान है। अब हर कोई पढ़ा-लिखा है, उनका आदर किया जाता है, उनकी प्रतिष्ठा है। लेकिन तब हमसे हर बात का जवाब तलब किया जाता था, वह भी कैसे! हम अपने बाप, अपनी मां, अपने दोस्त और दुश्मन, ख़ुद के लिए, अपने पड़ोसी के कुत्ते के लिए, दुनिया भर की हर बात के लिए ज़िम्मेदार ठहराये जाते थे। और जहाँ तक मेरे निकाले जाने का सवाल है, तुम इसे मत छेड़ो! यह मेरी दुखती रग है, प्यारी बहू। तुम इसे मत छेड़ो!"

"तुम इसे मत छेड़ो!" वह गाड़ी के पास चहलक़दमी करते हुए दोहराता रहा। "तुम इसे मत छेड़ो!" वह बारबार यही रट लगाता रहा। सबसे निराशाजनक और अपमानजनक बात तो यह थी कि "इसे मत छेड़ो" के अलावा उसके पास कहने को कुछ नहीं था।

वह गाड़ी के चारों ओर तब तक चक्कर ही लगाता रहा, जब तक

उसे याद न आया कि उसे कुछ करना चाहिए–आख़िर वहाँ सारी रात तो रुका नहीं जा सकता था।

गुलसारी गाड़ी में जुता हुआ निश्चल, हर चीज के प्रति उदासीन, सिकुड़ा हुआ, अपने पैर सटाये हुए खड़ा था, लगता था जैसे पथरा गया है, मर गया है।

"क्या हुआ है तुझे?" तानाबाय उसके पास दौड़ा आया, तो उसे घोड़े की धीमी, लम्बी कराह सुनाई दी। "ऊंघने लगा क्या? तबीयत ख़राब है, बुढ़ऊ? क्यों?" उसने जल्दी से क़दमबाज़ के ठण्डे कानों पर हाथ फेरा, उसकी अयाल में हाथ डालकर देखा। वहाँ भी उसे घोड़े की खाल ठण्डी और नम लगी। पर सबसे ज्यादा डर तो उसे इस बात का लगा कि घोड़े की अयाल में अब पहले जैसा वज़न नहीं महसूस हो रहा था। "बिलकुल बुड्ढा हो गया, अयाल भी छीदी और फूल-सी हल्की हो गयी, हम सब बुढ़ाते हैं, हम सब का अन्त एक-सा होता है।" उसने दुखी मन से सोचा। वह दुविधा में पड़ा उठ खड़ा हुआ, समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। यदि वह घोड़े और गाड़ी को छोड़कर पैदल ही चल पड़े, तो आधी रात गये तक अपनी दर्रेवाली झोंपड़ी तक पहुँच सकता है। वहाँ घास के गोदाम में वह अपनी पत्नी के साथ रहता था। पड़ोस में नदी के प्रवाह की विपरीत दिशा में कोई डेढ़ किलोमीटर दूर जलप्रदाय विभाग के निरीक्षक का घर था। तानाबाय गर्मियों में घास काटने का काम देखता था और जाड़े में सूखी घास की टालों की रखवाली करता था, ताकि चरवाहे समय से पहले घास का चोरी-छुपे उपयोग न कर पायें।

पिछली शरद-ऋतु में वह एक बार किसी काम से फ़ार्म के दफ़्तर गया था, तब नये टोली-नायक, शहर से आये युवा कृषि-विशेषज्ञ ने उससे कहा था,

"अक़्साक़ाल*, आप अस्तबल में जाइये, हमने आपके लिए दूसरा घोड़ा पसन्द किया है। वह बूढ़ा जरूर है, पर आपके काम के लिए ठीक रहेगा।"

---

* अक़्साक़ाल–सफ़ेद दाढ़ीवाला। बड़ों के प्रति आदरसूचक सम्बोधन।

"कौन-सा घोड़ा है?" तानाबाय चौकन्ना हो उठा। "क्या फिर कोई मरियल घोड़ा दे रहे हो?"

"आप वहाँ देख लीजिए। कुम्मैत रंग का है। आप उसे पहचान लेंगे, सुना है, आप उस पर सवारी कर चुके हैं।"

तानाबाय अस्तबल में गया और जब उसने अहाते में क़दमबाज़ को देखा, तो उसके दिल में टीस उठने लगी। "आखिर दुबारा मुलाक़ात हो ही गयी," उसने मन ही मन बूढ़े मरियल घोड़े से कहा। मगर उससे मना करते नहीं बना और वह उसे अपने साथ ले आया।

घर पर उस की पत्नी क़दमबाज़ को बड़ी मुश्किल से पहचान सकी।

"तानाबाय, क्या यह वास्तव में वही गुलसारी है?" उसने आश्चर्य व्यक्त किया।

"वही तो है, इसमें ऐसी बात ही क्या..." तानाबाय अपनी पत्नी से आँखें चुराते हुए बड़बड़ाया।

उन्हें क़दमबाज़ के साथ जुड़ी स्मृतियों को ताज़ा करने की विशेष आवश्यकता न थी। तानाबाय ने अपनी जवानी में कुछ ग़लतियाँ की थीं। बात का रुख़ उस ओर न मुड़ पाये, इसलिए वह रूखे स्वर में पत्नी से बोला, "अरे, खड़ी क्यों हो? हमारा खाना गर्म करो। मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।"

"मैं खड़ी खड़ी यही सोच रही थी," उसने जवाब दिया, "कि बुढ़ापा क्या ऐसा ही होता है। तुम न बताते कि यह वही गुलसारी है, तो मैं कभी इसे पहचान ही न पाती।"

"इसमें अचरज की बात ही क्या है? तुम्हारा ख्याल है, क्या हम दोनों उससे बेहतर लगते हैं? हर चीज़ का अपना समय होता है।"

"मैं भी तो यही कह रही थी।" उसने सोच में डूबे डूबे सिर हिलाया और स्नेहसिक्त मुस्कान के साथ बोली, "क्या तुम अब भी रात में अपने क़दमबाज़ पर घूमते फिरा करोगे? मेरी तरफ़ से पूरी छूट है।"

"अब कहाँ," उसने भोंडे ढंग से हाथ झटका और पत्नी की ओर पीठ कर ली। उसे मज़ाक़ का जवाब मज़ाक़ में देना चाहिए था, पर वह शर्म के कारण सूखी घास लेने झोंपड़ी की छत पर जा चढ़ा और वहाँ काफ़ी देर तक रहा। उसने सोचा था कि वह उस बात को भूल चुकी होगी, लेकिन नहीं भूली।

चिमनी में से धुआँ निकल रहा था, उसकी पत्नी दिन का ठण्डा खाना गरम कर रही थी, लेकिन वह तब तक घास से ही उलझा रहा, जब तक उसकी पत्नी ने दरवाज़े में से उसे आवाज़ न दी,

"उतर आओ, नहीं तो खाना फिर ठण्डा हो जायेगा।"

उसने फिर कभी पुरानी बात का ज़िक्र नहीं किया, फिर इसकी ज़रूरत भी क्या थी?..

तानाबाय सारी शरत् और सारे जाड़े क़दमबाज़ का इलाज करता रहा, उसे गरम-गरम चोकर और कटा हुआ चुकंदर खिलाता रहा। गुलसारी के दाँत बिलकुल घिस चुके थे, केवल उनके ठूंठ ही रह गये थे। लगता था कि घोड़े को उसने अपने पैरों पर खड़ा कर दिया है, लेकिन अब यह मुसीबत आ गयी। अब उसका क्या करे?

नहीं, उसकी आत्मा घोड़े को रास्ते में छोड़ जाने की गवाही नहीं देती।

"क्यों, गुलसारी, क्या ऐसे ही खड़े रहेंगे?" तानाबाय ने क़दमबाज़ को हाथ से धकेला। घोड़ा थोड़ा हिला और उसने पैर बदले।

"अच्छा, ठहर, मैं अभी आया।"

उसने चाबुक की डण्डी से गाड़ी के तल पर से ख़ाली बोरा उठाया, जिसमें अपनी बहू के लिए आलू लेकर गया था और वहाँ से एक पोटली निकाली। उसकी पत्नी ने उसे रास्ते के लिए रोटी बनाकर दी थी, लेकिन वह उसके बारे में भूल ही गया था, खाने का ख़याल ही नहीं आया। तानाबाय ने आधी रोटी तोड़कर कोट के पल्ले पर उसके छोटे-छोटे टुकड़े किये और घोड़े के मुँह के पास लाया। गुलसारी ने रोटी को ज़ोर से साँस खींचकर सूँघा, पर खा न सका। तब तानाबाय उसे हाथ से खिलाने लगा। उसने कुछ टुकड़े उसके मुँह में ठूंस दिये। घोड़ा उन्हें चबाने लगा।

"खा, खा, किसी तरह घर तो पहुँच जायेंगे न?" तानाबाय प्रसन्न हो उठा। "धीरे धीरे ही सही, पर शायद घर पहुंच जायें। फिर वहाँ किसी बात का डर नहीं, मैं और बुढ़िया मिलकर तुझे ठीक कर लेंगे," वह बार बार कहता रहा। घोड़े के मुँह से उसके काँपते हाथों पर थूक टपक रहा था और उसे यह महसूस कर ख़ुशी हो रही थी कि वह पहले से गरम था।

फिर उसने घोड़े की लगाम उठायी।

"चल, चल! अब बेकार खड़े नहीं रहेंगे। चल!" उसने दृढ़तापूर्वक आदेश दिया।

क़दमबाज़ आगे बढ़ा, गाड़ी चर्र-चूँ कर उठी, पहिये धीरे-धीरे घूमने लगे। और वे – एक बूढ़ा आदमी और एक बूढ़ा घोड़ा – धीरे-धीरे आगे चल पड़े।

"बिलकुल कमज़ोर हो गया," तानाबाय रास्ते के किनारे-किनारे चलते हुए घोड़े के बारे में सोचने लगा। "तू कितने साल का हो गया, गुलसारी? बीस का या इससे ज़्यादा? शायद इससे ज़्यादा का ही होगा..."

दो

वे पहली बार युद्ध के बाद मिले थे। लँस-नायक तानाबाय बकासोव पश्चिम में भी रहा और पूर्व में भी। वह जापान की क्वांटुंग सेना के आत्मसमर्पण के बाद ही सैनिक सेवा से निवृत्त हुआ। वह कुल मिलाकर छः वर्षों तक युद्धक्षेत्रसेवा में रहा। उसका भाग्य अच्छा था, बस एक बार रसद-टुकड़ी में जाते समय उसे बम फटने से शाक लगा था, दूसरी बार – किरच लगने से सीने में चोट लगी, कोई दो महीने अस्पताल में रहा और दुबारा अपनी टुकड़ी में जा मिला।

जब वह घर लौट रहा था, तो रास्ते के स्टेशनों की फेरीवालियाँ उसे "बूढ़ा" कहकर पुकारने लगीं। वैसे, ऐसा वे ज़्यादातार मज़ाक़ में ही कहती थीं। तानाबाय भी उनके कहे का ज़्यादा बुरा नहीं मानता था। निस्सन्देह वह जवान नहीं रहा था, पर बूढ़ा भी नहीं था, केवल शक्ल-सूरत से ही बूढ़ा लगता था। लड़ाई उसके चेहरे पर अपनी छाप छोड़ गयी थी, उसकी मूँछों में सफ़ेद बाल चमकने लगे थे, लेकिन तन और मन से वह अभी तगड़ा था। एक वर्ष बाद उसकी पत्नी ने एक लड़की को जन्म दिया और उसके बाद दूसरी को। दोनों की शादी हो चुकी है, बच्चे हैं। वे अकसर गर्मियों में उनसे मिलने आती रहती हैं। बड़ी पुत्री का पति ट्रक-चालक है। वह अकसर सबको ट्रक में बिठाकर पहाड़ों में बूढ़े-बुढ़िया के पास ले आता है। नहीं, उन्हें अपनी पुत्रियों व दामादों से कोई शिकायत नहीं है, बस पुत्र ही उनका ऐसा निकल गया। ख़ैर, यह अलग बात है...

युद्ध में विजय के बाद घर लौटते समय उसे लगा था कि वास्तविक जीवन तो अब शुरू हुआ ही है। उसका दिल बड़ा ख़ुश था। सारे बड़े स्टेशनों पर फ़ौजी रेलगाड़ियों का स्वागत और विदाई बैंड-बाजे के साथ की जाती थी। पत्नी घर पर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी, बेटा सात साल का हो चुका था और स्कूल में दाख़िल होनेवाला था। सारे रास्ते उसे ऐसा लग रहा था, मानो उसका पुनर्जन्म हुआ है और अब तक जो हुआ है, वह अब कोई माने नहीं रखता है। मन कहता था कि सब भूल जाये और केवल अपने भविष्य के बारे में सोचे। अपना भविष्य उसे स्पष्ट और सरल दिखाई पड़ता था: चैन से जियेंगे, बच्चों को पालेंगे-पोसेंगे, गृहस्थी जमायेंगे, घर बनायेंगे, कहने का मतलब है चैन से जियेंगे। अब इसमें और कोई बाधा नहीं पड़नी चाहिए, क्योंकि उन्होंने अपना अतीत इसी आशा में भेंट चढ़ा दिया था कि कम से कम अब तो नया जीवन शुरू कर सकें, जिसके लिए वे सारे समय संघर्ष करते रहे, विजयी हुए और युद्ध में अपनी प्राणों की बलि चढ़ाई।

लेकिन बाद में तानाबाय को मालूम हुआ कि वह जल्दबाज़ी कर रहा था, बहुत जल्दबाज़ी कर रहा था – भविष्य के नाम पर न जाने कितने और वर्षों की बलि चढ़नी बाक़ी थी।

उसने शुरू में लोहारख़ाने में हथौड़िये का काम किया। कभी वह इस काम में काफ़ी कुशल रहा था और अब निहाई पर दुबारा काम करने का अवसर मिलने पर सुबह से शाम तक लगातार इस रफ़्तार से घन चलाता था कि लोहार लाल तपते लोहे को बड़ी मुश्किल से पलट पाता था। उसे अब भी कभी-कभी लोहारख़ाने में घन की लयबद्ध चोटों की वह गूंज सुनाई दे जाती है, जिस में उसकी सारी परेशानियाँ और चिन्ताएँ विलीन हो जाती थीं। अनाज और कपड़े की तंगी थी, औरतें नंगे पैरों पर रबड़ के जूते पहन रही थीं, बच्चे चीनी का स्वाद तक नहीं जानते थे, सामूहिक फ़ार्म क़र्ज़ में डूबा हुआ था, उसका बैंक-खाता सील कर दिया गया था, लेकिन वह घन चलाने में सब कुछ भूल जाता था। वह घन चलाता, निहाई गूंज उठती और चारों ओर नीली चिनगारियाँ बिखर जातीं। "ऊँ-हूँ, ऊँ-हूँ," घन उठाते और चलाते समय उसके मुँह

से साँस के साथ निकलता और वह सोचता, "सब ठीक हो जायेगा, सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि हम जीत गये! जीत गये!" और घन दोहराता: "जीत गये! जीत गये! जीत गये!" केवल वही नहीं, उन दिनों सभी आज़ादी की हवा रोटी की तरह खाकर जी रहे थे।

इसके बाद तानाबाय घोड़ों का चरवाहा बनकर पहाड़ पर चला गया। चोरो ने उसे इसके लिए मनाया। स्वर्गीय चोरो उस समय सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष था, युद्ध के दौरान भी वही अध्यक्ष रहा था। उसकी दिल की बीमारी के कारण उसे सेना में भर्ती नहीं किया गया था। हालाँकि वह घर पर ही रहा, पर बहुत बुढ़ा गया था। लौटने पर तानाबाय का ध्यान फ़ौरन इस पर गया था।

भला लोहारख़ाना छोड़कर घोड़ों का झुण्ड संभालने का काम करने के लिए उसे कोई और तैयार कर सकता था? लेकिन चोरो उसका पुराना दोस्त था। किसी ज़माने में कोम्सोमोल के सदस्यों की हैसियत से उन्होंने साथ-साथ सामूहिक फ़ार्म बनाने के लिए प्रचार-कार्य किया था, कुलकों का ख़ात्मा किया था। तानाबाय ने उन दिनों बहुत जोश से काम किया। जिन कुलकों के नाम बेदख़ल किये जानेवालों की सूची में थे, उन पर उसने बिलकुल भी दया नहीं की...

चोरो ने लोहारख़ाने में आकर उसे पेशा बदलने के लिए मनाया और लगता था अपनी सफलता पर वह बहुत ख़ुश था।

"मुझे तो डर था कि तुम अपने घन से ऐसे चिपक गये हो कि तुम्हें छुड़ाना मुश्किल होगा," उसने मुस्कराते हुए कहा था।

चोरो बीमार था, सूखकर कांटा हो गया था, उसकी गर्दन लटक रही थी, धंस गये गालों में झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं। हालांकि उस समय गर्मी थी, पर चोरो गर्मी में भी अपनी पुरानी मिरज़ई पहने रहता था। वे लोहारख़ाने से कुछ दूर नाली के किनारे उकड़ूँ बैठकर बात कर रहे थे। तानाबाय को स्मरण हो आया कि चोरो जवानी में कैसा दिखता था। उस ज़माने में वह गाँव का सबसे अधिक पढ़ा-लिखा और सुन्दर नौजवान था। उसकी शान्त और नम्र प्रकृति के कारण लोग उसका आदर करते थे। लेकिन तानाबाय को उसकी दयालुता अच्छी नहीं लगती थी। वह अकसर मीटिंगों में उठ खड़ा होता और वर्ग-संघर्ष में शत्रुओं के विरुद्ध असहनीय नरमाई बरतने के लिए चोरो की कटु आलोचना करता। उसकी दलीलें

समाचारपत्रों के लेखों के समान ठोस होती थीं। वह जो भी अख़बारों के ज़ोर-ज़ोर से पढ़कर सुनाये जाते समय सुनता, उसे ज़बानी दोहरा देता। कई बार तो वह ख़ुद अपने शब्दों से भयभीत हो उठता था। फिर भी यह सब होता शानदार था।

"तीन दिन हुए मैं पहाड़ों में गया," चोरो ने कहा। "बुज़ुर्ग लोगों ने पूछा, 'क्या सब सैनिक लौट आये हैं?' मैंने कहा, जो जिन्दा बचे, लौट आये हैं। 'उनका कब से काम शुरू करने का इरादा है?' मैंने जवाब दिया, उन्होंने काम करना शुरू भी कर दिया, कोई खेत में है, कोई भवन-निर्माण में, कोई किसी और जगह। 'यह तो हमें भी पता है। लेकिन घोड़ों के झुण्ड कौन संभालेगा? क्या हमारे मरने तक इन्तज़ार करेंगे, वैसे ही हमारे कितने से दिन बचे हैं।' मुझे बहुत शर्म महसूस हुई। पता है, उनका क्या मतलब था? युद्ध के दौरान हमने इन बूढ़ों को घोड़ों के झुण्ड संभालने पहाड़ों पर भेजा था। तब से वे वहीं हैं। तुम्हें तो बताने की ज़रूरत नहीं कि यह बूढ़ों के बस का काम नहीं है। रात-दिन घोड़े पर सवार रहना, न दिन को चैन, न रात को। और फिर जाड़े की रातें! दरबेशबाय की याद होगी, वह घोड़े पर बैठा बैठा ही ठण्ड से जमकर मर गया। और जब सेना के लिए घोड़ों की आवश्यकता होती, तो वे ही तो उन्हें सधाते थे। साठ वर्ष की उम्र में ज़रा किसी ऐसे घोड़े पर सवारी करके तो देखो जो शैतान की तरह पहाड़ों और घाटियों में उछलता है। हड्डियाँ भी ढूंढे नहीं मिलें। हमें इसी लिए भी उनका शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि वे यह सब सहन करते रहे। अब सैनिक लोग लौट आये हैं, लेकिन नाक-भौं सिकोड़ते हैं, विदेशों में रहकर बड़े सभ्य बन गये हैं, चरवाहे का काम करना ही नहीं चाहते। कहते हैं, हमें पहाड़ों में भटकने की क्या ज़रूरत पड़ी है? तो यह बात है। इसलिए तुम मदद करो, तानाबाय। तुम जाओगे, तो हम दूसरों को भी भेज सकेंगे।"

"ठीक है, चोरो, मैं अपनी पत्नी से सलाह करूँगा," तानाबाय ने जवाब दिया। उसने मन में सोचा, "कैसी ज़िन्दगी बीत गयी देखते देखते, लेकिन, चोरो, तुम वैसे के वैसे ही रहे। तुम में भलमनसाहत ज़रूरत से ज़्यादा है। हो सकता है, यह अच्छी बात भी हो। लड़ाई में हमने जो कुछ देखा, उससे तो हम सब को भला ही बनना चाहिए। शायद ज़िन्दगी में यही सबसे सही बात है?"

इसके बाद वे अपने अपने रास्ते जाने लगे।

तानाबाय अपने लोहारखाने की ओर चल पड़ा, पर एकाएक चोरो ने उसे आवाज़ दी,

"ज़रा रुकना, तानाबाय।" वह अपने घोड़े पर उसके पास आया और काठी के ऊपर झुककर उसने तानाबाय के चेहरे पर नज़र डाली। "तुम मुझ पर नाराज़ तो नहीं हो रहे हो न?" उसने धीरे से पूछा। "बात यह है कि मेरे पास बिलकुल भी समय नहीं बचता है। जी चाहता है, पहले की तरह बैठकर दिल खोलकर बातें करें। हम लोग कितने सालों से नहीं मिले हैं। मैंने सोचा था कि लड़ाई खत्म होने के बाद कुछ चैन मिलेगा, पर चिन्ताएँ कम ही नहीं होतीं। कभी-कभी तो झपकी भी नहीं ले पाता, दिमाग़ में तरह-तरह के विचार आते रहते हैं। सामूहिक फ़ार्म की हालत कैसे सुधारूँ, लोगों का पेट कैसे भरूँ और सभी कोटे कैसे पूरे करूँ। अब लोग भी बिलकुल बदल गये, बेहतर ज़िन्दगी जीना चाहते हैं..."

लेकिन उन्हें कभी अकेले बैठकर दिल खोलकर बातें करने का अवसर ही नहीं मिल पाया। समय बीतता जा रहा था। फिर देर हो चुकी थी...

जब तानाबाय घोड़ों का चरवाहा बनकर पहाड़ों पर गया, तभी उसने पहली बार तोर्गोई के घोड़ों के झुण्ड में डेढ़ साल के सुनहले कुम्मैत रंग के बछेड़े को देखा।

"वसीयत में क्या छोड़कर जा रहे हो, अक्साकाल? झुण्ड में घोड़े तो बहुत थोड़े-से हैं, क्यों?" तानाबाय ने घोड़ों की गिनती करके बाड़े में से हांकने के बाद बूढ़े चरवाहे पर ताना मारा।

तोर्गोई दुबला-पतला बूढ़ा था, उसके झुर्रीदार चेहरे पर एक भी बाल नहीं था, किशोरों की तरह छोटे क़द का था। भेड़ की खाल की झबरे बालोंवाली टोपी उसके सिर पर कुकुरमुत्ते की तरह टिकी थी। इस तरह के बूढ़े अक्सर फुर्तीले, झगड़ालू और ज़बान के तेज़ होते हैं। लेकिन तोर्गोई को ताव नहीं चढ़ा।

"झुण्ड वैसा ही है, जैसे कि होते हैं," उसने शान्त स्वर में जवाब दिया। "शेख़ी मारने लायक़ कोई ख़ास बात नहीं है, ख़ुद कुछ देर हांकोगे, तब देख लोगे।"

"अरे, चचा, मैं तो मज़ाक़ कर रहा था," तानाबाय ने उसे मनाते हुए कहा।

"एक है!" तोर्गोई ने टोपी पीछे कर, रक़ाबों में खड़े होते हुए चाबुक की डण्डी से दिखाया। "देखो, वह कुम्मैत रंग का बछेड़ा जो दायीं ओर चर रहा है, एक दिन ज़रूर नाम कमायेगा।"

"कौनसा? क्या वह जो गेंद-सा गोल है? वह तो छोटा-सा दिखता है और उसकी कमर भी छोटी है।"

"वह देर से पैदा हुआ है। ठीक हो जाने पर बहुत अच्छा घोड़ा साबित होगा।"

"उसमें ऐसी क्या ख़ासियत है?"

"जन्मजात क़दमबाज़ है।"

"तो क्या हुआ?"

"मैंने ऐसे बहुत कम देखे हैं। पहले के ज़माने में तो ऐसा घोड़ा अनमोल होता। ऐसे घोड़े के लिए तो घुड़दौड़ में लोग लड़ मरते थे।"

"ज़रा देखें तो!" तानाबाय ने कहा।

उन्होंने अपने अपने घोड़े को एड़ लगायी, झुण्ड के सहारे सहारे निकले और कुम्मैत रंग के बछेड़े को अलग कर अपने आगे हाँकने लगे। बछेड़ा दौड़ने के ख़िलाफ़ नहीं था। उसने बड़े मज़े से सिर के बालों को झटका, फुफकारा और तेज़ लयबद्ध क़दमचाल से, मानो उसे चाबी दी गयी हो, अपने झुण्ड में वापस आ मिलने के लिए एक बड़ा-सा अर्द्ध-वृत्त बनाता हुआ भाग छूटा। उसकी दौड़ से प्रभावित तानाबाय चिल्लाकर बोला,

"देखो, देखो, कैसे भाग रहा है!"

"और तुम क्या सोच रहे थे?" बूढ़े चरवाहे ने प्रसन्नता व्यक्त की।

वे क़दमबाज़ के पीछे अपने घोड़े सरपट दौड़ाते हुए घुड़दौड़ में भाग लेते बच्चों की तरह चिल्लाने लगे। उनकी आवाज़ें बछेड़े के लिए एड़ का काम कर रही थीं, वह बिना विशेष ज़ोर लगाये निरन्तर अपनी रफ़्तार बढ़ाता जा रहा था, उसने एक बार भी सरपट भागने की कोशिश नहीं की, समान गति से हवा में उड़ता हुआ-सा दौड़ता रहा।

उन्हें अपने घोड़ों को और तेज़ी से दौड़ाना पड़ा, लेकिन वह अपनी उसी लयबद्ध क़दमचाल से दौड़ रहा था।

"देख लिया, तानाबाय!" तोर्गोइ अपनी टोपी हिलाते हुए चिल्लाया।

"देखो कितना चौकन्ना रहता है, आवाज़ सुनते ही बिजली की तेजी से भागता है!" उसने टिटकारी मारी।

अन्त में जब कुम्मैत बछेड़ा अपने झुण्ड में आ मिला, तो उन्होंने उसे दुबारा नहीं छेड़ा। लेकिन वे अपने गरम हुए घोड़ों को काफ़ी देर तक शांत नहीं कर सके।

"शुक्रिया, तोर्गोई-अके* बहुत बढ़िया घोड़ा तैयार किया है आपने। मेरा तो दिल ख़ुश हो गया।"

"बहुत बढ़िया है," वृद्ध ने सहमति प्रकट की। "बस इतना ध्यान में रखना," उसकी मुखमुद्रा एकाएक कठोर हो उठी और वह गुद्दी खुजलाते हुए बोला, "इसे बुरी नज़र से बचाना। वक़्त से पहले इसके बारे में मत बकना। बढ़िया क़दमबाज़ पर ख़ूबसूरत लड़की की तरह बहुतों की नज़र लगी रहती है। लड़की की क़िस्मत भी तो ऐसी ही होती है—किसी अच्छे आदमी के हाथ पड़ती है, तो फूल की तरह खिल उठती है, देखकर दिल ख़ुश हो उठता है, पर अगर किसी बुरे आदमी के हाथ पड़ी तो उसे देखकर दिल दुखता है। फिर कुछ नहीं कर सकते। अच्छे घोड़े के साथ भी ऐसा ही होता है। उसे बरबाद करना बड़ा आसान होता है। ऐसा घोड़ा दौड़ता दौड़ता ढेर हो सकता है।"

"चिन्ता न करो, अक्साक़ाल, मुझे भी इस काम की समझ है, बच्चा तो हूँ नहीं।"

"बहुत अच्छा। उसका नाम गुलसारी है। याद रखना।"

"गुलसारी?"

"हाँ। पिछली गर्मियों में मेरी पोती मुझसे मिलने आयी थी। उसने ही उसका यह नाम रखा है। उसे बहुत प्यार हो गया था इससे। उस वक़्त वह बहुत छोटा था। याद रखना: गुलसारी।"

तोर्गोई बड़ा बातूनी बूढ़ा निकला। वह सारी रात हिदायतें देता रहा। और तानाबाय धैर्यपूर्वक सुनता रहा।

वह तोर्गोई और उसकी पत्नी को सात किलोमीटर दूर तक छोड़ने गया। वहाँ उनका ख़ाली तम्बू ही रह गया, जिसमें उसे अपने परिवार के साथ आकर रहना था। दूसरे तम्बू में उसका सहायक रहनेवाला था।

---

* अके—भाई, बड़ों के लिए आदरसूचक सम्बोधन।

लेकिन अभी तक सहायक कोई नहीं मिला था। इस समय वह अकेले ही था।

विदाई लेते समय तोर्गोई ने उसे फिर याद दिलाया,

"अभी कुम्मैत बछेड़े को मत छेड़ना। उसे किसी और को भी मत सौंपना। अगले वसन्त में उसे ख़ुद ही सधाना। लेकिन सावधानी से काम लेना। काठी कसने के बाद उसे तेज़ मत दौड़ाना, उसकी क़दमचाल बिगड़ जायेगी और घोड़ा बरबाद हो जायेगा। शुरू के कुछ दिनों तक थकाने के बाद उसे ज्यादा पानी मत पीने देना। अगर पैरों पर पानी गिरा, तो उनमें कीड़े पड़ जायेंगे। और जब इसे सधा लो, तो मुझे लाकर दिखाना, अगर मैं जिन्दा रहूँ तो..."

और तोर्गोई उसके लिए घोड़ों का झुण्ड, तम्बू और पहाड़ छोड़कर, अपनी बुढ़िया और अपने सामान से लदे ऊंट को साथ ले चला गया...

काश, गुलसारी जान पाता कि उसके बारे में कितनी बातें हुईं, कितनी अभी और होनी बाक़ी थीं और उन सब का परिणाम क्या होगा!..

वह पहले की तरह अपने झुण्ड में स्वच्छंद घूमता रहा। उसके चारों ओर कुछ नहीं बदला था, वही पहाड़ थे, वही घास और वही नदी-नाले। केवल बूढ़े की जगह अब उन्हें एक नया मालिक हांकता था, जो मटमैले रंग का फ़ौजी ओवरकोट और कनटोपी पहनता था। नये मालिक की आवाज़ फटी, किन्तु भारी और रोबदार थी। झुण्ड उसका जल्दी ही आदी हो गया। अगर उसे उनके चारों ओर चक्कर लगाना अच्छा लगता है तो लगाता रहे।

फिर हिमपात होने लगा। बर्फ़ अक्सर गिरती और काफ़ी समय तक पड़ी रहती। घोड़े घास तक पहुँचने के लिए हिम को टापों से कुरेदते। उनके मालिक का चेहरा काला पड़ गया और उसके हाथ तेज़ हवाओं के कारण खुरदुरे हो गये। अब वह नमदे के जूते और भेड़ की खाल का ओवरकोट पहनने लगा था। गुलसारी के बाल लम्बे हो गये थे, पर उसे फिर भी ठण्ड लगती थी, विशेषकर रात में। रात को पाला पड़ता, तो सारे घोड़े किसी गुफ़ा में एक दूसरे के साथ सटकर सूरज निकलने तक निश्चल खड़े रहते और धवल तुषार से ढक जाते। उनका मालिक अपने घोड़े पर पास ही मंडराता रहता, अपने दस्ताने एक दूसरे पर मारता रहता और अपना चेहरा मलता रहता। कभी-कभी ग़ायब हो जाता और फिर

आ जाता। वह उनके साथ रहता, तो उन्हें बड़ा अच्छा लगता। जब वह चिल्लाता या ठण्ड के कारण खांसता, तो सारे घोड़े सिर उठाकर देखते, कनौतियाँ खड़ी कर लेते, लेकिन मालिक को अपने पास देखते ही निश्चिन्त हो जाते और रात्रिकालीन हवाओं की सरसराहट और सीटी के बीच फिर ऊंघने लगते। उस जाड़े से गुलसारी तानाबाय की आवाज़ कभी नहीं भूला।

एक बार रात में पहाड़ों में हिमझंझावात आया। नुकीले हिमकण उड़ने लगे। वे घोड़ों की अयाल में भरने लगे, हिम के कारण उनकी पूँछें भारी हो गयीं और आँखें खोलना मुश्किल हो गया। सारा झुण्ड परेशान हो उठा। घोड़े एक दूसरे से सटे हुए कांप रहे थे। बूढ़ी घोड़ियाँ घबराकर हिनहिनाती हुई बछेड़ों को झुण्ड के बीच में हांक लाने की कोशिश कर रही थीं। उन्होंने गुलसारी को बिलकुल बाहर धकेल दिया और फिर वह झुण्ड के अन्दर नहीं घुस सका। वह दुलत्ती मारने लगा, दूसरे घोड़ों को धक्का देने लगा, पर झुण्ड से बिलकुल बाहर हो गया। उसी वक़्त झुण्ड का सांड़ आ पहुँचा और उसने उसकी ज़ोरदार मरम्मत की। सांड़ काफ़ी देर से अपने शक्तिशाली पैरों से बर्फ़ रौंदता हुआ, घोड़ों को झुण्ड में हांकता हुआ चारों ओर दौड़ रहा था। बीच-बीच में वह धमकी के अन्दाज़ में अपनी गर्दन झुकाये और कान दबाये एक ओर भागकर अंधेरे में ग़ायब हो जाता था, केवल उसकी फुफकार सुनाई देती रहती थी, लेकिन फिर गुस्से से आग बबूला हुआ लौट आता था। गुलसारी को एक ओर खड़ा देख वह उसकी ओर लपका और पलटकर अपनी पिछली टांगों से एक ज़ोरदार लात उसकी बग़ल में मारी। चोट इतनी ज़ोर की लगी कि गुलसारी का दम घुटते घुटते बचा। उसके भीतर कुछ फटने की सी आवाज़ हुई, वह चीखा और गिरते गिरते बचा। फिर उसने अपनी मनमानी करने की कोशिश नहीं की। वह बग़ल में तेज़ दर्द सहते हुए और क्रोधित सांड़ पर मन ही मन गुस्सा होते हुए झुण्ड के बाहरी किनारे से सटकर चुपचाप खड़ा रहा।

घोड़े शान्त हो चुके थे। तभी उसे दूर से एक अस्पष्ट लम्बी चीख आती सुनाई दी। उसने पहले कभी भेड़िये की आवाज़ नहीं सुनी थी। एक पल के लिए उसके दिल की धड़कन रुक गयी और खून जम गया। सारा झुण्ड उत्तेजित हो उठा और कनौतियाँ खड़ी कर सुनने लगा। सब शान्त हो गया। लेकिन यह सन्नाटा बड़ा भयावह था। बर्फ़ सरसराती हुई गिरती

रही और गुलसारी के ऊँचे उठे मुँह पर चिपकती रही। मालिक कहाँ गया? उस क्षण उसकी कितनी ज़रूरत थी, कम-से-कम उसकी आवाज़ ही सुनाई दे जाती, उसके कोट में से धुएँ की गंध ही आ जाती। लेकिन वह वहाँ नहीं था। गुलसारी ने कनखियों से देखा और डर के मारे स्तब्ध रह गया। अंधेरे में बर्फ़ से लिपटी एक छाया-सी उसके पास से गुज़र गयी। गुलसारी झटके से पीछे हटा, सारा झुण्ड तुरन्त उत्तेजित हो उठा और भाग पड़ा। ज़ोर-ज़ोर से चीखते और हिनहिनाते उन्मत्त हुए घोड़े घुप अंधेरे में तीर की तरह भाग छूटे। अब कोई ऐसी शक्ति नहीं थी जो उन्हें रोक सके। घोड़े पहाड़ पर से लुढ़कते पत्थरों की तरह एक दूसरे को अपने साथ घसीटते हुए पूरी ताक़त से भाग रहे थे। गुलसारी कुछ समझ नहीं पा रहा था, किन्तु इस उन्मत्त प्रचण्ड दौड़ में भागा जा रहा था। अचानक एक गोली चलने की आवाज़ गूँजी, फिर दूसरी। भागते हुए घोड़ों को अपने मालिक के गुस्से में चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ कहीं बग़ल से आयी, फिर उनका रास्ता काटती हुई सुनाई देती रही और फिर आगे से। वे उस लगातार सुनाई दे रही आवाज़ के पीछे भागने लगे। उनका मालिक उनके साथ था। वह किसी भी क्षण किसी दरार में या चट्टान से गिर पड़ने का खतरा उठाते हुए उनके आगे-आगे अपने घोड़े को सरपट दौड़ा रहा था। उसकी आवाज़ कुछ कमज़ोर पड़ी, फिर फटने लगी, पर फिर भी वह उन्हें ज़ोर-ज़ोर से टिटकार रहा था। और वे अपना पीछा कर रही मुसीबत से छुटकारा पाने के लिए उसके पीछे-पीछे भागते रहे।

भोर होते होते तानाबाय झुण्ड को उसके पुराने स्थान पर हांक लाया। वहाँ पहुँचने पर घोड़े रुक गये। उनके ऊपर भाप का घना कोहरा छाया हुआ था, वे हांफ़ रहे थे और उस समय भी डर के मारे कांप रहे थे। वे अपने गरम गरम होंठों में बर्फ़ दबा रहे थे। तानाबाय भी बर्फ़ खाने लगा। वह उकड़ूँ बैठ गया और अंजलि भर-भरकर श्वेत हिम के ढेले अपने मुँह में डालने लगा। फिर वह एकाएक हथेलियों में मुँह छिपाकर निश्चल बैठ गया। बर्फ़ लगातार गिर रही थी, घोड़ों की गरम-गरम पीठों पर से पिघलकर गंदली पीली बूँदें बनकर नीचे बह रही थीं...

बर्फ़ के ढेर पिघल गये, ज़मीन निकल आयी और लहलहा उठी, गुलसारी का बदन तेज़ी से भरने लगा। घोड़ों के पुराने बाल झड़ गये और नये चमकदार आ गये। लगता था जैसे जाड़े और चारे की कमी जैसे नाम

की चीज़ कभी थी ही नहीं। घोड़ों को उनकी याद नहीं थी, लेकिन उस आदमी को थी। उसे ठण्ड, रात में भेड़ियों की आवाज़ें, काठी पर बैठे बैठे ठिठुरना, रुलाई रोकने के लिए होंठों को काटना, ठिठुरे हुए हाथ पैरों को अलाव के पास बैठकर तापना, वसन्त में ज़मीन को सीसे की तरह जकड़े रहनेवाली चिकनी बर्फ़ जिस के कारण झुण्ड के कमज़ोर घोड़े मर रहे थे—सब याद था। पहाड़ों से नीचे उतरकर सामूहिक फ़ार्म के दफ़्तर में घोड़ों के मरने की रिपोर्ट पर आँखें नीची किये हस्ताक्षर करना, फिर गुस्से में एकाएक फट पड़ना और अध्यक्ष की मेज़ पर घूँसा मारकर चिल्लाना भी याद था,

"मेरी तरफ़ ऐसे मत देखो! मैं फ़ासिस्ट नहीं हूँ। घोड़ों के लिए शेड कहाँ हैं? चारा कहाँ है? जई कहाँ है? नमक कहाँ है? सिर्फ़ हवा ही बची है हमारे लिए! क्या हमें इसी तरह काम चलाते रहने का हुक्म मिला है? देखो, हम कैसे चिथड़े पहने घूम रहे हैं! हमारे तम्बू देखो, देखो हम कैसे जी रहे हैं! भरपेट रोटी भी नहीं खा पाते हैं। मोर्चे पर भी यहाँ से सौ गुना बेहतर था। और तुम मेरी तरफ़ ऐसे देखे जा रहे हो, जैसे मैंने ख़ुद इन घोड़ों की जान ली हो!"

उसे अध्यक्ष की भयावह चुप्पी, उसका उतरा हुआ चेहरा याद हो आये। उसे स्मरण हो आया कि उसे अपने ही शब्दों पर कितनी शर्म महसूस हुई थी और उसने कैसे उससे क्षमा मांगी थी।

"मुझे माफ़ कर दो, मुझे थोड़ा ग़ुस्सा आ गया था," हकलाते हुए मुश्किल से वह इतना ही कह पाया।

"माफ़ी तो मुझे तुमसे मांगनी चाहिए," चोरो ने कहा।

उसे उस समय और भी अधिक शर्म महसूस हुई, जब अध्यक्ष ने भण्डारी को बुलाकर आदेश दिया,

"इसे पांच किलो आटा दे दो।"

"पर शिशुशाला का क्या होगा?"

"कौन-सी शिशुशाला? मैं कहता कुछ हूँ तुम समझते रहे कुछ और हो, अक़्ल चरने गयी है क्या? दे दो!" चोरो ने कड़े स्वर में हुक्म दिया।

तानाबाय ने लेने से साफ़ इन्कार करना चाहा और कहना चाहा कि

कुछ ही दिनों में घोड़ियाँ दूध देने लगेंगी, फिर वे क़िमिज़* बना लिया करेंगे, लेकिन अध्यक्ष पर नज़र पड़ते ही उसका सफ़ेद झूठ समझ में आया और उसे चुप होना पड़ा। बाद में जब भी वह इस आटे से बने नूडल खाता, उसकी जीभ जलने लगती। वह चम्मच उठाकर फेंक देता,

"तुम क्या मुझे जलाकर मार देना चाहती हो?"

"तुम उसे फूंक मारकर ठण्डा क्यों नहीं कर लेते, बच्चे तो हो नहीं," उसकी पत्नी शान्तिपूर्वक जवाब देती।

उसे याद था, सब याद था...

लेकिन अब मई का महीना आ चुका था। जवान सांड़ दूसरों के झुण्डों से जवान घोड़ियाँ भगाकर एक दूसरे से भिड़ते हुए हिनहिना रहे थे। चरवाहे लड़ाकों को अलग करते हुए इधर से उधर घोड़े दौड़ा रहे थे, एक दूसरे को गालियाँ दे रहे थे, कभी-कभी ख़ुद भी एक दूसरे से लड़ पड़ते थे और चाबुक से धमकाते थे। गुलसारी को इन सब बातों से कोई मतलब नहीं था। बारी-बारी से वर्षा हो रही थी और सूरज चमक रहा था, सुमों तले घास उगती जा रही थी। घास-स्थलियां हरी-भरी हो चुकी थीं और उनके ऊपर पहाड़ों के हिमाच्छादित धवल शिखर जाज्वल्यमान हो रहे थे। उस वसन्त में कुम्मैत क़दमबाज़ ने जवानी के अद्भूत काल में क़दम रखा। डेढ़ बरस के छोटी-सी पूँछवाले झबरे बछेड़े से वह छरहरे बदन का मज़बूत जवान घोड़ा हो गया था। उसकी ऊँचाई बढ़ गयी, शरीर की शिथिलता ग़ायब हो गयी और चौड़े वक्ष व तंग पुट्ठों के कारण वह त्रिभुजाकार दिखने लगा। उसका सिर भी असली क़दमबाज़ का सा हड़ीला हो गया था, नाक बीच में से उभरी हुई थी, आँखों के बीच काफ़ी दूरी थी और होंठ लोचदार थे। लेकिन उसे इससे भी कोई मतलब नहीं था। अभी उसे केवल एक ही शौक़ था, जिसके कारण उसका मालिक काफ़ी परेशान रहता था, और वह था—दौड़ने का शौक़। अपनी उम्र के अन्य घोड़ों को साथ लेकर वह बिजली की तेज़ी से भागने लगता था। न जाने कौन-सी अक्षय शक्ति उसे पहाड़ी रास्तों, ढलानों, नदियों के पथरीले किनारों, खड़ी चढ़ाइयों पर, घाटियों व दर्रों में बिना थके दौड़ने की प्रेरणा देती थी। यहाँ तक कि रात देर गये जब वह तारों भरे आकाश

---

* क़िमिज़—घोड़ी के दूध से बना एक प्रकार का पेय।

तले सोता, तो भी उसे सपने में अपने पैरों तले भागती ज़मीन दिखाई देती, अयाल और कानों में हवा की सनसनाहट और टापों की गूँज सुनाई देती।

अपने मालिक के प्रति उसका व्यवहार वैसा ही था जैसा कि हर उस चीज़ के प्रति, जो उससे सीधे वास्ता नहीं रखती थी। न वह उसे प्यार करता था, न उसके प्रति वैर-भाव रखता था, क्योंकि उसका स्वामी उसके जीवन में कोई बाधा नहीं डालता था। वह उन्हें केवल तभी गालियां देता हुआ उनके पीछे भागता था, जब वे ज़रूरत से ज़्यादा दूर निकल जाते थे। कभी-कभी मालिक क़ुम्मैत के पुट्ठे पर फंदा लगे डण्डे से मार भी देता था। ऐसे मौक़ों पर गुलसारी का सारा शरीर काँप उठता था, चोट से इतना नहीं जितना कि उसकी आकस्मिकता से, और वह और तेज़ी से भागने लगता था। यह जितनी तेज़ी से भागता था, फंदा लगा डण्डा लिये उसके पीछे पीछे सरपट घोड़ा दौड़ाते आ रहे उसके स्वामी को उतना ही ज़्यादा अच्छा लगता था। क़दमबाज़ को अपने पीछे से मालिक की प्रशंसापूर्ण आवाज़ें और उसका गाना सुनाई देते, ऐसे क्षणों में उसे अपना मालिक बहुत अच्छा लगता था और उसे गीत की धुन के साथ भागने में आनन्द आता था। वह बाद में इन गीतों को अच्छी तरह जान गया। उसके गीत विभिन्न प्रकार के होते थे: ख़ुशी के और दर्दभरे, लम्बे और छोटे, शब्दोंवाले और शब्दहीन। इसके अलावा उसे तब बड़ा अच्छा लगता था, जब मालिक घोड़ों को नमक खिलाता था। वह तख़्तों से बनी लम्बी नांदों में नमक के ढेले डाल देता था। सारा झुण्ड उन पर टूट पड़ता था, क्योंकि नमक बड़ा स्वादिष्ट लगता था। नमक के कारण ही तो गुलसारी फंसा।

एक दिन मालिक ने ख़ाली बाल्टी बजाकर घोड़ों को आवाज़ लगायी, "ले, ले, ले!" सारे घोड़े नांदों की तरफ़ भागे आये। गुलसारी अन्य घोड़ों के साथ खड़ा नमक चाट रहा था कि उसका स्वामी अपने एक सहायक के साथ हाथों में फंदा लगे डण्डे लिये झुण्ड के नज़दीक आने लगा। उसे इससे कोई मतलब नहीं था। फंदा लगे डण्डों से वे लोग सवारी के घोड़ों और दूध देनेवाली घोड़ियों को पकड़ते थे, पर उसको कभी नहीं। वह स्वतन्त्र था। एकाएक घोड़े के बालों से बना फंदा उसके सिर पर से फिसलकर उसकी गर्दन में आ अटका। गुलसारी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि माजरा क्या है, फंदे से उसे अभी कोई परेशानी नहीं हो

रही थी, इसलिए वह नमक चाटता रहा। फंदा डालने पर दूसरे घोड़े मचल उठते हैं, पिछले पैरों पर खड़े हो जाते हैं, लेकिन गुलसारी के तो कान पर जूँ भी नहीं रेंगी। अचानक उसे प्यास लगी और उसने पानी पीने नदी पर जाना चाहा। वह झुण्ड से बाहर निकलने लगा। एकाएक फंदा कस गया और उसे रुकना पड़ा। ऐसा पहले तो कभी नहीं हुआ था। गुलसारी चमक उठा, हिनहिनाया, उसकी आँखें खुली की खुली रह गयीं, फिर वह पिछली टांगों पर खड़ा हो गया। दूसरे घोड़े पलक झपकते ही तितर-बितर हो गये और वह उस पर फंदा डालकर पकड़नेवाले लोगों के आमने-सामने अकेला रह गया। उसका स्वामी आगे खड़ा था, उसके पीछे दूसरा चरवाहा और चरवाहों के बच्चे खड़े थे, जो कुछ दिन पहले आये और झुण्ड के चारों ओर घोड़े दौड़ा-दौड़ाकर उसे ज़रूरत से ज़्यादा परेशान कर चुके थे।

क़दमबाज़ भयभीत हो उठा। वह बार-बार पिछले पैरों पर खड़ा होने लगा, उसकी आँखों के आगे सूरज चिनगारियाँ छोड़ता हुआ चक्कर काटने लगा, पहाड़, धरती और लोग उसे औंधे मुँह गिरते हुए दिखाई देने लगे, एक क्षण के लिए उसकी आँखों के आगे भयावह अंधेरा छा गया, जिस पर वह अपने अगले पैरों से वार करने लगा।

पर वह जितना फड़फड़ाया, फंदा उतना ही कसता गया, उसका दम घुटने लगा, फिर वह लोगों से छूटकर भागने के बजाय उनके ऊपर उछला। लोग बिखर गये, फंदा एक क्षण के लिए ढीला पड़ गया और वह उन्हें अपने पीछे ज़मीन पर घसीटता हुआ भाग छूटा। औरतें चीखने-चिल्लाने लगीं और बच्चों को तम्बुओं में भगाने लगीं। लेकिन चरवाहे उठ खड़े होने में सफल हो गये और गुलसारी की गर्दन के इर्द-गिर्द फंदा फिर कसने लगा। इस बार वह इतना कस गया कि उसके लिए सांस लेना असम्भव हो गया। और गुलसारी चक्कर आने और दम घुटने के कारण थककर रुक गया।

उसका स्वामी रस्सी समेटता हुआ बग़ल से उसके पास आने लगा। गुलसारी उसे एक आँख से देख रहा था। मालिक के कपड़े फट गये थे और चेहरे पर खरोंचें पड़ गयी थीं। लेकिन उसकी आँखों में ग़ुस्से का नामोनिशान तक नहीं था। वह हाँफ़ रहा था और अपने फटे हुए होंठ चटखारता हुआ उसे धीरे-धीरे पुचकार रहा था,

"बस, बस, गुलसारी, डर मत, थम जा!"

उसका सहायक उसके पीछे-पीछे रस्सी बिना ढीली किये सावधानी से पास आ रहा था। अन्त में मालिक ने उसके सिर पर हाथ फेरा और बिना पलटे अपने सहायक को आवाज़ दी,

"लगाम।"

सहायक ने उसे लगाम थमा दी।

"खड़ा रह, मेरे प्यारे गुलसारी, खड़ा रह," उसका स्वामी उसे पुचकार रहा था। अपनी हथेली से क़दमबाज़ की आँखें ढककर उसने उसके सिर पर लगाम रख दी।

अब उसके मुँह में लगाम का दहाना डालना और उस पर काठी कसना बाक़ी रह गया था। जैसे ही लगाम गुलसारी के सिर पर रखी गयी, वह फड़फड़ा उठा और उसने छूटकर भागने की कोशिश की। लेकिन उसका स्वामी उसका ऊपर का होंठ पकड़ने में सफल हो गया।

"पेटी लाओ"—उसने अपने सहायक को आवाज़ दी, वह भागा आया और गुलसारी के होंठ पर पेटी रखकर उसे छड़ की मदद से रोलर की तरह घुमाने लगा।

क़दमबाज दर्द के मारे पिछले पैरों पर बैठ गया और फिर उसने बिलकुल भी विरोध नहीं किया। लोहे का ठण्डा दहाना उसके दाँतों से टकराकर खटखट करता हुआ मुँह के कोनों में जम गया। उसकी पीठ पर कुछ लादकर कस दिया गया, उसका सीना चमड़े की पट्टियों में इतने ज़ोर से जकड़ा जा रहा था कि वह लड़खड़ाने लगा। लेकिन अब इन सब बातों का कोई महत्व नहीं रह गया था। सिर्फ़ मुंह में असह्य पीड़ा हो रही थी, उसकी आँखें बाहर निकली पड़ रही थीं। न वह हिल-डुल सकता था और न ही सांस ले सकता था। उसे मालूम भी न पड़ा कि कब उसका मालिक उसके ऊपर सवार हो गया। उसे तो तभी होश आया, जब उसके होंठों पर से पेटी खोल ली गयी।

एक-दो मिनट तक वह ग़फ़लत में पड़ा, कसा और बोझ से दबा हुआ खड़ा रहा, फिर उसने कनखियों से देखा, तो एक आदमी को अपनी पीठ पर बैठा पाया। उसने भयभीत होकर भाग छूटने की कोशिश की, पर दहाना उसका मुंह चीरे डाल रहा था और आदमी की एड़ियाँ उसकी बग़लों में बड़े ज़ोर से गड़ रही थीं। क़दमबाज़ पिछली टांगों पर खड़ा हो

गया, क्रुद्ध होकर हिनहिनाने लगा, उछलने-कूदने लगा, दुलत्तियां झाड़ने लगा, उसने तनकर पीठ पर रखा भार गिराना चाहा, कूदने-फांदने लगा, लेकिन रस्सी का छोर पकड़े दूसरे घोड़े पर सवार दूसरे आदमी ने उसे नहीं छोड़ा। तब गुलसारी वृत्त में भागने लगा, उसने सोचा था कि वृत्त ख़त्म हो जायेगा और फिर वह जहाँ उसका जी चाहेगा, भाग जायेगा। वह चक्कर लगाये जा रहा था, पर वृत्त था कि ख़त्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था। उन लोगों को यही तो चाहिए था। मालिक उसे चाबुक मार-मारकर एड़ लगाता रहा। क़दमबाज़ दो बार मालिक को नीचे गिराने में सफल भी हुआ, पर वह फ़ौरन उठकर फिर उस पर सवार हो गया।

बहुत देर तक ऐसा ही होता रहा। गुलसारी का सिर घूम रहा था, चारों ओर की ज़मीन घूम रही थी, तम्बू, दूर बिखरे हुए घोड़े, पहाड़ और आकाश में बादल—सब घूमते हुए नज़र आ रहे थे। आख़िर वह थक गया और क़दम-क़दम चलने लगा। उसे बहुत तेज प्यास लगी थी।

लेकिन उसे पानी नहीं दिया गया। उसे शाम को बिना काठी खोले, तंग थोड़ी ढीली करके खूंटे से बांधकर छोड़ दिया गया। लगाम काठी के उभड़े अग्रभाग पर इतना कसकर लपेट दी गयी थी कि उसको अपना सिर सीधा ताने रखना पड़ रहा था और इस स्थिति में वह ज़मीन पर लेट नहीं सकता था। रक़ाबें भी ऊपर उठाकर काठी के उभड़े अग्रभाग में अटका दी गयी थीं। वह इसी हालत में सारी रात खड़ा रहा। उस पर जो अनसोची बीती, उससे हताश होकर वह शान्तिपूर्वक खड़ा रहा। दहाना उसे अभी भी परेशान कर रहा था, उसके थोड़े-से हिलने-डुलने से बहुत तेज़ पीड़ा होती थी और मुंह में लोहे का स्वाद भी बुरा लग रहा था। उसके मुंह के कोने चिरकर सूज गये थे। चमड़े की पट्टियों की रगड़ से बग़लों में आयी खरोंचों में जलन हो रही थी। काठी के कारण उसकी पीठ दुख रही थी। वह प्यास के मारे मरा जा रहा था। उसे नदी का कलकल सुनाई दे रहा था और इसीलिए उसकी प्यास और बढ़ती जा रही थी। हमेशा की तरह नदी के दूसरे किनारे पर घोड़ों के झुण्ड चर रहे थे। उसे उनकी टापें, हिनहिनाहट और रात्रिकालीन चरवाहों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। लोग तम्बुओं के पास अलाव जलाये बैठे आराम कर रहे थे। बच्चे कुत्तों को छेड़ते हुए उनके भौंकने की नक़ल कर रहे थे। और वह खड़ा था, किसी को उसकी परवाह नहीं थी।

फिर चांद निकल ग्राया। पहाड़ियाँ अंधकार के साम्राज्य से मुक्त होकर पीली-सी चांदनी में हिलने-डुलने-सी लगीं। तारे धरती के निकट ग्राते जा रहे थे, उनकी चमक तेज़ होती जा रही थी। वह एक ही स्थान पर बंधा शान्तिपूर्वक खड़ा था ग्रौर उसे कोई ढूंढ़ रहा था। उसे उसी क़ुम्मैत बछेड़ी की हिनहिनाहट सुनाई दी, जिसके साथ वह बड़ा हुग्रा था ग्रौर जिससे वह कभी जुदा नहीं हुग्रा था। उसके माथे पर सफ़ेद तारे का निशान था। उसे गुलसारी के साथ दौड़ने में बड़ा मज़ा ग्राता था। सांड़ उसके पीछे पड़ने लगे थे, पर वह उनकी ग्रोर ध्यान नहीं देती थी ग्रौर उसके साथ उनसे दूर भाग निकलती थी। वह ग्रभी पूरी घोड़ी नहीं हुई थी ग्रौर वह भी ग्रभी इतना बड़ा नहीं हुग्रा था कि वह सब्र कर सके, जिसकी फ़िराक़ में दूसरे सांड़ रहते थे।

उसे उसकी हिनहिनाहट बहुत पास सुनाई दी। हाँ, वही थी, वह उसकी ग्रावाज़ पहचान गया था। वह उसे जवाब देना चाहता था, पर ग्रपना सूजा ग्रौर चिरा मुंह खोलते डरता था। ग्रसह्य पीड़ा हो रही थी। ग्राख़िर उसी ने उसे ढूंढ़ लिया। वह धीरे-धीरे भागती हुई उसके पास ग्रायी। चांदनी में उसके माथे का सफ़ेद तारा चमक रहा था। उसकी पूंछ ग्रौर टांगें गीली थीं। वह नदी पार करके ग्रायी थी ग्रौर ग्रपने साथ पानी की शीतल सुगंध लायी थी। वह ग्रपने तपते हुए कोमल होंठों से उसका बदन स्पर्श करती हुई उसे सूंघने लगी। वह प्यार से फुफकारती हुई उसे ग्रपने साथ चलने को कहने लगी। लेकिन वह ग्रपनी जगह से हिल भी न सका। तब वह उसकी गर्दन पर ग्रपना सिर रखकर ग्रपने मुँह से उसकी ग्रयाल सहलाने लगी। उसे भी उसकी गर्दन पर सिर रखकर ग्रयाल सहलानी चाहिए थी। पर वह उसके प्यार का जवाब न दे सका। वह हिल तक नहीं सकता था। उसे प्यास लगी थी। काश, वह उसकी प्यास बुझा पाती! वह जब भागकर दूर जाने लगी, तो वह उसे तब तक देखता रहा, जब तक उसकी छाया नदी पार के ग्रंधकार में विलीन नहीं हो गयी। वह ग्रायी ग्रौर चली गयी। उसकी ग्रांखों से ग्रांसू गिरने लगे। ग्रांसुग्रों की मोटी-मोटी बूंदें उसके मुँह पर से ढुलकती हुई निःशब्द उसके पैरों के पास गिर रही थीं। क़दमबाज़ ग्रपने जीवन में पहली बार रो रहा था।

उसका स्वामी पौ फटे उसके पास ग्राया। उसने वसन्तकालीन पहाड़ियों पर दृष्टि डाली, ग्रंगड़ाई ली, मुस्कराया, किन्तु शरीर की रग रग दुखने के कारण कराह उठा।

"वाह रे, गुलसारी! ख़ूब घसीटा तूने कल मुझे। क्या हुग्रा? ठिठुर गया? ग्ररे, तू तो ठण्ड के मारे सिकुड़ा जा रहा है।"

उसने क़दमबाज़ की गर्दन थपथपायी ग्रौर उसे प्यार से पुचकारते हुए कोई मज़ाकिया बात करने लगा। गुलसारी भला कैसे जान सकता था कि यह ग्रादमी क्या कह रहा है? तानाबाय कह रहा था,

"तू नाराज़ मत हो, मेरे दोस्त। ग्राख़िर सारी ज़िन्दगी तो तू ग्रावारागर्दी कर नहीं सकता था। ग्रादत पड़ जायेगी, तो सब ठीक हो जायेगा। तुझे जो तकलीफ़ उठानी पड़ी, उसके बग़ैर काम चल ही नहीं सकता था। मेरे भाई, इसी का नाम ज़िन्दगी है, चारों पैरों में नाल जड़ देती है। लेकिन इसके बाद कम-से-कम रास्ते के हर पत्थर से टकराकर गिरेगा तो नहीं। भूख से मरा जा रहा होगा, क्यों? पानी पियेगा? मैं जानता हूँ..."

वह घोड़े को नदी पर ले गया। उसने उसकी लगाम खोल दी ग्रौर उसके घायल मुंह में से सावधानीपूर्वक दहाना निकाल दिया। गुलसारी ने कांपते हुए पानी में मुँह डाला, ठण्ड के कारण उसकी ग्रांखों के ग्रागे ग्रंधेरा छा गया। ग्रहा, कितना स्वादिष्ट पानी था ग्रौर इसके लिए वह ग्रपने स्वामी का कितना ग्राभारी था!

वह शीघ्र ही काठी का इतना ग्रादी हो गया कि उससे उसे कोई परेशानी महसूस नहीं होती। सवार को ग्रपने ऊपर बिठाकर ले जाना उसे ग्रासान लगने लगा ग्रौर इसमें ग्रानन्द ग्राने लगा। वह ग्रपनी लयबद्ध क़दमचाल से रास्तों पर खटखट करता हुग्रा लगातार ग्रागे भागता चला जाना चाहता था, लेकिन उसका मालिक उसे हमेशा रोक देता था। वह सवार को लेकर इतनी तेज़ी से ग्रौर सहजता से दौड़ता था कि लोग वाह-वाह कर उठते थे।

"इसकी पीठ पर पानी से भरी बाल्टी रखकर देखो, एक बूंद भी नहीं छलकेगी!"

"शुक्रिया, तुमने इसे बहुत ग्रच्छी तरह सधाया। ग्रब देखना, तुम्हारे क़दमबाज़ का सितारा कितना बुलंद होता है!" पुराने चरवाहे बूढ़े तोगोंई ने तानाबाय से कहा।

तीन

पुरानी घोड़ागाड़ी के पहिये चरमराते हुए सुनसान रास्ते पर धीरे-धीरे चल रहे थे। बीच-बीच में उनका चरमराना बन्द हो जाता था। क़दमबाज़ कमज़ोरी के कारण रुक जाता था। तब वहाँ छाये घोर सन्नाटे में घोड़े के दिल की मन्द धड़कनें उसके कानों में गूंजने लगतीं: धक-धक, धक-धक, धक-धक...

बूढ़ा तानाबाय घोड़े को दम लेने की फ़ुरसत देता और फिर लगाम अपने हाथों में ले लेता,

"चल, गुलसारी, चल, शाम हो रही है।"

वे इसी तरह कोई डेढ़ घंटे तक घिसटते रहे, जब तक कि क़दमबाज़ बिलकुल न रुक गया। वह गाड़ी को और आगे नहीं खींच पाया।

तानाबाय फिर हड़बड़ाकर घोड़े का चक्कर लगाने लगा,

"क्या हुआ, गुलसारी? देख, रात हुई जा रही है!"

लेकिन घोड़ा उसकी बात न समझ सका। वह गाड़ी में जुता हुआ, अपने लिए अब बहुत वज़नी हुआ सिर हिलाता खड़ा रहा। उसके पैर जवाब देने लगे थे। उसके दिल की धड़कनों का ज़ोरदार शोर उसके कानों में बराबर गूंज रहा था: धक-धक, धक-धक, धक-धक।

"मुझे माफ़ कर दे, गुलसारी," तानाबाय ने कहा। "मुझे उसी वक़्त समझ जाना चाहिए था। भाड़ में जाये यह गाड़ी और तेरा साज़, बस किसी तरह तुझे घर तक लेकर पहुँच जाऊँ।"

उसने अपना भेड़ की खाल का कोट ज़मीन पर पटक दिया और फ़ुर्ती से घोड़े का साज़ खोलने लगा। उसने उसे बमों से बाहर निकालकर सारा साज़ गाड़ी में फेंक दिया।

"बस," उसने कोट पहनकर घोड़े की ओर देखकर कहा। बिना साज़ के अत्यन्त बड़े सिरवाला घोड़ा संध्याकालीन ठण्डी स्तेपी में खड़ा भूत के समान लग रहा था, "हाय, अल्लाह, तू क्या से क्या हो गया, गुलसारी?" तानाबाय फुसफुसाया। "अगर तोर्गोई तुझे अब देखता, तो क़ब्र में भी करवटें बदलने लगता..."

उसने क़दमबाज़ की लगाम खींची और वे फिर धीरे-धीरे सड़क पर चलने लगे। एक बूढ़ा घोड़ा और एक बूढ़ा आदमी। छोड़ी हुई गाड़ी पीछे रह गयी और आगे पश्चिम में रास्ते पर नीललोहित अंधेरा छाने लगा। रात पहाड़ियों को अपनी आग़ोश में लेती हुई, क्षितिज को ढकती हुई स्तेपी में निःशब्द छाने लगी।

तानाबाय चलते-चलते इतने वर्षों में क़दमबाज़ से सम्बन्धित सारी बातें स्मरण करता रहा। लोगों के बारे में सोचते हुए एक कटु मुस्कान उसके चेहरे पर फैल गयी; "हम सब एक से हैं। हम सब एक दूसरे के बारे में अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में सोचते हैं, जब या तो कोई सख़्त बीमार हो जाता है या मर जाता है। तभी हमें अचानक स्पष्ट रूप से एहसास होता है कि हमने किसे खो दिया, वह कैसा आदमी था, उसमें क्या ख़ूबियां थीं और उसने क्या-क्या काम किये। फिर एक मूक प्राणी के बारे में तो कहा ही क्या जा सकता है? कोई ऐसा आदमी है जिसने गुलसारी पर सवारी न की हो? कोई नहीं! और जब वह बूढ़ा हो गया, तो उसे कोई नहीं पूछता। अब बेचारा मुश्किल से पैर घसीट पा रहा है। और था कितना बढ़िया घोड़ा!..."

वह फिर हैरान होकर सोचने लगा कि उसे उन बीते दिनों को याद किये हुए कितना समय गुज़र गया है। वह सब, जो एक ज़माने में उसके साथ हुआ था, उस की आंखों के आगे घूम गया। लगता है, ऐसी कोई बात नहीं होती, जिसे आदमी पूरी तरह भूल जाये। पहले वह अपने अतीत के बारे में बहुत कम सोचता था, या सच कहा जाये, तो वह अपने को सोचने ही नहीं देता था, लेकिन अपने बेटे व बहू के साथ हुई बातचीत के बाद अब रात में रास्ते में मरणासन्न क़दमबाज़ के साथ चलते हुए उन बीते वर्षों की याद आते ही उसके दिल में एक टीस उठी, वह उदास हो उठा और वे उसकी आंखों के आगे साकार हो उठे।

वह इसी तरह अपने विचारों में डूबा हुआ चला जा रहा था, क़दमबाज़ उसके पीछे-पीछे घिसटता हुआ चल रहा था और लगाम अधिक बोझिल होती जा रही थी। जब बूढ़े का एक हाथ सो जाता, तो वह लगाम को दूसरे कंधे पर डालकर क़दमबाज़ को अपने पीछे खींचने लगता। फिर वह थकान महसूस करने लगा और उसने क़दमबाज़ को थोड़ा सुस्ताने दिया। कुछ सोचकर उसने घोड़े की लगाम खोल दी।

3—3736

"चल, तू जैसे भी चल सके, आगे चल। मैं तेरे पीछे-पीछे चलूंगा। मैं तुझे छोड़कर नहीं जाऊंगा," उसने कहा। "चल, चल, धीरे-धीरे चल।"

अब क़दमबाज़ आगे चल रहा था और तानाबाय अपने कंधे पर लगाम डाले उसके पीछे चल रहा था। वह लगाम कभी नहीं फेंकेगा। जब गुलसारी रुकता, तो तानाबाय उसके दम लेने तक इन्तज़ार करता और वे फिर धीरे-धीरे आगे चलने लगते। एक बूढ़ा घोड़ा और एक बूढ़ा आदमी।

तानाबाय को जब याद आया कि कैसे गुलसारी इसी रास्ते से अपने पीछे धूल के ग़ुबार छोड़ता हुआ सरपट भागता निकल जाता था, तो उसके चेहरे पर एक विषादपूर्ण मुस्कान फैल गयी। गड़रिये कहा करते थे कि वे काफ़ी दूर से धूल के ग़ुबार उड़ते देखकर ही समझ जाते थे — क़दमबाज़ आ रहा है। उसकी टापों से उड़ी धूल स्तेपी में एक सफ़ेद रेखा बनाती चली जाती थी और जिस दिन हवा न चलती होती, उस दिन वह रास्ते के ऊपर किसी जेट वायुयान द्वारा छोड़ी लकीर-सी दिखाई देती थी। ऐसे में कोई चरवाहा हथेली की ओट से देखते हुए कहता, "यह गुलसारी आ रहा है, गुलसारी!" और उसे उस भाग्यशाली आदमी से ईर्ष्या होने लगती, जो लू के थपेड़े खाता हुआ उस घोड़े पर हवा से बातें करता जा रहा होता। ऐसे मशहूर क़दमबाज़ पर सवारी करना किसी किर्गीज़ के लिए बड़े सम्मान की बात समझी जाती थी।

गुलसारी ने सामूहिक-फ़ार्म के कितने अध्यक्षों को बदलते देखा। वे सभी तरह के थे: बुद्धिमान और स्वेच्छाचारी, ईमानदार और बेईमान, लेकिन उन सभी ने अपने कार्य-काल के पहले से अन्तिम दिन तक उस पर सवारी की थी। "अब कहाँ हैं वे? क्या वे उस गुलसारी को कभी याद भी करते हैं, जो उन्हें सुबह से शाम तक ढोता था?" तानाबाय सोच रहा था।

आख़िर वे खड्ड पर बने पुल तक पहुँच गये। वहाँ वे फिर रुक गये।

क़दमबाज़ ज़मीन पर लेटने के लिए अपने घुटने टिकाने लगा, किन्तु तानाबाय उसे ऐसा करने नहीं दे सकता था, क्योंकि फिर उसे किसी प्रकार उठाया नहीं जा सकता था।

"उठ, उठ!" वह चिल्लाया और उसने लगाम से घोड़े के सिर पर मारा। फिर मारने पर दुःखी होकर चिल्लाया, "तेरी समझ में नहीं आता क्या? मरना चाहता है? नहीं, तुझे कभी नहीं मरने दूँगा! उठ, उठ, खड़ा हो जा!" उसने घोड़े की अयाल पकड़कर खींची।

गुलसारी ने बड़ी मुश्किल से पैर सीधे किये और बुरी तरह कराहने लगा। हालांकि अंधेरा हो रहा था, किन्तु तानाबाय को घोड़े की आँखों में झांकने का साहस नहीं हुआ। उसने घोड़े के बायें बाज़ू पर हाथ फेरा, छूकर देखा और फिर कान सटाकर सुनने लगा। वहाँ, घोड़े के सीने में उसका दिल सेवार में फंसे पन-चक्की के पहिये की तरह रुक-रुककर, छप-छप करता धड़क रहा था। वह तब तक इसी तरह घोड़े के पास झुका हुआ खड़ा रहा, जब तक कि उसकी कमर न दुखने लगी। फिर उसने कमर सीधी की, सिर हिलाया और एक ठण्डी सांस लेकर फ़ैसला किया कि उसे अब पुल पार करके खड्ड के सहारे-सहारे जा रहे रास्ते पर चलने की जोखिम उठानी पड़ेगी। यह रास्ता पहाड़ों से होकर निकलता था और इस तरह वह जल्दी से जल्दी घर पहुँच सकता था। वैसे रात में रास्ता भूलने का डर रहता है, पर तानाबाय को अपने आप पर भरोसा था, क्योंकि वह इस जगह को काफ़ी अच्छी तरह जानता था, बस घोड़ा जवाब न दे दे।

बूढ़ा खड़ा-खड़ा यह सोच ही रहा था कि पीछे से आती हुई ट्रक की हेड-लाइटें चमकती दिखाई दीं। वे दो चमकते गोलों की तरह एकाएक अंधकार में से तैरती हुई बाहर निकलीं और अपनी लम्बी, झूलती हुई किरणों से मार्ग को स्पर्श करती हुई तेज़ी से उसके निकट आने लगीं। तानाबाय क़दमबाज़ के साथ पुल के पास खड़ा था। ट्रक उन्हें कोई मदद नहीं दे सकती थी, फिर भी तानाबाय उसका इन्तज़ार करने लगा। वह अकारण, यूँ ही इन्तज़ार कर रहा था। "कम-से-कम एक गाड़ी तो आयी" उसने सोचा। उसे इसी का सन्तोष था कि आख़िर कोई तो रास्ते में दिखाई पड़ा। ट्रक की हेड-लाइटें अपने शक्तिशाली प्रकाश-पुंज से उसकी आँखें चौंधियाती हुई निकल गयीं, उसने उन्हें हाथ से ढक लिया।

ट्रक में बैठे दो आदमी बड़ी हैरानी से पुल के पास खड़े बूढ़े आदमी और बिना काठी और लगाम के मरियल घोड़े को देख रहे थे। वह घोड़ा घोड़ा नहीं, बल्कि किसी आदमी के पीछे लग गया कुत्ता लग रहा था। उन पर सीधी पड़ती प्रखर किरणों के कारण वे एक क्षण के लिए एकाएक अपार्थिव श्वेत आकृतियों में बदल गये।

"अजीब बात है, इतनी रात गये यह यहाँ क्या कर रहा है?" चालक के साथ बैठे कनटोपीवाले लम्बे युवक ने कहा।

"हमने जो गाड़ी देखी थी, वह इसी की होगी," कहते हुए चालक ने ट्रक रोक दी। "क्या हुआ, बुढ़ऊ?" उसने कैबिन से सिर निकालकर आवाज़ दी। "क्या रास्ते में गाड़ी तुम्हीं ने छोड़ी है?"

"हाँ, मैंने," तानाबाय ने जवाब दिया।

"तो यह बात है। हमने देखा, पुरानी घोड़ागाड़ी रास्ते में पड़ी है। चारों ओर कोई नज़र नहीं आया। हमने सोचा, साज़ ही उठा लें, पर वह भी किसी काम का नहीं था।"

तानाबाय मौन रहा।

चालक ट्रक से उतरकर दो-तीन क़दम दूर जाकर सड़क पर लघुशंका करने लगा। वह जब बूढ़े के पास से गुज़रा था, उसे वोद्का की बड़ी तेज़ भभक महसूस हुई थी।

"हुआ क्या?" उसने मुड़कर पूछा।

"घोड़ा गाड़ी को खींच नहीं पा रहा था, वह बीमार है और बूढ़ा भी हो चुका है।"

"हूँ। फिर अब कहाँ जा रहे हो?"

"घर। सारीगोऊसी दर्रे में।"

"बाप रे बाप, पहाड़ में?" चालक ने कहा। "मैं उधर नहीं जा रहा हूँ। चाहो तो बैठो गाड़ी में, तुम्हें सरकारी फ़ार्म तक छोड़ दूँगा, वहाँ से कल चले जाना।"

"शुक्रिया। मेरे साथ मेरा घोड़ा भी है।"

"यह हड्डियों का ढांचा? अरे, भाड़ में जाने दो इसे, घाटी में धक्का देकर इससे पिण्ड छुड़ाओ, कम-से-कम कौवों का ही पेट भरेगा। चाहो, तो मदद करें।"

"अपना रास्ता नापो," तानाबाय ने गुस्से में कहा।

"ख़ैर, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी," चालक ने खीसें निपोड़ीं और धड़ाक-से कैबिन का दरवाज़ा बन्द करते हुए अपने साथी से कहा, "बुढ़ऊ का दिमाग़ ख़राब हो गया है!"

ट्रक अपने साथ धुंधला प्रकाश समेटती हुई वहाँ से रवाना हो गयी। ट्रक की पीछे की बत्तियों की लाल रोशनी से आलोकित खड्ड का पुल चरमरा उठा।

"तुमने उसका मज़ाक़ क्यों उड़ाया? कल अगर तुम पर भी ऐसी बीते तो?" कनटोपीवाले लड़के ने चालक से पुल पार करते ही कहा।

"बकवास है..." चालक ने जम्हाई लेते हुए मोड़ पर गाड़ी मोड़ी। "मैंने न जाने क्या-क्या देखा है। मैंने उसे काम की सलाह दी थी। उस मरियल घोड़े में ऐसी क्या ख़ूबी है! ये बाबा आदम के ज़माने की बातें हैं। भई, अब तो हर जगह मशीनों का बोलबाला है। हर जगह मशीनें काम करती हैं। युद्ध में भी। और इस तरह के बुड्ढों और घोड़ों के दिन अब ढल चुके हैं।"

"तुम हो जानवर ही!" युवक ने कहा।

"मैं तो सब पर थूकता हूँ," चालक ने जवाब दिया।

ट्रक के जाने के बाद जब चारों ओर सब रात के अंधकार में डूब गया और आँखें फिर अंधेरे की आदी हो गयीं, तो तानाबाय ने क़दमबाज़ को हांका,

"चल, भई, चल!"

पुल पार करने के बाद वह घोड़े को राजपथ से उतारकर पगडण्डी पर ले आया। वे खड्ड पर छाये अंधेरे में मुश्किल से दिखाई पड़ रही पगडण्डी पर धीरे-धीरे चल रहे थे। चांद ने पहाड़ियों के पीछे से झांकना शुरू किया ही था। शीतल आकाश में झिलमिलाते उदास तारे उसके निकलने की बाट जोह रहे थे।

चार

जिस वर्ष गुलसारी को सधाया गया था, उस वर्ष घोड़ों को शरत्कालीन चरागाहों में देर तक रखा गया था। शरद ऋतु असाधारण रूप से देर तक रही और सर्दी हल्की पड़ी, हिमपात अकसर होता, पर बर्फ़ शीघ्र पिघल जाती, चारा पर्याप्त मात्रा में मिलता रहा। वसन्त में घोड़ों के झुण्डों को फिर तराई में उतार लाया गया और स्तेपी के पुष्पित होते ही उन्हें नीचे ले जाया जाने लगा।

यह तानाबाय के जीवन में शायद युद्धोत्तर काल का सबसे अच्छा समय था। बुढ़ापे का भूरा घोड़ा अभी शृंग-पथ के पार उसकी प्रतीक्षा कर रहा था, हाँ, वह अधिक दूर नहीं था। तानाबाय अभी जवान कुम्मैत क़दम-

बाज़ पर सवारी कर रहा था। अगर यह क़दमबाज़ उसे कुछ साल बाद मिलता, तो तानाबाय को शायद ही उस पुरुष-सुलभ उल्लास की अनुभूति हो पाती, जिसे वह इस समय गुलसारी की सवारी से प्राप्त कर रहा था। वैसे तानाबाय कभी-कभी लोगों के सामने डींग मारने से बाज़ नहीं आता था। फिर भला सरपट भागते क़दमबाज़ पर सवारी करते हुए शान दिखाये बग़ैर कैसे रहा जा सकता था! गुलसारी भी इस बात को अच्छी तरह जानता था। ख़ास तौर से उस समय जब तानाबाय खेतों से होकर गाँव जाते हुए रास्ते में काम पर जाती हुई स्त्रियों के झुण्ड के पास से गुज़रता। वह उन्हें दूर से देखकर ही अपनी काठी पर तनकर बैठ जाता, उस की नस-नस तन जाती और इस उल्लास से घोड़ा भी अछूता न रहता। गुलसारी अपनी पूँछ लगभग पीठ तक उठा लेता और उसकी अयाल हवा में सरसराती हुई उड़ने लगती। वह फुफकारता, बल खाता हुआ सवार को तेज़ी से लिये निकल जाता। सफ़ेद व लाल रूमाल बाँधे हुए स्त्रियाँ रास्ते के किनारों पर हटकर घुटनों तक गेहूँ के हरे-भरे पौधों में जा खड़ी होतीं। वे सम्मोहित-सी खड़ी रह जातीं, सब एक साथ मुड़कर देखतीं, तो उनके मुस्कराते चेहरों, मुस्कराती आँखों और सफ़ेद दांतों की झलक दिखाई दे जाती।

"ऐ, चरवाहे! ज़रा रुको तो सही!"

और फिर वे खिलखिलाती हुई पीछे से आवाज़ देतीं,

"देखो, कभी न कभी तो पकड़ ही लेंगे, बहुत बुरे फंसोगे!"

वास्तव में कभी-कभी वे एक दूसरे का हाथ थामकर उसका रास्ता रोक देतीं। तब उसका हाल देखते ही बनता! औरतों को छेड़छाड़ करने में बड़ा मज़ा आता ही है। वे तानाबाय को खींचकर काठी पर से उतार लेतीं और उसके हाथ से चाबुक छीनते हुए ठहाके लगातीं:

"बताओ, हमारे लिए क़िमिज़ कब लाओगे?"

"हम यहाँ सुबह से शाम तक खेत में खटती रहती हैं और तुम अपने क़दमबाज़ पर घूमते रहते हो!"

"तुम्हें मना कौन करता है? तुम भी चरवाहों का काम संभाल लो। बस अपने पतियों से कह दो कि वे अपने लिए दूसरी ढूंढ़ लें। पहाड़ों में ठण्ड के मारे तुम्हारी हालत ख़राब हो जायेगी।"

"अच्छा," वे कहतीं और उससे फिर छेड़छाड़ करने लगतीं।

लेकिन तानाबाय ने किसी को कभी भी क़दमबाज़ पर सवारी नहीं करायी। यहाँ तक कि उस स्त्री को भी नहीं, जिसको देखते ही उसका दिल धड़कने लगता था और वह घोड़े को क़दम-क़दम चलाने लगता था। उसने भी कभी उसके घोड़े पर सवारी नहीं की थी। शायद वह सवारी करना भी नहीं चाहती थी।

उस वर्ष तानाबाय को लेखा-परीक्षण समिति का सदस्य चुना गया था। उसे अकसर काम से गाँव जाना पड़ता था और वह लगभग हर बार इस स्त्री से मिलता था। वह कई बार दफ़्तर से ग़ुस्से में भरा निकलता। इसका पता गुलसारी को उसकी आँखों, आवाज़ और उसके हाथों की हरकत से चल जाता था। लेकिन उस स्त्री को देखते ही तानाबाय नरम पड़ जाता था।

"अरे, अरे, धीरे चल, भई, कहाँ भागा जा रहा है!" वह जोशीले क़दमबाज़ को पुचकारते हुए शान्त करता और उस स्त्री के पास पहुँचकर उसे क़दम-क़दम चलाने लगता।

वे दबी आवाज़ में कुछ बातें करते और कभी-कभी बस मौन चलते रहते। गुलसारी अपने स्वामी के दिल से बोझ उतरता, उसकी आवाज़ में प्यार उमड़ता और उसके हाथों का स्पर्श अधिक कोमल होता महसूस करता। इसीलिए उसे रास्ते में इस स्त्री का मिलना बड़ा अच्छा लगता था।

भला घोड़ा कैसे जान सकता था कि सामूहिक फ़ार्म में आजकल तंगी है, कि कर्मचारियों को श्रम-दिन के लिए लगभग नहीं के बराबर पारिश्रमिक मिल रहा है, कि लेखा-परीक्षण समिति का सदस्य तानाबाय बकासोव दफ़्तर में बाल की खाल खींचते हुए यही पूछता रहता है कि ऐसा क्यों हो रहा है और आख़िर कब उनकी नयी ज़िन्दगी शुरू होगी, जब वे सरकार को भी लाभ पहुँचा सकें और अपने लिए भी कुछ कमा सकें।

पिछले वर्ष उनके यहाँ फ़सल ख़राब हुई थी, चारे की कमी रही थी। इस वर्ष उन्हें अपने क्षेत्र की इज़्ज़त बनाये रखने के लिए, अपने पड़ोसियों के लिए कोटे से ज़्यादा उत्पादित अनाज और पशु सरकार को देने पड़े थे। आगे क्या होनेवाला है और किसान क्या आशा रखें, कोई नहीं जानता था। समय बीतता जा रहा था, युद्ध की यादें अब धुंधली पड़ने लगी

थीं, लेकिन लोगों को पहले की ही तरह सागबाड़ी में सब्ज़ी वगैरह उगाकर और सामूहिक फ़ार्म के खेतों से कुछ चुराकर गुज़र करनी पड़ रही थी। सामूहिक फ़ार्म के पास धन नहीं था। उन्हें अनाज, दूध, गोश्त आदि नुक़सान उठाकर सरकार को देना पड़ रहा था। गर्मियों में पशुधन में वृद्धि होती, लेकिन सर्दियों में सारे किये कराये पर पानी फिर जाता, पशु भूख और ठण्ड से मरने लगते। उन्हें जल्दी से जल्दी भेड़ों के लिए बाड़े, गोशालाएँ और चारे के गोदाम बनाने थे, पर इमारती सामान ढूँढ़े नहीं मिल रहा था और न ही कोई उसे दिलाने का आश्वासन दे सकता था। और युद्ध के दौरान रिहायशी घरों की हालत कितनी ख़राब हो चुकी थी! नये घर केवल उन्हीं के बने थे, जो ज्यादातर खुले बाज़ार में पशु और आलू बेचा करते थे। ऐसे ही लोगों की तूती बोलती थी और वे इमारती सामान भी इधर-उधर से ले आते थे।

"नहीं, साथियो, ऐसा नहीं होना चाहिए, इसमें कुछ गड़बड़ है, हम ज़रूर कोई न कोई गम्भीर ग़लती कर रहे हैं" तानाबाय कहता। "मुझे विश्वास नहीं होता कि सब इस ढंग से होना चाहिए। या तो हम काम करने का तरीक़ा भूल गये हैं, या फिर आप हमें ठीक रास्ते पर नहीं ले जा रहे हैं।"

"क्या गड़बड़ हो रही है? क्या ग़लत कर रहे हैं?" लेखापाल उसे काग़ज़ात थमाते हुए कहता। "यह रही योजना... यह है, जो हमें मिला, यह है, जो हमने बेचा, यह देय है, यह अदेय और यह रोकड़-बाक़ी है। फ़ायदा नहीं है, सिर्फ़ नुक़सान है। तुम और क्या चाहते हो? पहले इसे समझ लो। क्या तुम अकेले ही कम्युनिस्ट हो और हम सब जनता के दुश्मन हैं?"

दूसरे लोग बोलने लगते, बहस छिड़ जाती, शोर मचने लगता और तानाबाय अपना सिर हाथों में दबाये निराशाग्रस्त होकर सोचने लगता कि आख़िर यह हो क्या रहा है। वह सामूहिक फ़ार्म के लिए केवल इसीलिए दुखी नहीं होता था कि वह उसमें काम करता था, इसके कुछ अन्य विशेष कारण भी थे। ऐसे लोग भी थे, जिनके साथ तानाबाय को काफ़ी अरसे से हिसाब करना बाक़ी था। वह जानता था कि अब वे लोग पीठ पीछे उसकी हंसी उड़ाते हैं, उसे देख उससे नज़रें मिलाकर चुनौती देते हैं: क्यों, क्या हाल हैं? क्या फिर कुलकों को बेदख़ल करने का

इरादा है? लेकिन हमसे अब क्या तलब करोगे। हम तो बहुत छोटे आदमी जो हैं। आख़िर क्यों तुम्हें मौत नहीं आयी लड़ाई में?..

और वह उनकी तरफ़ ऐसी नज़रों से देखता, मानो कह रहा हो, "ज़रा ठहरो, सूअरो, हर हालत में होगा वही जैसा हम चाहते हैं!" हालाँकि ये लोग ग़ैर नहीं, अपने ही थे। उसका सौतेला भाई कुलुबाय, जो बूढ़ा हो चुका था और युद्ध से पहले साइबेरिया में सात साल की जेल काट चुका था। उसके सारे बेटे अपने बाप पर गये हैं, तानाबाय से घोर घृणा करते हैं। आख़िर वे उसे चाहने भी क्यों लगें? शायद उनके बच्चे भी तानाबाय के वंशजों से नफ़रत करते रहेंगे। उनके ऐसा करने के कारण भी हैं। हालाँकि बात बहुत पुरानी हो चुकी थी, पर बुरा लोगों को हमेशा याद रहता है। क्या उसे क़ुलुबाय के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए था? क्या वह महज़ एक अच्छा मालिक, मध्यवर्गी किसान नहीं था? फिर रिश्ते का मामला जो था। कुलुबाय उसके पिता की बड़ी पत्नी से पैदा हुआ था और वह—छोटी पत्नी से, लेकिन किर्गीज़ों में तो ऐसे भाई एक ही कोख से पैदा हुए माने जाते हैं। यानी उसने अपने सगे भाई पर हाथ उठाया था। उस वक़्त कितनी बातें हुई थीं इस बारे में! अब बेशक जो जैसा चाहे, वैसा सोच सकता है। लेकिन तब? क्या उसने ऐसा सामूहिक फ़ार्म के हित के लिए नहीं किया था? लेकिन क्या ऐसा करना ज़रूरी था? पहले उसे इसमें कभी शक नहीं होता था, लेकिन युद्ध के बाद कभी-कभी वह सोचने लगता था कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। क्या उसने इस कारण सामूहिक फ़ार्म के और अपने व्यर्थ शत्रु नहीं खड़े कर लिये?

"अरे, तानाबाय बैठे क्यों हो, होश में आओ," लोग उसे बातचीत में फिर से घसीटते हुए कहते। और फिर वही बातें शुरू हो जातीं: सर्दियों में सारी खाद खेतों में ले जानी है, घर-घर जाकर इकट्ठा करनी होगी। गाड़ियों के पहिये नहीं हैं—यानी उन्हें बनाने के लिए लकड़ी और लोहा ख़रीदने होंगे, उसके लिए पैसे कहाँ से आयेंगे, क्या उन्हें क़र्ज़ मिल सकेगा, किस चीज़ की ज़मानत पर देंगे? बैंक सिर्फ़ उनके ज़बानी वादों पर उधार नहीं देगा। पुरानी नालियों की मरम्मत करनी है, नयी खोदनी हैं, काम बड़ा दुष्कर है। सर्दियों में लोग काम नहीं करना चाहते,

ज़मीन बर्फ़ में जकड़ी होती है, उसे तोड़ना मुश्किल होता है। वसन्त में यह काम पूरा हो नहीं सकता – बोवाई करनी होगी, भेड़ें ब्याएंगी, निराई करनी होगी, और उसके बाद घास की कटाई.... भेड़ों का क्या होगा? उनके मेमनों के लिए शेड कहाँ हैं? डेयरी की हालत भी कम ख़राब नहीं है। उसकी छत गल चुकी है, चारे की कमी है, ग्वालिनें काम नहीं करना चाहतीं। सुबह से रात तक खटती हैं, लेकिन उन्हें मिलता क्या है? इसके अलावा और कितनी समस्याएँ और कमियाँ हैं? कभी कभी तो सोचकर ही डर लगने लगता है।

लेकिन फिर भी वे साहस करके पार्टी मीटिंगों में, प्रबन्ध-समिति की मीटिंगों में इन समस्याओं के बारे में दुबारा विचार-विमर्श करते। चोरो अध्यक्ष था। तानाबाय उसकी सही क़ीमत बाद में ही समझा। आलोचना करना बड़ा आसान होता है। तानाबाय केवल घोड़ों के झुण्ड के लिए ही उत्तरदायी था, जब कि चोरो – सामूहिक फ़ार्म के सारे लोगों और उसकी सारी सम्पत्ति के लिए। हाँ, चोरो वास्तव में बड़ा तगड़ा आदमी था। जब ऐसा लग रहा था कि सामूहिक फ़ार्म बरबाद हो जायेगा, ज़िला केन्द्र में उसे आड़े हाथों लिया जा रहा था और सामूहिक फ़ार्म में लोग उसका गरेबान पकड़ रहे थे, तब भी चोरो ने हिम्मत नहीं हारी। तानाबाय उसके स्थान पर होता, तो पागल हो गया होता, या आत्म-हत्या कर लेता। इसके बावजूद भी चोरो सामूहिक फ़ार्म को संभाले रहा, आख़िरी क्षण तक टिका रहा, जब तक कि उसका दिल बिलकुल जवाब न दे गया और उसके बाद लगभग दो वर्ष तक सामूहिक फ़ार्म का पार्टी संगठन-कर्ता बना रहा। लोगों को समझाने बुझाने और उनसे बात करने का तरीक़ा चोरो को आता ही था। इसीलिए हमेशा यही होता, उसकी बात सुनकर तानाबाय को फिर विश्वास होने लगता कि सब ठीक हो जायेगा और एक दिन उनके सपने अवश्य साकार होंगे। केवल एक बार चोरो में उसका विश्वास डगमगाया था, लेकिन तब भी उसकी स्वयं की ही ग़लती ज़्यादा थी...

गुलसारी नहीं जानता था कि जब तानाबाय सामूहिक फ़ार्म के दफ़्तर में से क्रोधित मुख-मुद्रा में भौंहें सिकोड़े निकलता और उछलकर काठी पर बैठता तथा झटके से लगाम खींचता, तब उसके दिल पर क्या बीत रही होती थी। लेकिन वह भांप लेता था कि उसका स्वामी बहुत परेशान है।

हालांकि तानाबाय उसे कभी मारता नहीं था, फिर भी ऐसे क्षणों में वह अपने मालिक से बहुत डरता था। लेकिन रास्ते में उस स्त्री को देखते ही घोड़ा समझ जाता था कि अब उसके मालिक को कुछ राहत मिलेगी, वह कुछ सौम्य हो जाएगा, उसे रोककर उस स्त्री के साथ धीरे-धीरे कुछ बातें करेगा और वह अपने हाथ से गुलसारी की अयाल और गर्दन सहलायेगी। उसके जैसे स्नेहमय हाथ किसी और आदमी के नहीं थे। वे बड़े अद्‌भुत हाथ थे, उतने ही लोचदार और संवेदनशील जितने कि माथे पर सफ़ेद तारेवाली उस छोटी-सी कुम्मैत बछेड़ी के होंठ। दुनिया में ऐसी कोई और स्त्री नहीं थी, जिसकी ऐसी आँखें हों। तानाबाय काठी पर बैठे-बैठे उसकी ओर झुककर बातें करता और वह कभी मुस्कराती, तो कभी भौंहें चढ़ाती, किसी बात के लिए मना करते हुए सिर हिलाती, तो उसकी आँखें चांदनी रात में किसी तेज़ बहती नदी के तल में पड़े पत्थरों की तरह कभी चमक उठतीं, कभी धुंधली पड़ जातीं। वह जाते-जाते मुड़कर देखती और फिर सिर हिलाती।

तानाबाय इसके बाद सोच में डूब जाता। वह लगाम ढीली छोड़ देता और क़दमबाज़ को अपनी मर्जी से चलने देता, आराम से दुलकी चाल से। उसका स्वामी मानो काठी पर बैठा ही न होता। ऐसा लगता जैसे स्वामी और घोड़ा अलग-अलग चले जा रहे हैं। फिर गीत भी स्वतः गूंज उठता। तानाबाय शब्दों का अस्पष्ट उच्चारण करते हुए क़दमबाज़ की लयबद्ध टापों की आवाज़ के साथ स्वर्गीय लोगों के कष्टों के बारे में गीत गाता रहता। घोड़ा उसे अपनी जानी-पहचानी पगडण्डी से नदी पार स्तेपी में घोड़ों के झुण्डों के पास ले जाता...

गुलसारी को अपने स्वामी को ऐसे मूड में देखकर बड़ा अच्छा लगता था। वह उस स्त्री को भी अपने ही ढंग से प्यार करता था। वह उसका चेहरा-मोहरा और उसकी चाल पहचानता था और उससे आनेवाली अद्‌भुत घास की ख़ुशबू भी अपनी पैनी घ्राण-शक्ति से पहचान लेता था। यह लौंग की ख़ुशबू थी। वह लौंग की माला पहने रहती थी।

"देखो, यह तुम्हें कितना प्यार करता है, ब्यूब्यूजान," तानाबाय उससे कहता। "थोड़ा और सहलाओ इसे। देखो, कैसे कान हिला रहा है। बिलकुल बछड़े की तरह। लेकिन इसके झुण्ड में इसकी वजह से किसी को चैन नहीं मिलता। इसे बस थोड़ी-सी ढील देने की देर है। सांड़ों के साथ कुत्तों

की तरह लड़ता है। इसीलिए तो मैं इसे सवारी के लिए रखता हूँ, क्योंकि डरता हूँ कि कहीं वे इसे अपाहिज न बना दें। अभी इसकी कच्ची उम्र है।"

"हाँ, यह तो मुझे बहुत प्यार करता है," उसने अन्यमनस्कता से जवाब दिया।

"तुम्हारा मतलब है कि दूसरे तुम्हें प्यार नहीं करते?"

"नहीं, मेरे कहने का मतलब यह नहीं है। हमारे प्यार करने का वक़्त तो गुज़र चुका है। मुझे तुम्हारी याद आने पर अफ़सोस होगा।"

"ऐसा क्यों?"

"क्योंकि तुम उस तरह के आदमी नहीं हो, तुम बाद में बहुत तड़पोगे।"

"और तुम?"

"मेरा क्या? मैं तो सैनिक की विधवा हूँ। लेकिन तुम..."

"और मैं लेखा-परीक्षण समिति का सदस्य हूँ। तुम रास्ते में मिल गयीं और मैं तुमसे कुछ बातों का पता लगा रहा हूँ," तानाबाय ने मज़ाक़ करने की कोशिश की।

"तुम तो आये दिन पूछताछ करने लगे हो। ज़रा बचकर रहना।"

"किससे बचकर रहूँ? तुम भी इधर से गुज़र रही हो और मैं भी।"

"मैं अपने रास्ते जा रही हूँ: हमारे रास्ते अलग-अलग हैं। अच्छा, तो चलती हूँ। मेरे पास वक़्त नहीं है।"

"सुनो, ब्यूब्यूज़ान!"

"क्या है? छोड़ो, तानाबाय। क्या फ़ायदा? तुम तो समझदार आदमी हो। मैं वैसे ही बहुत परेशान हूँ।"

"मैं क्या तुम्हारा दुश्मन हूँ?"

"तुम ख़ुद ही अपने दुश्मन हो।"

"इसका क्या मतलब?"

"जैसा तुम लगाना चाहो।"

वह चली जाती और तानाबाय गाँव की गलियों में ऐसे घूमता रहता, मानो उसे वहाँ कोई काम हो, फिर चक्की या स्कूल की ओर मुड़ जाता

और चक्कर लगाकर फिर वहीं वापस आ जाता ताकि कम से कम दूर से ही यह देख ले कि वह कैसे अपनी सास के घर से अपनी बेटी को लेकर गाँव के दूसरे छोर पर स्थित अपने घर को रवाना होती है। उसे उसकी हर अदा, उसकी हर चीज़ प्यारी लगती: उसका उसकी ओर न देखने की कोशिश करते हुए जाना, गहरे रंग की शाल में लिपटा उसका गोरा चेहरा, उसकी नन्ही बेटी और उनके पीछे-पीछे भागता हुआ छोटा-सा कुत्ता भी।

अन्त में वह अपने आंगन में ओझल हो जाती और वह आगे जाते हुए कल्पना करने लगता कि कैसे वह अपने ख़ाली घर का दरवाज़ा खोलेगी, अपनी पुरानी रूई भरी मिरज़ई उतारकर फेंकेगी और पानी लाने भागेगी, चूल्हा जलायेगी, बच्ची के हाथ-मुंह धुलाकर उसे खाना खिलायेगी, चरकर लौट रही गायों के झुण्ड में से अपनी गाय को लेकर आयेगी और रात में अंधेरे सुनसान घर में अकेली लेटी अपने आप को और उसको मन-ही-मन समझायेगी कि उन्हें एक दूसरे को प्यार नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह बीवी-बच्चोंवाला आदमी है, उसकी उम्र में प्यार करने की बात सुनकर लोग हंसेंगे, हर काम का अपना वक़्त होता है, उसकी पत्नी एक अच्छी औरत है और उसको दूसरी औरत से प्यार करके दुख नहीं पहुँचाना चाहिए।

तानाबाय इस प्रकार के विचारों से व्यथित हो उठता।

"यानी, मेरी क़िस्मत में यह बदा ही नहीं है," वह नदी पार छाये कोहरे को ताकता हुआ सोचता और सारी दुनिया की चिन्ता छोड़कर—अपने काम-काज, सामूहिक फ़ार्म, बच्चों के लिए कपड़े और जूते ख़रीदने, अपने दोस्तों और दुश्मनों, अपने सौतेले भाई कुलुबाय जिससे वे कई सालों से बात ही नहीं करते थे, उस युद्ध का विचार छोड़कर, जिसे अकसर सपने में देखकर उसे ठण्डा पसीना छूटने लगता था, कोई पुराना गीत छेड़ देता। उसे इसका भी पता नहीं चलता कि उसका घोड़ा नदी पार करके दूसरे किनारे पर निकलकर आगे बढ़ रहा है। उसे तभी होश आता, जब क़दमबाज़ झुण्ड की गंध पाकर अपनी रफ़्तार बढ़ा देता।

"अरे, अरे, कहाँ भागा जा रहा है, गुलसारी?!" तानाबाय चौंककर कहता और लगाम खींचता।

पांच

कुछ भी हो, पर उसके लिए और क़दमबाज़ के लिए भी यह बड़ा अद्भुत समय था। अच्छे घोड़े का नाम फ़ुटबाल के खिलाड़ी के नाम की तरह होता है। कल का घर के पिछवाड़े में फ़ुटबाल खेलनेवाला छोकरा एकाएक सबका चहेता, विशेषज्ञों की बातचीत का विषय और भीड़ का आदर्श बन जाता है। जब तक वह गोल करता रहता है, उसकी ख्याति निरन्तर फैलती रहती है। फिर वह धीरे-धीरे फ़ुटबाल के मैदान से ग़ायब हो जाता है और लोग उसे बिलकुल भूल जाते हैं। भूलनेवालों में सबसे पहले वही होते हैं जो औरों से ज़्यादा गला फाड़-फाड़कर उसकी प्रशंसा किया करते थे। उस सुप्रसिद्ध फ़ुटबाल-खिलाड़ी का स्थान दूसरा खिलाड़ी ले लेता है। अच्छे घोड़े का भी यही हाल होता है। उस की प्रसिद्धि तब तक बनी रहती है, जब तक वह घुड़दौड़ों में विजयी होता रहता है। उनमें अन्तर शायद केवल इतना ही है कि घोड़े से कोई ईर्ष्या नहीं करता। घोड़ों को ईर्ष्या करना नहीं आता और ख़ुदा के शुक्र से आदमी ने अभी घोड़े से ईर्ष्या करना नहीं सीखा है। वैसे ईर्ष्या होने पर कोई क्या कर बैठे, कहना मुश्किल है। ऐसा भी हुआ है कि ईर्ष्यालु लोगों ने आदमी का बुरा करने के इरादे से घोड़े के सुमों में कीलें तक ठोक दीं। बहुत बुरी चीज़ होती है ईर्ष्या! .. ख़ैर इसे जाने दीजिये...

बूढ़े तोर्गोई की भविष्यवाणी सच निकली। उस बसन्त में क़दमबाज़ की प्रसिद्धि का सितारा बुलन्दी पर जा पहुंचा। क्या बूढ़ा और क्या बच्चा, उसका नाम सभी की ज़बान पर था, "गुलसारी!", "तानाबाय का क़दमबाज़", "गाँव की शान... "

मैले-कुचेले बच्चे, क़दमबाज़ की चाल की नक़्ल करते हुए धूल भरी गलियों में भागते रहते और गला फाड़-फाड़कर तोतली बोली में चिल्लाते, "मैं गुलसाली हूँ... नहीं, मैं गुलसाली हूँ... मां, कहो कि मैं गुलसाली हूँ... छू, चल, मेले गुलसाली..."

ख्याति क्या होती है और उसमें कितनी महान शक्ति निहित होती है, इसका पता क़दमबाज़ को अपनी पहली बड़ी घुड़दौड़ में चला। उस दिन मई दिवस का त्योहार था।

नदी के किनारे बड़ी घास-स्थली में सभा के बाद खेल शुरू हुए। जगह जगह से हज़ारों लोग वहाँ आये। पड़ोसी सरकारी फ़ार्म के लोग आये, पहाड़ों से भी और कज़ाख़स्तान से भी। कज़ाख़ लोग अपने घोड़े लाये थे।

लोगों का कहना था कि युद्ध के बाद इतने बड़े पैमाने पर त्योहार पहली बार मनाया जा रहा था।

तानाबाय जब सुबह से ही घोड़े पर काठी कसने लगा और बड़ी सावधानी से उसकी तंग और रक़ाबों की जांच करने लगा, तो क़दमबाज़ उसकी आँखों की चमक और उसके कांपते हाथों से समझ गया कि आज कोई ख़ास बात होनेवाली है। उसका मालिक काफ़ी उत्तेजित लग रहा था।

"देख, गुलसारी, आज मुझे दग़ा न देना," वह घोड़े की अयाल और उसके माथे के बाल सहलाते हुए फुसफुसाया। "तुझे आज अपनी नाक नीची नहीं करानी है, समझा! हमें ऐसा करने का हक़ भी नहीं है, समझा!"

लोगों की भगदड़ और हो-हल्ले के कारण हवा में भी कुछ ऐसी गंध आ रही थी कि आज ज़रूर कुछ ख़ास बात होनेवाली है। चरवाहे पास के पहाड़ी चरागाहों में अपने अपने घोड़ों पर काठियां कस रहे थे। लड़के घोड़ों पर सवार हुए चारों ओर चीख़ते-चिल्लाते चक्कर लगा रहे थे। फिर चरवाहे एक जगह आ पहुँचे और सब एक साथ नदी की ओर चल दिये।

इतने सारे लोगों और घोड़ों के जमघट को देखकर गुलसारी हक्का-बक्का रह गया। नदी, घास-स्थली, आस-पास के टीले शोर से गूंज रहे थे। भड़कीली पोशाकों एवं रूमालों, लाल झण्डों और स्त्रियों के सफ़ेद रूमालों से उसकी आँखें चौंधिया रही थीं। घोड़ों पर सुन्दर से सुन्दर साज़ थे। रक़ाबें छनक रही थीं, दहाने और चांदी के सीना-बन्द झनझना रहे थे।

क़तारों में एक दूसरे से सटकर खड़े घोड़े अधीरता के कारण अपने सुम मारकर ज़मीन खोद रहे थे, लगाम ढीली छोड़ने के लिए मचल रहे थे। खेलों के आयोजक, बुज़ुर्ग लोग काठी पर तनकर बैठे-बैठे एक घेरे में अपने घोड़े कुदा रहे थे।

गुलसारी अपने शरीर में निरन्तर बढ़ता तनाव और शक्ति का प्रवाह

महसूस कर रहा था। उसे लग रहा था कि कोई दानवी शक्ति उसके शरीर में समा गयी है और उससे मुक्त होने के लिए उसे जल्दी से जल्दी घेरे में पहुँचकर जितनी तेज़ी से भाग सके भागना चाहिए।

जब आयोजकों ने उन्हें घेरे में आने का संकेत दिया, तो तानाबाय के लगाम ढीली छोड़ते ही क़दमबाज़ उसे लेकर बीच में आ पहुँचा और किस दिशा में उसे दौड़ना है, न मालूम होने के कारण वहीं घूम गया। सारे में शोर गूंज उठा, "गुलसारी! गुलसारी!.."

लम्बी घुड़दौड़ में भाग लेने के इच्छुक सभी वहाँ आ गये। कोई पचास घुड़सवार थे।

"जनता का आशीर्वाद मांगिए!" मुख्य आयोजक ने औपचारिक घोषणा की।

माथे पर कसकर पट्टियां बांधे सिर मुड़े घुड़सवारों ने दर्शकों की क़तारों के सहारे-सहारे चलते हुए हाथ उठाये और एक छोर से दूसरे तक उनका समवेत स्वर गूंज उठा, "आमीन!" सैंकड़ों हाथ माथे तक उठे और चेहरों पर से होते हुए जल-धारा की तरह नीचे आये।

तत्पश्चात घुड़सवार सरपट घोड़े दौड़ाते हुए वहाँ से मैदान में नौ किलोमीटर दूर स्थित प्रस्थानस्थल के लिए रवाना हो गये।

इस बीच घेरे में पैदलों और घुड़सवारों के द्वंद्व, जिसमें घुड़सवार को अपने प्रतिद्वंद्वी को काठी पर से नीचे घसीटना होता था, घोड़ा दौड़ाते हुए ज़मीन पर से सिक्का उठाना और अन्य प्रतियोगिताएँ शुरू हुईं। यह सब तो केवल प्रारम्भिक खेल थे, मुख्य प्रतियोगिता तो वहाँ से शुरू होनेवाली थी, जहाँ घुड़सवार गये थे।

गुलसारी रास्ते में मचलने लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसका मालिक उसे क्यों रोके हुए है। उसके चारों ओर अन्य घोड़े इठलाते हुए दौड़ रहे थे और उत्तेजित हो रहे थे। इतने सारे घोड़े थे और सभी भागने के लिए मचल रहे थे, इसी कारण से क़दमबाज़ खीज रहा था और अधीरता के कारण कांप रहा था।

अन्त में प्रस्थानस्थल पर सब एक सीधी क़तार में खड़े हो गये। रेफ़री अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ क़तार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गया और उसने सफ़ेद रूमाल दिखाया। सब उत्तेजित और सतर्क होकर जड़ हो गये। रेफ़री ने रूमाल हिलाया। घोड़े आगे की ओर झपटे और गुल-

सारी भी उस धकापेल में आगे लपका। घोड़ों की टापों की चोट से ज़मीन नगाड़े की तरह बज उठी, धूल के बादल उड़ने लगे। सवारों की हो-हो और टिटकारियों से घोड़े बिखरकर हवा से बातें करते हुए भाग रहे थे। अकेला गुलसारी सरपट दौड़ना न आने के कारण क़दमचाल से भाग रहा था। यही उसकी कमज़ोरी भी थी और शक्ति भी।

पहले सब भीड़ में दौड़ते रहे, किन्तु कुछ मिनट बाद अलग होने लगे। गुलसारी ने यह नहीं देखा। उसने केवल यही देखा कि दौड़ के तेज़ घोड़े उसे पीछे छोड़कर आगे सड़क पर पहुँच रहे हैं। गरम-गरम कंकर-पत्थर और सूखी मिट्टी के ढेले उनकी टापों से उछटकर उसके मुंह पर लग रहे थे, उसके चारों ओर घोड़े सरपट भागे जा रहे थे, सवार चीख-चिल्ला रहे थे, चाबुक मारने की आवाज़ें गूँज रही थीं और धूल के बादल उड़ रहे थे। सारे में पसीने, चक़मक़ और कुचले हुए अफ़सन्तीन की तीखी गन्ध फैल रही थी।

लगभग आधा रास्ता पार करने तक ऐसे ही चलता रहा। कोई दस घोड़े बड़ी तेज़ रफ़्तार से सबसे आगे भागे जा रहे थे जो क़दमबाज़ के लिए असम्भव थी। चारों ओर शोर कम होता जा रहा था, पीछे से आनेवाला शोर मंद पड़ गया, लेकिन चूंकि दूसरे घोड़े आगे निकल गये थे और लगाम के कारण उसे पूरी छूट नहीं दी जा रही थी, उसका गुस्सा बढ़ने लगा। गुस्से और हवा के मारे उसकी आँखों में अंधेरा छाने लगा, ज़मीन बड़ी तेज़ी से उसकी टापों तले से निकलकर पीछे छूटती जा रही थी और सूरज का धधकता गोला आकाश से टूटकर उसकी ओर लुढ़कता आ रहा था। उसका सारा शरीर गरम-गरम पसीने से तर हो गया और उसे जितना ज़्यादा पसीना आ रहा था, वह अपने को उतना ही हल्का महसूस करता जा रहा था।

आख़िर वह क्षण आ ही गया जब सरपट भागते घोड़े थकने लगे और उनकी रफ़्तार धीरे-धीरे कम होने लगी। लेकिन गुलसारी ने तो अभी अपनी रफ़्तार बढ़ानी शुरू ही की थी। "छू, गुलसारी, छू!" उसके स्वामी की आवाज़ उसे सुनाई दी और सूरज का गोला और तेज़ी से उसकी ओर लुढ़कने लगा। क्रोध से विकृत हुए घुड़सवारों के चेहरे, हवा में सरसराते चाबुक, घोड़ों के खुले मुंह—सब एक एक करके पीछे छूटते नज़र आने लगे। गुलसारी को एकाएक ऐसा लगा, जैसे दहाना और लगाम हैं

ही नहीं, न उसके ऊपर काठी है, न सवार—उसकी नस नस में दौड़ की आग दहक उठी।

फिर भी एक भूरे रंग का और दूसरा कत्थई रंग का घोड़ा, दोनों बराबर-बराबर, उसके आगे सरपट भाग रहे थे। दोनों अपने अपने सवारों की आवाज़ों और चाबुकों की मार के कारण एक दूसरे से ज़रा भी पीछे न रहते दौड़े जा रहे थे। वे दोनों बहुत तेज़ घोड़े थे। गुलसारी काफ़ी देर तक उनका पीछा करता रहा और अन्त में रास्ते की चढ़ाई पर उसने उन्हें पीछे छोड़ ही दिया। वह टेकरी की चोटी पर इस तरह जा चढ़ा, मानो वह किसी शक्तिशाली लहर का शिखर हो और एक क्षण के लिए ऐसा लगा जैसे वह हवा में भारहीन अवस्था में स्थिर हो गया हो। उसका दिल ख़ुशी से बाग़-बाग़ हो उठा। सूरज से उसकी आँखें और ज्यादा चौंधियाने लगीं और वह बड़ी तेज़ी से नीचे की तरफ़ दौड़ा। लेकिन थोड़ी देर बाद ही उसे पीछे से नज़दीक आ रहे घोड़ों की टापें सुनाई दीं। भूरा और कत्थई, दोनों घोड़े उससे आगे निकलने की कोशिश में थे। वे दोनों उसके पास आ पहुँचे और अब उसके साथ-साथ भाग रहे थे।

इस तरह वे तीनों एक-सी गति से बराबर-बराबर दौड़े जा रहे थे। गुलसारी को लगा मानो वे तीनों भाग ही नहीं रहे हैं बल्कि किसी आश्चर्यजनक निःशब्द नीरवता में जड़वत् हो गये हैं। पड़ोसी घोड़ों की आँखों की मुद्रा, उनके तने हुए मुंह, दांतों के बीच जकड़े हुए दहाने और लगामें तक साफ़-साफ़ दिखाई दे रहे थे। भूरा घोड़ा क्रुद्ध और ढीठ नज़रों से देख रहा था और कत्थई अनिश्चय से अगल-बगल देखता हुआ घबराया हुआ लग रहा था। वही सबसे पहले पिछड़ने लगा। पहले उसकी क़सूरवार-सी खोयी-खोयी आंखें ओझल हुईं, फिर उसका फैले हुए नथुनोंवाला मुंह और उसके बाद वह पूरी तरह ओझल हो गया। भूरा घोड़ा काफ़ी देर तक अपने पूरे ज़ोर से उसके पीछे-पीछे भागता रहा। लगता था जैसे भागते-भागते उसकी जान निकली जा रही है, व्यर्थ की खीज के कारण उसकी आँखें पथराने लगी थीं। वह इसी तरह हार न मानने की कोशिश करता हुआ पीछे छूट गया।

अपने प्रतिद्वंद्वियों के पीछे छूटने के बाद गुलसारी ने कुछ चैन की सांस ली। उसे अपने आगे चांदी-सी झिलमिलाती नदी का मोड़ व हरी भरी घास-स्थली दिखाई देने लगे थे और दूर से आता आदमियों की आवाज़ों

का शोर सुनाई देने लगा था। सबसे पक्के शौक़ीन रास्ते में ही प्रतियोगियों का इन्तज़ार कर रहे थे और हो-हो करते चीखते-चिल्लाते उसके दोनों ओर घोड़े दौड़ा रहे थे। तभी क़दमबाज़ को एकाएक कमज़ोरी महसूस होने लगी। लम्बी दौड़ अपना असर दिखाने लगी थी। उसके पीछे क्या हो रहा है, पीछे छूटे घुड़सवार उसके नज़दीक पहुँचने लगे हैं या नहीं, गुलसारी को कुछ पता नहीं था। दौड़ जारी रखना उसके लिए मुश्किल होता जा रहा था, उसकी शक्ति क्षीण होती जा रही थी।

लेकिन उसके आगे लोगों की विशाल भीड़ हिल-डुल रही थी, शोर मचा रही थी, पैदल और घुड़सवार उसका आलिंगन करने आ रही दो भुजाओं की तरह उसकी दिशा में बढ़ रहे थे, उनकी आवाज़ों का शोर निरन्तर बढ़ता जा रहा था! उसे एकाएक बिलकुल साफ़ सुनाई दिया, "गुलसारी! गुलसारी! गुलसारी! . ." इन आवाज़ों, शोरगुल और चीख-पुकार ने उसमें एक नयी शक्ति फूंक दी और वह दुगुने उत्साह के साथ आगे लपका। वाह, लोगो, वाह! ऐसा क्या है, जो तुम लोग नहीं कर सकते! . .

गुलसारी उसका स्वागत करने आये लोगों के निरन्तर अत्यानन्दित शोरगुल के बीच से गुज़रा और फिर उसने अपनी रफ़्तार कम करके घास-स्थली का एक चक्कर लगाया।

लेकिन अभी तो बहुत कुछ बाक़ी था। अब वह और उसका स्वामी अपने नहीं औरों के वश में थे। जब क़दमबाज़ थोड़ा सुस्ताकार शान्त हो गया, तो लोग विजेता के चारों ओर घेरा बनाकर खड़े हो गये। और एक बार फिर आवाज़ें आने लगीं, "गुलसारी! गुलसारी! गुलसारी!" उसके नाम के साथ-साथ उसके स्वामी का नाम भी गूंजा, "तानाबाय! तानाबाय! तानाबाय!"

और एक बार फिर क़दमबाज़ पर भीड़ ने जादू-सा असर किया। वह बड़ी फुर्ती से गर्वपूर्वक सिर ऊँचा उठाये, आँखों में चमक लिये घेरे के बीच आ खड़ा हुआ। विजय के नशे में मतवाला गुलसारी नाचता और इठलाता हुआ अगली दौड़ में भाग लेने के लिए मचलने लगा। वह जानता था कि वह सुन्दर, शक्तिशाली और प्रसिद्ध है।

तानाबाय विजेता की तरह अपने दोनों हाथ फैलाये लोगों के चारों ओर चक्कर लगा रहा था। भीड़ ने फिर एक बार समवेत स्वर में उसे आशी-

र्वाद देते हुए आकाश गुँजा दिया, "आमीन!" एक बार फिर सैकड़ों हाथ माथे तक उठे और चेहरे पर से होते हुए जल-धारा की तरह नीचे आये।

तभी एकाएक क़दमबाज़ को अनेक चेहरों के बीच उस स्त्री का जाना-पहचाना चेहरा नजर आ गया। वह उसे उसके हाथ चेहरे से नीचे आते ही पहचान गया, हालांकि इस बार वह गहरे रंग की शाल कंधों पर डालने के बजाय सफ़ेद कपड़े पहने हुई थी। वह अगली पंक्ति में खड़ी हर्षविह्वल हुई तेज़ बहती नदी में सूर्य के प्रकाश में झिलमिलाते पत्थरों की तरह चमकती आँखों से उनको अनिमेष देख रही थी। गुलसारी आदतन उसकी तरफ़ बढ़ा, ताकि उसका स्वामी उसके साथ बात कर सके और वह माथे पर तारे के निशानवाली बछेड़ी के कोमल और संवेदनशील होंठों के सदृश अपने अद्भुत हाथों से उसकी अयाल और गर्दन सहला सके। लेकिन तानाबाय ने न जाने क्यों उसे लगाम खींचकर विपरीत दिशा में मोड़ दिया और क़दमबाज़ अपने मालिक के मन की बात न समझ पाने के कारण बार-बार घूमते हुए उस स्त्री की ओर जाने के लिए मचलने लगा। क्या उसका मालिक वहाँ खड़ी उस स्त्री को नहीं देख पा रहा है, जिसके साथ उसे बात करना ज़रूरी है?..

अगले दिन, अर्थात दो मई को भी गुलसारी का ही सितारा बुलन्द रहा। उस दिन दोपहर में स्तेपी में पोलो से मिलते-जुलते खेल–अलमान बैगा का आयोजन किया जानेवाला था, जिसमें गेंद के स्थान पर सिरकटे बकरे की लोथ का उपयोग किया जाता है। बकरे के बाल लम्बे और मज़बूत होते हैं, इसलिए उसे घोड़े पर से टांग या बाल पकड़कर उठाने में आसानी रहती है।

स्तेपी एक बार फिर सनातन काल से होते आये शोर से गूंज उठी, धरती फिर नगाड़े की तरह बज उठी। घुड़सवारी के शौक़ीन दर्शक आवाज़ें लगाते, चीखते-चिल्लाते अपने घोड़ों पर खिलाड़ियों के चारों ओर चक्कर लगा रहे थे। आज भी सभी की ज़बान पर गुलसारी का नाम था। उसे प्रसिद्धि प्राप्त हो चुकी थी, इसलिए इस बार वह तुरन्त खेल का सबसे शक्तिशाली घोड़ा मान लिया गया। लेकिन तानाबाय ने उसे खेल के आ-

ख़िरी क्षण–अलमान-बैगा–तक रोके रखा, जब हर प्रतियोगी को बकरा छीनकर भागने की खुली छूट मिल जाती है और जो सबसे अधिक फ़ुर्तीला और तेज़ होता है, वह उसे उठाकर अपने गाँव भाग जाता है। सभी अलमान-बैगा की प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योंकि यह प्रतियोगिता का चरम-बिन्दु होता है; इसके अलावा हर घुड़सवार को इसमें भाग लेने का अधिकार होता है। सब अपना अपना भाग्य आज़माने के लिए उत्कंठित थे।

इस बीच मई का सूरज कज़ाखों के दूर-दराज़ इलाक़ों के क्षितिज पर क्लांत होकर अस्त होने जा रहा था। वह अण्डे की ज़रदी के सदृश फूला हुआ और गहरे पीले रंग का दिखाई दे रहा था। उसे नंगी आंखों से देखा जा सकता था।

क़िर्गीज़ और कज़ाख़ लोग शाम होने तक अपने अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए जीन से झुककर बकरे की लोथ को ज़मीन से उठाकर एक दूसरे से छीनने की कोशिश में शोर मचाते हुए झुण्ड बनाते और हो-हो करते मैदान में बिखरते रहे।

बुज़ुर्गों ने केवल तभी अलमान-बैगा शुरू करने की इजाज़त दी, जब कि स्तेपी में विचित्र परछाइयाँ लम्बी होने लगीं। "अलमान!.." की आवाज़ के साथ बकरे को मैदान के बीच में फेंक दिया गया।

तुरन्त चारों ओर से घुड़सवार उसके ऊपर टूट पड़े और भीड़-भड़क्के में बकरे को ज़मीन से उठाने की कोशिश करने लगे। लेकिन धकापेल में ऐसा कर पाना कोई आसान काम नहीं था। घोड़े पागलों की तरह घूमते हुए दांत निकाले एक दूसरे को काट रहे थे। गुलसारी इस भीड़-भाड़ में परेशान हो गया, उसे तो खुली जगह चाहिए थी, लेकिन तानाबाय किसी भी तरह बकरे को पकड़ न पाया। एकाएक एक कर्णभेदी आवाज़ गूंज उठी, "पकड़ो, पकड़ो! कज़ाखों ने उठा लिया!" चक्कर खाते घोड़ों की भीड़ को चीरता हुआ उत्तेजित भूरे घोड़े पर सवार फटी हुई क़मीज़ पहने एक कज़ाख़ युवक बाहर निकला। वह बकरे को पैर और रक़ाब के बीच में दबाये हुए दूर भागा जा रहा था।

"पकड़ो, पकड़ो! भूरे घोड़े को!" सब उसका पीछा करते हुए चिल्ला रहे थे। "तानाबाय, जल्दी करो, सिर्फ़ तुम उसे पकड़ सकते हो!"

भूरे घोड़े पर सवार कज़ाख़ रक़ाब के नीचे हिलते-डोलते बकरे को दबाये सीधा डूबते लाल सूरज की दिशा में भागा जा रहा था। लगता था

कि एक क्षण की देर हुई, तो वह सीधा दहकते सूरज में जा घुसेगा और लाल भाप बनकर विलीन हो जाएगा।

गुलसारी समझ नहीं पा रहा था कि तानाबाय उसे रोके क्यों हुए है। लेकिन उसका स्वामी जानता था कि कज़ाख़ घुड़सवार को अन्य सवारों और उसकी मदद को आ रहे उसके भाई-बंदों से अलग होने का मौक़ा देना चाहिए। क्योंकि अगर वे भूरे घोड़े के चारों ओर घेरा डालकर घोड़े दौड़ाने लगे, तो फिर हाथ से निकला शिकार किसी भी तरह छीना न जा सकेगा। उसे केवल द्वंद्व में ही कुछ आशा दिखाई दे रही थी।

तानाबाय ने कुछ देर तक इन्तज़ार किया और फिर मौक़ा मिलने पर क़दमबाज़ को पूरी छूट दे दी। गुलसारी सूरज की ओर जा रहे रास्ते पर तेज़ी से भाग चला, उनके पीछे से आ रही आवाज़ें और टापें तुरन्त हल्की पड़ने लगीं और भूरे घोड़े व उसके बीच का फ़ासला कम होने लगा। वह भारी बोझ लिये जा रहा था, इसलिए उस तक पहुंचना ज्यादा मुश्किल न था। तानाबाय ने क़दमबाज़ को भूरे घोड़े की दायीं ओर डाल दिया। सवार ने बकरे को घोड़े के दायें बाजू पर पैर के नीचे दबोच रखा था। आख़िर गुलसारी उसके बराबर आ पहुँचा। तानाबाय बकरे की टांग पकड़-कर अपनी ओर खींचने के लिए काठी पर से झुका। लेकिन कज़ाख़ ने बड़ी फ़ुर्ती से अपने शिकार को दायें बाजू से बायें बाजू पर डाल लिया। इस बीच घोड़े बराबर सूरज की ओर बढ़ते जा रहे थे। अब तानाबाय को उसके बायीं ओर आने के लिए कुछ पीछे रहकर उसे दुबारा पकड़ना था। क़दमबाज़ को भूरे घोड़े से अलग करना कठिन था, लेकिन तानाबाय किसी तरह इसमें सफल हो गया। फटी क़मीज़वाला कज़ाख़ एक बार फिर बकरे को दायीं ओर करने में सफल हो गया।

"शाबाश!" तानाबाय जोश में चिल्लाया।

घोड़े सीधे सूरज की ओर दौड़े जा रहे थे।

तानाबाय अब और जोखिम नहीं उठा सकता था। उसने क़दमबाज़ को दूसरे घोड़े से बिलकुल सटा दिया और उसकी काठी पर अपनी छाती के बल लेट गया। कज़ाख़ ने अपने को अलग करने की कोशिश की, लेकिन तानाबाय ने उसे नहीं छोड़ा। गुलसारी की रफ़्तार और उसके लोच-दार शरीर के कारण तानाबाय भूरे घोड़े की गर्दन पर लगभग लेट ही गया। आख़िर उसके हाथ बकरे तक पहुँच ही गये और वह उसे अपनी

ओर खींचने लगा। उसके लिए दायीं ओर से बकरे को खींचना आसान था, इसके अलावा उसके दोनों हाथ ख़ाली थे। वह बकरे की लगभग आधी लोथ अपनी ओर घसीटने में सफल हो गया।

"ज़रा संभलके, कज़ाख़ भाई!" तानाबाय चिल्लाया।

"अरे, रहने दो, पड़ोसी, मैं ऐसे नहीं छोड़नेवाला!" कज़ाख़ ने जवाब दिया।

इस तरह तेज़ दौड़ते घोड़ों पर मुक़ाबला शुरू हो गया। वे एक शिकार पर टूटे उक़ाबों की तरह एक दूसरे से जूझने लगे, जानवरों की तरह हांफ़ते और चीखते-चिल्लाते हुए एक दूसरे को भद्दी-भद्दी गालियाँ देने लगे, धमकाने लगे, उनके हाथ आपस में उलझ गये, नाख़ूनों में से ख़ून बहने लगा। सवारों के द्वंद्व के कारण दोनों घोड़े एक दूसरे से जुड़ गये और ग़ुस्से में रक्तिम सूरज को जल्दी से जल्दी पकड़ने की कोशिश में भागते रहे। धन्य हों हमारे पूर्वज जो हमें धरोहर में दिलेर मर्दों के ये खेल छोड़ गये हैं!

बकरे की लोथ अब दोनों सवारों के बीच, उनके भागते घोड़ों के बीच लटकी हुई थी। अब मुक़ाबले का नतीजा निकलनेवाला था। दोनों ही चुपचाप दांत पीसते हुए अपनी पूरी शक्ति से लोथ को अपनी ओर खींचकर पैर से दबोचने की कोशिश कर रहे थे जिससे एक झटका देकर दूर भाग जायें। कज़ाख़ ताक़तवर था। उसके हाथ बड़े और पुष्ट थे, इसके अला-वा वह तानाबाय से काफ़ी जवान भी था। लेकिन अनुभव आख़िर अनुभव ही होता है। तानाबाय ने एकाएक अपना दायाँ पैर रक़ाब में से निकालकर भूरे घोड़े की बग़ल में दबा लिया। अब वह बकरे को अपनी ओर खींचते हुए अपने प्रतिद्वंद्वी के घोड़े को दूर भी धकेल रहा था और धीरे-धीरे कज़ाख़ की उंगलियों की पकड़ ढीली पड़ने लगी।

"संभलके!" परास्त हुए प्रतिद्वंद्वी ने चेतावनी दी।

तानाबाय ज़ोर के झटके से काठी पर से गिरते-गिरते बचा। उसके मुंह से जीत की ख़ुशी में चीख निकल गयी। वह तुरन्त घोड़े को मोड़कर ईमानदारी से संघर्ष में जीते अपने शिकार को पैर से दबोचे वहाँ से भागा। शोर मचाते घुड़सवारों का एक झुण्ड उसकी ओर भागा आ रहा था।

"गुलसारी! गुलसारी बकरा ले जा रहा है!" कज़ाख़ घुड़सवारों का झुण्ड उसे पकड़ने दौड़ पड़ा।

"पकड़ो, तानाबाय को पकड़ो!"

अब उसके लिए अपने प्रतिद्वंद्वियों की पकड़ में न आना ही सबसे महत्व-पूर्ण था और यह भी कि उसके गाँव के लोग जल्दी से जल्दी उसके चारों ओर घेरा डाल लें।

तानाबाय ने पीछा करनेवालों से दूर भागने के लिए अपने घोड़े को फिर एकाएक मोड़ दिया। "शुक्रिया, गुलसारी, शुक्रिया मेरे प्यारे गुल-सारी!" जब गुलसारी उसके बदन की थोड़ी-सी हरकत का इशारा समझ-कर पीछा करनेवालों से बचने के लिए कभी एक दिशा में, तो कभी दूस-री में भागने लगा, तो उसके स्वामी ने उसे मन ही मन धन्यवाद दिया। क़दमबाज़ लगभग ज़मीन से चिपके-चिपके दौड़ता हुआ कठिन मोड़ पार कर गया और सीधा भागने लगा। उसी समय तानाबाय के गाँव के लोग वहाँ आ पहुँचे और उसके चारों ओर घेरा डालकर एक झुण्ड में वहाँ से सरपट भागने लगे। लेकिन उनके प्रतिद्वंद्वियों ने फिर उनका रास्ता रोक लिया। उन्हें एक बार फिर मुड़कर भागना पड़ा। विशाल स्तेपी में भा-गते और उनका पीछा करनेवाले घुड़सवारों के झुण्ड तीव्र गति से उड़नेवाली चिड़ियों की तरह लग रहे थे जो बड़ी फ़ुर्ती से पलटकर अपनी दिशा बदल लेती हैं। हवा में धूल ही धूल छायी हुई थी, आवाज़ें गूंज रही थीं, कोई घोड़े सहित गिर रहा था, कोई घोड़े से गिरकर कलाबाज़ी खा रहा था, कोई लंगड़ाता हुआ अपने घोड़े के पीछे भाग रहा था, लेकिन सभी पर प्रतियोगिता के जोश और उमंग का नशा चढ़ा हुआ था। खेल में कोई किसी बात का ज़िम्मेदार नहीं होता। दिलेर ही जोखिम उठाने को तैयार रहता है...

सूरज का केवल एक किनारा मात्र दिखाई दे रहा था, अंधेरा होने लगा था, लेकिन अलमान-बैगा घोड़ों की टापों तले कांपती ज़मीन की धुन के साथ संध्याकालीन शीतल नीलिमा में भी जारी था। अब न कोई चि-ल्ला रहा था, न कोई किसी का पीछा कर रहा था, किन्तु सभी गति की उमंग में सरपट घोड़े दौड़ाये जा रहे थे। सारी स्तेपी में फैले हुए घुड़स-वारों के झुण्ड की लय व धुन में खोये हुए एक शक्तिशाली लहर की तरह एक पहाड़ी पर से दूसरी पर चढ़ और उतर रहे थे। कहीं इसी कारण

से तो सारे सवार एकाग्रचित्त और मौन दिखाई नहीं दे रहे थे? कहीं कज़ाखों के दोम्ब्रा* और क़िर्गीज़ों के कोमूज़** से निकलनेवाली झंकार का जन्म इसी से तो नहीं हुआ है?..

वे लोग नदी के निकट पहुँच रहे थे। आगे झाड़ियों के पीछे उसकी धुंधली-सी झलक दिखाई दे गयी। थोड़ी-सी दूरी और तय करनी थी। नदी के उस ओर खेल ख़त्म होगा, वहाँ उनका गांव है। तानाबाय और उसको घेरे में लिये घुड़सवार अभी भी एक झुण्ड में भागे जा रहे थे। गुलसारी ध्वज-पोत की तरह अपने रक्षकों से घिरा दौड़ रहा था।

लेकिन वह थक चुका था, बहुत बुरी तरह थक चुका था। आज का दिन बहुत कठिन रहा। क़दमबाज़ की ताक़त बिलकुल जवाब दे रही थी। दो घुड़सवार उसे गिरने न देने के लिए दोनों ओर से उसकी लगाम थामे चल रहे थे। बाक़ी सवार तानाबाय की चारों ओर से रक्षा कर रहे थे। और वह काठी के आगे रखी बकरे की लोथ के ऊपर सीने के बल लेटा हुआ चल रहा था। तानाबाय का सिर हिल-डुल रहा था और वह किसी तरह बस काठी पर टिक भर पा रहा था। अगर उसके साथ चलनेवाले घुड़सवार न होते, तो वह और उसका क़दमबाज़ दोनों ही चलने-फिरने की हालत में न रहते। शायद पुराने ज़माने में लोग अपने शिकार को इसी तरह उठाकर भाग जाते थे और घायल वीर को भी दुश्मन के घेरे में से इसी तरह निकाल लाते थे... नदी भी आ गयी, घास-स्थली भी और कंकर-पत्थरोंवाला घाट भी। वह अंधेरे के बावजूद अभी भी दिखाई दे रहा था।

घुड़सवारों ने पूरी रफ़्तार से अपने घोड़े पानी में कुदा दिये। नदी में उफान आ गया, उसमें लहरें उठने लगीं। छींटों की बौछार और घोड़ों की टापों के कर्णभेदी शोर के बीच बांके घुड़सवार क़दमबाज़ को नदी पार खींच लाये। वे जीत गये!

किसी ने बकरे की लोथ तानाबाय की काठी से उतारी और सरपट घोड़ा दौड़ाता गांव की ओर चल दिया।

कज़ाख़ नदी के उस ओर खड़े रहे।

---

* दोम्ब्रा – कज़ाखों का एक राष्ट्रीय वाद्य, जिसमें दो तार होते हैं।

** क़ोमूज़ – किर्गीज़ों का एक राष्ट्रीय वाद्य, जिसमें तीन तार होते हैं।

"खेल के लिए शुक्रिया!" किर्गीज़ों ने उन्हें चिल्लाकर कहा।
"ख़ुश रहो! शरत् में फिर मिलेंगे!" कज़ाख़ों ने जवाब दिया और अपने घोड़े पीछे मोड़ लिये।

अंधेरा हो चुका था। तानाबाय किसी गांववाले के घर में मेहमान था, उसका क़दमबाज़ अन्य घोड़ों के साथ बाहर बंधा था। फेरे जाने के दिन को छोड़कर गुलसारी कभी इतनी बुरी तरह नहीं थका था। लेकिन उस समय तो वह आज के मुक़ाबले में बच्चा ही था। घर में उसके बारे में बातें हो रही थीं।
"आओ, तानाबाय, गुलसारी के नाम पर जाम पियें। अगर वह न होता, तो हम आज जीत ही नहीं पाते।"
"हाँ, भूरा घोड़ा तो शेर-सा तगड़ा था। और वह लड़का भी ताक़तवार था। वह ज़रूर एक दिन नाम कमायेगा।"
"बिलकुल ठीक कहा। और मेरी आँखों के आगे तो इस वक़्त भी घूम रहा है कि गुलसारी किस तरह ज़मीन से चिपका-सा पीछा करनेवालों से बचकर भागा था। देखकर मेरी तो जान ही सूख गयी थी।"
"क्या कहूँ। ऐसे ही घोड़े पर तो पुराने ज़माने के शूरवीर चढ़ाई करने जाते थे। वह तो सचमुच दुलदुल है, दुलदुल!"
"तानाबाय, तुम उसे जोड़ खिलाने के लिए कब छोड़ोगे?"
"अरे, वह तो पहले से ही घोड़ियों के पीछे पड़ा रहता है, पर अभी जल्दी है। अगले वसन्त तक वह बिलकुल ठीक हो जायेगा। इस शरत् में मैं उसे चरने के लिए आज़ाद छोड़ दूंगा, जिससे कि कुछ मोटा हो जाये..."

लोगों पर सुरूर चढ़ता रहा और वे देर गये तक बैठे अलमान-बैगा के बारे में बातचीत करते रहे, क़दमबाज़ के गुण गिनाते रहे, जब कि वह बाहर बंधा खड़ा दहाना चबाता हुआ अपना पसीना सुखा रहा था। उसे भोर हुए तक भूखे पेट खड़ा रहना था। लेकिन उसे भूख नहीं बल्कि कोई और चीज़ परेशान कर रही थी। उसके कंधे दुख रहे थे, पैर सीसे-से वज़नी हो गये थे, सुमों में जलन हो रही थी और उसके सिर में अभी तक अलमान-बैगा का शोर गूंज रहा था। उसका पीछा करनेवालों की आवाज़ें उसे अभी तक सुनाई दे रही थीं। समय समय पर वह कांप उठता और फुफकारते हुए कनौतियां खड़ी कर लेता। उसका मन बहुत चाह रहा था कि वह चरागाह में अन्य घोड़ों के बीच घास में लोटे, बदन झटकारे और घूमे। लेकिन उसका स्वामी वहीं बैठा हुआ था।

कुछ ही देर बाद वह अंधेरे में थोड़ा लड़खड़ाता हुआ बाहर निकला। उससे कोई बड़ी तीखी बू आ रही थी। ऐसा उसके साथ विरले ही होता था। एक वर्ष बाद क़दमबाज़ का पाला ऐसे आदमी के साथ पड़ना था, जिसके मुँह से ऐसी बू हमेशा ही आती रहनेवाली थी। तब उसे उस आदमी से और उस गंदी बू से नफ़रत हो जानी थी।

तानाबाय ने क़दमबाज़ के पास आकर उसकी गर्दन थपथपायी और काठी के नीचे सहलाया।
"क्या कुछ ठण्डा हो लिया? थक गया क्या? मैं भी बुरी तरह थक गया हूँ। अरे, तिरछी नज़रों से मत देख, मैंने पी तो तेरे नाम पर ही है। ख़ुशी का मौक़ा है। थोड़ी-सी ही तो पी है। मुझे कितनी पीनी चाहिए यह मैं जानता हूँ, समझे। मोर्चे पर भी मैं सीमा में ही पीता था। अरे, छोड़, गुलसारी, ऐसे मत देख। अभी झुण्ड के पास चलते हैं, वहाँ आराम करेंगे..."

स्वामी ने उसकी तंग कसी, घर से बाहर निकले दूसरे लोगों से बता की और सब घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने घर रवाना हो गये।

तानाबाय सोये हुए गाँव की गलियों से गुज़र रहा था। चारों ओर सन्नाटा था। खिड़कियों में अंधेरा छाया था। खेत में से ट्रैक्टर की हल्की घरघर सुनाई दे रही थी। चांद पहाड़ियों के ऊपर जा पहुँचा था, बाग़ों में सफ़ेद फूलों से लदे सेब के पेड़ चमक रहे थे, कहीं बुलबुल गा रही थी। न जाने क्यों सारे गाँव में एक ही बुलबुल गा रही थी। वह अपना ही गीत सुनते-सुनते चुप हो जाती और कुछ देर बाद फिर कूजने लगती।

तानाबाय ने क़दमबाज़ को कुछ देर के लिए रोक लिया।
"कितना सुन्दर लग रहा है!..." वह कह उठा। "कितनी शान्ति है! बस एक बुलबुल कूज रही है। आयी बात समझ में, गुलसारी? अरे, तू क्या... तुझे तो अपना झुण्ड चाहिए, और मुझे..."
वे लोहारख़ाने के पास से गुज़रे, यहाँ से नदी को जानेवाली गली पार

करते ही घोड़ों के झुण्डों की ओर जाना था। पर मालिक ने उसे न जाने क्यों दूसरी दिशा में मोड़ दिया। वह बीचवाली गली के आख़िर तक जाकर उस स्त्री के घर के पास रुक गया। उसकी बच्ची के साथ अकसर दिखाई देनेवाला छोटा-सा कुत्ता बाहर भागा आया और कुछ देर भौंकने के बाद चुप होकर पूंछ हिलाने लगा। उसका स्वामी काठी पर मौन बैठा कुछ सोचता रहा और फिर एक ठण्डी सांस लेकर उसने अन्यमनस्कता से लगाम हाथ में ले ली।

क़दमबाज़ आगे बढ़ा। तानाबाय ने उसे नदी की ओर मोड़ दिया और रास्ते पर पहुंचकर एड़ लगायी। गुलसारी स्वयं भी जल्दी से जल्दी चरागाह पहुँचना चाहता था। उन्होंने घास-स्थली पार की। नदी आ गयी थी, घोड़े की नालें किनारे पर बज उठीं। पानी बर्फ़-सा ठण्डा था। उन्होंने आधी नदी ही पार की थी कि स्वामी ने उसे एकाएक झटके से वापस मोड़ लिया। गुलसारी ने यह सोचकर सिर हिलाया कि शायद उसके मालिक को ग़लतफ़हमी हुई हो। उन्हें पीछे नहीं जाना था। आख़िर कितनी देर तक सवारी की जा सकती है? लेकिन जवाब में मालिक ने उसकी बग़ल में चाबुक मारा। गुलसारी को मार खाना अच्छा नहीं लगता था। उसने ग़ुस्से में दहाना चबाया और अनिच्छापूर्वक आदेश मानते हुए वापस मुड़ गया। उन्होंने दुबारा घासस्थली और वह रास्ता पार किया और फिर उस घर के पास आ पहुँचे।

मालिक घर के सामने फिर झिझकने लगा, कभी एक ओर जाने के लिए लगाम खींचता, कभी दूसरी ओर, समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या चाहता है। वे फाटक के पास खड़े हो गये। वैसे वहाँ फाटक नाम की चीज़ ही नहीं थी। केवल दो टेढ़े खंभे ही खड़े थे। कुत्ता फिर भौंकता हुआ बाहर निकला और चुप होकर दुम हिलाने लगा। घर में अंधेरा था, सन्नाटा छाया हुआ था।

तानाबाय ने घोड़े से उतरकर उसकी लगाम थामे अहाता पार किया और खिड़की के पास पहुँचकर उंगली से शीशे पर खटखटाया।

"कौन है?" भीतर से आवाज़ आयी।

"मैं हूँ, ब्यूब्यूजान, दरवाज़ा खोलो। मैं हूँ, मैं!"

घर के भीतर एक दिया टिमटिमाया और खिड़कियों में हल्की रोशनी दिखाई देने लगी।

"क्या चाहिए तुम्हें? इतनी देर कहाँ से आ रहे हो?" ब्यूब्यूजान दरवाज़े में दिखाई दी। वह खुले गले की सफ़ेद पोशाक पहने हुई थी और उसके काले बाल कंधों पर पड़े थे। उससे शरीर की मादक गंध आ रही थी और उस अज्ञात घास की अद्भुत गंध भी।

"माफ़ करना," तानाबाय ने धीरे से कहा, "अलमान-बैगा से लौटने में देर हो गयी। थक गया हूँ। घोड़े के पैर भी बुरी तरह सूज गये हैं। इसे कुछ देर ठण्डा होने देना है, तुम तो जानती ही हो कि घोड़ों के झुण्ड काफ़ी दूर हैं।"

ब्यूब्यूजान ने कुछ नहीं कहा।

उसकी आँखें चांदनी रात में नदी के तल में पड़े पत्थरों की तरह चमक उठीं और बुझ गयीं। क़दमबाज़ को आशा थी कि वह उसके पास आकर उसकी गर्दन पर हाथ फेरेगी, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

"बाहर ठण्ड है," ब्यूब्यूजान के कंधे कांप उठे। "अरे, खड़े क्यों हो? यही बात है, तो भीतर आ जाओ। अच्छा बहाना सोचा तुमने," वह धीरे से मुसकरायी। "जब तक तुम यहाँ अपने घोड़े पर बैठे कुलबुला रहे थे मैं भीतर बेचैनी से करवटें बदल रही थी। तुम बिलकुल बच्चे ही हो।"

"मैं अभी आया। ज़रा घोड़ा बांध आऊँ।"

"उसे वहाँ कोने में दीवार के पास बांध दो।"

मालिक के हाथ कभी इस तरह से नहीं कांपे थे। उसने जल्दी से दहाना निकाला और काफ़ी देर तक तंगों से उलझता रहा, एक तंग तो ढीली कर दी, पर दूसरी के बारे में भूल ही गया।

वह उसके साथ भीतर चला गया और कुछ देर बाद बत्ती बुझ गयी। क़दमबाज़ को किसी और के अहाते में खड़ा होना बड़ा अजीब लग रहा था।

चांद पूरी तेज़ी से चमक रहा था। गुलसारी ने दीवार के ऊपर आंखें उठाकर देखा, तो उसे गगन चुंबी पहाड़ियां रात्रिकालीन दूधिया नीले प्रकाश में नहायी दिखाई दीं। वह कान लगाकर ध्यान से सुनने लगा। नाली का पानी कलकल करता बह रहा था। दूर खेत में वही ट्रैक्टर घरघर किये जा रहा था और बाग़ में वही अकेली बुलबुल गा रही थी।

पास के सेब के पेड़ की डालों से सफ़ेद फूलों की पंखड़ियाँ निःशब्द घोड़े के सिर और अयाल पर गिर रही थीं।

रात का अन्धेरा धीरे-धीरे छंट रहा था। क़दमबाज़ पैर बदलता खड़ा धैर्यपूर्वक अपने स्वामी की प्रतीक्षा करता रहा। वह नहीं जानता था कि उसे आगे भी न जाने कितनी बार यहीं रात काटनी पड़ेगी।

तानाबाय भोर हुए बाहर निकला और उसने अपने गरम-गरम हाथों से गुलसारी के मुँह में दहाना डाला। अब उसके हाथों में से भी उसी अज्ञात घास की अद्भुत गंध आ रही थी।

ब्यूब्यूजान तानाबाय को छोड़ने बाहर आयी। वह उससे चिमट गयी और तानाबाय उसे काफ़ी देर तक चूमता रहा।

"मूंछों से मेरा मुंह छील डाला," वह फुसफुसायी। "जल्दी करो, देखो कितना उजाला हो गया है।" वह घर में जाने के लिए मुड़ी।

"ब्यूब्यू, यहाँ आओ," तानाबाय ने उसे आवाज़ दी। "ज़रा इसे प्यार से सहलाओ," उसने क़दमबाज़ की ओर सिर से इशारा किया। "नहीं तो हम दोनों तुमसे रूठ जायेंगे।"

"अरे, मैं तो भूल ही गयी थी," वह हंस पड़ी। "अरे, देखो, यह तो पूरी तरह सेब के फूलों से ढक गया है।" और वह बड़े प्यार से घोड़े को पुचकारती और बातें करती हुई माथे पर सफ़ेद तारेवाली घोड़ी के कोमल और संवेदनशील होंठों सदृश अपने अद्भुत हाथों से उसे सहलाने लगी।

नदी पार करने के बाद तानाबाय गा उठा। गुलसारी को उस गीत की धुन के साथ दौड़ने में बड़ा आनन्द आ रहा था। वह जल्दी से जल्दी चरागाह में घोड़ों के झुण्डों में पहुँचना चाहता था।

मई की इन रातों में तानाबाय के भाग्य ने बड़ा साथ दिया। रात में घोड़ों को चराने की उसकी बारी उन्हीं दिनों आयी। क़दमबाज़ की भी रात की अजीब-सी ज़िन्दगी शुरू हो गयी। वह दिन में चरता, सुस्ताता और रात होते ही मालिक झुण्ड को संकरी घाटी में हांक लाता और उस पर सवार हो सरपट उसी घर की ओर दौड़ पड़ता। पौ फटते-फटते वे स्तेपी की पगडण्डियों पर घोड़ों के चोरों की तरह भागते हुए घाटी में खड़े घोड़ों के पास लौट आते। यहाँ मालिक घोड़ों को हांककर उनकी गिनती करता और फिर चैन से बैठ जाता। क़दमबाज़ को बड़ी परेशानी उठानी पड़ रही थी। उसके मालिक को दोनों जगह पहुंचने की जल्दी रहती थी

और कच्चे रास्तों पर रात के अंधेरे में भागना कोई आसान काम नहीं था। लेकिन उसके मालिक की यही मर्ज़ी थी।

गुलसारी कुछ और ही चाहता था। अगर उसकी चलती, तो वह कभी अपने झुण्ड को छोड़कर न जाता। उसमें नर परिपक्व हो रहा था। अभी तक तो वह किसी तरह झुण्ड के सांड़ के साथ गुज़र कर रहा था, पर अब वे आये दिन किसी घोड़ी को लेकर आपस में भिड़ने लगे थे। वह अक्सर अपनी गर्दन ताने और पूंछ उठाये झुण्ड के सामने इठलाने लगा था। वह बड़े ज़ोर से हिनहिनाता, घोड़ियों के पुट्ठों पर काटते हुए उत्तेजित हो जाता। उन्हें शायद यह बहुत अच्छा लगता था। वे उससे सट जाया करती थीं जिससे सांड़ को और जलन होने लगती थी। क़दमबाज़ को इसकी काफ़ी कड़ी सज़ा भुगतनी पड़ती थी, क्योंकि सांड़ पुराना और बड़ा ख़ूंख़्वार लड़ाका था। लेकिन सारी रात अहाते में बंधे खड़े रहने से तो परेशानी उठाना और सांड़ से बचकर भागना कहीं ज़्यादा अच्छा था। अहाते में उसे घोड़ियों की याद बहुत सताती थी। वह काफ़ी देर तक पैर ज़मीन पर मारने और उसे टापों से खोदने के बाद ही शान्त हो पाता था। अगर वह घटना न घटी होती, तो कौन जाने ये रात्रिकालीन यात्राएँ कब तक चलतीं . . .

उस रात क़दमबाज़ हमेशा की तरह अहाते में खड़ा अपने झुण्ड की याद में तड़पता अपने मालिक का इन्तज़ार कर रहा था। उसे झपकी आ रही थी। उसकी लगाम छत के शहतीर की कड़ी से बंधी हुई थी। इससे वह लेट नहीं पा रहा था, क्योंकि जब भी उसका सिर झुकता, दहाना उसके मुंह के कोनों में चुभने लगता। फिर भी नींद बड़े ज़ोर से आ रही थी। हवा में कुछ घुटन-सी महसूस हो रही थी, आकाश पर काले बादल छाये हुए थे।

एकाएक गुलसारी को कच्ची नीन्द में पेड़ों के सरसराने और हिलने-डुलने की आवाज़ें सुनाई दीं। ऐसा लगा मानो कोई पेड़ों पर अचानक टूट पड़ा और उन्हें हिलाकर गिराने लगा। हवा के तेज़ झोंके अहाते में आने लगे, दूध की ख़ाली बाल्टी खड़खड़ करती लुढ़कने लगी, रस्सी पर लटके कपड़े उड़ने लगे। कुत्ता कूं-कूं करता इधर-उधर भागने लगा, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कहाँ छिपे। क़दमबाज़ गुस्से में फुफकारा और कनौतियाँ खड़ी करके चुपचाप खड़ा हो गया। वह अपना सिर उठाकर स्तेपी

की ओर एकटक देखने लगा, जहाँ रहस्यमय भयावह अंधेरा छाया हुआ था और गड़गड़ाहट की आवाज़ के साथ उसकी ओर बढ़ा आ रहा था। अगले ही क्षण आकाश गिरते पेड़ों के से शोर से फट पड़ा, ज़ोर की गड़गड़ाहट हुई, बादलों में बिजली कड़कने लगी। मूसलधार वर्षा होने लगी। क़दमबाज़ रस्सी तुड़ाने के लिए ऐसे उछला, मानो उसे ज़ोर से चाबुक मारा गया हो और अपने झुण्ड के लिए आशंकित हो बड़े ज़ोर से हिनहिना उठा। उसमें अपने कुटुम्ब की ख़तरे से रक्षा करने की जन्मजात सहज प्रवृति जाग उठी। यह सहज प्रवृति उसे उनकी मदद के लिए जाने को प्रेरित कर रही थी। वह पागल हो उठा और उसने रस्सी, दहाने और लगाम के विरुद्ध, हर उस वस्तु के विरुद्ध, विद्रोह कर दिया, जो उसे वहाँ ज़बरदस्ती रोके हुई थी। वह उछलने कूदने लगा, टापों से ज़मीन खोदने लगा और अपने झुण्ड के घोड़ों की आवाज़ सुनने के लिए लगातार हिनहिनाने लगा। लेकिन केवल तूफ़ान का ही शोरगुल सुनाई दे रहा था। काश, वह उस रात रस्सी तुड़ाकर भाग पाता! ..

उसका मालिक कपड़े के नीचे पहने जानेवाली सफ़ेद क़मीज़ में बाहर भागा आया और उसके पीछे-पीछे वह औरत भी सफ़ेद कपड़ों में भागी आयी। वर्षा के कारण एक क्षण में उनके कपड़ों का रंग गहरा हो गया। उनके गीले चेहरों और भयभीत आँखों पर कौंधती बिजली का नीला प्रकाश पड़ा और अंधकार में घर का एक कोना और हवा से भड़भड़ाता किवाड़ दिखाई दे गये।

"अरे, थम, थम जा!" तानाबाय घोड़े को खोलने की कोशिश करते हुए चीखा। लेकिन गुलसारी अब उसकी सुन ही नहीं रहा था। क़दमबाज़ पागल जानवर की तरह अपने स्वामी पर टूट पड़ा। उसने अपनी टापों से कच्ची दीवार का एक हिस्सा गिरा दिया और रस्सी तुड़ाने के लिए ज़ोर-ज़ोर से उछलता-कूदता रहा। तानाबाय अपना सिर हाथों से ढककर दीवार से चिपककर चलता हुआ उसकी ओर बढ़ा और लगाम पकड़कर ज़ोर से खींचने लगा।

"जल्दी से खोलो!" उसने औरत से चिल्लाकर कहा।

उसने कड़ी से रस्सी खोली ही थी कि क़दमबाज़ तानाबाय को अहाते में घसीटता भागने लगा।

"जल्दी से चाबुक दो!"

व्यूव्यूजान ने फ़ौरन चाबुक उठाकर दिया।

"थम, थम जा, नहीं तो जान ले लूंगा!" तानाबाय पागलों की तरह घोड़े के मुंह पर चाबुक बरसाते हुए चिल्लाया। उसे काठी पर सवार होकर फ़ौरन घोड़ों के झुण्ड के पास पहुँचना था। पता नहीं वहाँ क्या हो रहा है? तूफ़ान के कारण घोड़े न जाने कहाँ भाग रहे होंगे?

लेकिन क़दमबाज़ को भी तुरन्त, उसी क्षण अपने झुण्ड के पास पहुँचना था—उसकी तीव्र सहज प्रवृत्ति ख़तरे के मौक़े पर उसे वहाँ जाने के लिए पुकार रही थी। इसीलिए वह हिनहिना रहा था, पिछली टांगों पर खड़ा होकर छूटकर भागने के लिए मचल रहा था। इस बीच मूसलधार वर्षा होती रही, तूफ़ान गरजता रहा, गड़गड़ाहट और कड़कड़ाहट के साथ आकाश में बिजली कौंधती रही।

"पकड़ो!" तानाबाय ने व्यूव्यूजान को आदेश दिया और जब उसने लगाम पकड़ ली, तो वह उछलकर काठी पर सवार हो गया। वह ठीक से काठी पर बैठने के लिए घोड़े की अयाल ही पकड़ पाया था कि गुलसारी औरत को गिराकर, डबरे में घसीटता हुआ अहाते से भाग निकला।

गुलसारी पर अब न दहाने का कोई असर हो रहा था, न चाबुक की मार का, और न ही उसके स्वामी की आवाज़ का। वह तूफ़ानी रात और कोड़ों की तरह पड़ रही बौछार में केवल अपनी घ्राण-शक्ति से रास्ता खोजता हुआ भागा जा रहा था। वह अपने अधिकार-च्युत स्वामी को उफन-ती नदी, पानी, कड़कती बिजली, झाड़ियों के झुरमुटों, गड्ढों, खड्डों में से लेकर निकलता हुआ निरन्तर आगे भागा जा रहा था। गुलसारी उस तूफ़ानी रात में जितनी तेज़ी से भाग रहा था, उतनी तेज़ी से अब तक न वह किसी बड़ी घुड़दौड़ में भागा था, न अलमान बैगा में।

तानाबाय को कुछ मालूम नहीं पड़ रहा था कि उसका उन्मत्त घोड़ा उसे लिये कहाँ और कैसे भागा जा रहा है। उसे अपने चेहरे और शरीर पर पड़ती वर्षा की बौछारें दहकती लपटों की तरह लग रही थीं। उसके मस्तिष्क में केवल एक ही विचार बार-बार कौंध रहा था, "झुण्ड का क्या हुआ?" इस समय घोड़े कहाँ होंगे?" ख़ुदा न करे, कहीं वे घाटी में उतरकर रेल-लाइन पर न पहुंच जायें। मैं बरबाद हो जाऊंगा! ए

अल्लाह, मेरी मदद कर! ए अरबाकी*, आप कहाँ हैं, मेरी मदद कीजिए! तू ठोकर मत खाना, गुलसारी, ठोकर मत खाना! मुझे स्तेपी में वहाँ मेरे झुण्ड के पास पहुँचा दे!"

स्तेपी में दूर की बिजली की लपकें रात का अंधकार चीरती चमकीं। फिर गहन अंधकार छा गया, तूफ़ान गरजता रहा, बारिश की बौछारें हवा को थपेड़े मार रही थीं।

कभी उजाला होता, तो कभी अंधकार छा जाता, फिर उजाला होता, फिर अंधकार छा जाता...

क़दमबाज़ पिछली टांगों पर खड़ा होकर मुंह फाड़-फाड़कर हिनहिना रहा था। वह अपने साथियों को पुकार रहा था, उनकी चिरौरी कर रहा था, उन्हें खोज रहा था, उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। "कहाँ हो, तुम लोग? कहाँ हो? आवाज़ दो!" जवाब में केवल आकाश गरज उठता और वह फिर तूफ़ान में उन्हें ढूंढ़ने के लिए भागने लगता...

कभी उजाला होता, तो कभी अन्धकार छा जाता, फिर उजाला होता, फिर अन्धकार छा जाता...

तूफ़ान भोर होते होते ी शान्त हुआ। धीरे-धीरे बादल छंट गये, लेकिन पूर्व में अभी भी बिजली काफ़ी दूर तक गड़गड़ाहट के साथ कौंध रही थी। उजड़ी हुई ज़मीन में से धुआँ उठ रहा था।

कुछ चरवाहे झुण्ड से अलग हुए घोड़ों को आसपास के इलाक़ों में ढूंढ़ते हुए भटक रहे थे।

तानाबाय की पत्नी उसको खोज रही थी। सच कहा जाये, तो वह उसे ढूंढ़ नहीं रही थी, बल्कि उसका इन्तज़ार कर रही थी। वह अपने पड़ोसियों के साथ रात में ही घोड़े पर सवार होकर अपने पति की मदद के लिए दौड़ पड़ी थी। उन लोगों ने झुण्ड को ढूंढ़ लिया था और उसे गहरी घाटी में रोके हुए थे। लेकिन तानाबाय का कोई पता न था। उन्होंने सोचा कि शायद वह रास्ता भूल गया है! लेकिन वह जानती थी कि वह रास्ता नहीं भूला है। और जब पड़ोसी के लड़के ने ख़ुशी से आवाज़ दी, "जयदार आपा, उधर देखो, वह आ रहे हैं!" वह अपना घोड़ा दौड़ाता उसकी ओर लपका, किन्तु जयदार अपनी जगह से नहीं

---

* अरबाकी – पूर्वजों की आत्माएं।

हिली। वह घोड़े पर बैठी हुई अपने व्यभिचारी पति को वापस आते हुए देखती रही।

तानाबाय चुप था। वह कपड़े के नीचे पहनी जानेवाली गीली क़मीज़ में, बिना टोपी के, रात में ठोकर खाने से लंगड़ाते हुए घोड़े पर बैठा बड़ा डरावना लग रहा था। गुलसारी की दायीं टांग में चोट लगी थी।

"हम तो आपको ढूंढ़ रहे थे!" उसके पास दौड़े आये लड़के ने उल्लसित स्वर में कहा। "जयदार आपा को बहुत फ़िक्र हो रही थी।"

अरे, छोकरे, तुम क्या जानो...

"मैं रास्ता भूल गया था," तानाबाय बुदबुदाया।

पति और पत्नी की मुलाक़ात इस तरह हुई। उन्होंने एक दूसरे से कुछ भी नहीं कहा। और जब वह लड़का घोड़ों को गहरी घाटी में से हांकने चला गया, तो जयदार धीरे से बोली,

"तुम्हें क्या कपड़े पहनने का भी वक़्त नहीं मिला? चलो, कम-से-कम तुम पतलून और जूते तो पहने हुए हो। तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम अब जवान तो रहे नहीं। तुम्हारे बच्चे सयाने हो रहे हैं और तुम हो कि..."

तानाबाय चुप रहा। आख़िर वह कहता भी क्या?

इस बीच लड़का झुण्ड को वहाँ हांक लाया। झुण्ड के सारे घोड़े और बछेड़े सुरक्षित थे।

"चलो, घर चलें, अल्तीके," जयदार ने लड़के को आवाज़ दी। "आज तुम्हें भी और हमें भी ढेरों काम करने हैं। हवा से तम्बू उखड़ गये हैं। चलो, उन्हें ठीक से लगा लें।"

तानाबाय से उसने धीमे स्वर में कहा,

"तुम यहीं रुको। मैं तुम्हारे लिए खाना और कपड़े लेकर आती हूँ। इस हाल में तुम लोगों के सामने कैसे आओगे?"

"मैं वहाँ नीचे रहूँगा," तानाबाय ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

वे चले गये। तानाबाय झुण्ड को चरागाह की ओर हांकने लगा। वह उन्हें काफ़ी देर तक हांकता रहा। सूरज निकल आया था, गर्मी महसूस होने लगी थी। स्तेपी में से भाप उठने लगी थी। वह जाग उठी थी। चारों ओर से बारिश और ताज़ा हरी घास की गंध आ रही थी।

घोड़े धीरे-धीरे बीहड़ों और खड्डों को पार कर एक टेकरी

पर पहुँच गये। यहाँ तानाबाय को एक बिलकुल ही दूसरी दुनिया अपने सामने दिखाई दी। सफ़ेद बादलों से ढका क्षितिज दूर, बहुत दूर सरक गया लग रहा था। आकाश निस्सीम, ऊंचा और निर्मल लग रहा था। बहुत दूर स्तेपी में एक रेलगाड़ी धुआं छोड़ती चली जा रही थी।

तानाबाय घोड़े से उतरकर घास पर चलने लगा। पास ही में एक भरत पंख फड़फड़ाता उड़ा और चहचहाने लगा। तानाबाय कुछ देर सिर झुकाये चलता रहा, फिर एकाएक मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा।

गुलसारी ने अपने स्वामी को ऐसी हालत में कभी नहीं देखा था। वह मुंह नीचा किये लेटा था और सिसकियों से उसके कंधे कांप रहे थे। वह शर्म और दुख के कारण रो रहा था। वह जानता था कि उसे जीवन में अन्तिम बार जो सुख मिला था, वह उसे हमेशा के लिए खो चुका है। लेकिन भरत लगातार चहक रहा था...

अगले दिन घोड़ों के झुण्ड पहाड़ों की ओर रवाना हो गये। अब इन्हें यहाँ अगले वर्ष वसन्त के आरम्भ में ही वापस आना था। क़ाफ़िला नदी के किनारे-किनारे गांव के पास से गुज़रा। उसमें भेड़ों, गायों और घोड़ों के झुण्ड थे। लद्दू घोड़े और ऊंट थे। स्त्रियाँ और बच्चे घोड़ों पर सवार थे। झबरे बालोंवाले कुत्ते दौड़ रहे थे। सारा आकाश टिटकारने, हिनहिनाने, मिमियाने की आवाज़ों से गूंज रहा था...

तानाबाय बड़ी घास-स्थली में से अपने झुण्ड को हांकता हुआ उस टेकरी के सामने से गुज़र रहा था, जहां कुछ दिन हुए त्योहार के अवसर पर लोग इकट्ठे हुए थे। वह गांव की ओर नज़र न डालने की कोशिश करते हुए चल रहा था। और गुलसारी ने जब एकाएक उसे गांव के छोर पर स्थित घर की ओर ले जाना चाहा, तो उसे इसके लिए चाबुक की मार खानी पड़ी। इस प्रकार वे माथे पर सफ़ेद तारेवाली उस कुम्मैत घोड़ी के कोमल और संवेदनशील होंठों सदृश अद्भुत हाथोंवाली स्त्री के यहाँ न जा पाये...

झुण्ड बड़े मजे में चला जा रहा था।

गुलसारी चाहता था कि उसका स्वामी गाये, पर उसने नहीं गाया। गांव पीछे छूट गया। अलविदा, प्यारे गांव। आगे पहाड़ थे। अलविदा, प्यारी स्तेपी, अगले वसन्त में फिर मिलेंगे। आगे पहाड़ थे।

छह

आधी रात होने वाली थी। गुलसारी अब और आगे नहीं चल पा रहा था। वह किसी तरह रास्ते में दसियों बार रुककर, लंगड़ाता हुआ खड्ड तक तो आ गया था, पर खड्ड पार करना उसके बस की बात नहीं थी। बूढ़ा तानाबाय समझ गया कि घोड़े से इससे अधिक की आशा उसे नहीं करनी चाहिए। गुलसारी बुरी तरह कराह रहा था, बिलकुल किसी आदमी की तरह। जब वह लेटने की कोशिश करने लगा, तो तानाबाय ने उसे रोका नहीं।

क़दमबाज़ ठण्डी ज़मीन पर लेटा हुआ कराहता रहा और सिर इधर-उधर हिलाता रहा। उसे ठण्ड लग रही थी, उसका सारा बदन कांप रहा था। तानाबाय ने अपना भेड़ की खाल का कोट उतारकर घोड़े की पीठ पर डाल दिया।

"क्यों तेरी तबीयत खराब है? बहुत खराब है क्या? गुलसारी, तू तो ठिठुर गया है। तुझे तो कभी ठण्ड महसूस नहीं होती थी।"

तानाबाय कुछ और बुदबुदाया, पर क़दमबाज़ अब कुछ नहीं सुन रहा था। उसके दिल की धड़कनों का शोर अन्य सब आवाज़ों को दबाता हुआ उसके माथे में गूंज रहा था: धक... धक... धक .... धक... ऐसा लग रहा था मानो घोड़ों का झुण्ड आतंकित हो पीछा करनेवालों से घबराकर भाग रहा हो जो उसे बस पकड़ने ही वाले हैं।

चांद पहाड़ियों के पीछे से निकलकर दुनिया के ऊपर छाये कुहरे में टंग गया। एक तारा निःशब्द टूटकर बुझ गया...

"तू यहाँ लेटा रह, इतने में मैं कुछ घास और टहनियाँ ले आता हूँ," बूढ़े ने कहा।

वह काफ़ी देर तक आस-पास पिछले वर्ष का सूखा घासपात इकट्ठा करता भटकता रहा। उसके हाथ कांटों से छलनी हो गये। फिर वह खड्ड में चाकू लेकर उतरा, शायद वहीं कुछ मिल जाये और वहाँ उसे टैमरिस्क की झाड़ी दिखाई दे गयी। वह बड़ा ख़ुश हुआ—अब वह अच्छा-सा अलाव सुलगा सकेगा।

गुलसारी को हमेशा आग के पास रहने में डर लगता था। लेकिन इस बार उसे डर नहीं लगा। अलाव की आंच और धुएँ से उसे गर्मी महसूस

हो रही थी। तानाबाय चोरी पर मौन बैठा बारी-बारी से अलाव में टैमरिस्क की टहनियाँ और घास-पात डालता आग को ताकता हाथ ताप रहा था। वह बीच-बीच में उठकर घोड़े पर डाला कोट ठीक करके फिर आग के पास आ बैठता।

गुलसारी के बदन में कुछ गर्मी आयी, उसकी कंपकंपी ख़त्म हो गयी, लेकिन उसकी आँखों में पीली धुन्ध छा रही थी, उसका सीना दर्द के मारे जकड़ा जा रहा था, सांस लेना दूभर होता जा रहा था। आग की लपटें कभी हवा से बुझने लगतीं, कभी भड़क उठतीं। उसके सामने बैठा बूढ़ा, उसका पुराना मालिक कभी उसकी आंखों से ओझल हो जाता, कभी फिर दिखाई देने लगता। क़दमबाज़ को सन्निपात की अवस्था में ऐसा लग रहा था, मानो वे तूफ़ानी रात में स्तेपी में भागे जा रहे हैं, वह पिछली टांगों पर खड़ा होकर हिनहिना रहा है, झुण्ड को ढूंढ़ रहा है, पर वह मिल ही नहीं रहा है। दूर की बिजली की लपकें कभी दिखाई देती हैं, कभी बुझ जाती हैं। कभी उजाला हो जाता है, कभी अंधेरा, फिर उजाला, फिर अंधेरा...

सात

जाड़ा बीत गया। यूं कहिये, कुछ समय के लिए चरवाहों को यह दिखाने के लिए चला गया कि ज़िन्दगी आख़िर इतनी बुरी नहीं होती। अब गर्मी का मौसम आयेगा, जानवर मोटे होंगे, दूध और गोश्त प्रचुर मात्रा में होगा, त्योहारों के अवसर पर घुड़दौड़ें होंगी, रोज़मर्रा के सारे काम होंगे—भेड़ें ब्याएंगी, उनका ऊन उतारा जायेगा, मेमनों की संभाल करनी होगी, नये चरागाहों में जाना होगा; इसके अलावा हर एक की अपनी ज़िन्दगी होगी—प्यार और जुदाई, जन्म और मृत्यु, बोर्डिंग-स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों की सफलताओं पर ख़ुशी और ख़राब परिणामों पर दुख होगा, माता-पिता सोचेंगे कि घर पर रहते, तो शायद ज्यादा अच्छी तरह पढ़ते... कुछ भी क्यों न हो, पर चिन्ताएँ हमेशा काफ़ी रहेंगी, हां, कुछ समय के लिए जाड़े के कष्ट ज़रूर भूल जायेंगे। अकाल, पशु-धन की हानि, बर्फ़ में जकड़ी ज़मीन, फटे-पुराने तम्बू, ठण्डे शेड आदि अगले वर्ष तक के लिए रिपोर्टों में दबे रह जायेंगे। फिर सफ़ेद ऊंटनी पर सवार

हो शीतऋतु आ धमकेगी, चरवाहा चाहे जहाँ भी हो, पहाड़ों में या स्तेपी में, वह उसे ढूंढ़कर अपनी हठधर्मिता दिखा देगी। तब उसे कुछ समय के लिए भूली सारी बातें याद आ जायेंगी। बीसवीं सदी में भी शीतऋतु का स्वभाव बिलकुल नहीं बदला।

उस समय भी ऐसा ही हुआ। सूखकर काँटा हो गये भेड़ों के गल्ले और घोड़ों के झुण्ड पहाड़ों से उतरकर स्तेपी में फैल गये। वसन्त आ चुका था। वे जाड़ा झेल चुके थे।

गुलसारी उस वसन्त में अपने झुण्ड का सांड़ बन बैठा। अब तानाबाय उस पर बहुत कम सवारी करता था, उसे उस पर दया भी आती थी, फिर ऐसा करना ठीक भी न था, क्योंकि उनकी संगमऋतु निकट थी।

ऐसे आसार नज़र आ रहे थे कि गुलसारी एक अच्छा सांड़ साबित होगा। वह एक बाप की तरह बछेड़ों का ख़्याल रखता था। कोई घोड़ी अगर ज़रा भी लापरवाही करती, तो वह फ़ौरन वहाँ पहुँचकर उसके बछेड़े को गिरने या झुण्ड से बिछुड़ने से बचा लेता। गुलसारी में एक अन्य विशेषता यह थी कि उसे घोड़ों को व्यर्थ परेशान किया जाना बिलकुल भी पसन्द न था, और अगर ऐसा होता, तो वह तुरन्त अपने झुण्ड को दूर भगा ले जाता।

उस वर्ष जाड़े में सामूहिक फ़ार्म में कुछ परिवर्तन हुए। वहाँ एक नया अध्यक्ष नियुक्त किया गया। चोरो सारे काग़ज़ात उसे सौंपकर ख़ुद ज़िले के अस्पताल में अपना इलाज करा रहा था। उसके दिल की बीमारी ज़ोर पकड़ती जा रही थी। तानाबाय ने कई बार अपने दोस्त को देखने जाने की सोची, लेकिन भला उसे कभी फ़ुरसत मिल सकती थी? चरवाहा अनेक बच्चों की मां की तरह होता है, उसे हमेशा चिन्ताएँ लगी रहती हैं, विशेषत: जाड़े में और वसन्त के आरम्भ में। जानवर कोई मशीन तो होता नहीं, कि बटन दबाकर बन्द कर दिया और छोड़कर चले गये। इस तरह उस समय तानाबाय ज़िले के अस्पताल जा ही न सका। उसका अब एवज़ी कोई न था। उसकी पत्नी ही उसके सहायक की हैसियत से काम कर रही थी—आख़िर उन्हें किसी न किसी तरह पेट तो भरना ही था। दिहाड़ी चाहे जितनी कम हो, पर दो दिहाड़ियों के बदले में एक दिहाड़ी से तो ज्यादा ही मिलता था।

लेकिन जयदार की गोद में बच्चा था। वह भला उसकी क्या सहायता

कर सकती थी? उसे रात-दिन अकेले ही सारे काम करने पड़ते थे। जब तानाबाय अपने पड़ोसियों से उसके एवज़ में काम करने के लिए बात कर रहा था, उसी समय ख़बर मिली कि चोरो अस्पताल से गांव लौट आया है। तब उन दोनों ने फ़ैसला किया कि वे पहाड़ों से नीचे उतरने के बाद उससे मिलने जायेंगे। लेकिन वे अभी घाटी में उतरकर नये स्थान पर डेरा जमाने ही लगे थे कि वह घटना घटी, जिसको याद करके तानाबाय अब भी परेशान हो उठता है....

क़दमबाज़ की ख्याति दुधारी तलवार की तरह होती है। जितना ज़्यादा उसका नाम होता है, अफ़सर लोग उसे हथियाने के लिए उतने ही लालायित हो उठते हैं।

तानाबाय उस दिन सुबह ही घोड़ों को चरागाह में हांककर नाश्ता करने घर आया था। वह अपनी नन्ही बेटी को गोद में बिठाये चाय की चुस्कियां लेता हुआ पत्नी के साथ घर-गृहस्थी की बातें कर रहा था।

उसे बोर्डिंग-स्कूल में अपने बेटे से मिलने जाना था और लौटते समय स्टेशनवाले बाज़ार से अपने बच्चों व बीवी के लिए कुछ कपड़े ख़रीदने थे।

"जयदार, इसके लिए तो मुझे फिर क़दमबाज़ पर काठी कसनी होगी," तानाबाय ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा। "नहीं तो मैं वक़्त पर वापस नहीं लौट सकूंगा। आख़िरी बार उस पर सवारी करता हूँ, फिर उसे तंग नहीं करूँगा।"

"अच्छा, जैसी तुम्हारी मरज़ी," उसने हाँ में हाँ मिलाई।

बाहर से घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनाई दी। कोई उनके पास आ रहा था।

"ज़रा देखना," उसने पत्नी से कहा। "कौन आया है?"

वह बाहर निकली और लौटकर बोली कि अश्व-पालक फ़ार्म का प्रबंधक इब्राइम आया है और उसके साथ एक और आदमी है।

तानाबाय अनिच्छापूर्वक उठा और अपनी बेटी को गोदी में लिये तम्बू से बाहर निकला। हालांकि उसे इब्राइम पसन्द नहीं था, पर अतिथि का सम्मान करना तो ज़रूरी था। तानाबाय स्वयं भी नहीं जानता था कि उसे इब्राइम क्यों अच्छा नहीं लगता था। वैसे तो वह औरों से अधिक नम्र था, लेकिन फिर भी लगता था कि वह चलता पुर्ज़ा है। सबसे मुख्य बात यह थी कि वह कोई ख़ास काम नहीं करता था, हिसाब-किताब रखने के

अलावा कुछ नहीं करता था। उसके फ़ार्म में घोड़ों की नस्ल सुधारने के नाम पर वास्तव में कुछ नहीं होता था, हर चरवाहा अपने भाग्य भरोसे छोड़ दिया जाता था। तानाबाय पार्टी-मीटिंगों में इस बारे में अनेक बार बोल चुका था। उस समय सब उससे सहमत हो जाते थे, इब्राइम भी। वह आलोचना के लिए उसे धन्यवाद देता, पर सब ज्यों का त्यों चलता रहता। सौभाग्यवश चरवाहे ईमानदार रखे गये थे। चोरो ने उन्हें स्वयं चुना था।

इब्राइम घोड़े से उतरा और मेज़बान का अभिवादन करते हुए उसने दोनों हाथ फैला दिये।

"सलाम-अलैकुम, बाय*।" वह सब चरवाहों को बाय कहकर पुकारता था।

"अलैकुम-सलाम!" तानाबाय ने आये हुए लोगों से हाथ मिलाते हुए जवाब दिया।

"क्या हाल है? घोड़े कैसे हैं, तानाबाय? और आप कैसे हैं?" इब्राइम ने आदतन अपने घिसे-पिटे सवालों की बौछार कर दी, उसके भरे हुए गालों पर वैसी ही घिसी-पिटी मुस्कान फैल गयी।

"सब ठीक है।"

"ख़ुदा का शुक्र है। आप लोगों के बारे में मुझे कभी फ़िक्र नहीं करनी पड़ती।"

"आइये, तशरीफ़ लाइये।"

जयदार ने मेहमानों के लिए नया नमदा बिछा दिया और उसके ऊपर फ़र्श पर बैठनेवालों के लिए ख़ास तौर से बनाये हुए बकरी की खाल के टुकड़े रख दिये।

इब्राइम ने जयदार का भी ख़्याल रखा।

"सलाम-अलैकुम, जयदार आपा। आपकी सेहत कैसी है? आप अपने बाय का अच्छी तरह ख़्याल रखती हैं न?"

"अलैकुम-सलाम। आइये, इधर बैठिये।"

सब बैठ गये।

"हमें थोड़ी क़िमिज़ दे दो," तानाबाय ने पत्नी से कहा।

---

* बाय – कुलक, ज़मींदार।

वे क़िमिज़ पीते हुए इधर-उधर की बातें करने लगे।

"आजकल तो पशुपालन ही सबसे बढ़िया काम है। कम-से-कम गर्मी में दूध और गोश्त तो मिलता रहता है," इब्राइम ने तर्क दिया, "खेती से या और किसी काम से कुछ नहीं मिलता। इसलिए आजकल तो घोड़ों और भेड़ों के पास ही रहना चाहिए। मैंने ठीक कहा न, जयदार आपा?"

जयदार ने गर्दन हिलाई ,पर तानाबाय मौन रहा। वह स्वयं भी यह जानता था और इब्राइम के मुंह से वह यह बात पहली बार नहीं सुन रहा था, जो मौक़ा मिलते ही यह इशारा करने से नहीं चूकता था कि पशु-पालक के काम की क़द्र करनी चाहिए। तानाबाय के मन में आया कि वह कहे कि लोगों का ऐसी नौकरियों से चिपके रहना, जहाँ दूध और गोश्त आसानी से मिलता रहे, कोई अच्छी बात नहीं है। फिर और लोग क्या करेंगे? आखिर लोग कब तक मुफ़्त में काम करते रहेंगे? भला युद्ध के पहले कभी ऐसा होता था? उन दिनों शरत् में हर घर में दो या तीन गाड़ी अनाज पहुँचा दिया जाता था। और अब? लोग खाली बोरियाँ लिये अनाज की तलाश में इधर-उधर भागते रहते हैं। अनाज पैदा करते हैं, लेकिन ख़ुद बिना अनाज के बैठे रह जाते हैं। यह कोई अच्छी बात है? खाली मीटिंगों और थोथे वादों से ज़्यादा दिन थोड़े ही गुज़र किया जा सकता है। चोरो को दिल का रोग इसलिए लगा, क्योंकि वह लोगों को काम के बदले में मीठी बातों के अलावा अब और कुछ नहीं दे सकता है। लेकिन उसके मन में जो बातें खटक रही थीं, उन्हें इब्राइम को बताना व्यर्थ था। फिर तानाबाय इस समय बात बढ़ाना भी नहीं चाहता था। वह उनसे जल्दी से जल्दी पीछा छुड़ाकर क़दमबाज़ पर सवार हो अपने काम करने जाना चाहता था, जिससे कि जल्दी वापस लौट सके। ये लोग क्यों आये हैं? लेकिन पूछना अनुचित लग रहा था।

"मैंने तुम्हें पहचाना नहीं, भाई," तानाबाय ने इब्राइम के मितभाषी नौजवान साथी से कहा। "तुम मरहूम अबलक के बेटे तो नहीं हो?"

"जी, मैं उन्हीं का बेटा हूँ।"

"वक़्त कितनी जल्दी बीत जाता है! क्या तुम घोड़ों के झुण्ड देखने आये हो? बहुत मन करता होगा, क्यों?"

"नहीं, नहीं, हम..."

"यह मेरे साथ आया है," इब्राइम ने उसकी बात काट दी। "हम

एक काम से यहाँ आये हैं, ख़ैर उसके बारे में बाद में बात करेंगे। आप-की क़िमिज़ तो बहुत बढ़िया है, जयदार आपा। वाह! कितनी ख़ुशबूदार है! ज़रा एक प्याली और दीजिये।"

फिर इधर-उधर की बातें होने लगीं। तानाबाय भांप गया कि दाल में कुछ काला है, लेकिन उसकी समझ में नहीं आया कि इब्राइम किस काम से उसके पास आया है। अन्त में इब्राइम ने अपनी जेब से एक काग़ज़ निकाला।

"तानाबाय, हम आपके पास इस काम से आये हैं, यह काग़ज़ पढ़ लीजिये।"

तानाबाय ने मन ही मन हिज्जे कर करके पढ़ा। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। काग़ज़ पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था,

"आदेश

चरवाहे बकासोव को आदेश दिया जाता है कि वह क़दमबाज़ गुलसारी को सवारी के काम के लिए अस्तबल में भेज दे।

हस्ताक्षर

दिनांक—५ मार्च, १९५० अध्यक्ष

सामूहिक फ़ार्म"

तानाबाय घटना-क्रम के इस अप्रत्याशित मोड़ से स्तब्ध रह गया। उसने बिना कुछ बोले काग़ज़ की चार तह करके अपनी पुरानी फ़ौजी क़मीज़ की जेब में रख लिया और काफ़ी देर तक आँखें झुकाये बैठा रहा। उसके दिल में टीस उठने लगी। वैसे इसमें अप्रत्याशित कुछ भी नहीं था। आखिर वह घोड़े इसीलिए तो पालता था कि उन्हें बाद में दूसरों को काम या सवारी के लिए सौंप दे। इतने सालों में उसने न जाने कितने घोड़े टोलियों के लिए भेजे हैं! लेकिन गुलसारी को किसी को देना! यह उसके बस की बात नहीं थी। वह हड़बड़ी में क़दमबाज़ को अपने पास रखने का तरीक़ा सोचने लगा। उसे सारा भला-बुरा सोचना था। उसे अपने पर काबू रखना था। इब्राइम कुछ चिन्तित हो उठा था।

"हम बस इस मामूली-से काम के लिए ही आपके पास आये थे, ताना-बाय," उसने सतर्कतापूर्वक कहा।

"अच्छा, इब्राइम," तानाबाय ने शान्तिपूर्वक उसकी ओर देखकर

कहा। "यह काम तो होता ही रहेगा। चलो कुछ और क़िमिज़ पियें और कुछ गपशप करें।"

"क्यों नहीं, आप तो बड़े समझदार आदमी हैं, तानाबाय।"

"समझदार! मैं तुम्हारी चाल में नहीं आनेवाला!" तानाबाय मन ही मन खीज उठा।

फिर निरर्थक बातें होने लगीं। अब जल्दी का कोई सवाल ही नहीं रहा था।

सामूहिक फ़ार्म के नये अध्यक्ष के साथ तानाबाय की पहली टक्कर इस प्रकार हुई। सच कहा जाये तो अध्यक्ष से नहीं, बल्कि उसके अस्पष्ट हस्ताक्षर से। उसे उसने अभी अपनी आँखों से नहीं देखा था। जब वह चोरों के स्थान पर आया, उस समय तानाबाय पहाड़ों में सर्दी से जूझ रहा था। उसके बारे में कहा जाता था कि वह बड़ा सख्त आदमी है और अनेक महत्वपूर्ण पदों पर काम कर चुका है। उसने पहली मीटिंग में ही चेतावनी दे दी थी कि वह लापरवाहों को बड़ी कड़ी सज़ा देगा, जो काम का कोटा पूरा नहीं करेगा, उस पर मुक़दमा चलवायेगा। उसने कहा कि सामूहिक फ़ार्मों की सारी समस्याओं की जड़ उनका छोटा होना है, अब उनका विस्तार किया जायेगा जिससे स्थिति में शीघ्र सुधार हो – उसे इसीलिए यहाँ भेजा गया है। सामूहिक फ़ार्म का सारा काम-काज आधुनिक कृषि-विज्ञान और जीव-विज्ञान के नियमानुसार चलाना उसने अपना मुख्य ध्येय बताया। इसके लिए सबका कृषि-विज्ञान और जीव-विज्ञान की कक्षाओं में अध्ययन करना आवश्यक है।

वास्तव में कक्षाएँ चलाई भी जाने लगीं, पोस्टर चिपका दिये गये, व्याख्यान दिये जाने लगे। चरवाहे व्याख्यानों में ऊंघने भी लगते, तो क्या हुआ, यह उनका व्यक्तिगत मामला जो ठहरा...

"अच्छा, तानाबाय, अब हमें चलना चाहिए," इब्राइम तानाबाय को नज़रों में तौलता हुआ अपने बूट ठीक करने लगा, लोमड़ी की खाल की टोपी को झाड़ने लगा।

"बात यह है, फ़ार्म के प्रबंधक, तुम अध्यक्ष को यह कह देना, गुलसारी को मैं नहीं दे सकता। वह मेरे झुण्ड का सांड़ है। घोड़ियों को जोड़ा खिलाने के लिए है।"

"अरे, तानाबाय, हम आपको उसके बदले में पांच सांड़ दे देंगे, आपकी एक भी घोड़ी बेकार नहीं रहेगी। अरे, यह भी कोई मुश्किल

बात हुई!" इब्राइम ने आश्चर्य व्यक्त किया। वह ख़ुश था कि सब ठीक-ठाक चल रहा था, लेकिन एकाएक... अगर तानाबाय के स्थान पर और कोई होता, तो उसके साथ इतना माथा नहीं पचाना पड़ता। लेकिन तानाबाय तो आख़िर तानाबाय ठहरा, जिसने अपने भाई तक को नहीं बख़्शा, इस बात का तो ख़्याल रखना ही था। उसके साथ नरमाई से पेश आना ज़रूरी था।

"मुझे नहीं चाहिए आप लोगों के पांच सांड़!" तानाबाय ने पसीने से तर माथा पोंछते हुए कहा। एक क्षण मौन रहकर उसने साफ़-साफ़ कह देने की ठानी। "क्या तुम्हारे अध्यक्ष के पास सवारी के लिए और कुछ नहीं है? क्या अस्तबल में घोड़ों की कमी है? ख़ास तौर से गुलसारी की ही क्या ज़रूरत आ पड़ी है?"

"तो क्या हुआ, तानाबाय? अध्यक्ष हमारा मुखिया है, उसकी इज्ज़त तो करनी ही चाहिए। आख़िर उसे अकसर ज़िला मुख्यालय जाना होता है, लोग उससे मिलने आते हैं। अध्यक्ष पर सब की नज़र पड़ती है, वह सबसे आगे रहता है, कहने का मतलब है..."

"कहने का क्या मतलब? अगर वह दूसरे घोड़े पर सवार हो, तो क्या लोग उसे पहचानेंगे नहीं? सब की नज़र उसपर पड़ती है, तो क्या उसका क़दमबाज़ पर सवार होना ज़रूरी है?"

"ज़रूरी होने न होने की कोई बात नहीं है। लेकिन ऐसा होना चाहिए। तानाबाय, आप तो फ़ौज में रह चुके हैं। क्या आप मोटर-कार में सवारी करते थे और आपका जनरल ट्रक में? बेशक, नहीं। जनरल को जनरल के पद के अनुसार सम्मान मिलता है और सैनिक को सैनिक के पद के अनुसार। ठीक है न?"

"लेकिन यह तो मामला ही दूसरा है," तानाबाय ने अविश्वास के साथ विरोध किया। उसने यह समझाने की चेष्टा नहीं की कि यह मामला दूसरा क्यों है। वह इसे किसी तरह समझा भी नहीं सकता था। फिर जब उसने देखा कि क़दमबाज़ के चारों ओर फंदा कसता जा रहा है, तो वह चिढ़कर बोला, "नहीं दूंगा। अगर मैं तुम्हें पसन्द नहीं हूँ, तो मुझे घोड़ों के झुण्ड से हटाकर लोहारख़ाने में भेज दो। वहाँ तुम मुझसे मेरा धन किसी तरह नहीं छीन सकोगे।"

"ऐसी बातें क्यों करते हैं, तानाबाय? हम सब आपकी इज्ज़त करते

हैं, आपकी क़द्र करते हैं। लेकिन आप बच्चों की तरह पेश आने लगते हैं। क्या आपको यह शोभा देता है।?" इब्राइम अधीर हो उठा। लगता था वह बुरा फंस गया था। उसने ख़ुद ही बढ़ा-चढ़ाकर वादे किये थे, ख़ुद ही ने यह सुझाव दिया था, ख़ुद ही जाने को तैयार हुआ था, लेकिन अब इस ज़िद्दी आदमी ने कबाड़ा कर दिया है।

इब्राइम ने एक ठण्डी सांस ली और जयदार से बोला,

"जयदार आपा, आप ख़ुद ही फ़ैसला कीजिये। एक घोड़ा आख़िर क्या होता है? चाहे वह क़दमबाज़ ही हो। झुण्ड में हर तरह के घोड़े हैं, जिसे चाहें, चुन लीजिये। आख़िर आदमी हाल ही में आया है अध्यक्ष के पद पर काम करने..."

"लेकिन तुम काहे को एड़ी चोटी का पसीना एक कर रहे हो?" जयदार ने पूछा।

इब्राइम बोलते-बोलते रुक गया। उसे कोई जवाब नहीं सूझा।

"और क्यों नहीं? अनुशासन का मामला है। मुझे यह काम सौंपा गया है। मैं एक मामूली आदमी हूँ। मुझे अपने लिए नहीं चाहिए। मैं तो गधे पर भी सवारी कर सकता हूँ। अबलक के बेटे से पूछ लीजिये, इसे क़दमबाज़ को हांक लाने भेजा गया है।"

नौजवान ने मौन स्वीकृति में सिर हिलाया।

"यह अच्छी बात नहीं है," इब्राइम आगे बोला। "अध्यक्ष को हमारे यहाँ भेजा गया है, वह हमारा मेहमान है और गांव के सब लोग मिलकर उसे एक अच्छा-सा घोड़ा भी नहीं दे सकते। लोगों को मालूम पड़ेगा, तो वे क्या कहेंगे? क़िर्गीज़ों के यहाँ कभी ऐसा होता देखा है?"

"तो ठीक है," तानाबाय ने कहा, "सारे गांव को मालूम पड़ने दो। मैं चोरो के पास जाऊंगा। वही फ़ैसला करेगा।"

"आप क्या सोचते हैं कि चोरो उसे देने के लिए मना करेगा? वह इसके लिए सहमत है। आप सिर्फ़ उसकी प्रतिष्ठा धूल में मिला देंगे। यह तो बहिष्कार करने जैसी बात है। नये अध्यक्ष का हुक्म न मानना और पुराने के पास शिकायत करने जाना। फिर चोरो बीमार आदमी है। हम नये अध्यक्ष के साथ उसके सम्बन्ध क्यों बिगाड़ें? चोरो पार्टी संगठनकर्ता बननेवाला है, उसे उसके साथ काम करना है। हम उनके काम में बाधा क्यों डालें..."

जब चोरो की बात होने लगी, तो तानाबाय चुप हो गया।

जयदार ने एक गहरी सांस ली।

"दे दो," उसने पति से कहा, "लोगों को बेकार रोके मत रखो।"

"यह हुई न समझदारी की बात, यह तो पहले ही किया जाना चाहिए था। शुक्रिया, जयदार आपा।"

इब्राइम उसकी तारीफ़ के पुल यों ही नहीं बांध रहा था। कुछ ही दिन बाद उसे अश्वपालन फ़ार्म के प्रबंधक से सामूहिक फ़ार्म का उपाध्यक्ष बना दिया गया...

तानाबाय काठी पर आँखें झुकाये बैठा था, लेकिन न देखते हुए भी वह सब देख रहा था। उसने गुलसारी को पकड़े जाते और उसको नयी लगाम लगाये जाते देखा। तानाबाय अपनी लगाम उन्हें किसी क़ीमत पर नहीं देता। उसने देखा कि गुलसारी झुण्ड छोड़कर जाने के लिए क़तई तैयार नहीं हो रहा था, वह अबलक के बेटे के हाथों से लगाम छुड़ाकर भागने के लिए मचल रहा था और अपने घोड़े पर सवार इब्राइम उसे कभी दायीं ओर से, कभी बायीं ओर से, पूरे ज़ोर से चाबुक मारे जा रहा था। वह क़दमबाज़ की आँखों में घबराहट देख रहा था, जो यह नहीं समझ पा रहा था कि उसे ये अपरिचित लोग घोड़ियों, बछेड़ों और उसके मालिक से अलग क्यों कर रहे हैं। वह उसके हिनहिनाते समय उसके खुले मुंह में से निकलती भाप, उसकी अयाल, पीठ, उसके पुट्ठे, उसकी पीठ और बगलों में पड़े चाबुक की मार के निशान देख रहा था, वह उसके शरीर के सारे चिन्ह देख रहा था, यहाँ तक कि उसके अगले दायें पैर पर टखने के ऊपर की रसौली भी, उसकी चाल, उसकी टापों के निशान, उसके सुनहली कुमैत खाल का हर बाल भी। वह सब देखता रहा और दांत पीसता हुआ कुढ़ता रहा। जब उसने सिर उठाकर देखा, तो गुलसारी को लेकर जानेवाले टेकरी के पीछे उसकी आँखों से ओझल होते जा रहे थे। तानाबाय चिल्लाया और उनके पीछे अपना घोड़ा दौड़ाने लगा।

"ठहरो, ख़बरदार जो पीछा किया।" जयदार तम्बू में से भागती बाहर निकली।

एकाएक उसके दिमाग़ में भयावह विचार कौंधा — उसकी पत्नी उन रातों का बदला क़दमबाज़ से ले रही है। उसने घोड़े को एकदम मोड़ दिया और

उसे चाबुक मारता हुआ वापस लौट आया। तम्बू के पास उसने एकाएक लगाम खींच ली, ज़मीन पर कूदा और गुस्से के मारे भूत हुआ भागा-भागा अपनी पत्नी के पास पहुँचा। उसके बिगड़े हुए चेहरे का रंग उड़ गया था।

"तुमने क्यों कहा? क्यों कहा उसको देने को?" वह उसे घूरते हुए फुसफुसाया।

"चुप करो। अपने हाथ नीचे करो," उसने सदा की तरह उसे शान्त स्वर में झाड़ दिया। "मेरी बात सुनो। क्या गुलसारी तुम्हारा अपना घोड़ा है? क्या वह तुम्हारी निजी सम्पत्ति है? तुम्हारा अपना है ही क्या? हमारे पास सब सामूहिक फ़ार्म का है। उसी के सहारे जी रहे हैं। क़दमबाज़ भी सामूहिक फ़ार्म का है। अध्यक्ष सामूहिक फ़ार्म का मालिक होता है—जो वह कहता है, वही होता है। लेकिन उस बारे में तुम बेकार ही सोच रहे हो। तुम चाहो, तो इसी वक़्त जा सकते हो। जाओ। वह मुझसे बेहतर है, ज़्यादा सुन्दर है, जवान है। एक अच्छी औरत है। मैं भी विधवा हो सकती थी, लेकिन तुम लौट आये। कितना इन्तज़ार किया मैंने तुम्हारा! ख़ैर, छोड़ो इन बातों को। तुम्हारे तीन बच्चे हैं। उनका क्या करूं? उन्हें बाद में क्या कहोगे? वे क्या कहेंगे? मैं उन्हें क्या कहूँगी? ख़ुद ही फ़ैसला करो..."

तानाबाय स्तेपी की ओर चल दिया। वह शाम हुए तक झुण्ड के साथ रहा, क्योंकि उसे किसी तरह शान्ति नहीं मिल रही थी। घोड़ों का झुण्ड अनाथ-सा लग रहा था। उसकी आत्मा भी अनाथ-सी लग रही थी। वह क़दमबाज़ के साथ चली गयी। सब कुछ चला गया। हर चीज़ बदली हुई लग रही थी। न सूरज वह रहा, न आसमान और न वह स्वयं।

वह लौटा, तो अंधेरा हो चुका था। वह चुपचाप तम्बू में घुसा। उसका चेहरा उतरा हुआ था। उसकी बेटियाँ सोयी हुई थीं। चूल्हा जल रहा था। उसकी पत्नी ने उसके हाथ धुलाकर उसे खाना परोस दिया।

"मुझे भूख नहीं है," तानाबाय ने कहा। फिर बोला, "तेमीर-कोमुज़* उठा लाओ और मुझे "ऊंटनी का विलाप" सुनाओ।"

---

* तेमीर-कोमुज़—एक प्रकार का किर्गीज़ लोक वाद्य जो लोहे के हुक के आकार का होता है और उसके मध्य में इस्पात की पत्ती लगी होती है।

जयदार ने तेमीर-कोमुज़ उठाकर होंठों से लगाया, इस्पात के पतले तार पर हाथ फेरा, उस पर फूंक मारी और फिर सांस लेकर बजाने लगी। ख़ानाबदोशों का प्राचीन संगीत गूंज उठा। यह गीत एक ऊंटनी के बारे में था, जिसका नन्हा-सा सफ़ेद बच्चा खो जाता है। वह अपने बच्चे को ढूंढ़ती, उसे पुकारती अनेक दिनों तक रेगिस्तान में भटकती रहती है। वह बहुत दुखी है, क्योंकि अब वह न शाम हुए खड्ड के पास से उसे लेकर चल सकेगी, न भोर हुए उसके साथ मैदान पार कर सकेगी, न उसके साथ डाल से पत्तियाँ तोड़कर खा सकेगी, न रेत पर चल सकेगी, न बसन्त में खेतों में घूम सकेगी, न उसे अपना सफ़ेद दूध पिला सकेगी। "मेरे काली-काली आँखोंवाले बच्चे, तू कहाँ है? आवाज़ दे! दूध, भरे थनों में से, पैरों पर से बहता हुआ नीचे गिर रहा है। तू कहाँ है? आवाज़ दे! दूध थनों में से, भरे थनों में से, बह रहा है, सफ़ेद दूध..."

जयदार तेमीर-कोमुज़ बहुत अच्छा बजाती थी। जब वह अभी लड़की ही थी, तानाबाय को इसी कारण उससे प्यार हो गया था।

तानाबाय सिर लटकाये सुन रहा था और न देखते हुए भी सब देख रहा था। जयदार के बहुत वर्षों से गर्मी और सर्दी में काम करते रहने से खुरदरे हुए हाथ। उसके सफ़ेद हो गये बाल, उसकी गर्दन, गालों पर और आँखों के नीचे पड़ी झुर्रियाँ। एकाएक झुर्रियाँ ग़ायब हो गयीं और उसे उनका बीता यौवन दिखाई देने लगा—कंधों पर चोटियाँ डाले सांवली लड़की, ख़ुद वह बिलकुल नौजवान, उनका प्यार। वह जानता था कि वह इस समय उसकी ओर ध्यान नहीं दे रही है। वह अपने संगीत और विचारों में खोयी हुई थी। तभी तानाबाय को अपने आधे कष्टों और दुखों की झलक उसमें दिखाई देने लगी। वह उन्हें सदा से अपने दिल में छिपाये रखे हुई थी।

...ऊंटनी अपने बच्चे को ढूंढ़ती, पुकारती बहुत दिनों से भटक रही है। "मेरे काली-काली आँखोंवाले बच्चे, तू कहाँ है? दूध थनों में से, भरे थनों में से, पैरों पर से बहता हुआ नीचे गिर रहा है। कहाँ है तू? आवाज़ दे! दूध, थनों में से, भरे थनों में से बह रहा है। सफ़ेद दूध..."

और लड़कियाँ एक दूसरे से लिपटी सो रही थीं। और तम्बू के बाहर रात के घुप अंधेरे में डूबी विशाल, स्तेपी फैली पड़ी थी।

उस समय अस्तबल में गुलसारी ने तूफ़ान मचा रखा था, साईसों की नीन्द हराम कर रखी थी। वह पहली बार घोड़ों की जेल – अस्तबल में बन्द किया गया था।

आठ

एक दिन सुबह अपने क़दमबाज़ को घोड़ों के झुण्ड में देखकर तानाबाय के आनन्द का पारावार न रहा। उस पर काठी कसी थी और अगाड़ी का एक टूटा टुकड़ा उसके एक ओर लटक रहा था।

"गुलसारी, गुलसारी! क्या हाल हैं?" तानाबाय घोड़ा दौड़ाता उसके पास पहुँचा। उसपर दूसरी भारी रकाबोंवाली काठी कसी थी, दूसरी लगाम लगी थी। उसे सबसे ज्यादा क्रोध यह देखकर आया कि काठी पर एक मोटी मख़मली गद्दी रखी थी, जैसे उस पर कोई मर्द नहीं, बल्कि कोई भारी कूल्होंवाली औरत सवारी करती हो।

"थू!" तानाबाय ने गुस्से में थूक दिया। वह घोड़े को पकड़कर उसका यह भोंड़ा साज़ उतार फेंकना चाहता था, पर गुलसारी उसकी पकड़ में नहीं आया। क़दमबाज़ को इस समय उसके लिए फ़ुरसत न थी। वह घोड़ियों के पीछे पड़ा था। वह उनकी याद में इतना तड़प चुका था कि उसने अपने पुराने मालिक की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

"यानी तू किसी तरह रस्सी तुड़ाकर भाग ही आया। शाबाश! जा, मौज कर, मैं कुछ नहीं कहूँगा," तानाबाय ने मन में सोचा और फ़ैसला किया कि घोड़ों को कुछ कसरत करानी चाहिए। वह चाहता था कि गुलसारी को पकड़ने आनेवालों से पहले उसे कुछ देर घर का सा आराम मिल जाये।

तानाबाय ने रकाबों में खड़े होकर चाबुक फटकारा और टिटकारी देकर झुण्ड को दूर हांक दिया।

घोड़ियाँ अपने बछेड़ों को पुकारती हुई चलने लगीं, बछेड़ियां उछलती-कूदती भाग चलीं। उनकी अयाल हवा में उड़ रही थी। हरी-भरी धरती धूप में खिल उठी थी। गुलसारी ने अपना बदन झटकारा और गर्दन तानकर इठलाता हुआ चलने लगा। फिर वह भागकर झुण्ड के आगे पहुँच गया।

उसने नये सांड़ को पीछे भगा दिया और स्वयं फुफकारता, इठलाता, कभी एक तरफ़ से, कभी दूसरी तरफ़ से, झुण्ड का चक्कर लगाता चलने लगा। वह अपने झुण्ड की गंध – घोड़ियों के दूध की गंध, बछेड़ों की गंध, हवा में तैरती अफ़संतीन की गंध से – मतवाला हो रहा था। उसे उस पर कसे मख़मल की गद्दीवाली भोंड़ी काठी और उसकी बगलों से टकरा रही भारी रक़ाबों की ज़रा भी परवाह नहीं थी। वह यह भूल गया कि एक दिन पहले वह ज़िला मुख्यालय में दहाना चबाता और शोर करती निकल रही ट्रकों से चमकता एक बड़े-से खूंटे से बंधा खड़ा था। यह भी भूल गया कि उसके बाद वह एक गंदे शराबख़ाने के बाहर डबरे में खड़ा था, उसका नया मालिक अपने दोस्तों के साथ बाहर निकला था और उन सबके मुंह से बदबू आ रही थी। नया मालिक उस पर सवार होते समय कितनी डकारें ले रहा था और हांफ रहा था। वह यह भूल गया कि उन लोगों ने कीचड़ से भरे रास्ते पर किस तरह मूर्खतापूर्ण घुड़दौड़ शुरू कर दी। वह पूरी रफ़्तार के साथ भागने लगा। नया मालिक काठी पर बोरे की तरह हिल-डुल रहा था, फिर उसने कसकर लगाम खींच ली थी और उस पर चाबुक बरसाने लगा था।

क़दमबाज़ सब कुछ भूल गया था। वह अपने झुण्ड की गंध – घोड़ियों के दूध की गंध, बछेड़ों की गंध, हवा में तैरती अफ़संतीन की गंध से मतवाला हो रहा था... गुलसारी भागता ही रहा, भागता ही रहा। उसे कुछ मालूम न था कि लोग उसे पकड़ने के लिए रवाना हो चुके हैं।

तानाबाय झुण्ड को अपने पुराने स्थान पर हांककर लाया ही था कि गाँव से दो साईस आ धमके। वे गुलसारी को फिर पकड़कर अस्तबल ले गये।

लेकिन कुछ समय बाद वह फिर वहाँ आ पहुँचा। इस बार उस पर न काठी थी, न लगाम। उसने किसी तरह गर्दन में से रस्सी निकाल ली और रात में अस्तबल से भाग आया। पहले तो तानाबाय उसे देखकर हंसा, पर बाद में चुप हो गया और कुछ सोचकर उसने क़दमबाज़ की गर्दन में फंदा डाल दिया। उसने ख़ुद ही उसे पकड़ा और पड़ोसी चरागाह के एक नौजवान चरवाहे को क़दमबाज़ को पीछे से हांकने के लिए कहकर ख़ुद ही उसे गांव छोड़ आया। उन्हें आधे रास्ते में भगोड़े क़दमबाज़ को पकड़ने आ रहे साईस मिल गये। तानाबाय गुलसारी उनको सौंपते हुए बड़बड़ाया,

"क्या तुम्हारे यहाँ सारे ही लूले हैं? तुम लोग अध्यक्ष के घोड़े को भी संभालकर नहीं रख सकते। इसे ज़रा कसकर बांधो।"

लेकिन गुलसारी जब तीसरी बार भाग आया, तो तानाबाय सचमुच क्रोधित हो उठा,

"बेवक़ूफ़ कहीं का! तुझ पर यहाँ आने का कौन-सा भूत सवार हो जाता है? तू बेवक़ूफ़ है और बेवक़ूफ़ ही रहेगा," वह फंदा लेकर क़दमबाज़ का पीछा करते हुए उसे कोसने लगा। वह उसे फिर वापस खींच ले गया और फिर साईसों से लड़ा।

लेकिन गुलसारी को ज़रा भी अक़्ल नहीं आयी। उसे जब भी मौक़ा मिलता, वह भाग आता। साईस भी उससे ऊब चुके थे और तानाबाय भी।

...उस रात तानाबाय चरागाह से देर से लौटने के कारण देर से सोया था। क्या पता क्या हो जाये, इसलिए वह घोड़ों के झुण्ड को तम्बू के पास हांक लाया और उसके बाद सो गया, पर उसे अच्छी नीन्द नहीं आयी। वह दिन भर के काम से बुरी तरह थक गया था। उसे एक बड़ा अजीब सपना दिखाई दिया। उसे लगा कि या तो वह फिर मोर्चे पर पहुँच गया है, या किसी बूचड़ख़ाने में। चारों ओर ख़ून ही ख़ून दिखाई दे रहा था और उसके हाथ भी चिपचिपे ख़ून में सने थे। वह सपने में ही सोचने लगा, "सपने में ख़ून देखना कोई अच्छा लक्षण नहीं होता।" वह हाथ धोने के लिए पानी ढूंढ़ने लगा। लेकिन लोग उसे धक्का देने लगे, उस पर हंसने लगे, ठहाके लगाने लगे, चिल्लाने लगे। वह पहचान नहीं पा रहा था कि वे कौन हैं। "तानाबाय तुम ख़ून में हाथ धो रहे हो। यहाँ पानी नहीं है। यहाँ तो सब जगह ख़ून ही ख़ून है! हा-हा, हो-हो, ही-ही!.."

"तानाबाय! तानाबाय!" उसकी पत्नी उसका कंधा पकड़कर हिला रही थी। "उठो।"

"क्या हुआ?"

"सुन रहे हो? घोड़ों के झुण्ड में कुछ गड़बड़ हो रही है। सांड़ लड़ रहे हैं। शायद गुलसारी फिर भाग आया है।"

"भाड़ में जायं! बिलकुल भी चैन नहीं इसके मारे!" तानाबाय ने जल्दी से कपड़े पहने और फंदा लेकर घाटी की ओर भागा, जहाँ से घोड़ों के लड़ने की आवाज़ आ रही थी। उजाला हो चुका था।

भागा-भागा वहाँ पहुंचा, तो देखा गुलसारी है। लेकिन यह क्या? क़दमबाज़ के पैर बेड़ियों में जकड़े हुए थे, इसके बावजूद वह कूद रहा था। उसके पैरों की बेड़ियां खनक रही थीं, वह चक्कर खा रहा था, पिछली टांगों पर खड़ा हो रहा था, दर्द के मारे कराह और हिनहिना रहा था। लेकिन वह बेवक़ूफ़, झुण्ड का नया सांड़ उसे बड़ी निर्दयता से लातें मार रहा था, काट रहा था।

"ठहर, बदमाश!" तानाबाय फंदा लगा हुआ डण्डा लिये बाज़ की तरह उस पर झपटा और इतने ज़ोर से उसको मारा कि वह टूट गया। उसने नये सांड़ को भगा दिया। लेकिन तानाबाय की आँखें डबडबा आयीं। "यह क्या कर दिया तेरे साथ? किसकी मजाल हुई तेरे पैरों में बेड़ियाँ डालने की! कमबख़्त, तू फिर यहाँ क्यों भाग आया?.."

विश्वास नहीं हो रहा था। वह लंगड़ाता-लंगड़ाता नदी, टेकरियाँ, खाइयाँ पार करता हुआ यहाँ इतनी दूर अपने झुण्ड तक आ पहुँचा था। लगता है सारी रात लंगड़ाता हुआ चलता रहा। बिलकुल एक फ़रारी मुजरिम की तरह अपनी ही बेड़ियों की खनखन सुनता अकेला भागता रहा।

"वाह, भई, वाह!" तानाबाय ने सिर हिलाते हुए कहा। उसने क़दमबाज़ को थपथपाया और अपना गाल उसके मुँह से सटा दिया। गुलसारी अपने होंठ उसके गाल पर रगड़ता हुआ गुदगुदी कर रहा था, आँखें झपका रहा था।

"अब क्या करेंगे, गुलसारी? तू यह सब छोड़ क्यों नहीं देता? तेरी मुसीबत हो जायेगी। बुद्धू है, तू बिलकुल बुद्धू। तेरी समझ में कुछ भी तो नहीं आता..."

तानाबाय ने क़दमबाज़ को ग़ौर से देखा। लड़ाई में लगी खरोंचें ठीक हो जायेंगी। लेकिन बेड़ियों से उसके पैरों की खाल बुरी तरह घिस चुकी थी। सुमों के ऊपर ख़ून बह रहा था। बेड़ियों के नीचे लगा नमदा गल चुका था, उसे कीड़े खा गये थे। जब घोड़ा पानी में लंगड़ाता हुआ चला, तो नमदा सरक गया और लोहा निकल आया। उसी की रगड़ से उसके पैरों से ख़ून बह रहा था। "इब्राइम ने ये बेड़ियाँ ज़रूर किसी बूढ़े से ली होंगी। यह उसी की करतूत है," तानाबाय क्रुद्ध हुआ सोच रहा था। और किस की करतूत हो सकती है? ये पुराने ढंग की बेड़ियाँ थीं। हर

ज़ंजीर का ताला अलग था, जिसे बिना चाबी के नहीं खोला जा सकता था। पुराने ज़माने में ऐसी बेड़ियाँ सबसे अच्छे घोड़ों के पैरों में डाली जाती थीं, जिससे कि चोर उन्हें चरागाह से चुरा न सकें। घोड़े के पैरों में बंधी साधारण रस्सी तो चाकू से काटते ही काम बन सकता था, पर बेड़ियाँ पड़े घोड़े को नहीं भगाया जा सकता था। यह तो पुराने ज़माने की बात है, लेकिन अब तो ये बेड़ियां विरले ही दिखाई देती हैं। शायद किसी बूढ़े ने पुराने ज़माने की निशानी के तौर पर रख छोड़ी होंगी। और उनमें से किसी न किसी ने ज़रूर यह सुझाव दिया होगा। उन लोगों ने क़दमबाज़ के पैरों में इसलिए बेड़ियाँ डाल दीं, जिससे कि वह गाँव के चरागाह से ज़्यादा दूर न जा सके। फिर भी वह भाग निकला...

परिवार के सारे सदस्य मिलकर गुलसारी की बेड़ियाँ खोलने लगे। जयदार क़दमबाज़ की आँखें ढककर लगाम थामे खड़ी रही, उनकी बेटियाँ पास ही में खेलती रहीं, तानाबाय अपने सारे औज़ारों का भारी डिब्बा घसीट लाया और पसीने से लथपथ हुआ तालों को खोलने की कोशिश करने लगा। लोहार के काम का उसका अनुभव काम आया। वह काफ़ी देर तक उलझता रहा, हांफने लगा, उसके हाथ लहू-लुहान हो गये, लेकिन अन्त में उसने उन्हें किसी तरह खोल ही डाला।

उसने बेड़ियाँ पूरे ज़ोर से दूर फेंक दीं। क़दमबाज़ के पैरों के घावों पर उसने मरहम लगा दिया और जयदार उसे खूंटे से बांध आयी। उनकी बड़ी बेटी ने छोटी को अपनी पीठ पर बिठा लिया और वे भी घर रवाना हो गये।

तानाबाय अभी तक हांफता बैठा रहा। वह थक गया था। फिर उसने अपने औज़ार समेटे और जाकर बेड़ियां उठा लाया। उन्हें लौटाना ज़रूरी था, नहीं तो जवाब देना पड़ सकता था। वह ज़ंग लगी बेड़ियों को उलट-पुलट कर देखते हुए कारीगर के काम से हैरान रह गया। सारा काम सोच-समझकर बड़ी ख़ूबसूरती से किया गया था। यह पुराने क़िर्गीज़ लोहारों का काम था। यह हुनर अब ख़त्म हो चुका है, हमेशा के लिए भुला दिया गया है। अब इन बेड़ियों की कोई ज़रूरत नहीं रही है। लेकिन इस बात का अफ़सोस है कि दूसरी चीज़ें भी ग़ायब हो गयी हैं। पहले चांदी, तांबे, लकड़ी और चमड़े के कितने सुन्दर जेवर और बर्तन वगैरह बनाये जाते थे! वे ज़्यादा महंगे भी नहीं होते थे, लेकिन कितने सुन्दर होते

थे। हर वस्तु अद्वितीय होती थी। अब ऐसी चीज़ें रहीं ही नहीं। आजकल तो कटोरे, प्याले, चम्मच, झुमके, चिलमचियाँ, सब कुछ ऐलुमिनियम से बनाया जाता है। कहीं भी जाइये, सभी जगह एक-सी चीज़ें दिखाई देती हैं। जी ऊबने लगता है। अच्छे ज़ीनसाज़ भी अब इने-गिने रह गये हैं। कितने बढ़िया ज़ीन बनाया करते थे वे लोग! हर ज़ीन का अपना ही इतिहास होता था: किसने बनाया, कब बनाया, किसके लिए बनाया और उसकी मेहनत के बदले में उसे क्या इनाम दिया गया। कुछ दिनों बाद शायद सभी लोग यूरोपवालों की तरह कारों में घूमने लगेंगे। सारी कारें एक-सी होंगी, उनकी पहचान सिर्फ़ उनके नम्बरों से ही की जा सकेगी। हम अपने पुरखों के हुनर भूलते जा रहे हैं। दस्तकारी का पुराना हुनर हमेशा के लिए दफ़ना दिया गया है, लेकिन आदमी की आत्मा और उसकी आँखें तो उसके हाथों में ही होती हैं...

तानाबाय की मनःस्थिति कभी-कभी एकाएक ऐसी हो जाया करती थी। वह दस्तकारी के बारे में गहरे सोच में डूब जाता, क्रोधित हो उठता, पर उसकी समझ में नहीं आता कि उसके लुप्त होने के लिए वह किसे दोष दे। वैसे अपनी जवानी में वह स्वयं भी पुराने रीति-रिवाजों के कट्टर विरोधियों में रहा था। एक बार तो उसने युवा कम्युनिस्ट लीग की सभा में भी तम्बुओं को हमेशा के लिए ख़त्म कर देने के लिए भाषण दिया था। उसने कहीं सुन लिया था कि तम्बू—क्रान्ति से पहले का मकान है और अब उसे बिलकुल ख़त्म कर देना चाहिए। "तम्बुओं का नाश हो! बाबा आदम के ज़माने के तरीक़े छोड़ो!"

इस प्रकार तम्बुओं को भी कुलकों की तरह 'बेदख़ल' कर दिया गया। घर बनाये जाने लगे और तम्बुओं को फाड़कर फेंका जाने लगा। उनका नमदा काटकर घर के काम में लाया जाने लगा, लकड़ी जानवरों के बाड़े बनाने और जलाने तक के काम में लायी जाने लगी...

बाद में मालूम पड़ा कि पहाड़ों में पशु-पालन बिना तम्बुओं के सम्भव ही नहीं है। तब तानाबाय को स्वयं पर आश्चर्य होने लगा कि उसने तम्बुओं की बुराई कैसे की, उससे अच्छी चीज़ तो अभी तक खानाबदोशों के लिए बनायी ही नहीं गयी है। उसने इस बात पर क्यों ध्यान नहीं दिया कि तम्बू उसके पूर्वजों द्वारा किया गया एक अद्भुत आविष्कार है, जिसके

हर छोटे से छोटे हिस्से की उपयोगिता अनेक पीढ़ियों के अनुभव से सिद्ध हो चुकी है?

इस समय वह बूढ़े तोगोंई के फटे-पुराने और धुएँ से काले पड़े तम्बू में रह रहा था। तम्बू बहुत पुराना था और अगर वह किसी तरह से अभी तक टिका हुआ था, तो इसका श्रेय केवल जयदार के धैर्य को ही दिया जा सकता था। वह दिन भर तम्बू की मरम्मत करती रहती और उसमें पैवंद लगाकर उसे रहने योग्य बनाती, लेकिन एक-दो हफ़्ते बाद ही पुराना नमदा फिर उखड़ने लगता, फिर छेदों के मुंह खुल जाते जिनमें से होकर हवा, बर्फ़ और बरसात का पानी आने लगते। उसकी पत्नी फिर मरम्मत करने में जुट जाती जिसका अन्त ही दिखाई नहीं पड़ता था।

"कब तक ऐसे कष्ट भोगते रहेंगे?" वह शिकायत करती। "ज़रा देखो तो सही, यह नमदा नहीं, बुरादा है, बालू की तरह बिखर जाता है। इसका लकड़ी का ढांचा तो देखो, कैसा हो गया है! कहते हुए शर्म आती है। तुम उनसे कम-से-कम कुछ नया नमदा देने को तो कह सकते हो। तुम अपने घर के मालिक हो या नहीं? आख़िर हमें कभी तो आदमियों की तरह रहने का मौक़ा मिलना चाहिए..."

तानाबाय शुरू में तो उसे तसल्ली दिलाता रहा, वादे करता रहा। लेकिन जब उसने गाँव में नया तम्बू लगवाने के बारे में बात की, तो उसे मालूम पड़ा कि तम्बू बनानेवाले पुराने कारीगर कभी के मर चुके हैं और नौजवान लोगों को तम्बू बनाना बिलकुल भी नहीं आता। इसके अलावा सामूहिक फ़ार्म में तम्बुओं के लिए नमदा भी नहीं था।

"तो ठीक है, मुझे ऊन दीजिए, हम ख़ुद ही नमदा तैयार कर लेंगे," तानाबाय ने अनुरोध किया।

"ऊन कहाँ से आया!" उसे जवाब मिला। "तुम क्या चांद से धरती पर उतरे हो? सारा ऊन कोटा पूरा करने के लिए बेच दिया जाता है, हम एक ग्राम ऊन भी सामूहिक फ़ार्म के लिए नहीं रख सकते..."

इसके बदले में उसे कनवास का तम्बू देने लगे।

लेकिन जयदार ने उसे लेने से साफ़ इनकार कर दिया,

"कनवास के तम्बू में रहने से तो फटे-पुराने नमदे के तम्बू में रहना बेहतर है।"

उन दिनों बहुत-से चरवाहों को कनवास के तम्बुओं में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा था। लेकिन यह भी कोई घर हुआ! उसमें न आदमी

खड़ा हो सकता है, न बैठ सकता है, न चूल्हा जला सकता है। गर्मियों में गरमी के मारे नाक में दम और जाड़े में ठण्ड के मारे चैन नहीं। न उसमें सामान रखने की जगह होती है, न रसोई बनाने की और न ही उसे सजाया जा सकता है। और अगर मेहमान आ जायें, तो समझ में नहीं आता कि उन्हें कहाँ बिठाया जाये।

"नहीं, कभी नहीं!" जयदार ने कहा। "तुम जो चाहो करो, पर मैं कनवास के तम्बू में कभी नहीं रहूँगी। ऐसा तम्बू अकेले आदमी के लिए ठीक हो सकता है, वह भी कुछ वक़्त के लिए, लेकिन हम तो परिवारवाले हैं, हमारे बच्चे हैं। उन्हें नहलाना-धुलाना होता है, उनकी संभाल करनी होती है। नहीं, मुझे नहीं चाहिए ऐसा तम्बू।"

कुछ दिन बाद तानाबाय चोरो से मिला, तो उसे सारा क़िस्सा सुनाया। "आख़िर ऐसा क्यों हो रहा है, अध्यक्ष?"

चोरो ने उदासी से सिर हिलाया।

"मुझे और तुम्हें इसके बारे में पहले ही सोचना चाहिए था। हमारे अफ़सर लोगों को भी सोचना चाहिए था। और अब उन्हें इस बारे में ख़त लिखते रहते हैं, लेकिन न जाने क्या जवाब आयेगा। वे कहते हैं कि ऊन बड़ा क़ीमती कच्चा माल है। दुर्लभ वस्तु है। सारे के सारे का निर्यात किया जाता है। उनका कहना है कि ऊन का देश की अर्थव्यवस्था की ज़रूरतें पूरी करने के लिए प्रयोग करना अवांछनीय है।"

इसके बाद तानाबाय ने कुछ नहीं कहा। यानी कुछ ग़लती तो उसकी स्वयं की भी थी। वह मन ही मन अपनी मूर्खता पर हंसने लगा, "अवांछनीय है! हा-हा-हा! अवांछनीय है!"

वह इस निष्ठुर शब्द अवांछनीय को काफ़ी समय तक नहीं भूल सका। वे उसी तरह उस फटे-पुराने, पैवंद लगे तम्बू में रहते रहे, जिसकी मरम्मत के लिए सिर्फ़ थोड़े से साधारण ऊन की ज़रूरत थी। वही ऊन जो सामूहिक फ़ार्म की भेड़ों से भारी मात्रा में उतारा जाता था...

तानाबाय बेड़ियाँ हाथ में लिये अपने तम्बू के पास पहुँचा। उसे तम्बू उस वक़्त इतना मनहूस लगा और उसे अपने पर, क़दमबाज़ के पैरों को लहू-लुहान कर देनेवाली बेड़ी पर, हर चीज़ पर इतना क्रोध आया कि वह दांत पीसने लगा। उसी वक़्त गुलसारी को पकड़ने के लिए घोड़े दौड़ाते आये साईसों ने जले पर नमक छिड़कने का काम किया।

"ले जाओ!" तानाबाय चिल्लाया। गुस्से के मारे उसके होंठ फड़क उठे।

"यह बेड़ियाँ अध्यक्ष को ले जाकर देना और कह देना कि अगर उसने फिर कभी क़दमबाज़ के पैरों में बेड़ियाँ डालने की हिम्मत की, तो मैं इन्हीं से उसका सिर फोड़ दूंगा! ऐसे ही कह देना!.."

उसने बेकार ही ऐसा कहा! ओह, बेकार ही! उसे सदा अपने चिड़चिड़ेपन और स्पष्टवादिता के लिए काफ़ी महंगी क़ीमत चुकानी पड़ती थी...

नौ

सुहावना दिन था, धूप खिली थी। कुंचित हो रही नयी पत्तियां, खेतों में से उठती भाप, पगडण्डियों पर पैरों तले उगती हरी घास – लगता था मानो वसन्त धूप में आँखें झपका रहा है।

कुछ लड़के अस्तबल के पास गुल्ली-डण्डा खेल रहे थे। कोई तेज़ लड़का गुल्ली को हवा में उछालकर डण्डे से पूरे ज़ोर से मारता। फिर अपने डण्डे से दूरी नापता – एक, दो, तीन... सात... दस... पन्द्रह... बाल की खाल निकालनेवाले खिलाड़ी झुण्ड बनाये उसके साथ-साथ चलते देखते रहते कि वह कहीं बेईमानी तो नहीं कर रहा है। बाईस डण्डे हुए।

"अठहत्तर पहले के और ये बाईस," लड़का जोड़ने लगा और फिर ख़ुशी से फूला न समाता चिल्ला उठा, "सौ! पूरे सौ हो गये!"

"हुर्रा ऽऽऽ! सौ हो गये!" अन्य लड़के भी चिल्ला उठे।

खैर गुज़री, न एक कम रहा, न एक ज्यादा। अब हारनेवाले की "रोने" की बारी आयी। जीतनेवाले ने फिर गुच्ची के पास पहुंचकर गुल्ली उछालकर डण्डे से मारी। पूरे ज़ोर से। सब भागकर वहाँ पहुँचे, जहाँ गुल्ली गिरी थी। वहाँ से गुल्ली को फिर एक बार मारना था, इस तरह कुल तीन बार मारना था। हारनेवाला रुआंसा हो उठा – उसे इतनी दूर तक 'रोते' हुए जाना होगा! लेकिन खेल के नियमों का पालन करना ही होता है। "अब खड़ा क्यों है? चल अब 'रो'!" हारनेवाला एक गहरी सांस लेकर बोलता हुआ भागा,

आकबाय, कोकबाय सुन भी ले
खेत में बछड़ों को तू जाने न दे

जाने देगा तो न पायेगा पकड़
डांट खाकर रोयेगा तब ज़ोर से!

उसकी सांस टूट रही थी, पर उसे सारे रास्ते "रोना" था। गुच्ची तक पहुंचने से पहले ही उसकी सांस टूट गयी। अब उसे वापस वहीं पहुंचकर फिर से चलना था। लेकिन दूसरी बार भी सांस टूट गयी। जीतनेवाला ख़ुशी से फूला न समाता: "अगर एक सांस में नहीं पहुंच सकता, तो चल अपनी पीठ पर बिठाकर ले चल!" और हारनेवाला गधे की तरह उसे अपनी पीठ पर ढोने लगा।

"चल, चल! और तेज़ चल!" सवार एड़ लगाता। "लड़को देखो, देखो, यह मेरा गुलसारी है! देखो, कितनी बढ़िया क़दमचाल से भागता है..."

गुलसारी अस्तबल में दीवार की दूसरी ओर बंधा खड़ा था। वह परेशान था। आज उस पर ज़ीन भी नहीं कसी गयी। सुबह से उसे न कुछ खिलाया गया, न पिलाया गया। शायद भूल गये। अस्तबल खाली पड़ा था। सारी घोड़ागाड़ियाँ और सवारी के घोड़े जा चुके थे, केवल वही अकेला अपने थान पर बंधा था...

साईस अस्तबल की सफ़ाई कर रहे थे। बाहर बच्चे शोर मचा रहे थे। काश, वह अभी स्तेपी में अपने झुण्ड में पहुँच जाता! वह खुले मैदान के सपने देख रहा था, जिस में आज़ादी से घूमते घोड़ों के झुण्ड दिखाई दे रहे थे। उनके ऊपर हंस पंख फड़फड़ाते उड़ते दिखाई दे रहे थे, वे उसे अपने साथ चलने के लिए पुकार रहे थे...

गुलसारी ने झटके देकर अगाड़ी तुड़ाने की कोशिश की। लेकिन उसे दो ज़ंजीरों से कसकर बांधा हुआ था। क्या उसके साथी उसकी आवाज़ सुन लेंगे? वह फ़र्श पर पैर जमाकर छत के नीचे बनी खिड़की की तरफ़ मुंह करके ज़ोर से हिनहिनाया, "कहाँ हो ऽऽ?.."

"चुप कर, बदमाश!" एक साईस उसकी ओर बेलचा घुमाता हुआ झपटा। फिर उसने बाहर किसी को आवाज़ देकर पूछा, "इसे बाहर ले आऊँ क्या?"

"ले आओ!" बाहर से आवाज़ आयी।

दो साईस क़दमबाज़ को बाहर अहाते में ले आये। कितना उजाला

था! और हवा कितनी साफ़ थी! वसन्त की नशीली हवा में सांस लेते हुए उसके कोमल नथुने फड़क उठे। पत्तियों की तीखी गंध आ रही थी, गीली मिट्टी की गंध फैली हुई थी। उसकी नसों में ख़ून का दौरा तेज़ हो गया। काश, वह अब भाग सकता! गुलसारी थोड़ा उछला।

"ठहर! ठहर!" तुरन्त कई लोग एक साथ चिल्ला पड़े।

आज इतने सारे लोग उसे घेरे क्यों खड़े हैं? सबकी आस्तीनें ऊपर चढ़ी होने से उनके पुष्ट और बालदार हाथ दिखाई दे रहे थे। उनमें से एक, जो भूरा एप्रिन पहने हुआ था, एक सफ़ेद कपड़े पर कुछ चमचमाते धातु की चीज़ें निकालकर रख रहा था। धूप में उनके चमकने से उसकी आँखें चौंधिया रही थीं। बाक़ी लोग रस्सियाँ लिये खड़े थे। अच्छा, तो नया मालिक भी यहाँ मौजूद है! वह फूले हुए पायंचोंवाले बिरजिस में लिपटे अपने छोटे-छोटे मोटे पैर फैलाकर बड़ी शान से खड़ा था। उसकी भौंहें भी अन्य सब लोगों की तरह तनी थीं। बस उसकी आस्तीनें ऊपर नहीं की हुई थीं। उसका एक हाथ कमर पर था और दूसरे से वह अपने फ़ौजी कोट का बटन घुमा रहा था। कल फिर उसके मुंह से वैसी ही बदबू आ रही थी।

"अरे, खड़े क्यों हो? शुरू करो! जोराकुल अलदानोविच, क्या शुरू करें?" इब्राइम ने अध्यक्ष से पूछा। उसने मौन स्वीकृति में सिर हिलाया।

"चलिये, शुरू कीजिये!" इब्राइम ने हड़बड़ाकर अपनी लोमड़ी की खाल की टोपी अस्तबल के दरवाज़े की खूंटी पर टांग दी। टोपी खूंटी पर से लीद के ढेर पर जा गिरी। इब्राइम ने उसे बड़ी तुनुकमिज़ाजी से झाड़कर फिर टांग दिया। "आप थोड़ा पीछे हट जाइये, जोराकुल अलदानोविच," उसने इतने में कहा, "ख़ुदा न करे, कहीं लात न मार दे। घोड़ा बड़ा नासमझ जानवर होता है, कभी भी धोखा दे सकता है।"

गुलसारी की गर्दन में फन्दा पड़ते ही उसका सारा बदन कांप उठा। वह खुरदुरा था। उन लोगों ने उसके सीने पर एक फिसलती गांठ लगाकर उसका दूसरा छोर उसके पुट्ठे पर फेंक दिया। उन्हें क्या चाहिए? वे रस्सी का दूसरा छोर उसकी पिछली टांगों में क्यों लपेट रहे हैं? उसके पैरों में बेड़ियां क्यों डाल रहे हैं? गुलसारी घबरा उठा, फुफकारने लगा, तिरछी नज़रों से देखने लगा। आख़िर इन लोगों का इरादा क्या है?

"जल्दी करो!" इब्राइम अस्वाभाविक ऊँचे स्वर में चीखा। "गिरा दो!"

दो जोड़ी बालदार मज़बूत हाथों ने झटका देकर कमन्द अपनी तरफ़ खींचा। गुलसारी धम् से ज़मीन पर गिर पड़ा। सूरज कलाबाज़ी खा गया, ज़मीन कांप उठी। यह क्या हुआ? वह करवट के बल क्यों पड़ा है? लोगों के चेहरे इतने लम्बोतरे क्यों हो गये? पेड़ इतने ऊँचे क्यों लग रहे हैं? वह इस बेढंगे तरीक़े से ज़मीन पर क्यों पड़ा है? नहीं, वह यह नहीं सह सकता।

गुलसारी ने अपने सिर को झटका दिया और अपनी नस नस का ज़ोर लगाने लगा। रस्सियाँ दहकती बेड़ियों की तरह उसके बदन में गड़ने लगीं और उसके पैर पेट के नीचे बंध गये। क़दमबाज़ ने झटके से फिर ज़ोर लगाया और अपना पिछला मुक्त पैर चलाने लगा। रस्सी तनाव के मारे टूटने लगी।

"टूट पड़ो, दबाओ, दबोच रखो!" इब्राइम हड़बड़ाकर चिल्लाया।

सब लोग घोड़े पर टूट पड़े और उसे अपने घुटनों से दबाने लगे।

"इसका सिर, सिर ज़मीन से सटाये रखो! बांध दो! खींचो! हाँ, ऐसे। जल्दी करो, एक बार और! खींचो, और ज़ोर से खींचो! हाँ ऐसे। अब यहाँ बांधकर गांठ लगा दो!" इब्राइम बराबर चिल्लाता रहा।

क़दमबाज़ के पैरों में रस्सी तब तक कसी जाती रही, जब तक उसके चारों पैर एक मज़बूत गांठ में नहीं कस दिये गये। गुलसारी कराहता हुआ रस्सियों की मज़बूत पकड़ से छूटने की बराबर कोशिश करता रहा, उसने अपनी गर्दन और सिर को दबाये रखनेवाले लोगों को गिरा दिया। लेकिन वे फिर उसे घुटनों से दबाने लगे। क़दमबाज़ का पसीने में नहाया बदन सिहर उठा, उसके पैर सुन्न हो गये और उसने आत्म-समर्पण कर दिया।

"उफ़, किसी तरह बस में तो आया!"

"कितनी ताक़त है इसमें!"

"अब तो यह बिलकुल भी हिल-डुल नहीं सकेगा, चाहे घोड़े के बजाय ट्रैक्टर ही क्यों न हो!"

उसी समय गिराये गये क़दमबाज़ के सिरहाने वह ख़ुद, यानी उसका नया मालिक ग्राकर कल की कच्ची शराब की बदबू छोड़ता हुग्रा उकड़ूँ बैठ गया। वह ग्रपनी जीत पर प्रसन्न होकर उसके प्रति स्पष्ट रूप से घृणा प्रकट करते हुए इस तरह मुस्करा रहा था, मानो उसके ग्रागे घोड़ा नहीं, ग्रादमी, उसका घोर शत्रु पड़ा हो।

पसीने में तर इब्राइम भी रूमाल से ग्रपना पसीना पोंछता उसके पास ग्राकर उकड़ूँ बैठ गया। ग्रौर इस तरह वे एक दूसरे के पास बैठे, ग्रागे जो होनेवाला था, उसका इन्तज़ार करते हुए सिगरेट पीने लगे।

उधर दीवार की दूसरी ग्रोर लड़के गुल्ली-डण्डा खेल रहे थे,

ग्राक़बाय, कोकबाय सुन भी ले
खेत में बछड़ों को तू जाने न दे
जाने देगा तो न पायेगा पकड़
डांट खाकर रोयेगा तब ज़ोर से!

सूरज उसी तरह तेज़ी से चमक रहा था। वह ग्राख़िरी बार विशाल स्तेपी, मैदान में चरते घोड़ों के झुण्ड देख रहा था। उनके ऊपर हंस पंख फड़फड़ाते उड़ते दिखाई दिये, वे उसे ग्रपने साथ चलने के लिए पुकार रहे थे... ग्रौर उसके चेहरे पर मक्खियां भिनकने लगीं। वह उन्हें उड़ा भी नहीं सकता था।

"जोराक़ुल ग्रलदानोविच, शुरू करें?" इब्राइम ने दुबारा पूछा।

ग्रध्यक्ष ने मौन स्वीकृति में सिर हिलाया। इब्राइम उठ खड़ा हुग्रा। सब फिर दौड़-धूप करने लगे ग्रौर बंधे पड़े क़दमबाज़ को ग्रपने घुटनों ग्रौर सीनों से दबोचने लगे। उन्होंने उसका सिर ग्रौर ज़ोर से ज़मीन से सटा दिया। उसे उरुसन्धि में किसी का हाथ महसूस हुग्रा।

लड़के गौरैयाग्रों की तरह दीवार पर चढ़कर बैठ गये।

"ग्ररे भई, देखो, यह क्या कर रहे हैं।"

"क़दमबाज़ के सुमों की सफ़ाई हो रही है।"

"ख़ूब कहा तूने। सुम! यह सुम थोड़े ही हैं!"

"ऐ, तुम लोगों को क्या चाहिए? भागो यहाँ से!" इब्राइम उन पर चिल्लाया। "जाग्रो खेलो। तुम्हारा यहाँ कोई काम नहीं।"

बच्चे दीवार पर से नीचे लुढ़क गये।

सन्नाटा छा गया।

गुलसारी का सारा बदन झटकों ग्रौर किसी ठण्डी वस्तु के स्पर्श से कांप उठा। उसका नया मालिक उसके सामने उकड़ूँ बैठा किसी चीज़ का इन्तज़ार करता हुग्रा उसे देख रहा था। एकाएक तीव्र पीड़ा से उसकी ग्राँखों के ग्रागे ग्रंधेरा छा गया। उफ़! एक तेज़ लाल लपट भड़की ग्रौर उसके बाद ग्रंधेरा छा गया, घुप ग्रंधेरा...

सब ख़त्म हो जाने के बाद भी गुलसारी ज़मीन पर बंधा पड़ा रहा। वे लोग ख़ून बहना बन्द होने का इन्तज़ार कर रहे थे।

"यह लीजिये, सब ठीक हो गया, जोराक़ुल ग्रलदानोविच," इब्राइम ने हाथ मलते हुए कहा। "ग्रब यह भागकर कहीं नहीं जायेगा। बहुत भाग लिया। ग्राप तानाबाय की बिलकुल परवाह न कीजिए। उसे भाड़ में जाने दीजिये। वह हमेशा से ऐसा ही रहा है। उसने ग्रपने भाई तक को नहीं बख़्शा, उसे बेदख़ल करके साइबेरिया भिजवा दिया। वह किसी का भला नहीं कर सकता..."

इब्राइम ने बहुत ख़ुश होकर खूंटी से लोमड़ी की खालवाली टोपी उतारी, उसे झाड़ा ग्रौर उस पर हाथ फेरकर पसीने से तर सिर पर लगा लिया।

बच्चे ग्रभी तक ग्रपने गुल्ली-डण्डे के खेल में खोये थे,

ग्राक़बाय, कोकबाय सुन भी ले
खेत में बछड़ों को तू जाने न दे
जाने देगा तो न पायेगा पकड़
डांट खाकर रोयेगा तब ज़ोर से!

"तू एक सांस में नहीं पहुँच सका, चल बिठा मुझे पीठ पर। चल, गुलसारी, ग्रागे चल! हुर्रा, यह मेरा गुलसारी है!"

सुहावना दिन था, धूप खिली थी...

दस

रात। एक बूढ़ा आदमी और एक बूढ़ा घोड़ा। खड्ड के किनारे जलता अलाव। हवा में फड़फड़ा रही आग की लपटें...

कठोर और ठण्डी ज़मीन के कारण क़दमबाज़ की बग़ल ठिठुर गयी थी। उसकी गुद्दी सीसे-सी भारी होती जा रही थी। वह सिर उठाते और नीचे करते करते थक गया था। बिलकुल वैसे ही जैसे वह बेड़ियों में जकड़ा लंगड़ाते-लंगड़ाते थक गया था। गुलसारी इस समय भी उसी तरह भाग नहीं पा रहा था, न अपनी बेड़ियाँ तोड़ पा रहा था। उसका दिल कर रहा था कि वह आज़ादी से दौड़े, इतनी तेज़ी से कि उसके सुम गरम हो उठें, हवा से बातें करे, खुली हवा में सांस ले, जल्दी से जल्दी अपने चरागाह में पहुंच जाये, पूरे ज़ोर से हिनहिनाकर अपने झुण्ड को पुकारे, सारी घोड़ियों और बछेड़ों के साथ अफ़संतीन की ख़ुशबू से भरी विशाल स्तेपी में दौड़े, पर उसकी बेड़ियों ने उसे जकड़ रखा था। वह एक फ़रारी मुजरिम की तरह अकेला ही अपनी बेड़ियों की खनखन सुनता क़दम-क़दम कूदता चल रहा था। चारों तरफ़ सुनसान था, अंधेरा था। वह बिलकुल अकेला था। ऊपर शान्त हवा की परतों में चांद झिलमिला रहा था। क़दमबाज़ कूदते समय जब सिर पीछे करता, तो चांद दिखाई दे जाता और जैसे ही वह सिर झुकाता, वह टूटकर गिर जाता।

कभी उजाला होता, कभी अंधेरा छा जाता, फिर उजाला होता, फिर अंधेरा छा जाता... आँखें भी थक गयीं।

जंजीरें खनक रही थीं, उसके पैरों को लहू-लुहान किये डाल रही थीं। एक छलाँग लगायी, फिर दूसरी, उसके बाद तीसरी। चारों तरफ़ सुनसान था, अंधेरा था। पैरों में बेड़ियाँ पड़ी हों, तो रास्ता कितना लम्बा हो जाता है, चलना कितना मुश्किल हो जाता है।

खड्ड के किनारे जलता अलाव। कठोर और ठण्डी ज़मीन के कारण क़दमबाज़ की बग़ल ठिठुर गयी थी...

ग्यारह

दो सप्ताह बाद उन्हें फिर पहाड़ों में नये चरागाहों पर जाना था। उन्हें आगामी वसन्त तक सारी गर्मी, सारी शरत् और सारी सर्दी वहीं बितानी थी। एक घर छोड़कर दूसरे में रहने जाना ही कितना मुश्किल

काम होता है! न जाने कहां से इतना कबाड़ जमा हो जाता है! शायद इसीलिए किर्गीज़ लोग हमेशा से कहते आये हैं—जो आदमी अपने को ग़रीब समझता है, ज़रा घर बदलकर देखे।

नये चरागाहों में जाने की तैयारी करनी थी और उसके अलावा ढेरों काम करने थे—चक्की पर जाना था, बाज़ार जाना था, मोची के पास जाना था, बोर्डिंग-स्कूल में बेटे से मिलने जाना था... लेकिन तानाबाय बड़ा उदास घूम रहा था। उसकी पत्नी को वह तब कुछ बदला-बदला-सा लग रहा था। वह पौ फटते ही घोड़ों के झुण्ड के पास चला जाता था, उसकी पत्नी को उससे बात करने का मौक़ा ही नहीं मिल पाता था। दोपहर का खाना खाने लौटता, तो वह बड़ा उदास और चिड़चिड़ा दिखाई देता। लगता था, जैसे वह किसी चीज़ का इन्तज़ार करता हुआ हमेशा चौकन्ना रहता है।

"तुम्हें क्या हो गया है?" जयदार पूछती।

वह चुप लगा जाता, लेकिन एक दिन बोला,

"कुछ दिन हुए मैंने एक बहुत बुरा सपना देखा था"।

"यह क्या तुम मुझे टालने के लिए कह रहे हो?"

"नहीं, सच है। मुझे बार-बार उसी का ख़याल आता रहता है।"

"क्या बात यहाँ तक पहुँच चुकी है? गांव में पहले नास्तिक तुम नहीं तो और कौन था? क्या तुम्हें ही बुढ़ियाएं कोसा नहीं करती थीं? इसका मतलब है तानाबाय, तुम बुढ़ा गये हो, हर वक़्त घोड़ों के झुण्ड के इर्द-गिर्द घूमते रहते हो, यह नहीं सोचते कि हमें कुछ ही दिनों में यहाँ से जाना है। यह सब तुम्हारी बला से। क्या मैं अकेली बच्चों के साथ सारा काम कर सकती हूँ? तुम कम-से-कम चोरो से ही मिल आते। भले आदमी नयी जगह के लिए रवाना होने से पहले बीमारों को देखने ज़रूर जाते हैं।"

"उसके लिए बाद में वक़्त रहेगा," तानाबाय ने इस बात को नज़र-अंदाज़ करके कहा।

"बाद में कब? तुम क्या गांव में जाने से डरते हो? हम लोग कल साथ चलेंगे। बच्चों को भी साथ ले चलेंगे। मुझे भी वहां काम है।"

अगले दिन अपने एक जवान पड़ोसी को घोड़ों के झुण्ड की देखभाल करने का ज़िम्मा सौंपकर वे सारे परिवार के साथ घोड़ों पर रवाना हो

गये। जयदार ने छोटी बेटी को अपने घोड़े पर बिठा लिया और तानाबाय ने बड़ी बेटी को।

वे रास्ते में मिलनेवाले लोगों व परिचितों से दुआ-सलाम करते गांव की गलियों में से गुज़रे। एकाएक तानाबाय ने लोहारखाने के आगे अपना घोड़ा रोक दिया।

"ज़रा ठहरो," उसने पत्नी से कहा। उसने उतरकर बड़ी बेटी को जयदार के घोड़े पर बिठा दिया।

"क्या हुआ? तुम कहाँ जा रहे हो?"

"अभी आता हूँ, जयदार। तुम चलो। चोरो से कह देना कि मैं अभी आता हूँ। मुझे दफ्तर में बहुत जरूरी काम है, नहीं तो वह खाने की छुट्टी के लिए बन्द हो जायेगा। उसके बाद लोहारखाने से घोड़ों के लिए नालें भी लेनी हैं।"

"लेकिन मेरा अकेला जाना अच्छा नहीं लगेगा।"

"कोई बात नहीं। तुम चलो। मैं फ़ौरन पहुँच जाऊंगा।"

तानाबाय न दफ़्तर गया, न लोहारखाने में। वह सीधे अस्तबल पहुंच गया।

वह बिना किसी को आवाज़ दिये अस्तबल के अन्दर चला गया। उसकी आँखें धुंधलके में देखने की अभ्यस्त हो पातीं, उससे पहले उसका गला सूख गया। अस्तबल सूना पड़ा था, वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। सारे घोड़े बाहर थे। तानाबाय ने चारों ओर देखकर चैन की सांस ली। वह किसी साईस को ढूंढ़ने के लिए अहाते में चला आया। वहां उसे वही दिखाई पड़ गया, जिससे वह इतने दिनों से डर रहा था।

"मैं जानता था, तुम यही करोगे, सूअरो!" वह अपनी मुट्ठियाँ कसते हुए बुदबुदाया।

गुलसारी एक शेड के नीचे खड़ा था, उसकी पूँछ पर पट्टी बंधी हुई थी तथा वह एक रस्सी के सहारे उसकी गर्दन से बंधी हुई थी। उसके खुले पिछले पैरों के बीच में एक मटकी जितनी सूजन दिखाई दे रही थी। घोड़ा नांद में सिर झुकाये उदास, निश्चल खड़ा था। तानाबाय के मुंह से आह निकल गयी। वह होंठ चबाने लगा। वह घोड़े के पास जाना चाहता था, पर उसे साहस न हुआ। उसका दिल दहल गया। उसे सूने अस्तबल, सूने अहाते और बधिया किये हुए अकेले क़दमबाज़ को देखकर

डर लगने लगा। वह मुड़ा और चुपचाप पैर घिसटता हुआ बाहर चला गया। अब कुछ नहीं किया जा सकता था।

शाम को जब वे अपने तम्बू में लौट आये, तो तानाबाय ने अपनी पत्नी से दुःखित स्वर में कहा,

"मेरा सपना सच निकला।"

"क्या हुआ?"

"मैंने तुम्हें उस घर में, जहाँ हम मेहमान बनकर गये थे कुछ नहीं बताया। गुलसारी अब फिर कभी भागकर नहीं आयेगा। तुम्हें मालूम है, उन्होंने उसके साथ क्या किया? उन सूअरों ने उसे बधिया कर दिया!"

"मुझे मालूम है। इसीलिए तो मैं तुम्हें अपने साथ गांव खींच ले गयी थी। तुम्हें इसी का डर था? लेकिन इसमें डरने की बात ही क्या है? तुम बच्चे तो रहे नहीं! क्या किसी घोड़े को पहली या आख़िरी बार बधिया किया गया है? सदियों से ऐसा होता आया है और होता रहेगा। यह तो सभी जानते हैं।"

तानाबाय ने कुछ जवाब नहीं दिया। केवल इतना बोला,

"नहीं, कुछ भी हो, हमारा नया अध्यक्ष अच्छा आदमी नहीं है। मेरा दिल यही कहता है।"

"ऐसी बातें न करो, तानाबाय," जयदार ने कहा। अगर तुम्हारे क़दमबाज़ को बधिया कर दिया, तो क्या इससे अध्यक्ष बुरा आदमी हो गया? ऐसा क्यों सोचते हो? वह नया है। सामूहिक फ़ार्म बहुत बड़ा है, उसे संभालना आसान काम नहीं है। चोरो कह रहा था कि अब सामूहिक फ़ार्मों की हालत सुधर जायेगी, उन्हें मदद दी जायेगी। कुछ नयी योजनाएँ बनायी जा रही हैं। तुम हो कि वक़्त से पहले ही अपनी राय बनाकर बैठ गये। आख़िर ऐसी बहुत-सी बातें हैं, जिनके बारे में हम कुछ भी नहीं जानते..."

तानाबाय शाम का खाना खाकर घोड़ों का झुण्ड संभालने चला गया और रात देर गये तक वहीं रहा। वह अपने आप को कोसता रहा, सब भूलने की कोशिश करता रहा, लेकिन उसने दिन में अस्तबल में जो देखा था, वह उसके दिमाग़ से किसी तरह निकल ही नहीं पा रहा था। स्तेपी में झुण्ड को हांकते समय वह सोचने लगा, "हो सकता है किसी आदमी के बारे में इस तरह राय बनाना ठीक न हो। यह तो बेवक़ूफ़ी है। ऐसा

शायद इसीलिए हो रहा है, क्योंकि मैं बुढ़ाने लगा हूँ, साल भर घोड़ों का झुण्ड हांकता रहता हूँ। इसके अलावा न मैं कुछ देखता हूँ, न जानता हूँ। आख़िर हम कब तक इसी तरह मुसीबतें उठाते रहेंगे? .. भाषण सुनते हैं, तो लगता है कि सब ठीक चल रहा है। ठीक है, माना मैं ग़लती पर हूँ। ख़ुदा करे, मैं ग़लत ही होऊं। लेकिन दूसरे भी तो ऐसा ही सोचते होंगे..."

तानाबाय स्तेपी में घूमता हुआ सोचता रहा, पर उसकी शंकाओं का समाधान नहीं हुआ। उसे वे दिन स्मरण हो आये, जब उन्होंने सामूहिक फ़ार्म की स्थापना की थी, लोगों को सुखी जीवन की आशा दिलायी थी। क्या क्या सपने देखे थे उन लोगों ने! उन सपनों को साकार करने के लिए कितना संघर्ष किया था! कायापलट कर दिया, ज़िन्दगी के पुराने ढंग को बिलकुल बदल डाला। वैसे शुरू में ज़िन्दगी बुरी नहीं रही थी। अगर यह नास-पीटा युद्ध न हुआ होता, तो हमारी ज़िन्दगी पहले से बेहतर होती। लेकिन अब? युद्ध हुए कितने वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन फिर भी हम अपने सामूहिक-फ़ार्म पर फटे-पुराने तम्बू की तरह पैबंद लगाकर काम चला रहे हैं। एक जगह पैबंद लगाते हैं, तो दूसरी जगह फट जाता है। ऐसा क्यों हो रहा है? अब उनके लिए सामूहिक फ़ार्म पहले की तरह अपना नहीं, पराया-सा क्यों लगता है? उस समय सभा में जो फ़ैसला होता था, वही क़ानून बन जाता था। सभी जानते थे कि उन्होंने ख़ुद ही यह क़ानून बनाया है, और उसका पालन करना ज़रूरी है। अब तो सभाओं में केवल बकवास होती है। किसी को किसी की परवाह नहीं है। लगता है जैसे सामूहिक फ़ार्म का काम ख़ुद किसान नहीं, बाहर के आदमी चलाते हैं। जैसे बाहरवाले यह ज़्यादा अच्छी तरह जानते हैं कि क्या करना चाहिए, किस तरह काम करना चाहिए और सामूहिक फ़ार्म को किस तरह चलाना चाहिए। सामूहिक फ़ार्म में मनमानी फेरबदल करते रहते हैं और उससे कुछ भी फ़ायदा नहीं होता है। लोगों से मिलने में डर लगता है—जो भी मिलता है कभी भी पूछ सकता है, "तुम पार्टी के सदस्य हो, सामूहिक फ़ार्म की स्थापना करते समय तुम्हीं सबसे ज़्यादा गला फाड़कर चिल्लाते थे, अब हमें समझाओ कि ऐसा क्यों हो रहा है?" उन्हें क्या जवाब दिया जाये? कम-से-कम एक मीटिंग बुलवाकर ही लोगों को समझा देते कि क्या बात है। उनसे उनके दिल की बात पूछते, उनके

विचार और समस्याएं जानने की कोशिश करते। लेकिन नहीं। जिला मुख्यालय से आनेवाले अफ़सर भी अब पहले जैसे आदमी नहीं रहे। पहले अफ़सर ग्राम लोगों से मिलते थे, हर कोई उनसे बात कर सकता था। अब वे आते ही दफ़्तर में जाकर अध्यक्ष को डांट पिलाते हैं और ग्राम सोवियत के सदस्यों से बात ही नहीं करते। अफ़सर लोग पार्टी मीटिंगों में अधिकतर अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के बारे में बोलते हैं, जैसे सामूहिक फ़ार्म की स्थिति का कोई महत्व ही न हो। किसान बस काम करते रहें, अपना कोटा पूरा करते रहें...

तानाबाय को कुछ समय पहले आये एक ऐसे ही आदमी का स्मरण हो आया। वह केवल भाषा विज्ञान की किसी नयी धारणा की ही बात करता रहा था। जब तानाबाय ने उससे सामूहिक फ़ार्म के जीवन के बारे में बात छेड़ने की कोशिश की, तो वह उसे तिरछी नज़रों से देखने लगा, उसके विचारों को संदिग्ध बताने लगा। उसे वे पसन्द नहीं आये। आख़िर ऐसा हो क्यों रहा है?

"चोरो ज़रा ठीक हो जाये, तब मैं उसे सारी बात सच-सच बताने को मजबूर करूँगा," तानाबाय ने फ़ैसला किया। "मैं भी अपना दिल खोलकर रख दूंगा। अगर मैं ग़लती पर हूँ, तो मुझे साफ़-साफ़ कह दे, लेकिन अगर मैं ग़लती पर नहीं हूँ, तो? तब क्या होगा? नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मैं ज़रूर ग़लती पर हूँ। आख़िर मैं कौन हूँ? एक मामूली चरवाहा, गड़रिया। और वहां तो अक़्लमंद लोग काम करते हैं..."

तानाबाय तम्बू में लौट आया और काफ़ी देर तक सो नहीं पाया। बस यही सोचता रहा कि आख़िर इसका कारण क्या है? लेकिन उसे इसका जवाब नहीं मिला।

चोरो के साथ बात करने का मौक़ा उसे नहीं मिला। नये चरागाहों में जाने से पहले कामों से फ़ुरसत ही नहीं मिल पायी।

एक बार फिर क़ाफ़िला अगले वसन्त तक के लिए सारी गर्मी, सारी शरत्, सारी सर्दी नये चरागाहों में बिताने के लिए चल पड़ा। एक बार फिर भेड़ों के रेवड़, घोड़ों के झुण्ड नदी के तट और जल-प्रांत पर होकर गुज़र रहे थे। उनके साथ-साथ लद्दू घोड़ों के कारवां भी चल रहे थे। आकाश लोगों और जानवरों की आवाज़ों से गूंज उठा। स्त्रियों के रंग-

बिरंगे वस्त्र और रूमाल झिलमिला रहे थे। युवतियाँ जुदाई के गीत गा रही थीं।

तानाबाय घोड़ों के झुण्ड के साथ विशाल घास-स्थली और टेकरियां पार कर गांव के पास से गुज़र रहा था। अपने क़दमबाज़ पर वह जिस घर में अकसर आया करता था, वह गांव के छोर पर ज्यों का त्यों खड़ा था। उसके दिल में टीस उठने लगी। अब उसके लिए न वह स्त्री रही थी और न ही क़दमबाज़ गुलसारी। यह सब अतीत के गर्त में समा चुका था। वह वक़्त वसन्त में उड़कर दूर जाते हंसों के झुण्ड की तरह शोर करता दूर निकल चुका था।

...ऊंटनी अपने बच्चे को ढूंढ़ती, पुकारती बहुत दिनों से भटक रही है। "मेरे काली-काली आँखोंवाले बच्चे, तू कहाँ है? आवाज़ दे! दूध भरे थनों से पैरों पर से बहता हुआ नीचे गिर रहा है। तू कहां है? आवाज़ दे! दूध भरे थनों से बह रहा है। सफ़ेद दूध..."

बारह

उस वर्ष की शरत् में तानाबाय के जीवन में एकाएक एक नया मोड़ आया।

वह हिम-शृंग पार करने के बाद अपने घोड़ों को शरत् में चराने के लिए तराई के चरागाह में रुक गया, जिससे कि उन्हें कुछ समय बाद सर्दी में पहाड़ी चरागाहों में ले जा सके।

उन्हीं दिनों सामूहिक फ़ार्म का एक हरकारा उसके पास पहुँचा। "मुझे चोरो ने भेजा है," उसने तानाबाय से कहा। "उसने तुम्हें कल गांव पहुंचने के लिए कहलवाया है, वहां से तुम लोगों को ज़िला मुख्यालय में होने वाली मीटिंग में जाना है।"

तानाबाय अगले दिन अपने घोड़े पर सामूहिक फ़ार्म के दफ़्तर में पहुँचा। चोरो वहीं पार्टी संगठनकर्त्ता के कमरे में मौजूद था। वह वसन्त की तुलना में अधिक स्वस्थ दिख रहा था, हालांकि उसके नीले होंठों और सूखे शरीर से पता चल रहा था कि बीमारी ने अभी उसका पिण्ड नहीं छोड़ा है। वह काफ़ी चुस्त लग रहा था, बहुत व्यस्त था, लोगों ने उसे

घेर रखा था। तानाबाय अपने दोस्त के लिए बहुत प्रसन्न हुआ। इसका मतलब है कि उसमें फिर से जान आ गयी है और वह फिर अपने काम में जुट गया है।

जब कमरे में उन दोनों के अलावा और कोई नहीं रहा, तो चोरो ने तानाबाय की ओर देखा और अपने गढ़ों में धंसे खुरदुरे गालों पर हाथ फेरकर मुस्कराया,

"अरे, तानाबाय, तुम तो ज़रा भी नहीं बुढ़ाये, बिलकुल वैसे के वैसे ही हो। हम लोगों को मिले कितने दिन हो गये? शायद वसन्त के बाद से नहीं मिले, क्यों? क़िमिज़ और पहाड़ों की हवा बहुत बढ़िया चीज़ होती हैं। मैं तो बस अपनी ज़िन्दगी के दिन पूरे कर रहा हूँ। शायद मेरा वक़्त..." कुछ समय मौन रहकर उसने काम की बात छेड़ दी, "सुनो, तानाबाय, मैं जानता हूँ, तुम यही कहोगे कि मैं उंगली पकड़ते पहुंचा पकड़ने लगा। मुझे फिर तुमसे एक काम आ पड़ा है। कल हमें पशु-पालकों की मीटिंग में जाना है। पशुपालन बड़ी ख़राब हालत में है, ख़ास तौर से भेड़-पालन और विशेषकर हमारे सामूहिक फ़ार्म में। पार्टी की ज़िला समिति ने कम्युनिस्टों और कोम्सोमोलों से पिछड़नेवाले इलाकों में जाने और भेड़ों के रेवड़ों की संभाल करने की अपील की है। हमारी मदद करो! उस वक़्त तुमने घोड़ों के झुण्ड संभालकर हमारी मदद की थी, उसके लिए शुक्रिया, अब तुम फिर हमारी मदद करो। तुम भेड़ों का एक रेवड़ संभाल लो।"

"तुम हो बड़े तेज़, चोरो," तानाबाय ने कहा और मन-ही-मन सोचने लगा, "घोड़ों का तो मैं आदी हो चुका हूँ, लेकिन भेड़ों के साथ तो ऊबने लगूंगा! फिर मेरी समझ में नहीं आता, यह काम कैसे चलेगा?"

"मैं तुम्हें मजबूर कर रहा हूँ, तानाबाय," चोरो ने फिर कहा। "लेकिन हमारे पास और कोई चारा नहीं है, यह पार्टी का निर्देश है। तुम नाराज़ न होओ। मौक़ा आ पड़े, तो दोस्तों की तरह इसकी याद दिलाना, मैं इन सब का जवाब एकसाथ दूंगा!"

"ज़रा मौक़ा आने दो, तो इस तरह याद दिलाऊंगा कि याद करोगे!" तानाबाय ने कहा और हंस पड़ा। उसे लेश मात्र भी सन्देह नहीं था कि वह दिन दूर नहीं, जब उसे चोरो के सिर सारा दोष मढ़ना पड़ेगा...

"जहां तक भेड़ें पालने का सवाल है, तो उसके लिए मुझे सोचने का वक़्त चाहिए, अपनी बीवी से सलाह करनी होगी..."

"जरूर, सलाह करो। लेकिन सुबह तक फ़ैसला कर लो, कल मुझे मीटिंग से पहले इसकी ख़बर देनी है। जयदार से तुम बाद में सलाह कर लेना, सारी बात समझा देना। फिर मौक़ा मिलते ही मैं उसके पास जाकर सब समझा दूंगा। वह बड़ी समझदार औरत है, मान जायेगी। अगर वह तुम्हारे साथ न होती, तो तुमने बहुत पहले ही अपना सिर कटवा दिया होता," चोरो ने मज़ाक़ किया। "वह कैसी है? बच्चे कैसे हैं?"

फिर वे अपने अपने परिवारों, बीमारियों के बारे में और इधर-उधर की बातें करने लगे। तानाबाय का दिल बहुत कर रहा था कि वह चोरो के साथ खुलकर सारी बात करे, पर पहाड़ों से बुलाये गये चरवाहे आने लगे, फिर चोरो अपनी घड़ी की ओर देखने लगा। उसे कहीं जाने की जल्दी थी।

"तो यह बात है। तुम अपना घोड़ा अस्तबल में छोड़ दो। सबने कल सुबह ट्रक से जाना तय किया है। अब सामूहिक फ़ार्म को ट्रक जो मिल गयी है। कुछ दिनों में ही दूसरी भी मिल जायेगी। हमारे अच्छे दिन आ रहे हैं! मैं तो अभी रवाना हो रहा हूँ, मुझे सात बजे तक पार्टी के ज़िला मुख्यालय पहुँचना है। अध्यक्ष वहीं है। मेरे ख़्याल से क़दमबाज़ पर शाम हुए तक पहुँच जाऊँगा। वह किसी ट्रक से कम नहीं।"

"तो क्या तुम ही गुलसारी पर सवारी कर रहे हो?" तानाबाय को आश्चर्य हुआ। "लगता है, अध्यक्ष ने तुम पर बड़ी कृपा की है..."

"कह नहीं सकता कि कृपा की है या नहीं, पर उसने उसे मुझे सौंप दिया है। पता है, क्या हुआ?" चोरो ने हंसते हुए हाथ हिलाये। "गुलसारी को न जाने क्यों अध्यक्ष से नफ़रत हो गयी है। मेरी तो समझ में ही नहीं आता। उसे देखते ही उस पर भूत सवार हो जाता है, अपने पास नहीं फटकने देता। हर तरकीब आज़मा ली, लेकिन चाहे जान से मार दो, नहीं मानता, कुछ नतीजा नहीं निकला! और जब मैं सवारी करता हूँ, तो ठीक चलता है। तुमने उसे बहुत अच्छी तरह सधाया है. तुम्हें पता है, कभी-कभी मेरे दिल में दर्द उठने लगता है, लेकिन जैसे ही गुलसारी पर सवार होता हूँ, दर्द फ़ौरन ग़ायब हो जाता है। सिर्फ़ इसी वजह से मैं सारी ज़िन्दगी पार्टी-संगठनकर्ता का काम करने को तैयार

हूँ। मेरे लिए सचमुच वह एक बहुत बढ़िया दवा है!" चोरो ने हंसते हुए कहा।

तानाबाय नहीं हंसा।

"वह तो मुझे भी पसन्द नहीं है," उसने कहा।

"कौन?" चोरो ने हंसी से नम हुई आँखों को पोंछते हुए पूछा।

"अध्यक्ष।"

चोरो गम्भीर हो उठा।

"तुम्हें वह क्यों पसन्द नहीं है?"

"मालूम नहीं। मेरे ख़्याल से वह छिछोरा आदमी है, छिछोरा और बेरहम।"

"देखो, तुम्हें ख़ुश रखना बड़ा मुश्किल है। मेरी तुम सदा से नरमाई बरतने के लिए निन्दा करते आये हो और अब तुम्हें यह आदमी भी पसन्द नहीं आया, मैं कुछ नहीं कह सकता। मैं अभी-अभी काम पर वापस आया हूँ। मैं उसे अच्छी तरह समझ नहीं पाया हूँ।"

वे दोनों मौन हो गये। पहले तानाबाय चोरो को गुलसारी के पैरों में बेड़ियाँ डाले जाने और उसको बधिया किये जाने के बारे में बताना चाहता था, लेकिन अब उसने महसूस किया कि ये बातें अनावश्यक और अविश्वसनीय होंगी। चुप्पी ज्यादा देर न रहे, इसलिए तानाबाय ने चोरो के मुंह से सुनी ख़ुशख़बरी की बात छेड़ दी,

"यह बड़ा अच्छा हुआ कि हमें एक ट्रक मिल गयी। इसका मतलब है कि अब सामूहिक फ़ार्मों को भी ट्रकें मिलती रहेंगी। जरूर मिलनी चाहिएं। अब इसका समय आ गया है। याद है, हमें युद्ध से पहले प्रथम ट्रक मिली थी? कितनी बड़ी मीटिंग हुई थी। आख़िर वह सामूहिक फ़ार्म की अपनी ट्रक थी। तुमने ट्रक पर खड़े होकर कहा था, 'कामरेडो, देखिये, यह समाजवाद का फल है!' लेकिन फिर उसे भी मोर्चे पर भेज दिया गया..."

हां, वह भी एक समय था... सूर्योदय के समान अनोखा समय। ट्रक की तो बात ही क्या! चुय नहर के निर्माण के बाद जब लोग वापस आये थे, तो अपने साथ पहले ग्रामोफ़ोन लाये थे और तब नये गाने सुनने के लिए सारा गांव जमा हो गया था। यह गर्मी के आख़िरी दिनों की बात है। शाम को लोग ग्रामोफ़ोनवालों के घरों में इकट्ठे हो जाते थे और बार-

बार लाल रूमालवाली श्रेष्ठ कामगार के बारे में गीत सुनते थे। "ऐ लाल रूमालवाली श्रेष्ठ कामगार, एक प्याला चाय तो बना दे!..." यह भी उनके लिए समाजवाद के फल थे...

"और तुम्हें याद है, चोरो, मीटिंग के बाद हम सब उस ट्रक में ठसाठस भर गये थे!" तानाबाय बड़े उत्साह से बोला। "मैं लाल झण्डा लिये कैबिन के पास ऐसे खड़ा था, मानो कोई राष्ट्रीय त्योहार मना रहे हों। और हम लोग यों ही बिना किसी काम के स्टेशन गये और रेल-लाइन के सहारे चलते-चलते अगले स्टेशन, कज़ाख़स्तान पहुँच गये थे। वहां पार्क में हमने बियर पी थी। और सारे रास्ते गाने गाये थे। अब उन बांके नौजवानों में से कुछ ही जिन्दा बचे हैं—सब युद्ध में मारे गये। हां... और याद है, मैं लाल झण्डा रात में भी थामे रहा था। रात में तो उसे कौन देख सकता था? लेकिन मैं उसे थामे रहा था... वह मेरा झण्डा था। मुझे याद है, मैंने इतना गाया, इतना गाया कि गला बैठ गया... हम लोग अब क्यों नहीं गाते, चोरो?"

"हम बुढ़ा रहे हैं, तानाबाय, अब गाना गाना हमें शोभा नहीं देता..."

"अरे, मेरा मतलब यह नहीं है। हमारे गाने की उम्र तो अब बीत चुकी है। लेकिन नौजवानों को क्या हो रहा है? मैं अपने बेटे से मिलने बोर्डिंग-स्कूल जाता रहता हूँ। न जाने वह कैसा आदमी बनेगा? वह अभी से अफ़सरों की चापलूसी करना सीख गया है। मुझसे कहता है कि मैं उसके हेड-मास्टर के लिए अकसर क्रिमिज़ लाया करूँ। लेकिन किस लिए? पढ़ाई में वह ठीक ही है,... वे कैसा गाते हैं, यह मत पूछो। मैं जब छोटा था और अलेक्सांद्रोवका में येफ़ेमोव के खेत में मजदूरी करता था, तब वह एक बार मुझे ईस्टर पर चर्च ले गया था। हमारे बच्चे भी रूसी चर्चों में गानेवालों की तरह स्टेज पर मूर्त्तिवत खड़े गाने गाते हैं। उनके सारे गीत एक-से लगते हैं.. मुझे तो यह बिलकुल पसन्द नहीं आता। इसके अलावा भी ऐसी बहुत-सी बातें हैं, जो मेरी समझ में नहीं आतीं, मैं तुमसे उनके बारे में पूछना चाहता हूँ... मैं जिन्दगी से पिछड़ता जा रहा हूँ, सारी बातें समझ नहीं पाता हूँ।"

"अच्छा, तानाबाय। फिर कभी वक़्त निकालकर बात करेंगे," चोरो ने अपने कागज़ात समेटकर अपने बैग में रखते हुए कहा। "तुम बस इन

बातों की ज्यादा चिन्ता मत किया करो। मुझे ही लो, मुझे तो पक्का विश्वास है कि हमें कितनी ही मुसीबतें क्यों न उठानी पड़ें, हम हर हालत में उन्नति करेंगे, जिस सुखी जीवन के सपने देखते आये हैं, वैसी ही जिन्दगी जियेंगे..." उसने जाते-जाते कहा। देहरी पर उसे कुछ याद आया और वह मुड़कर बोला, "सुनो, तानाबाय, एक बार मैं तुम्हारी गली में से गुज़र रहा था, तब मैंने देखा कि तुम्हारा घर बिलकुल उजड़ा हुआ लगता है। तुम उसकी संभाल नहीं करते हो। तुम हमेशा पहाड़ों में रहते हो और तुम्हारे घर को कोई संभालनेवाला नहीं रहता। जयदार तो युद्ध के दिनों में तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में भी उसे ज्यादा अच्छी तरह संभा-लकर रखती थी। तुम जाकर देख लो। जिस चीज़ की ज़रूरत हो, बता देना, वसन्त में हम लोग किसी तरह तुम्हारी मदद कर देंगे। हमारा समंसूर गर्मी की छुट्टियों में आया था। उससे भी न रहा गया। वह हंसि-या उठाकर कहने लगा, 'मैं जाकर तानाबाय के अहाते में उगा खर-पत-वार काट आता हूँ।' तुम्हारे घर का पलस्तर उखड़ने लगा है, खिड़कियों के शीशे टूट गये हैं। उसने बताया कि तुम्हारे घर में गौरैयाएँ इस तरह चारों ओर उड़ती रहती हैं, जैसे घर नहीं खलिहान हो।"

"घर के बारे में तुम्हारी बात बिलकुल ठीक है। समंसूर को मेरी तरफ़ से शुक्रिया कहना। उसकी पढ़ाई कैसी चल रही है?"

"दूसरे कोर्स में है। मेरे ख़्याल से उसकी पढ़ाई ठीक ही चल रही है। तुम नौजवानों को भला-बुरा कहते हो, पर मैं अपने बेटे को देखकर कह सकता हूँ कि आजकल के नौजवान बुरे नहीं हैं। वह जो मुझे बताता है, उससे पता चलता है कि उसके संस्थान के लड़के बड़े होशियार हैं। ख़ैर, वक़्त बतायेगा। आजकल के नौजवान पढ़े-लिखे हैं, अपना ख़्याल ख़ुद रख सकते हैं..."

चोरो अस्तबल की तरफ़ रवाना हो गया और तानाबाय अपना घर देखने चला गया। उसने अपने अहाते का चक्कर लगाया। चोरो के बेटे का गर्मी में काटा सूखा और धूलभरा खर-पतवार उसके पैरों तले चरचर करता रहा। उसे इस बात पर शर्म महसूस हुई कि उसका घर लावारिस पड़ा है। दूसरे चरवाहों के घरों में उनके सम्बन्धी रहते थे, या और कोई संभाल करता रहता था। उसकी दोनों सगी बहनें, दूसरे गांवों में रहती थीं, भाई कुलुबाय से उसकी बोलचाल बन्द थी और जयदार का कोई

निकट सम्बन्धी था ही नहीं। इसी कारण से उसका घर लावारिस पड़ा था। अब उसे फिर पहाड़ी चरागाहों में गड़रिये की हैसियत से भेड़ें चराने जाना पड़ रहा था। तानाबाय अभी हिचकिचा रहा था, लेकिन वह जानता था कि चोरो उसे हर हालत में मना लेगा। वह उसे इनकार नहीं कर सकेगा और सदा की तरह उसकी बात मान लेगा।

वे लोग सुबह ट्रक में सवार होकर गांव से ज़िला मुख्यालय के लिए रवाना हो गये। तीन टनवाली नयी "गाज़" ट्रक सबको पसन्द आयी। "हम लोग ज़ारों की तरह सफ़र कर रहे हैं," पशुपालक मज़ाक़ में कहने लगे। तानाबाय भी ख़ुश था। उसने युद्ध के बाद से ट्रक में सवारी नहीं की थी। हाँ, युद्ध के दिनों तो उसने स्लोवाकिया और आस्ट्रिया की सड़कों पर अमरीकी "स्टुडीबेकर" ट्रकों में काफ़ी सफ़र किया था। वे तीन ऐक्सलवाली बड़ी शक्तिशाली ट्रकें थीं। "काश, हमारे पास भी ऐसी ट्रकें होतीं!" तानाबाय तब सोचा करता था। "ख़ास तौर से तराई के इलाक़ों से अनाज ढोने के लिए। ऐसी ट्रकें कहीं भी जा सकती हैं।" उसे विश्वास था कि युद्ध समाप्त होने के बाद उनके पास भी ऐसी ट्रकें हो जायेंगी। विजय के बाद उनके पास हर चीज़ हो जायेगी!..

खुली ट्रक में तेज़ हवा के कारण बात कुछ चल नहीं पा रही थी। बातें कम और चुप्पी ज़्यादा थी, जब तक कि तानाबाय ने नौजवानों को याद नहीं दिलाया,

"कोई गीत गाओ न, भई। तुम लोग हम बूढ़ों का मुंह क्या ताकते हो? तुम गाओ, हम सुनेंगे।"

नौजवान लोग गाने लगे। शुरू में उनके गाने में तालमेल नहीं बैठा, पर बाद में ठीक हो गया। सफ़र में मज़ा आने लगा। "बहुत बढ़िया," तानाबाय ने सोचा। "इस तरह ज़्यादा अच्छा रहता है। सबसे अच्छी बात यह है कि आख़िर हम लोगों की मीटिंग बुलाई जा रही है। शायद बतायेंगे कि यह सब क्या हो रहा है, सामूहिक फ़ार्मों का अब क्या होगा। अफ़सर लोग हमसे ज़्यादा अच्छी तरह जानते हैं। हमें तो सिर्फ़ हमारे सामूहिक फ़ार्म में होनेवाली बातें ही मालूम रहती हैं। वे हमें अच्छी सलाह देंगे और देखते-देखते हम भी नये तरीक़ों से काम करने लगेंगे..."

ज़िला मुख्यालय में बड़ी भीड़ थी और बहुत शोरगुल मचा हुआ था। क्लब के सामने का चौक ट्रकों, घोड़ा गाड़ियों और अनेक सवारी के घोड़ों से खचाखच भरा था। कबाब और चाय बेचनेवाले वहां पहले से ही मौजूद थे। कोयले का धुआं फैला हुआ था। वे ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए आवाज़ें लगा रहे थे।

चोरो वहां उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

"जल्दी से उतरकर आइये। अपनी अपनी जगह रोक लीजिये। मीटिंग शुरू होनेवाली है। तानाबाय, तुम कहां चले?"

"अभी आया," तानाबाय घुड़सवारी के घोड़ों के बीच से रास्ता बनाता हुआ बोला। उसने ट्रक में से ही गुलसारी को देख लिया था और इस समय उसी के पास जा रहा था। उसने उसे वसन्त के बाद से नहीं देखा था।

क़दमबाज़ अपने सुनहले कुम्मैत रंग, चौड़े पुष्ट पुट्ठों, हड़ीले सिर और काली आँखों के कारण अन्य घोड़ों के बीच अलग ही नज़र आ रहा था।

"कहो, मेरे प्यारे गुलसारी! क्या हाल हैं?" तानाबाय ने उसके पास पहुँचकर कहा।

क़दमबाज़ ने कनखियों से देखा। वह अपने पुराने मालिक को पहचान गया और पैर बदलते हुए फुफकारने लगा।

"तू तो अच्छा दिख रहा है, गुलसारी। देख, तेरा सीना चौड़ा हो गया है। लगता है, तू काफ़ी दौड़ता रहता है। उस वक़्त तेरे साथ बहुत बुरी गुज़री थी न? मैं जानता हूँ... ख़ैर, कोई बात नहीं, अब तू एक भले आदमी की सेवा में है। तू बस ढंग से काम करता रह, फिर सब ठीक हो जायेगा," तानाबाय ने खुरजी में बची जई को टटोलते हुए कहा। इसका मतलब है कि चोरो यहाँ इसे भूखा नहीं मारता है। "अच्छा, तू यहीं रह, मैं चलता हूँ।"

क्लब के दरवाज़े के ऊपर दीवार पर लाल पोस्टर लगे थे.,

"कम्युनिस्टो, आगे बढ़ो!", कोम्सोमोल–सोवियत युवाओं का हरावल है!" हॉल और सभा-कक्ष में लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। दरवाज़े के पास तानाबाय को चोरो और सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष अलदानोव मिले।

"तानाबाय, जरा इधर आओ," अलदानोव बोला, "हमने तुम्हारा नाम पहले ही लिख लिया है। यह नोटबुक लो। तुम्हें भाषण देना होगा। तुम पार्टी के सदस्य हो और हमारे सर्वश्रेष्ठ चरवाहे हो।"

"लेकिन मुझे कहना क्या है?"

"तुम्हें यही कहना है कि तुम कम्युनिस्ट होने के नाते अपनी मर्जी से पिछड़नेवाले विभाग में जा रहे हो और भेड़ों के रेवड़ की संभाल करोगे।"

"बस इतना ही?"

"बस कैसे! तुम्हें बताना है कि तुम क्या वादे कर रहे हो। तुम कहना कि तुम पार्टी और जनता से वादा करते हो कि तुम हर एक सौ भेड़ों से एक सौ दस मेमने प्राप्त करोगे और हर भेड़ से तीन किलोग्राम ऊन उतारोगे।"

"मैं बिना भेड़ों को देखे यह कैसे कह सकता हूँ?"

"अरे, यह भी कोई बड़ी समस्या है! तुम्हें भेड़ें मिल जायेंगी," चोरो ने आग में पानी डालते हुए कहा। "तुम्हें जो पसन्द आयें, उन्हें रख लेना। फ़िक्र मत करो। इसके अलावा यह भी कहना कि तुम दो नौजवान कोम्सोमोल चरवाहों को काम सिखाओगे।"

"किन को?"

चारों तरफ़ से लोग धक्के दे रहे थे। चोरो सूची में नाम ढूंढ़ने लगा।

"बालातबेकोव एशिम और ज़ार्लीकोव बेकताय को।"

"लेकिन मैंने तो उनसे बात तक नहीं की है। क्या पता उनकी इस बारे में क्या राय है?

"तुम फिर अपनी चलाने लगे! बड़े अजीब आदमी हो। क्या उनके साथ बात करना ज़रूरी है? तुम्हें इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है? अब उनकी कोई नहीं सुनेगा, हमने उन्हें तुम्हारे हवाले कर देने का फ़ैसला पहले से ही कर रखा है।"

"ठीक है। अगर फ़ैसला कर ही लिया है, तो फिर मुझसे बात करने की ज़रूरत ही क्या है?" तानाबाय जाने लगा।

"ठहरो ज़रा," चोरो ने उसे रोका। "तुमने सारी बात समझ ली?"

"समझ ली, समझ ली," तानाबाय ने जाते जाते खीजे स्वर में जवाब दिया।

तेरह

मीटिंग शाम हुए समाप्त हुई। ज़िला मुख्यालय सुनसान हो गया: सब अपने अपने ठिकानों के लिए रवाना हो गये—कोई पहाड़ों की तरफ़, कोई भेड़ों के रेवड़ और घोड़ों के झुण्ड संभालने, कोई फ़ार्मों के लिए, कोई अपने गाँव और कोई अपने क़स्बे।

तानाबाय अन्य लोगों के साथ ट्रक में बैठकर अलेक्सांद्रोवका की चढ़ाई और स्तेपी के पठार के रास्ते रवाना हो गया। अंधेरा हो चुका था, ठण्डी हवा चल रही थी। शरत-ऋतु आ गयी थी। तानाबाय ने ट्रक के एक कोने में शरण ली और अपने कोट का कालर उठाकर अपने विचारों में डूब गया। मीटिंग भी ख़त्म हो गयी। उसने कोई काम की बात नहीं कही थी, पर दूसरों के विचार जान लिये थे। यानी हालत सुधारने के लिए अभी बहुत मेहनत करनी होगी। वह जो सचिव है प्रदेश समिति का, चश्मेवाला, उसने ठीक ही कहा था, "हमारे लिए रास्ते कोई और नहीं बनायेगा, हमें ख़ुद ही अपने रास्ते बनाने होंगे।" ज़रा सोचिये तो, सन् तीस से ही हम ऐसे ही रास्तों पर चलते आ रहे हैं, जो कभी ऊपर जाते हैं, कभी नीचे, फिर चढ़ाई आ जाती है और फिर ढलान... नहीं, भई, सामूहिक फ़ार्म को चलाना कोई आसान काम नहीं है। मुझे ही देखो। सिर के आधे बाल सफ़ेद हो चुके हैं, सारी जवानी बीत गयी, क्या क्या नहीं किया, कई ग़लतियाँ भी कीं, लेकिन यही लगता था—वह रहा हमारा लक्ष्य, वह रहा, लेकिन सामूहिक फ़ार्म की समस्याओं का अन्त ही नज़र नहीं आता...

ख़ैर, जब काम करना ही है, तो करेंगे ही। सचिव ने ठीक कहा—ज़िन्दगी की गाड़ी अपने आप नहीं चलती है, जैसा कि वे युद्ध के बाद सोचा करते थे। उसे तो मरते दम तक आगे ठेलते ही रहना होगा... लेकिन बार-बार उसके पहिये ऐसे खुरदुरे हो जाते हैं कि धक्का देते देते कन्धों में घट्टे पड़ जाते हैं। ख़ैर, जब आत्मा को इस बात का सन्तोष रहता है कि जो काम तुम और दूसरे लोग कर रहे हैं, उससे सबको सुख मिलेगा, तो इन घट्टों की कौन चिन्ता करता है... भेड़ों की संभाल न जाने वह कैसे करेगा? जयदार क्या कहेगी? उसे दुकान में जाने का मौक़ा भी नहीं मिल सका, कम-से-कम बेटियों के लिए कुछ मिठाई ही

ख़रीद लेता। बस वादे करने में ही लगा रहा। एक सौ भेड़ों से एक सौ दस मेमने और हर भेड़ से तीन किलो ऊन प्राप्त करने का वादा किया है उसने। कहना आसान है, लेकिन पहले मेमना पैदा हो, फिर उसे ज़िन्दा रखा जाये, जब कि बारिश, हवा और ठण्ड उसका जीना हराम कर रहे हों। और ऊन? ऊनका एक रेशा दिखाई तक तो देता नहीं और फूंक मारते ही उड़ जाता है। इतने किलोग्राम ऊन निकलेगा कैसे? वैसे तो ऊन सोने के मोल बिकता है। जब कि ऐसे लोग भी हैं, जो शायद ख़ाक जानते हैं कि यह ऊन कितनी मुश्किलों से प्राप्त होता है...

हां, चोरो ने उसे फंसा ही दिया... कहने लगा, "बस तुम अपने वादों के बारे में ही बोलना, लेकिन संक्षेप में। और कुछ कहने की मैं तुम्हें सलाह नहीं दूंगा।" और तानाबाय ने उसकी बात मान ली। वह मंच पर पहुँचकर सकपका गया और उसके मन में जो बातें उबल रही थीं वह कह ही नहीं सका। सिर्फ़ अपने वादे बुदबुदाते हुए गिनाकर उतर आया। इस बारे में सोचकर ही शर्म आती है। लेकिन चोरो ख़ुश था। वह इतना चौकन्ना क्यों रहने लगा है? अपनी बीमारी के कारण, या फिर इसलिए कि वह अब सामूहिक फ़ार्म का मुखिया नहीं रहा? उसे तानाबाय को चेतावनी देने की क्या ज़रूरत आ पड़ी? नहीं, ज़रूर वह कुछ बदल गया है, पहले जैसा नहीं रहा। शायद इसलिए, क्योंकि वह सारी ज़िन्दगी अध्यक्ष के नाते सामूहिक फ़ार्म की गाड़ी खींचता रहा और ज़िन्दगी भर नेता लोग उसकी आलोचना करते रहे। लगता है, वह कुछ चालाकी से काम लेना सीख गया है...

"देखते रहो, दोस्त, कभी तुम्हारी अकेले में ख़ूब ख़बर लूंगा..." तानाबाय ने पोस्तीन को कसकर बदन पर खींचते हुए सोचा। ठण्ड थी, हवा चल रही थी और घर अभी काफ़ी दूर था। वहाँ न जाने कैसा होगा?..

चोरो क़दमबाज़ पर रवाना हो गया। वह बिना साथियों का इन्तज़ार किये अकेला ही चल पड़ा था। वह जल्दी से जल्दी घर पहुँचना चाहता था, क्योंकि उसके दिल में दर्द होने लगा था। उसने घोड़े को अपनी रफ़्तार से चलने दिया। गुलसारी एक दिन पूरा आराम करने के बाद तेज़

लयबद्ध क़दमचाल से भागने लगा। सन्ध्यकालीन रास्ते पर उसकी टापें नियमित ताल में पड़ रही थीं। अब उसके पुराने शौक़ों में से केवल एक ही शौक़ रह गया था—दौड़ने का। उसकी अन्य इच्छाएँ काफ़ी पहले मर चुकी थीं। यूं कहिये कि मार दी गयी थीं, जिससे कि उसे केवल अपनी काठी और रास्ते के सिवा कुछ याद न रहे। गुलसारी दौड़ के लिए ही जी रहा था। वह बड़ी लगन से बिना थके दौड़ता था, मानो वह सब दुबारा पा लेना चाहता हो, जो आदमियों ने उससे छीन लिया था। वह भागता था, पर उस तक कभी पहुँच नहीं पाता था।

रास्ते में चोरो को हवा से कुछ आराम मिला। दिल का दर्द ख़त्म हो गया। वह कुल मिलाकर मीटिंग से सन्तुष्ट था। उसे प्रदेश समिति के सचिव, जिसके बारे में उसने सुना बहुत था, पर उससे मिला पहली बार था, का भाषण बहुत पसन्द आया। फिर भी पार्टी-संगठनकर्त्ता मूड में नहीं था। उसकी आत्मा उसे कचोट रही थी। आख़िर वह तानाबाय का भला चाहता था। वह तो आये दिन सभाओं, मीटिंगों और बैठकों में भाग लेता रहता था और अच्छी तरह जानता था कि ऐसे मौक़ों पर क्या कहना चाहिए और क्या नहीं। उसने ठोकरें खाकर सीखा था। हालांकि तानाबाय ने उसकी बात मान ली थी, लेकिन इस बात को समझने की कोशिश नहीं की थी। मीटिंग के बाद उसने चोरो को एक शब्द भी नहीं कहा। ट्रक पर चढ़ गया और उसकी ओर पीठ कर ली। ओफ़, तानाबाय, तानाबाय! कितने भोले हो तुम! ज़िन्दगी से तुमने कुछ नहीं सीखा। न तुम्हें कुछ मालूम है, न तुम किसी चीज़ पर ध्यान देते हो। जैसे जवानी में थे, वैसे ही रह गये। बस दो टूक बात कहना जानते हो। लेकिन अब वक़्त बदल चुका है। अब तो यह अधिक महत्वपूर्ण है कि तुम अपनी बात कैसे कहो, किसके सामने कहो कि वह सबकी बातों से मेल खाये, समय के अनुरूप और धाराप्रवाह हो। तब सब ठीक हो जायेगा। लेकिन, तानाबाय, अगर तुम्हें कहने की छूट दी जाती, तो तुम ढेर सारी ग़लतियाँ कर देते और उसका जवाब हमें देना पड़ता। "तुम अपने संगठन के सदस्यों को कैसी शिक्षा देते हो? कहाँ गया तुम्हारा अनुशासन? इतनी ढील क्यों दी गयी?" ओफ़, तानाबाय, तानाबाय! ...

चौदह

वही रात थी, जिसने उन दोनों को रास्ते में आ घेरा था। एक बूढ़ा आदमी और एक बूढ़ा घोड़ा। खड्ड के किनारे जलता अलाव। तानाबाय ने न जाने कौन-सी बार मरणासन्न गुलसारी की पीठ पर डाली पोस्तीन ठीक की। वह फिर उसके सिरहाने आ बैठा। उसकी सारी ज़िन्दगी उसकी आँखों के आगे घूम रही थी। सारे साल एक एक करके क़दमबाज़ की लयबद्ध चाल से पीछे छूटते जा रहे थे.... उस साल शरत् के अन्त में और जाड़े के शुरू में जब वह गड़रिया बनकर भेड़ों के रेवड़ के साथ भटक रहा था, तब क्या हुआ था?

पन्द्रह

पहाड़ों में सारा अक्तूबर सूखा और सुनहला रहा। केवल शुरू के दो दिन वर्षा हुई, ठण्ड हो गयी और कोहरा छा गया। लेकिन हवा एक रात में ही खराब मौसम को अपने साथ उड़ा ले गयी। अगले दिन सुबह जब तानाबाय अपने तम्बू से बाहर निकला, तो अवाक् रह गया—पहाड़ों के शिखर ताज़ा बर्फ़ से ढक गये थे। उन पर बर्फ़ कितनी शोभा दे रही थी! वे अपनी निष्कलंक ताज़गी से आकाश को छूते धूप और छाया में स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे थे, लगता था, मानो ख़ुदा ने उन्हें अभी-अभी बनाया हो। जहाँ बर्फ़ पड़ी हुई थी वहाँ से नीली अनन्तता शुरू होती थी। और उसकी गहराइयों में, व्याप्त बहुत दूर तक नीलिमा में ब्रह्मांड की मायावी दूरी प्रतिबिम्बित हो रही थी। तानाबाय हिम के प्राचुर्य और शीतलता से सिहर उठा और उस पर उदासी छा गयी। उसे फिर उस नारी की याद आ गयी, जिससे वह अपने गुलसारी पर बैठकर मिलने जाया करता था। अगर क़दमबाज़ उसके पास होता तो वह ख़ुशी से फूला न समाता और उसके पास इस श्वेत हिम की तरह चिल्लाता हुआ पहुंच जाता...

लेकिन वह यह जानता था कि यह केवल एक सपना है... तो क्या हुआ, आदमी का आधा जीवन तो सपने देखते देखते ही गुज़र जाता है,

शायद इसी लिए जीवन इतना मधुर होता है। शायद इसी लिए मनुष्य को जीवन से इतना प्रेम होता है, क्योंकि उसके सारे सपने साकार नहीं होते। वह पहाड़ों और आकाश की ओर देखते हुए सोचने लगा कि सारे लोग शायद ही समान रूप से सुखी रह सकते हैं। हर आदमी का अपना भाग्य होता है। जिस प्रकार एक पर्वत पर एक साथ धूप भी रहती है और छाया भी, उसी प्रकार हर आदमी के भाग्य में सुख भी होता है और दुख भी। इसी का नाम ज़िन्दगी है..."अब वह शायद मेरा इन्तज़ार भी नहीं कर रही होगी। हो सकता है, पहाड़ों पर ताज़ा बर्फ़ देखकर उसे बस मेरी याद ही आयी हो...."

आदमी बूढ़ा हो जाता है, पर उसका दिल हार नहीं मानना चाहता और रह-रहकर जागकर उसे अपने अस्तित्व की याद दिलाता रहता है।

तानाबाय ने घोड़े पर जीन कसकर भेड़ों का बाड़ा खोला और तम्बू में अपनी पत्नी को आवाज़ दी,

"जयदार, मैं भेड़ों को ले जा रहा हूँ। जब तक तुम अपने काम से फ़ारिग़ होओगी मैं लौट आऊंगा।"

भेड़ें जल्दी-जल्दी भागने लगीं। ढलान के ऊपर सिरों और धड़ों की एक धारा-सी बहने लगी। दूसरे चरवाहे भी अपनी भेड़ों को चराने ले जा रहे थे। भेड़ों के रेवड़ हर ढलान और घाटी में बिखरी पृथ्वी की शाश्वत देन—घास चुन-चुनकर चरने लगे। वे शरत्कालीन पहाड़ियों में विभिन्न प्रकार की सुनहली एवं भूरी घास के बीच मटमैले ढेरों की तरह सरक रही थीं।

अभी तक सब ठीक चल रहा था। तानाबाय को भेड़ें अच्छी ही मिली थीं। वे इससे पहले एक-एक, दो-दो बार बच्चे दे चुकी थीं। कुल पांच सौ भेड़ें थीं और उतनी ही समस्याएँ, जो उनके ब्याने के बाद दुगुनी से ज़्यादा हो जाती थीं। लेकिन उनके ब्याने की घड़ी और गड़रिये की परीक्षा की घड़ी अभी काफ़ी दूर थी।

घोड़ों के झुण्ड के मुक़ाबले भेड़ों के रेवड़ को संभालना बेशक ज़्यादा आसान होता है, लेकिन तानाबाय को उनका आदी होने में कुछ समय लगा। घोड़ों से बढ़िया जानवर कोई नहीं होता! लेकिन लोग कहते हैं कि अब अश्व-पालन का कोई महत्व नहीं रहा। अब ट्रक और मोटर-कारें आ गयीं। इसलिए घोड़ों से अब उतना लाभ नहीं मिलता। अब मुख्य

स्थान भेड़-पालन, ऊन, गोश्त और खालों का है। इस प्रकार के नीरस हिसाब-किताब से तानाबाय का दिल दुखता था, हालांकि वह भी उसकी तर्कसम्मतता को समझता था।

घोड़ों के अच्छे झुण्ड को, जिसका सांड़ अच्छा हो, चरवाहा कुछ समय के लिए, आधे दिन या उससे ज्यादा समय के लिए छोड़कर अपने दूसरे काम करने जा सकता है। लेकिन भेड़ों के साथ तो आदमी चौबीस घंटे के लिए बंध जाता है। दिन भर उनके आगे-पीछे घूमो और रात को—पहरा दो। गड़रिये को एक सहायक भी मिलना चाहिए, वह नहीं दिया गया। इसीलिए उसे बिना एवज़ी के, बिना आराम किये दिन-रात काम करना पड़ रहा था। जयदार रात के चौकीदार की तनख़्वाह पाती थी। दिन में वह कभी-कभी अपनी बेटियों को साथ लेकर भेड़ों की संभाल कर लेती थी, आधी रात तक बाड़े के बाहर बन्दूक लिये पहरा देती थी, लेकिन उसके बाद तानाबाय को ही पहरा देना होता था। इब्राइम अब सामूहिक फ़ार्म के पशु-पालन विभाग का इनचार्ज बन चुका था और उसके पास हर चीज़ के लिए जवाब तैयार रहता था।

"आख़िर, मैं आपके लिए सहायक कहाँ से लाऊँ, तानाबाय?" वह मातमी चेहरा बनाकर कहता। "आप तो समझदार आदमी हैं। लड़के सब पढ़ रहे हैं। और जो पढ़ नहीं रहे हैं, वे भेड़ों का नाम तक सुनने को तैयार नहीं हैं। वे काम करने शहर, रेल्वे या फिर किसी खान में ही चले जाते हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या करूँ। आपके पास तो सिर्फ़ एक ही रेवड़ है, तिस पर भी आप शिकायत करते रहते हैं। और मेरे पास? मेरे सिर पर तो सामूहिक फ़ार्म के सारे पशुपालन विभाग का बोझ है। मुझ पर तो ज़रूर मुक़दमा चलेगा। मैं ने बेकार ही इस काम का ज़िम्मा उठाया। ज़रा तुम्हारे शागिर्द बेकताय जैसे आदमियों के साथ काम करके तो देखो। कहता है तुम मुझे रेडियो दो, फ़िल्म दिखवाने का इन्तज़ाम करो, अख़बार पहुंचाओ, नया तम्बू दो और हर हफ़्ते चलती-फिरती दुकान भिजवाओ। और अगर ऐसा नहीं किया, तो छोड़कर जहाँ मेरे जी में आयेगा, चला जाऊँगा। आप कम-से-कम उसके साथ बात करके तो देखिये, तानाबाय!..."

इब्राइम झूठ नहीं बोल रहा था। वह स्वयं भी इतने ऊँचे पद पर पहुँचकर ख़ुश नहीं था। और बेकताय के बारे में भी सच ही कह रहा था।

तानाबाय कभी-कभी समय निकालकर अपने शागिर्द कोम्सोमोलों के पास हो आता था। एशिम बालातबेकोव शिष्ट लड़का था, हालांकि ज्यादा चुस्त नहीं था। बेकताय सुन्दर और सुडौल बदन का लड़का था, लेकिन उसकी तिरछी काली आँखों में हमेशा गुस्सा झलकता रहता था। तानाबाय को देखते ही वह नाक-भौं चढ़ाकर कहने लगता था,

"तानाबाय, तुम क्यों मरे जा रहे हो? कुछ वक़्त अपने बच्चों के साथ भी गुज़ारा करो। मेरा काम देखने आनेवालों की तो वैसे ही कमी नहीं है।"

"क्या तुम्हें मेरा आना बुरा लगता है?"

"बुरा लगे या न लगे। तुम्हारे जैसे आदमी मुझे बिलकुल पसन्द नहीं हैं। तुम लोग जान हथेली पर लिये फिरते रहते थे। हुर्रा, हुर्रा चिल्लाते रहते थे। तुम न ख़ुद आदमियों की तरह जिये, न ही हमें जीने दिया।"

"लड़के, तुम ज़रा सोच-समझकर बात करो," तानाबाय ने दांत पीसते हुए कहा। "और मेरी तरफ़ उंगली मत दिखाओ। तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं। जान हथेली पर लिये हम फिरते थे, न कि तुम। और हमें इसका अफ़सोस भी नहीं है। तुम लोगों के लिए जान हथेली पर लिये फिरते थे। अगर हम जान हथेली पर लिये न फिरते, तो तुम आज न जाने क्या करते होते। सिनेमा, अख़बार वगैरह तो दूर, तुम्हें अपना नाम तक मालूम नहीं होता। तुम्हारा सिर्फ़ एक ही नाम होता—गुलाम!"

तानाबाय को बेकताय पसन्द नहीं था, लेकिन वह मन ही मन स्पष्टवादिता के लिए उसका आदर भी करता था। उसका प्रभावशाली व्यक्तित्व व्यर्थ जा रहा था। लड़के को ग़लत दिशा में जाते देखकर तानाबाय को बड़ा अफ़सोस होता था... बाद में, जब उनके रास्ते जुदा हो गये और एक बार संयोगवश वे शहर में मिले, तो उसने उससे कुछ भी नहीं कहा और न ही उसकी बात सुनने को तैयार हुआ।

उस वर्ष सर्दी जल्दी आ गयी...

वह अपनी ख़ूंख़ार सफ़ेद ऊंटनी को दौड़ाती आ पहुंची और लापरवाही के लिए चरवाहों की ख़बर लेने लगी।

सारा अक्तूबर सूखा और सुनहला रहा। लेकिन नवम्बर में सर्दी एकाएक आ धमकी।

तानाबाय भेड़ों को हांककर लाया और उन्हें बाड़े में बन्द कर दिया। सब ठीक लग रहा था। लेकिन आधी रात गये पत्नी ने उसे जगा दिया,

"उठो, तानाबाय। मैं तो बुरी तरह ठिठुर गयी। बर्फ़ गिर रही है।"

उसके हाथ ठण्डे थे और उसके सारे शरीर से गीली बर्फ़ की गंध आ रही थी। बन्दूक भी गीली और ठण्डी थी।

बाहर निष्प्रभ रात थी। भारी हिमपात हो रहा था। बाड़े में बन्द भेड़ें बेचैन थीं। वे सिर हिला-हिलाकर बर्फ़ झाड़ रही थीं, खांस रही थीं, पर बर्फ़ थी कि गिरे ही जा रही थी। "अभी तो देखती रहो, इससे भी बुरा हाल होनेवाला है हमारा," तानाबाय ने अपनी पोस्तीन कसकर बन्द करते हुए सोचा। "तू इस साल बहुत जल्दी आ पधारी, सर्दी। न जाने इससे हमारा भला होगा या बुरा? क्या तू कुछ जल्दी चली भी जायेगी? कम-से-कम भेड़ों के ब्याने के वक़्त तो चली ही जाना। हम तुझसे बस इतना ही चाहते हैं। तब तक अपना रंग दिखा ले। इसका तुझे पूरा हक़ है और तुझे किसी से कुछ पूछने की जरूरत नहीं है..."

अभी अभी आयी सर्दी मौन रही। वह अंधेरे में जल्दी से जल्दी अपना काम कर लेना चाहती थी, जिससे कि लोग दिन निकलते ही हैरान रह जायें, दौड़-धूप करते इधर-उधर भागने लगें।

पहाड़ रात के धुंधलके में अभी तक अपना काला आवरण ओढ़े खड़े थे। उन्हें जाड़े की जरा भी परवाह न थी। चरवाहे भले ही अपनी भेड़ों के साथ भागते रहें। पहाड़ तो अब तक जैसे खड़े रहते आये हैं, वैसे ही खड़े रहेंगे।

इस तरह वह चिरस्मरणीय जाड़े का मौसम शुरू हुआ, लेकिन आगे वह क्या गुल खिलायेगा, कोई नहीं जानता था।

ज़मीन बर्फ़ से ढकी थी। कुछ दिन बाद फिर हिमपात हुआ और उसके बाद फिर हुआ और होता रहा। चरवाहे शरत्कालीन चरागाह छोड़कर जाने को मजबूर हो गये। भेड़ों के रेवड़ इधर-उधर भटकने लगे, तंग घाटियों और ऐसे स्थानों में शरण लेने लगे, जहाँ बर्फ़ कम थी। तब चरवाहों की ऐसे स्थानों पर भेड़ों के लिए चारा ढूंढ़ निकालने की सदियों

पुरानी कला काम आयी, जहाँ साधारण आदमी यह कहकर चला जाता कि यहाँ बर्फ़ के सिवा कुछ नहीं है। इसीलिए तो वे चरवाहे कहलाते हैं... कभी-कभी सामूहिक फ़ार्म का कोई अफ़सर आता, देख-दाखकर, पूछताछ करता और ढेरों वादे करके जल्दी से जल्दी पहाड़ों से वापस चला जाता। चरवाहा फिर सर्दी से दो हाथ करने के लिए अकेला रह जाता।

तानाबाय सामूहिक फ़ार्म में जाकर यह पता लगाने के लिए मौक़ा ढूंढ़ता रहा कि भेड़ों के ब्याने के समय के लिए उनकी क्या योजनाएँ हैं, सारी तैयारियाँ कर ली गयी हैं या नहीं, चारा जमा किया गया है या नहीं। लेकिन फ़ुरसत मिलती कैसे! दम लेने का भी वक़्त नहीं मिल रहा था। जयदार एक बार बोर्डिंग-स्कूल में अपने बेटे से मिलने गयी, पर वह वहाँ ज्यादा देर नहीं रुकी, क्योंकि जानती थी कि उसके बिना उधर बड़ी मुश्किल हो रही होगी। तानाबाय को तब अपनी बेटियों को साथ लिये भेड़ें चराना पड़ता था। छोटी बेटी को वह काठी पर अपनी पोस्तीन से ढककर बिठा लेता था। वह गर्म और शान्त रहती थी, पर बड़ी बेटी घोड़े पर अपने पिता के पीछे बैठे रहने के कारण ठण्ड से ठिठुर जाती थी। उस समय चूल्हे की आग से भी बिलकुल राहत नहीं मिलती थी।

और जब अगले दिन मां लौट आयी, तो देखने लायक़ दृश्य था! बेटियां भागकर मां से चिमट गयीं, उन्हें अलग करना मुश्किल हो गया। बच्चों के लिए बाप तो बेशक बाप ही रहता है, लेकिन मां की जगह वह नहीं ले सकता।

इस तरह दिन बीतते रहे। मौसम बीच-बीच में बदलता रहा। कभी तेज़ सर्दी पड़ती कभी कम हो जाती। दो बार हिम-झंझावात आये, शान्त हो गये और फिर बर्फ़ पिघलने लगी। तानाबाय इसी कारण से चिन्तित हो उठा। अगर भेड़ें गर्म मौसम के दौरान ब्याईं, तब तो ठीक है, लेकिन ऐसा न हो तब?

इस बीच भेड़ों के पेट निरन्तर नीचे लटकते जा रहे थे। जिन भेड़ों के पेटों में बड़े बच्चे थे या जिनके जुड़वां बच्चे होनेवाले थे उनके पेट थलथलाने लगे थे। गाभिन भेड़ें धीरे-धीरे, संभलकर क़दम रख रही थीं और बहुत दुबली हो गयी थीं। उनकी रीढ़ की हड्डियाँ निकल आयी थीं। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी—उनके गर्भ में मेमने मां के शरीर

से पोषण पाकर बड़े हो रहे थे और ऐसी हालत में उन्हें बर्फ़ के नीचे से घास की एक-एक पत्ती खोजनी पड़ रही थी। चरवाहों को गाभिन भेड़ों के लिए अतिरिक्त चारा लाकर उन्हें सुबह और शाम देना चाहिए था, लेकिन सामूहिक फ़ार्म के कोठारों में अनाज के बीज और लद्दू घोड़ों के लिए जई को छोड़कर कुछ नहीं था।

तानाबाय रोज़ सुबह गाभिन भेड़ों को बाड़े से निकालते समय उनके पेट और थन छूकर देख लेता था। वह यही अन्दाज़ लगाता रहता था कि अगर सब ठीक रहा, तो वह मेमने देने का अपना वादा पूरा कर लेगा, लेकिन शायद ऊन देने का वादा पूरा न कर सकेगा। जाड़े में ऊन कम बढ़ता था, यहाँ तक कि कुछ भेड़ों के बाल कम होने लगे थे, झड़ने लगे थे और इसका कारण वही था – उन्हें अच्छी ख़ुराक नहीं मिल रही थी। तानाबाय उदास हो उठता, खीजने लगता, पर कर कुछ नहीं पाता। वह चोरो की बात मान लेने के लिए अपने आप को ही कोसने लगता। उसने मंच पर चढ़कर ढेरों वादे किये थे। मैं ऐसा हूँ, वैसा हूँ, अग्रणी चरवाहा हूँ, अपनी पार्टी और मातृभूमि को वचन देता हूँ। कम-से-कम ऐसा तो नहीं कहता! फिर पार्टी और मातृभूमि को इससे क्या वास्ता? यह तो एक मामूली आर्थिक मामला था। लेकिन नहीं... ऐसा करना एक नियम बन गया है। हम लोग आख़िर हर क़दम पर, चाहे ज़रूरी हो या नहीं, इन शब्दों का प्रयोग क्यों करते हैं?...

फिर भी यह उसी की अपनी ग़लती है। तब ठीक से नहीं सोचा। दूसरों के कहे अनुसार जीने लगा। उनका तो कुछ भी नहीं बिगड़ेगा, कोई बहाना बना देंगे, बस चोरो पर दया आती है। उसकी तक़दीर उसका साथ नहीं देती। एक दिन ठीक रहता है, तो दो दिन बीमार। वह सारी ज़िन्दगी दौड़-धूप करता रहा है, लोगों को मनाता रहा है, उन्हें आशाएँ दिलाता रहा है, लेकिन इससे क्या फ़ायदा मिला? अब बड़ा चौकन्ना रहने लगा है, नपी-तुली बातें करता है। जब बीमार ही रहता है, तो फिर पेंशन पर क्यों नहीं चला जाता?...

इस बीच सर्दी का मौसम अपनी रफ़्तार से बीतता रहा। कभी चरवाहों को उससे कुछ आशा होती, कभी चिन्ता। तानाबाय के रेवड़ की दो गाभिन भेड़ें भूख से कमज़ोर होकर मर गयीं। उसके शागिर्द युवा चरवाहों के रेवड़ों में भी कई भेड़ें मर गयीं। ऐसा हुए बिना नहीं रह सकता था।

सर्दी के मौसम में दस-एक भेड़ों का मरना साधारण बात थी। सबसे बड़ी समस्या तो वसन्त की पूर्ववेला में सामने आ खड़ी होनेवाली थी।

एकाएक मौसम गर्म होने लगा। भेड़ों के थनों में तुरन्त दूध बनना शुरू हो गया। देखने में तो वे सूखकर कांटा हो गयी लगती थीं, अपने पेटों का वज़न ही मुश्किल से ढो पा रही थीं, लेकिन उनके थन गुलाबी होकर दिन दूने, रात चौगुने फूलते जा रहे थे। आख़िर ऐसा क्यों हो रहा था? उनमें इतनी शक्ति कहाँ से आ रही थी? उसी समय ख़बर फैली कि किसी के रेवड़ में कुछ भेड़ों के बच्चे हुए हैं। यानी उनके जोड़ा खाने के समय लापरवाही बरती गयी थी। यह ख़तरे की पहली घंटी थी। एक दो हफ़्ते में मेमने पेड़ों से नाशपातियों की तरह टपकनेवाले थे। चरवाहे की परीक्षा की घड़ी आनेवाली थी! तब वह हर मेमने की चिन्ता करते हुए उस दिन को कोसेगा, जब वह भेड़ें चराने लगा और अगर सारे मेमने ज़िन्दा रह गये और अपने पैरों पर खड़े होकर जाड़े को अपनी पूंछें हिला-हिलाकर दिखाने लगे, तो उसकी ख़ुशी का पारावार नहीं रहेगा।

लेकिन पहले ऐसा हो तो जाये, तब न! तब उसे लोगों से आँखें चुराने की ज़रूरत नहीं रहेगी...

सामूहिक फ़ार्म से उनका हाथ बंटाने के लिए कुछ औरतें भेजी गयीं। ये अधिकतर बूढ़ी और बिना बच्चोंवाली औरतें थीं, जिन्हें भेड़ों के ब्याने के समय मदद करने के लिए किसी तरह मना लिया गया। तानाबाय की मदद के लिए भेजी गयी दोनों औरतें बोरिया-बिस्तर, कनवास का तम्बू साथ लेकर आयी थीं। अब यहाँ का वातावरण ज़्यादा आनन्दमय हो गया। वैसे गाभिन भेड़ों की संभाल के लिए कम-से-कम ऐसे सात आदमी चाहिए थे। इब्राइम ने उसे भरोसा दिलाया था कि जब रेवड़ पांच पेड़ोंवाली घाटी में भेड़ों के ब्याने के लिए रखे गये शेड में पहुंचेंगे, तब शेष सहायक भी आ जायेंगे, और अभी तो इन्हीं से काम चल जायेगा।

भेड़ों के रेवड़ धीरे-धीरे तराई में भेड़ों के ब्याने के लिए तैयार किये गये शेडों की ओर उतरने लगे। तानाबाय ने एशिम बालातबेकोव को उन औरतों को सामान के साथ शेड तक पहुंचाने और जमने में मदद देने के लिए कहा। उसने उन्हें सुबह ही सामान के पूरे क़ाफ़िले के साथ रवाना कर दिया और ख़ुद भेड़ों को इकट्ठा करके धीरे-धीरे नीचे हांकने लगा, जिससे कि गाभिन भेड़ों को मुश्किल न हो। इसके बाद उसे अपने शागिर्दों

की मदद करने के लिए पाँच पेड़ोंवाली घाटी का दो बार चक्कर और लगाना था।

भेड़ें धीरे-धीरे चल रही थीं, मगर उन्हें तेज़ी से नहीं हांका जा सकता था। तानाबाय का कुत्ता भी इससे उकताकर इधर-उधर दौड़ लगाने लगा।

सूरज अस्त होने को था, पर अभी धूप में गर्मी थी। और रेवड़ ज्यों ज्यों नीचे उतर रहा था, त्यों-त्यों गर्मी बढ़ती जा रही थी। जहाँ धूप पड़ रही थी, वहाँ घास उगनी शुरू हो गयी थी।

पहली भेड़ ने रास्ते में बच्चा दिया, तो उन्हें कुछ देर रुकना पड़ा। तानाबाय नवजात मेमने के कान और नथुने फूंक मारकर साफ़ करते हुए चिन्तित हो उठा। ऐसा नहीं होना चाहिए था। भेड़ों के ब्याने का समय शुरू होने में अभी कम-से-कम एक हफ़्ता बाक़ी था। लेकिन पहला मेमना अभी से आ पहुंचा था!

अगर सारी भेड़ें रास्ते में ही ब्याने लगीं, तो? उसने दूसरी भेड़ों को देखा। नहीं, ऐसा लगता तो नहीं है। उसका चित्त शान्त हुआ और कुछ हौसला भी बढ़ा। उसकी बेटियाँ मेमने को देखकर ख़ुश होंगी। पहला बच्चा हमेशा बड़ा प्यारा लगता है। मेमना था भी काफ़ी अच्छा – बिलकुल सफ़ेद रंग, काली भौहें और नन्हे-नन्हे काले खुर। उसके रेवड़ में कुछ मोटे ऊनवाली भेड़ें थीं। यह बच्चा उन्हीं में से एक का था। उनके मेमने अकसर तन्दुरुस्त और झबरे पैदा होते हैं, जब कि बारीक ऊनवाली भेड़ों के लगभग बिना रोयों के पैदा होते हैं।

"ख़ैर, चल तुझे जब इतनी जल्दी पड़ी थी, तो ले अब इस दुनिया को देख ले," तानाबाय उसे पुचकारते हुए बोला। "और हमारी क़िस्मत भी खोल दे! अपने जैसे और बहुत-से ला, इतने सारे कि हमारे लिए पैर रखने की जगह भी न बचे, हमारे कानों में उन्हीं की आवाज़ें गूंजती रहें और सारे के सारे ज़िन्दा रहें!" उसने मेमने को अपने सिर के ऊपर उठा लिया, "ऐ, भेड़ों के रखवाले, यह रहा तेरा पहला मेमना, हमारी मदद कर!"

चारों ओर खड़े पहाड़ मौन रहे।

तानाबाय ने मेमने को अपनी पोस्तीन में छिपा लिया और भेड़ों को हांकता आगे बढ़ने लगा। मेमने की मां उसके पीछे-पीछे मिमियाती भागने लगी।

"चल, चल!" तानाबाय ने उससे कहा। "घबरा मत, तेरा बच्चा कहीं भागा नहीं जा रहा।"

मेमने का बदन पोस्तीन में सूख गया और उस में कुछ गर्मी आ गयी।

तानाबाय शाम होते होते अपने रेवड़ के साथ शेड के पास पहुँच गया।

सब डेरा जमा चुके थे, बड़े तम्बू में से धुआं उठ रहा था। मददगार औरतें कनवास के तम्बू के बाहर कुछ खटर-पटर कर रही थीं। यानी अपने नये डेरे पर ठीक-ठाक पहुँच गयी थीं। एशिम नज़र नहीं आ रहा था। हां, वह अगले दिन अपना सामान ढोने के लिए ऊंट लेकर गया है। सब ठीक-ठाक था।

लेकिन तानाबाय ने इसके बाद जो देखा, तो सन्न रह गया। उसे लगा जैसे बिना मेघ के वज्रपात हुआ हो। उसे बहुत ज्यादा की आशा नहीं थी, लेकिन वह कल्पना तक नहीं कर सकता था कि मेमनों के शेड की सिरकियों से बनी छत गलकर ढह गयी होगी, दीवारों में छेद होंगे, न खिड़कियाँ होंगी, न किवाड़, उनमें से हवा सांय-सांय करती बह रही होगी। बाहर बर्फ़ नाम मात्र की रह गयी थी, पर शेड में उसके ढेर लगे थे।

किसी ज़माने में पत्थरों से बना भेड़ों का बाड़ा भी खंडहर हो गया था। तानाबाय इतना हताश हो गया कि उसने नये मेमने को देखकर ख़ुश होती अपनी बेटियों की ओर ध्यान भी नहीं दिया। उसने मेमना उन्हें पकड़ा दिया और सारी जगह देखने चल पड़ा। उसने जहाँ भी नज़र डाली, वहाँ इतनी बदइन्तज़ामी पायी जितनी कि उसने अपनी ज़िन्दगी में कहीं नहीं देखी थी। शायद युद्ध के समय से ही यहाँ सब ऐसे ही छोड़ दिया गया था। हर साल चरवाहे भेड़ों के ब्याने के मौसम में किसी न किसी तरह अपना काम चलाकर इस जगह को हवाओं और बारिश की दया पर छोड़कर जाते रहे होंगे। शेड की छत पर सड़ी सूखी घास का तिरछा ढेर लगा था और कुछ पूलियाँ पुआल की पड़ी थीं। एक कोने में पड़ी दो आधी भरी जौ के आटे की बोरियों और एक बक्स में भरे नमक को छोड़कर रेवड़ की सारी भेड़ों और मेमनों के लिए यही चारा था और यही बिछौना था। उसी कोने में कई टूटी लालटेनें, एक ज़ंग लगा हुआ मिट्टी के तेल का पीपा, दो बेलचे और एक टूटा हुआ कांटा पड़े थे। तानाबाय के मन में आया कि उन पर मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगा दे और वहाँ से जहाँ दिल करे, चला जाये...

तानाबाय पिछले वर्ष की जमी हुई मेंगनी के और बर्फ़ के ढेरों से ठोकरें खाता घूम रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे। कहने को कुछ सूझ ही नहीं रहा था। वह बस पागलों की तरह यही दुहरा रहा था, "भला ऐसा कोई कर सकता है? . . भला ऐसा कोई कर सकता है? . . भला ऐसा कोई कर सकता है? . .

फिर वह भागकर बाहर निकला और जल्दी जल्दी घोड़े पर ज़ीन कसने लगा। ज़ीन कसते समय उसके हाथ कांप रहे थे। वह फ़ौरन वहाँ पहुंचकर सबको आधी रात में जगा देगा और न जाने क्या कर डालेगा! वह इब्राइम, अध्यक्ष अल्दानोव और चोरो—सबकी गर्दन नापेगा, वह किसी पर रहम नहीं करेगा! जब उन्होंने ही उसके साथ ऐसा किया है, तो वह भी ईंट का जवाब पत्थर से देगा! बस, बहुत हो चुका! . .

"ठहरो ज़रा!" जयदार ने घोड़े की लगाम पकड़ ली। "तुम कहाँ जा रहे हो? ख़बरदार जो गये! नीचे उतरकर मेरी बात सुनो!"

भला वह उसकी बात मान सकता था! ऐसे में कोई तानाबाय को रोककर तो देखे!

"छोड़ दो मुझे! छोड़ दो!" वह लगाम छुड़ाते हुए और घोड़े पर चाबुक बरसाते हुए उसे अपनी पत्नी की तरफ़ बढ़ाने लगा। "छोड़ दो, मैं कह रहा हूँ! मैं उनकी जान ले लूंगा! उनका ख़ून कर दूंगा!"

"नहीं जाने दूंगी। तुम्हें किसी की जान ही लेनी है न? तो, लो मुझे मार डालो।"

उसी समय दोनों औरतें जयदार की मदद को भागी भागी वहाँ आ पहुंचीं। दोनों बेटियाँ भी दौड़ी आयीं और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं:

"नहीं, अब्बा, नहीं! नहीं!"

तानाबाय शान्त हो गया, पर फिर भी उनसे पीछा छुड़ाकर भागने की कोशिश करता रहा।

"मत रोको मुझे, क्या तुम देख नहीं रही हो कि यहाँ क्या हो रहा है? क्या तुम्हें गाभिन भेड़ें दिखाई नहीं देतीं? कल हम इन्हें कहां रखेंगे? छत कहां है? चारा कहां है? सारी मर जायेंगी। तब कौन जवाब देगा? छोड़ दो!"

"ज़रा ठहरो तो सही। चलो, माना, तुम वहां पहुंचकर उन पर चिल्लाओगे, उनसे झगड़ोगे। लेकिन उससे फ़ायदा क्या होगा? अगर

उन्होंने अभी तक कुछ नहीं किया, तो इसका मतलब है कि वे कुछ कर ही नहीं सकते। अगर सामूहिक फ़ार्म में लकड़ी ही होती, तो क्या वे लोग नयी शेड नहीं बना सकते थे?"

"लेकिन कम-से-कम छत तो ठीक कर सकते थे न? फिर किवाड़ कहां हैं? खिड़कियाँ कहाँ हैं? सब कुछ टूटा हुआ है, शेड में बर्फ़ के ढेर लगे हैं, मेंगनी दस साल से यहाँ पड़ी है! फिर यह गली हुई सूखी घास कितने दिन चलेगी? क्या मेमनों को ऐसा चारा खिलाया जाता है? उनके नीचे बिछाने के लिए पुआल कहाँ से लायेंगे? मेमनों को गन्दगी में मरने दूं, क्यों? यही चाहती हो क्या? हट जाओ!"

"बहुत हो गया, तानाबाय, गुस्सा थूक दो। तुम में क्या सुरख़ाब के पर लगे हैं? हम भी औरों की तरह काम चला लेंगे। फिर तुम तो मर्द हो!" पत्नी ने उसे शर्मिन्दा किया। "यह सोचने की कोशिश करो कि हम लोग वक़्त रहते क्या कर सकते हैं। उन्हें भाड़ में जाने दो। हमें जवाब देना है, तो हम ही यह सब करेंगे। मैंने तंग घाटी की तरफ़ जाते हुए जंगली गुलाब की झाड़ियां देखी थीं। वह घनी और कंटीली है, हम उससे छत ढककर मेंगनी से लीप देंगे। मेमनों के नीचे बिछाने के लिए खर-पतवार काट लेंगे। अगर मौसम ने धोखा नहीं दिया, तो किसी तरह काम चला लेंगे।"

वहीं खड़ी दोनों मददगार औरतों ने भी तानाबाय को मनाया। आख़िर वह धीरे-धीरे घोड़े से उतरा और तम्बू में चला गया। भीतर वह सिर झुकाये बैठा रहा, मानो लम्बी बीमारी के बाद उठा हो।

सब चुप हो गये। किसी की बोलने की हिम्मत नहीं हुई। जयदार ने चूल्हे पर से उबलते हुए पानी की केतली उठाकर तेज़ चाय बनायी और अपने पति के हाथ धुलाने के लिए ठण्डा पानी लायी। फिर उसने साफ़ दस्तरख़ान बिछाया और कहीं से मिठाई ढूंढ़ निकाली, एक तश्तरी में घी के पीले-पीले लोंदे रख दिये। उन दोनों औरतों को भी बुलाया गया और सब चाय पीने बैठ गये। वाह री औरतो! वे बड़े आराम से बैठकर गपशप करती चाय पीने लगीं, मानो किसी के घर में मेहमान बनकर आयी हों। तानाबाय चुप रहा, चाय पीकर उठा और बाहर निकलकर बाड़े के बिखरे हुए पत्थर जमाने लगा। ढेरों काम करने थे। मगर भेड़ों को रात में रखने के लिए कुछ न कुछ करना ही था। औरतें भी बाहर

निकलकर पत्थर जमाने लगी। यहाँ तक कि उस की बेटियाँ भी पत्थर उठाने लाने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रही थीं।

"चलो, घर भागो," पिता ने उनसे कहा।

उसे शर्म महसूस हो रही थी। वह बिना नज़रें उठाये पत्थर जमा रहा था। चोरों ने ठीक ही कहा था: जयदार न होती, तो तानाबाय ने कभी का अपना सिर कटवा लिया होता...

सोलह

तानाबाय अगले दिन दोनों युवा चरवाहों की मदद करने गया और फिर पूरे एक हफ़्ते तक लगातार काम में जुटा रहा। उसे याद नहीं आ रहा था कि उसने कभी मोर्चे को छोड़कर कहीं इस तरह काम किया था, जब उन्हें रात-दिन खाइयां खोदनी पड़ती थीं। लेकिन तब तो सारी रेजिमेंट, सारा डिवीजन और सेना मोर्चेबन्दी में लगी थी। और यहाँ तो सिर्फ़ वह खुद है, उसकी पत्नी है और एक मददगार औरत है। दूसरी औरत पास ही में भेड़ें चरा रही थी।

शेड से मेंगनियां निकालना और जंगली गुलाब की झाड़ी को काटना सब से मुश्किल काम साबित हो रहे थे। झाड़ी बहुत घनी थी और उसमें कांटे ही कांटे थे। तानाबाय के जूते बिलकुल फट गये, उसका फ़ौजी ओवरकोट चिथड़े हो गया। वे जंगली गुलाब की झाड़ी काटकर उसे रस्सी से बांधते और घसीटकर ले जाते, क्योंकि कंटीली होने के कारण उसे न घोड़े पर लादा जा सकता था, न अपनी पीठ पर। तानाबाय मन-ही-मन कोसता रहा—नाम तो पाँच पेड़ोंवाली घाटी है, मगर वहाँ पांच ठूंठ भी ढूंढ़े नहीं मिलते। वे पसीने में नहाये, कमर झुकाये उस मनहूस झाड़ी को घसीट रहे थे। उससे बाड़े तक का रास्ता जुत गया। तानाबाय को औरतों पर बड़ी दया आयी, पर वह कर ही क्या सकता था। उन्हें यह काम जल्दी निबटाना था। समय बहुत कम था, आसमान पर भी नज़र रखनी थी कि कहीं मौसम बिगड़ने तो नहीं लगा है। अगर बर्फ़ गिरने लगी, तो यह सब बेकार होगा। वह अपनी बड़ी बेटी को यह देखने के लिए दौड़ाता रहा कि कहीं भेड़ों का ब्याना शुरू तो नहीं हो गया है।

मेंगनियाँ साफ़ करने का काम और भी मुश्किल था। वहाँ उनका इतना ढेर लगा था कि छः महीने में भी साफ़ नहीं किया जा सकता था। जब कूटी हुई सूखी मेंगनियां किसी अच्छी-सी छत के नीचे रखी होती हैं, तो उसे साफ़ करने में कुछ आनन्द भी आता है। उसकी मोटी-मोटी तहें बेलचे से आसानी से निकाली जा सकती हैं। उन्हें सुखाने के लिए बाहर ढेर लगा दिया जाता है। जलती हुई मेंगनियों की आग भी सोने-सी साफ़ और आनन्ददायक होती है। सर्दी की रातों में चरवाहे उससे आग तापते हैं। लेकिन अगर मेंगनियां बारिश या बर्फ़ में पड़ी रहें, जैसे कि वहाँ पड़ी थीं, तो उसको निकालने से बुरा और मुश्किल काम कोई नहीं हो सकता। ऐसे काम से कमर टूटने लगती है। समय बीतता जा रहा था। वे रात में धुआं छोड़ती लालटेनों की रोशनी में सीसे-सी भारी, ठण्डी और चिपचिपी गन्दगी डांड़ियों में डालकर बाहर फेंक रहे थे। आज यह काम करते हुए दूसरा दिन था।

अहाते में मेंगनियों का बहुत बड़ा ढेर लग गया था, पर शेड में उस का अन्त ही दिखाई नहीं पड़ रहा था। वे पैदा होनेवाले मेमनों के लिए कम-से-कम एक कोना साफ़ करने की जल्दी में थे। जब सारी भेड़ों के लिए यह इतना बड़ा शेड ही छोटा पड़ रहा था, तो फिर एक कोना तो होता ही क्या है। एक दिन में औसतन बीस-तीस मेमने होने की सम्भावना थी। "अब क्या होगा?" तानाबाय के दिमाग में डांड़ी में मेंगनी डालकर बाहर फेंकने जाते, फिर वापस आकर आधी रात तक, दिन निकलने तक लगातार यही काम करते हुए बस यही सवाल बार-बार घूम रहा था। उसे मतली हो रही थी। उसके हाथ सुन्न हो गये। इसके अलावा हवा से लालटेनें बार-बार बुझ रही थीं। लेकिन औरतें किसी तरह की शिकायत नहीं कर रही थीं और तानाबाय व जयदार की तरह लगातार काम में जुटी हुई थीं।

एक दिन बीता, उसके बाद दूसरा और फिर तीसरा। वे लगातार मेंगनियां बाहर फेंक रहे थे, शेड की दीवारों और छत के छेद बन्द कर रहे थे। एक बार रात में जब तानाबाय मेंगनियों से भरी डांड़ी लेकर शेड से बाहर निकल रहा था, तो उसे बाड़े में एक मेमने के मिमियाने की और जवाब में उसकी मां के खुर पटकते हुए मिमियाने की आवाज़ें सुनाई दीं। "शुरू हो गया!" उसका दिल धक्-से रह गया।

"तुमने सुना ?" तानाबाय ने मुड़कर पत्नी से पूछा।

वे मेंगनियों से भरी डांड़ी वहीं पटककर लालटेनें उठाकर बाड़े की तरफ़ भागे।

कहाँ है वह? वह रहा कोने में! मां नवजात मेमने का नन्हा-सा, कांपता हुआ बदन चाट रही थी। जयदार ने मेमने को उठाकर अपने चोगे के पल्ले में छिपा लिया। यह अच्छा हुआ कि वे लोग समय पर पहुंच गये, नहीं तो वह बाड़े में ठण्ड से मर जाता। पास ही में एक और भेड़ ब्याई थी। उसके दो बच्चे हुए थे। उन्हें तानाबाय ने अपनी बरसाती में छिपा लिया। कोई पांच अन्य भेड़ों को प्रसव-पीड़ा हो रही थी और वे बुरी तरह मिमिया रही थीं। यानी भेड़ों का ब्याना शुरू हो गया था। सुबह तक वे भी बच्चे दे देंगी। उन्होंने मददगार औरतों को बुला लिया। वे बच्चेवाली भेड़ों को बाड़े में से निकालकर शेड के उस कोने में ले जाने लगीं, जो उनके लिए क़रीब-क़रीब साफ़ कर लिया गया था।

अपनी मांओं की खीस का स्वाद चख चुके मेमने को तानाबाय ने दीवार के सहारे पुआल फैलाकर उस पर रख दिया और उन्हें बोरी से ढक दिया। काफ़ी ठण्ड थी। वह उनकी मांओं को भी वहाँ ले आया। फिर होंठ चबाता हुआ कुछ सोचने लगा। लेकिन अब सोचने का फ़ायदा ही क्या था? अब तो केवल यही आशा रह गयी थी कि शायद किसी न किसी तरह काम चल ही जायेगा। कितने काम और कितनी चिन्ताएँ बाक़ी थीं... कम-से-कम सूखी घास ही प्रचुर मात्रा में होती, पर वह भी नहीं थी। इब्राइम ने इसका भी कोई उचित बहाना सोच रखा होगा। वह यही जवाब देगा, "ज़रा ऊबड़-खाबड़ कच्चे रास्ते से पहाड़ों में चारा लाकर तो देखो।"

ख़ैर, जो होना है, सो होगा! वह तम्बू में से स्याही का डिब्बा निकाल लाया। उससे उसने एक मेमने पर दो नम्बर लिख दिया और जुड़वां मेमनों पर—तीन, तीन। वही नम्बर उसने उनकी मांओं पर लिखे। क्योंकि बाद में जब वे सैकड़ों की संख्या में झुण्ड में चक्कर लगायेंगे, तो उनकी पहचान करना मुश्किल हो जायेगा। चरवाहे की परीक्षा की घड़ी अब ज़्यादा दूर नहीं थी!

वह घड़ी एकाएक बड़ी निष्ठुरता से आ पहुँची, वैसे ही जैसे युद्ध में सैनिक के पास अपनी रक्षा के लिए कुछ न हो और टैंक चढ़े आ रहे हों। वह अपनी खन्दक में खड़ा रहता है, कहीं नहीं जा सकता, क्योंकि पीछे हटने का रास्ता नहीं होता। दो में से एक ही बात हो सकती है—या तो वह मुठभेड़ में किसी चमत्कार से जीत जाये, या मर जाये।

तानाबाय सुबह भेड़ों को चरागाह में ले जाये जाने से पहले एक टेकरी पर मौन खड़ा चारों ओर देख रहा था, मानो अपने मोर्चे का जायज़ा ले रहा हो। उसकी मोर्चाबंदी कमज़ोर और किसी काम की नहीं थी। लेकिन उसे मोर्चे पर डटे रहना था। पीछे हटने का रास्ता कट चुका था। छिछली नदीवाली छोटी-सी बल खाती घाटी दो पहाड़ियों के बीच में थी। उनके पीछे कुछ और ऊँची पहाड़ियाँ थीं और उसके बाद हिमाच्छादित और अधिक ऊँचे पहाड़ शुरू हो जाते थे। सफ़ेद ढलानों के ऊपर नंगी चट्टानें धुंधली दिखाई दे रही थीं। और वहाँ बर्फ़ से जकड़ी चोटियों पर शीत-ऋतु निवास करती थी। वह पलक झपकते यहाँ पहुँच सकती थी। उसके हाथ के इशारे से बादल नीचे गिराने की देर थी कि सारी घाटी कोहरे में छिप जाती और ढूंढ़े नहीं मिलती।

आकाश में बादल छाये थे, शीतल धुंधलका फैला था। हवा नीचे चल रही थी। चारों ओर सुनसान था। हर तरफ़ से पहाड़ घेरे खड़े थे। चिन्ता के कारण दिल डूबा जा रहा था। टूटे-फूटे शेड में नवजात मेमने मिमिया रहे थे। उसने अभी-अभी रेवड़ में से दस और भेड़ों को अलग किया था, जो शीघ्र ही ब्यानेवाली थीं।

रेवड़ धीरे-धीरे रूखे-सूखे चारे की तलाश में चल पड़ा। चरागाह में भी हर क्षण ध्यान रखना ज़रूरी था। क्योंकि कभी-कभी ऐसा भी होता है कि भेड़ में ब्याने के कोई लक्षण नहीं दिखाई देते, लेकिन वह एकाएक किसी झाड़ी के पास रुककर बच्चा दे देती है। अगर कोई ध्यान न दे, तो मेमना ठण्ड से ठिठुर जाता है और फिर ज़्यादा दिन जिन्दा नहीं रहता।

तानाबाय टेकरी पर बहुत देर से खड़ा था। किसी निष्कर्ष पर पहुंचे बिना वह शेड की ओर चल दिया। वहाँ अभी ढेरों काम करने थे और समय रहते कुछ न कुछ तैयारी तो करनी ही थी।

कुछ समय बाद इब्राइम, बेशर्म कहीं का, कुछ आटा लेकर आया... कहने लगा, "मैं तुम्हारे लिए महल कहाँ से लाऊँ? सामूहिक फ़ार्म के

पास जैसे शेड थे, वैसे तुम्हें दे दिये। और हैं ही नहीं। अभी कम्युनिज़्म नहीं आया है।"

तानाबाय के मन में आया कि उसके घूंसे मारे, पर उसने बड़ी मुश्किल से अपने आप पर नियंत्रण किया।

"बेवक़्त का मज़ाक़ किस काम का? मैं काम की बात कर रहा हूँ, काम की चिन्ता कर रहा हूँ। जवाब तो मुझे ही देना पड़ेगा।"

"तुम क्या सोचते हो, मुझे इसकी फ़िक्र नहीं है? तुम तो सिर्फ़ एक रेवड़ के लिए ज़िम्मेदार हो और मैं सबके लिए, तुम्हारे लिए, दूसरों के लिए, सारे पशु पालन के लिए ज़िम्मेदार हूँ। तुम सोचते हो, यह आसान काम है!" और वह चालबाज़ जब एकाएक रो पड़ा, तो तानाबाय विस्मित रह गया। वह हथेलियों में मुंह छिपाये रो-रोकर बुदबुदाने लगा, "मुझ पर मुक़दमा चलेगा! मुझे जेल में बन्द कर दिया जायेगा! कोई भी चीज़ ढूंढ़े नहीं मिलती। लोग कुछ दिन के लिए भेड़ों के ब्याने के समय भी चरवाहों की मदद करने आने तैयार नहीं होते। मुझे मार डालो, टुकड़े-टुकड़े कर डालो, लेकिन मैं और कुछ नहीं कर सकता। मुझ से और कोई उम्मीद मत रखो। मैं ने बेकार ही यह ज़िम्मेदारी अपने सिर पर ली!.."

वह भोले भाले तानाबाय को परेशानी की हालत में छोड़कर वैसे ही चला गया। फिर वह कभी वहाँ नज़र नहीं आया।

पहली सौ भेड़ें ब्या चुकी थीं। घाटी में वहाँ से कुछ दूरी पर चर रही एशिम और बेकताय की भेड़ों ने ब्याना अभी शुरू नहीं किया था, पर तानाबाय महसूस कर रहा था कि उन पर कितनी भारी विपदा आने वाली है। बूढ़ी मददगार औरत को छोड़कर जो अब सिर्फ़ भेड़ें चराने का ही काम कर रही थी, वे तीनों बड़े आदमी और तानाबाय की छः साल की बेटी सब मिलकर भी मेमनों को उठाने, उनका बदन सुखाने, उन्हें उनकी मांओं के पास छोड़ने, जो मिल पाता उससे उन्हें गर्म रखने, मेंगनियाँ बाहर फेंकने, उनके लिए पुआल बिछाने के काम बड़ी मुश्किल से पूरे कर पा रहे थे। भूखे मेमनों के मिमियाने की आवाज़ें सुनाई पड़ने लगी थीं। उन्हें दूध कम पड़ रहा था, उनकी मांएं सूखकर कांटा हो रही थीं और उन्हें खिलाने के लिए कुछ नहीं था। आगे न जाने क्या होगा?

एक के बाद एक चरवाहों के दिन और रात तेज़ी से बीतने लगे। मेमने लगातार जन्मे जा रहे थे। उन लोगों को न दम लेने की फ़ुरसत मिल रही थी न कमर सीधी करने की।

कल मौसम ने उन्हें कितना डरा दिया था! अचानक तेज़ ठण्ड पड़ने लगी, बादलों से आकाश ढक गया, हिम के ठोस कण गिरने लगे। हर चीज़ धुंध में लिपटी थी, अंधेरा छा गया था...

लेकिन कुछ समय बाद बादल छंट गये और मौसम गर्म होने लगा। हवा में वसन्त और नमी की गन्ध तैरने लगी। "ख़ुदा करे, वसन्त आ जाये। बस अब मौसम ऐसा ही बना रहे, नहीं तो तेज़ी से बदलते मौसम से बुरी चीज़ कोई नहीं होती," तानाबाय कांटे से मेमनों के नाल पुआल वगैरह सहित उठाकर बाहर फेंकते हुए सोच रहा था।

वसन्त आया, किन्तु वह वैसा नहीं था, जैसे की तानाबाय आशा कर रहा था। वह अचानक एक रात को वर्षा, कोहरे और हिम के साथ आ धमका। उसने अपनी सारी ठण्ड और नमी शेड, तम्बू, बाड़े और चारों ओर की हर चीज़ पर लुटा दी। जमी हुई कीचड़दार ज़मीन में नाले बहने लगे, डबरे बन गये। पानी गली हुई छत में से और दीवारों के सहारे चूकर शेड में भरने लगा, भेड़ और मेमने सर्दी के मारे थरथर कांपने लगे। मेमने पानी में एक दूसरे से सटकर खड़े हो गये, भेड़ें खड़े-खड़े बच्चे देने लगीं। वसन्त बर्फ़ीले पानी से नवजात मेमने को उनके जीवन का पहला स्नान कराने लगा।

बरसातियाँ पहने और लालटेनें लिये आदमी दौड़-धूप करने लगे। तानाबाय ने भगदड़ मचा दी। उसके बूट शिकारियों से घिरे दो जानवरों की तरह पानी और गन्दगी में छपछप करते अंधेरे में इधर-उधर भाग रहे थे। औरों पर और स्वयं पर चिल्लाते चिल्लाते उसका गला बैठ गया,

"जल्दी से सब्बल लाओ! बेलचा पकड़ाओ! मेंगनियों का ढेर यहाँ लगाओ! पानी को रोक लगाओ!"

शेड में बहकर आनेवाले पानी की धाराओं को कम-से-कम दूसरी दिशा में मोड़ना ज़रूरी था। वह जमी हुई ज़मीन को खोदकर नालियाँ बनाने लगा। "रोशनी दिखाओ! अरे, यहाँ दिखाओ! खड़ी क्या देख रही हो!"

रात कोहरे में लिपटी थी। वर्षा के साथ हिमपात हो रहा था। उसे किसी तरह रोका नहीं जा सकता था।

तानावाय भागा भागा तम्बू में पहुँचा। उसने चिराग जलाया। वहाँ भी हर तरफ़ से पानी चू रहा था। लेकिन इतना नहीं, जितना कि शेड में। उसकी बेटियाँ सो रही थीं और उनका कम्बल भीग रहा था। तानावाय ने उन्हें बिस्तर समेत उठा लिया और तम्बू में ज़्यादा से ज़्यादा जगह ख़ाली छोड़कर एक कोने में लिटा दिया। कम्बल न भीगे इसलिए उसने उसके ऊपर नमदा डाल दिया और बाहर भागकर शेड में औरतों को आवाज़ दी,

"मेमनों को तम्बू में ले आओ!" और ख़ुद भी उधर भागा।

लेकिन तम्बू में कितने मेमने रखे जा सकते थे? कुछ दर्जन भर, उससे ज़्यादा नहीं। फिर बाक़ी मेमनों को कहाँ रखें? काश वे जितनों को बचा पाते उतनों को ही बचा लेते!...

दिन निकलने भी लगा था। लेकिन वर्षा थी कि थमने का नाम ही नहीं ले रही थी। कुछ देर के लिए धीमी पड़ जाती और फिर बौछार होने लगती। कभी बारिश होती, कभी बर्फ़ गिरने लगती...

तम्बू मेमनों से खचाखच भर गया था। वे लगातार मिमिया रहे थे। बदबू के मारे नाक में दम था। उन्होंने सारा सामान एक कोने में रखकर उसके ऊपर कनवास डाल दिया और ख़ुद मददगार औरतों के कनवास के तम्बू में चले गये। बच्चे ठिठुर रहे थे, रो रहे थे।

चरवाहे के दुर्दिन आ गये थे। वह अपने आप को, सब को, दुनिया की हर चीज़ को कोस रहा था। अपनी बची-खुची ताक़त से सिर से पैर तक भीगी भेड़ों और ठिठुर रहे मेमनों की संभाल करते हुए उसे न खाने की फ़ुरसत थी, न सोने की। ठण्डे शेड में सब के सब मौत के घाट उतरते जा रहे थे। मौत को यहाँ किसी से पूछने की जरूरत नहीं थी, और जहाँ से चाहें वहाँ से भीतर आ सकती थी। गली हुई छत में से, बिना शीशों की खिड़कियों में से और बिना किवाड़ों के दरवाज़ों में से। वह आ ही पहुंची और मेमनों व कमज़ोर भेड़ों को अपना शिकार बनाने लगी। चरवाहा लगातार उनकी नीली पड़ी लाशें शेड के पीछे फेंक रहा था।

और बाहर बाड़े में बरफ़ और बारिश में मोटी-मोटी गाभिन भेड़ें खड़ी थीं। उन्हें आज-कल में ब्याना था। उनके बदन पर बारिश की बौछारें पड़ रही थीं। ठण्ड के मारे उनके दांत बज रहे थे। उनके भीगे बाल गुच्छे बनकर लटक रहे थे... गुच्छे बनकर...

भेड़ें अब चरने जाने को तैयार नहीं हो रही थीं। ऐसी ठण्ड और नमी में वे कहाँ चरतीं?! बूढ़ी मददगार औरत अपने सिर पर बोरी डाले उन्हें हांकती, पर वे भागकर वापस आ जातीं, मानो बाड़ा उनके लिए स्वर्ग हो। औरत रोती हुई उन्हें इकट्ठा करके फिर हांकती और वे फिर वापस भाग आतीं। तानाबाय ग़ुस्से से लाल-पीला हुआ भागकर बाहर आया। उसकी इच्छा हुई उन्हें डण्डे मारे, लेकिन आख़िर वे गाभिन थीं। उसने बाक़ी औरतों को आवाज़ दी और उन सब ने मिलकर रेवड़ को किसी तरह चरने के लिए भेजा।

जब से यह मुसीबत आयी, तानाबाय को न समय का ध्यान रहा, न उसकी आँखों के सामने मरते मेमनों की संख्या का। मरनेवालों में जुड़वाँ और एक साथ पैदा हुए तीन बच्चे अधिक थे। यह सारी सम्पदा नष्ट हुई जा रही थी। सारी मेहनत मिट्टी में मिली जा रही थी। मेमने पैदा होने के दिन ही कीचड़ और गन्दगी में मर रहे थे। और जो जिन्दा बच रहे थे, वे खांस रहे थे, उनका दम घुट रहा था, उन्हें दस्त लग रहे थे और वे एक दूसरे को गंदा कर रहे थे। जिन भेड़ों के बच्चे मर गये थे, वे मिमियाती हुई इधर-उधर भाग रही थीं, एक दूसरे को धक्के दे रही थीं और ब्याने जा रही भेड़ों को रौंद रही थीं। यह सब बड़ा अस्वाभाविक और भयावह लग रहा था। उफ़! तानाबाय कितना चाह रहा था कि भेड़ों का ब्याना कम-से-कम कुछ समय के लिए ही रुक जाये! उसका मन चाह रहा था कि वह इन बेवक़ूफ़ भेड़ों को चिल्ला-चिल्लाकर कहे, "रुक जाओ! अभी बच्चे मत दो! रुक जाओ!..."

लेकिन लगता था, जैसे भेड़ों ने आपस में कोई समझौता कर लिया था। वे एक के बाद एक लगातार ब्याए ही जा रही थीं!..

उसकी आँखों में ख़ून उतरने लगा। उसे हर चीज से, जो वहाँ जीर्ण-शीर्ण शेड में हो रही थी, भेड़ों से, अपने आप से, अपने जीवन से, हर उस चीज से जिसके लिए वह यहाँ बिन जल मीन की तरह तड़प रहा था, घोर घृणा हो गयी।

वह जड़-सा हो गया। उसे अपने मन में उठ रहे विचारों से मतली आ रही थी। उसने उन्हें अपने दिमाग़ से निकालना चाहा, पर उन्होंने उसका पीछा नहीं छोड़ा। वे उसे कचोटे जा रहे थे, "ऐसा क्यों हो रहा है? इसकी किसे ज़रूरत है? जब हम भेड़ों को संभाल ही नहीं सकते,

तो फिर उन्हें पालते ही क्यों हैं? यह किसकी ग़लती है? क़सूरवार कौन है? जवाब दो कौन है? तुम ख़ुद और तुम्हारे जैसे बढ़-चढ़कर बोलनेवाले, जो यही रट लगाये रहते हैं: हालत सुधार लेंगे, दूसरों के बराबर पहुँच जायेंगे, उन्हें पीछे छोड़ देंगे, हम वादा करते हैं। कितनी अच्छी बातें करते हैं! और अब इन मरे हुए मेमनों को उठा-उठाकर बाहर फेंकते रहो। उस कीचड़ में पड़ी भेड़ को घसीटकर बाहर फेंको। अब दिखाओ अपना कमाल..."

तानाबाय को ये कड़वे और दुखदायक विचार विशेष रूप से रात को परेशान करते, जब उसे छप-छप करते घुटनों-घुटनों गन्दगी और भेड़ों के पेशाब में चलना पड़ता। उफ़, य भेड़ों के ब्याने के दिनों में जागकर बितायी रातें! पैरों तले मेंगनियों का दलदल था और सिर के ऊपर से चूती छत। हवा लालटेनों को बार बार बुझाकर शेड के अन्दर ऐसे बह रही थी, जैसे वह कोई खेत हो। तानाबाय रास्ता टटोलता हुआ चलता, ठोकर खाकर घुटनों और हाथों के बल चलने लगता, ताकि नवजात मेमने पैरों तले न रौंदे जायें, लालटेन जलाता, तो उसे अपने गन्दगी और ख़ून में सने सूजे काले हाथ दिखाई देते।

उसने बहुत दिनों से शीशे में अपना चेहरा नहीं देखा था। उसे यह मालूम नहीं था कि इस दौरान उसके बाल सफ़ेद हो चुके हैं और वह बूढ़ा गया है। और अब उसे लोग बूढ़ा कहकर पुकारा करेंगे। उसे न इन बातों के बारे में सोचने की फ़ुरसत थी, न अपने बारे में। न उसे खाने का वक़्त मिल रहा था, न नहाने का। वह न ख़ुद एक मिनट चैन से बैठ सकता था और न ही दूसरों को बैठने देता था। जब वह समझ गया कि घोर अनर्थ होने जा रहा है, तो उसने जवान मददगार औरत को घोड़े पर गाँव रवाना किया,

"जाकर चोरो को ढूंढ़ो। और उसे फ़ौरन यहाँ आने को कहो। अगर वह आने को तैयार न हो, तो उससे कह देना कि वह फिर कभी मुझे नज़र न आये!"

वह शाम को थकी-हारी, पानी से पूरी तर हुई सरपट घोड़ा दौड़ाती वापस आयी और बोली,

"वह बीमार है, तानाबाय। बिस्तर में पड़ा है। उसने कहा कि एक-दो दिन में वह चाहे मरा ही आये, पर आयेगा ज़रूर।"

"यह बीमारी कभी उसका पीछा न छोड़े तो अच्छा हो!" तानाबाय ने कोसा।

जयदार उसे रोकना चाहती थी, पर उसकी हिम्मत नहीं हुई, उसे ऐसे में न टोकना ही ठीक था।

तीसरे दिन मौसम साफ़ होने लगा। बादल अनिच्छापूर्वक छंट गये और कोहरा पहाड़ों में ऊपर की ओर सरक गया। हवा भी कुछ शान्त हो गयी। लेकिन अब देर हो चुकी थी। इन दिनों में गाभिन भेड़ें इतनी दुबली हो गयी थीं कि उन्हें देखकर ही डर लगता था। वे अपनी पतली टांगों पर फूले हुए पेट संभाले हड्डियों के ढांचों-सी खड़ी थीं। भला ऐसी भेड़ें अपने मेमनों को दूध पिला सकती थीं! वे भेड़ें जो ब्या चुकी थीं और जिनके बच्चे अभी ज़िन्दा थे, उनमें से कितने गर्मी तक ज़िन्दा बच सकेंगे और हरी घास खाकर ठीक हो सकेंगे? देर-सवेर उन्हें बीमारी ले ही बैठेगी। और अगर बच भी गये तो उन से न गोश्त मिलेगा, न ऊन...

मौसम साफ़ होना शुरू ही हुआ था कि एक और विपत्ति आ पड़ी—ज़मीन जमने लगी। लेकिन दोपहर होते-होते बर्फ़ पिघल गयी। तानाबाय ने चैन की सांस ली। शायद वे कुछ और भेड़ों को बचा सकें। वे फिर बेलचे, कांटे और डांड़ियां निकालकर काम में जुट गये। उन्हें शेड में कम-से-कम कुछ तो नालियाँ खोदनी ही थीं, नहीं तो वहाँ पैर रखने को भी जगह नहीं रही थी। लेकिन यह काम वे ज़्यादा देर न कर सके। जो मेमने अनाथ रह गये थे उनकी ख़ुराक का इन्तज़ाम करना था, उन्हें बिना बच्चोंवाली भेड़ों के थनों के लगाना था। लेकिन वे पराये मेमनों को दूध पिलाने के लिए तैयार ही नहीं हो रही थीं। मेमने दूध के लिए मिमियाते इधर-उधर भाग रहे थे, अपने ठण्डे-ठण्डे मुंहों से उन लोगों की उंगलियाँ चूस रहे थे। वे उन्हें भगाते, तो वे उनकी गन्दी बरसातियों के पल्ले ही चूसने लगते। वे भूखे थे और झुण्ड बनाये बिलबिलाते-मिमियाते उन लोगों के पीछे-पीछे भाग रहे थे।

चाहे रोओ, चाहे पीटो, लेकिन आख़िर वह उन औरतों और अपनी छोटी बेटी से और कितना काम करा सकता था? उनसे खड़ा भी नहीं रहा जा रहा था। उनकी बरसातियाँ न जाने कितने दिनों से सूख ही नहीं पायी थीं। तानाबाय उनसे कुछ नहीं कह रहा था। बस एक बार वह अपना ग़ुस्सा न रोक पाया। बूढ़ी औरत ने तानाबाय की मदद करने

के इरादे से भेड़ों को दोपहर में ही बाड़े में बन्द कर दिया। वह यह देखने बाहर निकला कि वहाँ क्या हाल है। देखते ही उसका ख़ून खौल उठा: भेड़ें खड़ी खड़ी एक दूसरे के बाल खा रही थीं। इसका मतलब था कि सारे रेवड़ का भूख से मरने का ख़तरा है। वह औरत पर चिल्लाने लगा,

"तुझे क्या हो गया है, बुढ़िया? क्या दिखाई नहीं देता? चुप क्यों है? चल! भेड़ों को चराने ले जा! उन्हें रुकने मत देना। उन्हें एक दूसरे के बाल मत खाने देना। बस चलती रहें। एक मिनट भी खड़ी नहीं रहनी चाहिएँ। नहीं तो तुझे जान से मार दूंगा!"

उसी समय एक और मुसीबत आ पड़ी – एक जुड़वां मेमनोंवाली भेड़ अपने मेमनों को दूध पिलाने को तैयार नहीं हो रही थी। वह उनके टक्कर मारने लगी। उन्हें अपने पास फटकने नहीं दे रही थी, उनके टक्करें मार रही थी। और बच्चे थे कि गिरते और फिर उसके पास आते, कातर स्वर में मिमियाते। ऐसा तभी होता है, जब आत्मरक्षा की निष्ठुर भावना बलवती हो उठती है और मां स्वयं ज़िन्दा रहने के लिए सहज-प्रेरणा से अपने बच्चों को दूध पिलाने से इन्कार कर देती है, क्योंकि उसका शरीर दूसरों का पोषण करने में असमर्थ हो जाता है। इस घटना से छूत की बीमारी की तरह सारी भेड़ें प्रभावित होने लगती हैं। एक भेड़ के ऐसा करने की देर है कि सारी भेड़ें वैसा ही करने लगती हैं। तानाबाय बहुत चिन्तित हो उठा। वह और उसकी बेटी भूख से पागल हुई भेड़ को उसके मेमनों समेत हांककर अहाते में बाड़े की ओर ले गये और वहां उसे अपने बच्चों को दूध पिलाने के लिए मजबूर करने लगे। पहले तानाबाय स्वयं भेड़ को पकड़े रहा और उसकी बेटी मेमनों को उसके थनों से लगाने लगी। लेकिन भेड़ छटपटाती हुई टक्करें मार रही थी। लड़की से यह काम नहीं हो पा रहा था।

"अब्बा, ये तो दूध पी ही नहीं पा रहे हैं।"

"पियेंगे, लूली।"

"नहीं, देखो, ये तो गिर जाते हैं," वह रुआंसी हो उठी।

"तुम इसे पकड़ो, मैं ख़ुद लगाता हूँ।"

लेकिन नन्ही-सी लड़की में ताक़त ही कितनी थी! तानाबाय ने मेमनों को भेड़ के थनों से लगाया और उन्होंने दूध पीना शुरू किया ही था कि वह लड़की को गिराकर भाग गयी। तानाबाय का धैर्य छूट गया। उसने

बेटी के मुंह पर कसकर थप्पड़ मार दिया। उसने अपने बच्चों को कभी नहीं पीटा था, पर इस बार पीट बैठा। लड़की सुबकने लगी। वह उठकर चला गया। सब पर थूककर चला गया।

कुछ देर घूमकर लौट आया, पर उसकी समझ में नहीं आया कि बेटी से क्षमा कैसे मांगे। लेकिन वह स्वयं ही भागती उसके पास आ पहुँची,

"अब्बा, वह उन्हें दूध पिलाने लगी। मां और मैंने मेमनों को उसके थनों से लगा दिया। अब वह उन्हें टक्करें नहीं मार रही है।"

"बहुत अच्छा हुआ, बेटी। शाबाश!"

उसके दिल को तुरन्त शान्ति मिली। हालत इतनी बुरी तो नहीं लगती। शायद अब बची-खुची भेड़ों को किसी तरह बचा लेंगे। देखो, मौसम भी सुधरता जा रहा है! क्या सचमुच वसन्त आ जायेगा और चरवाहे के बुरे दिन बीत जायेंगे? तब वह दुबारा काम में जुट जायेगा। केवल काम करते रहने, बराबर मेहनत करने से ही वह इस विपत्ति से उबर सकता था...

उसके पास एक घुड़सवार लड़का आया। वह सामूहिक फ़ार्म के पशुओं की गिनती करता था। आख़िर कोई तो आया। वह पूछने लगा कि उनके यहाँ कैसा चल रहा है। तानाबाय के मन में आया कि उसे बुरी तरह गाली दे, लेकिन उस बेचारे का क्या क़ुसूर...

"तुम अब तक कहाँ थे?"

"और कहाँ होता? सब रेवड़ों को देख रहा था। मैं अकेला हूँ, सब जगह नहीं पहुँच सकता।"

"दूसरों का क्या हाल है?"

"ऐसा ही है। इन तीन दिनों में काफ़ी भेड़ें मरी हैं।"

"चरवाहों का क्या कहना है?"

"कहेंगे क्या। गालियां दे रहे हैं। कुछ तो बात तक भी नहीं करना चाहते। बेकताय ने तो मुझे अहाते से ही भगा दिया। वह इतने गुस्से में है कि कोई उसके पास भी नहीं जा सकता।"

"हाँ ऽऽ। मुझे भी उसके पास जाने के लिए एक मिनट की भी फ़ुरसत नहीं मिल सकी। कुछ फ़ुरसत मिल जाये, तो शायद हो आऊँ। और तुम?"

"मेरा क्या? मेरा काम तो गिनती करना है।"

"हमारी मदद के लिए कुछ किया जा रहा है या नहीं?"

"हाँ। सुना है, चोरो काम पर आने लगा है। उसने अस्तबल से सारा चारा निकलवाकर कुछ गाड़ियों में सूखी घास और पुआल भेजे हैं। उसने कहा कि घोड़े मरते हैं, तो मरें। लेकिन सुना है कि गाड़ियाँ रास्ते में कहीं फंस गयी हैं। आजकल रास्तों की हालत भी तो ख़राब है।"

"रास्तों की हालत! उन्हें पहले ख़्याल क्यों नहीं आया? हमारे यहाँ हमेशा से यही होता रहा है। और अब गाड़ियों के आने से क्या फ़ायदा? ख़ैर, मैं एक दिन जरूर उनकी ख़बर लूंगा!" तानाबाय ने धमकी दी, "मुझसे और कुछ मत पूछो। जाओ और जाकर ख़ुद गिनती कर लो। अब सब मेरी बला से!" वह अपनी बात पूरी कहे बिना शेड में ब्याने जा रही भेड़ों को संभालने चला गया। आज पन्द्रह और भेड़ें ब्यायी थीं।

तानाबाय जब घूम-घूमकर नवजात मेमनों को उठा रहा था, तब वह लड़का उसके पास पहुँचकर एक काग़ज़ देता हुआ बोला,

"इतने जानवर मरे हैं। इस पर दस्तख़त कर दीजिये।"

तानाबाय ने बिना देखे दस्तख़त कर दिया। उसने इतने ज़ोर से लिखा कि पेंसिल टूट गयी।

"फिर मिलेंगे, तानाबाय। कुछ कहना हो, तो बताइये।"

"कुछ नहीं कहना मुझे।" लेकिन फिर लड़के को रोककर बोला, "बेकताय के यहाँ जाओ और उससे कहना है कि मैं उसके पास कल दोपहर तक पहुँचने की कोशिश करूंगा।"

तानाबाय बेकार ही परेशान हो रहा था। बेकताय उससे पहले वहाँ आ पहुँचा। वह ख़ुद आया और वह भी कैसे...

उस रात फिर तेज़ हवा चलने लगी, हिमपात होने लगा, हालाँकि हल्का हुआ, पर सुबह तक सारी ज़मीन सफ़ेद हो गयी थी। सारी रात वाड़े में खड़ी रही भेड़ें भी बर्फ़ से ढक गयी थीं। वे अब लेट नहीं रही थीं। वे एक झुण्ड में एक दूसरे से सटी हर चीज़ से बेपरवाह निश्चल खड़ी थीं। वे बहुत ज्यादा दिन भूखी रह चुकी थीं। वसन्त और शीत ऋतुओं का संघर्ष काफ़ी लम्बा हो चुका था।

शेड में ठण्ड थी। हिमकण वर्षा से छत में हुए छेदों में से टिमटिमाती लालटेनों के प्रकाश में धीरे-धीरे चक्कर खाते हुए नीचे ठिठुरती हुई भेड़ों और मेमनों पर गिर रहे थे। लेकिन तानाबाय युद्ध में घमासान लड़ाई के बाद दफ़नानेवाली टुकड़ी के सैनिक की तरह भेड़ों के प्रति अपना कर्तव्य बराबर निभा रहा था। वह अब अपने दु:खदायी विचारों का आदी हो चुका था और उसका रोष मौन क्षोभ का रूप ले चुका था। वह उसके दिल में कांटे की तरह चुभ रहा था और उसके कारण वह झुक तक नहीं पा रहा था। वह गन्दगी में अपने बूटों से छपछप करता अपने काम में जुटा रहा और सारी रात उसे अपनी बीती ज़िन्दगी रह-रहकर याद आती रही।

बचपन में वह चरवाहों की मदद किया करता था। वह और उसका भाई कुलुबाय एक रिश्तेदार का रेवड़ चराते थे। एक साल बीता, उन्हें मालूम पड़ा कि उनकी तनख़्वाह की भरपाई उनके खाने में ही हो चुकी है। मालिक ने उन्हें धोखा दिया। उसने उनसे बात तक करने से इन्कार कर दिया। उन्हें अपने फटे-पुराने जूते पहने, पीठ पर अपनी मामूली-सी पोटलियां रखे ख़ाली हाथ लौटना पड़ा। तानाबाय ने जाते जाते मालिक को धमकी दी, "मैं ज़रा बड़ा हो जाऊँ, तब तुम्हें इसका मज़ा चखाऊँगा।" लेकिन कुलुबाय ने कुछ नहीं कहा। वह उससे पांच वर्ष बड़ा था। वह जानता था कि ऐसी बातों से मालिक नहीं डरेगा। अपना ढोर और अपनी ज़मीन का ख़ुद मालिक होना दूसरी बात है। "अगर मैं मालिक बन गया, तो हरगिज़ अपने नौकर को निराश नहीं करूँगा।" वह तब कहा करता था। दोनों भाई उस साल अलग हो गये। कुलुबाय दूसरे ज़मींदार के यहाँ गड़रिया बन गया और तानाबाय अलेक्सांद्रोवका के एक रूसी अधिवासी येफ़ेमोव के खेत में मज़दूरी करने लगा। वह कोई अधिक मालदार किसान नहीं था। उसके पास केवल एक-एक जोड़ी बैलों और घोड़ों की थी और अपना खेत भी था, जिसमें वह गेहूँ की खेती करता था। वह अपना गेहूं छोटे-से शहर औलिया-अता की एक आटा-मिल में पिसाने ले जाता था। वह स्वयं दिन निकले से रात गये तक काम करता था। तानाबाय ज़्यादातर उसके बैलों और घोड़ों की संभाल करता था। वह था बहुत सख़्त आदमी, पर उसके साथ ईमानदार भी था। वह तय की हुई मज़दूरी पूरी देता था। उन दिनों ग़रीब किर्गीज़ लोग सदा से

उनका शोषण करते आये अमीर किर्गीज़ों के यहां काम करने के बजाय रूसियों के यहां काम करना ज्यादा पसन्द करते थे। तानाबाय रूसी बोलना सीख गया। गाड़ीवान की हैसियत से उसने औलिया-अता और कुछ बाहर की दुनिया भी देख ली। और तभी क्रान्ति हो गयी। सब उलट-पुलट गया। अब तानाबायों का ज़माना आ गया था।

तानाबाय अपने गांव लौट आया। एक नयी ज़िन्दगी शुरू हो गयी। वह उसे अपने साथ अपनी मौज में बहा ले चली। तानाबाय विस्मित रह गया। उसे ज़मीन, आज़ादी और अधिकार – सब एक साथ मिल गये। उसे निर्धन किसानों की स्थानीय समिति का सदस्य चुन लिया गया। तभी उसकी दोस्ती चोरो के साथ हुई। वह पढ़ा-लिखा था और युवाओं को अक्षर लिखना व हिज्जे कर-करके पढ़ना सिखा रहा था। तानाबाय को समिति का सदस्य होने के नाते पढ़ना-लिखना आना बहुत ज़रूरी था। वह कोम्सोमोल इकाई में शामिल हो गया। यहां भी वह चोरो के साथ मिलकर काम करता रहा। वे पार्टी के सदस्य भी साथ-साथ बने। सब अपनी रफ़्तार से चल रहा था, ग़रीब उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो रहे थे। जब समूहिकीकरण अभियान छिड़ा, तो तानाबाय इस कार्य में पूरे उत्साह से लग गया। किसानों के नये जीवन के लिए, सारी ज़मीन, सारे पशुओं, उनके परिश्रम और सपनों को सार्वजनिक सम्पत्ति बनाने के लिए भला वह संघर्ष न करता, तो और कौन करता? कुलक मुर्दाबाद! बहुत नाज़ुक वक़्त था। वह दिन भर घोड़ा दौड़ाता और रात देर गये तक सभाओं और मीटिंगों में भाग लेता। कुलकों की सूची तैयार की जा रही थी। ज़मीन्दार, मुल्ला और हर तबक़े के मालदार लोग खेत में से खर-पतवार की तरह जड़ से उखाड़कर फेंके जाने लगे। नयी फ़सल के लिए खेत पूरी तरह साफ़ करना था। कुलुबाय का नाम भी बेदख़ल किये जानेवाले कुलकों की सूची में आ गया। जिन दिनों तानाबाय मीटिंगों और बैठकों में भाग लेने के लिए दौड़-धूप में व्यस्त रहता था, तब तक उसका बड़ा भाई एक खाता-पीता आदमी बन चुका था। उसने एक विधवा से शादी कर ली थी। उसकी अपनी ज़मीन-जायदाद हो गयी। उसके पास कई भेड़ें, एक गाय, दो घोड़े, एक बछेड़ेवाली दुधार घोड़ी, एक हल, कई हेंगे और अन्य कई चीज़ें थीं। फ़सल काटने के समय वह कुछ मज़दूर लगा लेता था। यह नहीं कहा जा सकता था कि वह मालदार हो गया था, पर वह

ग़रीब भी नहीं था। वह मज़े से जी रहा था और मज़े से मेहनत कर रहा था।

जब ग्राम सोवियत की बैठक में कुलुबाय का नाम विचार के लिए आया, तो चोरो ने कहा,

"कामरेडो, हमें ज़रा सोच-समझकर क़दम उठाना चाहिए। उसे बेदख़ल करें या नहीं? कुलुबाय जैसे लोग सामूहिक फ़ार्म के लिए भी लाभदायक हो सकते हैं। आख़िर वह भी ग़रीब परिवार से आया है। उसने सोवियतों के ख़िलाफ़ प्रचार नहीं किया है।"

लोगों की राय अलग अलग थी। कुछ उसका समर्थन कर रहे थे, कुछ विरोध। तानाबाय ने अभी तक कुछ नहीं कहा था। वह मन ही मन कुढ़ा हुआ बैठा था। हालांकि वह उसका सौतेला भाई था, पर आख़िर था तो भाई ही। उसे अपने भाई के ख़िलाफ़ आवाज़ उठानी पड़ेगी। उनके सम्बन्ध अच्छे थे, हालांकि वे एक दूसरे से विरले ही मिलते थे। दोनों की अपनी अपनी ज़िन्दगी थी। अगर वह कहे कि उसे हाथ न लगाइये, तो फिर दूसरों का क्या करेंगे, क्योंकि हर कोई अपने किसी न किसी सम्बन्धी की तरफ़दारी करेगा। और अगर कहे कि वे ख़ुद फ़ैसला करें, तो सब कहेंगे कि वह डरपोक है।

लोग इन्तज़ार कर रहे थे कि वह क्या कहता है। और इसी कारण वह और अधिक निष्ठुर हो उठा।

"चोरो, तुम हमेशा ही ऐसी बातें करते हो!" वह खड़ा होकर बोलने लगा। "अख़बारों में किताबें पढ़े हुए लोगों के बारे में लिखते हैं, क्या कहते हैं उन्हें – बुद्धिजीवी। तुम भी ऐसे ही बुद्धिजीवी हो। तुम हर काम में हमेशा हिचकिचाते रहते हो। कहीं ऐसा न हो जाये, वैसा न हो जाये। इसमें हिचकिचाने की ज़रूरत ही क्या है? अगर उसका नाम सूची में है, तो इसका मतलब है कि वह कुलक है! उस पर बिलकुल भी रहम नहीं करना चाहिए! सोवियत सरकार की ख़ातिर तो मैं अपने सगे बाप पर भी रहम नहीं करूंगा। तुम लोगों को इस बात की फ़िक्र नहीं करनी चाहिए कि वह मेरा भाई है। अगर तुम लोगों ने इसे बेदख़ल नहीं किया, तो मैं ख़ुद करूंगा।"

अगले दिन कुलुबाय उससे मिलने आया। तानाबाय उसके साथ रुखाई से पेश आया। उसने उससे हाथ नहीं मिलाया।

"मुझे बेदखल क्यों किया जा रहा है? क्या हम दोनों ने साथ-साथ खेतों में मज़दूरी नहीं की थी? क्या ज़मीन्दारों ने तुम्हें और मुझे साथ दुतकारकर अपने घरों से नहीं निकाला था?"

"अब इन सब बातों का कोई मतलब नहीं रहा। तुम ख़ुद ज़मींदार बन बैठे हो।"

"मैं ज़मींदार कैसे हो गया? मैंने सब अपनी मेहनत से बनाया है। लेकिन फिर भी उसे छोड़ने का मुझे अफ़सोस नहीं है। मेरा सब कुछ ले लो। लेकिन तुम मुझे कुलक क्यों मानते हो? ख़ुदा से डरो, तानाबाय।"

"कुछ भी हो, तुम हमारे दुश्मन हो। और हमें सामूहिक फ़ार्म बनाने के लिए तुम्हारा सफ़ाया करना होगा। तुम हमारे रास्ते के रोड़े हो और हमें तुम्हें अपने रास्ते से हटाना होगा..."

यह उनकी आख़िरी मुलाक़ात थी। इसके बाद वे बीस सालों से एक दूसरे से एक बार भी नहीं बोले थे। जब कुलुबाय को साइबेरिया निर्वासित किया गया, तब गांव में न जाने कितनी बातें बनायी गयीं, कितनी अफ़वाहें उड़ायी गयीं!

लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे। ऐसी अफ़वाह भी उड़ी कि जब कुलुबाय को गांव से दो सशस्त्र घुड़सवार सिपाही लेकर जा रहे थे, तो उसका सिर नीचा हो गया, न उसने किसी से नज़र मिलायी और न ही किसी से विदा ली। और जब वे गांव से बाहर निकलकर खेतों के बीच से गुज़रने लगे, तो वह फन्दे में फंसे जानवर की तरह गेहूं के हरे-भरे पौधों को अपने पैरों तले रौंदने लगा, उन्हें जड़ से उखाड़ने लगा। वह सामूहिक फ़ार्म की पहली फ़सल थी। कहते हैं सिपाहियों ने बड़ी मुश्किल से उस पर क़ाबू पाया और आगे ले गये। यह भी कहते हैं, वह जाते समय फूट-फूटकर रो रहा था और तानाबाय को कोस रहा था। तानाबाय को ऐसी अफ़वाहों पर कम ही विश्वास होता था। "दुश्मनों की बकवास है। वे इन बातों से मेरी नाक में दम करना चाहते हैं। मेरे ठेंगे से! मैं ऐसे उनकी चाल में कभी नहीं आनेवाला!" वह इस प्रकार अपने आप को तसल्ली दिया करता था।

फ़सल की कटाई शुरू होने से पहले एक बार तानाबाय खेत देखने गया। देखकर बड़ा ख़ुश हुआ। गेहूँ की फ़सल उस वर्ष बहुत बढ़िया हुई थी,

गेहूँ की बालियाँ एक दूसरे से होड़ कर रही थीं। वह अचानक उस जगह जा पहुँचा, जहां कुलुबाय ने हताश होकर हरे-भरे गेहूँ के पौधों को पैरों तले रौंदा और जड़ से उखाड़ा था। चारों ओर गेहूँ के पौधे काफ़ी घने थे, पर उस जगह मानो सांड़ लड़े थे—सारे पौधे रौंदे हुए थे, सूख गये थे और वहां घासपात उग आया था। यह देखते ही तानाबाय ने ज़ोर से लगाम खींच ली थी।

"नीच कहीं का!" वह ग़ुस्से से उबलता हुआ फुसफुसाया। "तूने सामूहिक फ़ार्म की फ़सल को नुक़सान पहुंचाया। इसका मतलब है, तू सचमुच कुलक है। इसके अलावा और कुछ नहीं हो सकता..."

वह काफ़ी देर तक इसी प्रकार घोड़े पर मौन और उदास बैठा इन्हीं कष्टदायक बातों के बारे में सोचता रहा और फिर घोड़ा मोड़कर चला गया। इसके बाद वह इस मनहूस जगह से तब तक दूर से ही कतराकर निकलता रहा, जब तक कि वहां फ़सल की कटाई पूरी नहीं हो गयी और ठूंठियां जानवरों के पैरों तले रौंद न दी गयीं।

उस समय तानाबाय का पक्ष इने-गिने लोगों ने ही लिया। अधिकतर लोगों ने उसकी आलोचना ही की, "ख़ुदा ऐसा भाई किसी को न दे। इससे तो रिश्तेदार न होना ही बेहतर है।" कुछ लोगों ने ये बातें उसके मुंह पर कहीं। हां, सच कहा जाये, तो लोगों ने उस समय उससे नाता तोड़ लिया। उन्होंने ऐसा खुले आम नहीं किया, लेकिन जब उसका नाम दुबारा चुने जाने के लिए प्रस्तावित किया गया, तो वे तटस्थ रहे। इस प्रकार वह धीरे-धीरे निर्धन किसानों की समिति की सदस्यता से हटा दिया गया। वह फिर भी अपनी सफ़ाई में यही कहता रहा कि कुलक सामूहिक फ़ार्म जला रहे हैं, किसानों की हत्याएं कर रहे हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि सामूहिक फ़ार्म मज़बूत होते जा रहे हैं और लोगों की हालत निरन्तर सुधरती जा रही है। एक सर्वथा नये ढंग का जीवन आरम्भ हो गया। नहीं, जो कुछ उस समय किया गया, वह बेकार नहीं था।

तानाबाय को अपने बीते जीवन की छोटी से छोटी बात भी याद हो आयी। उसे ऐसा लगा जैसे उसका सारा जीवन उस अद्भुत युग में बीत गया, जब सामूहिक फ़ार्म ज़ोर पकड़ रहे थे। उसे एक बार फिर वही "लाल रूमालवाली श्रेष्ठ कामगार" के बारे में गाया जानेवाला गीत,

सामूहिक फ़ार्म को मिली डेढ़ टनवाली पहली ट्रक और रात में उसकी लाल झण्डेवाली केबिन के पास खड़ा रहना स्मरण हो आया।

उस रात तानाबाय शेड में ठोकरें खाता अपना कष्टदायक काम करता रहा और अपने जीवन के कटु अनुभवों के बारे में सोचता रहा। आख़िर आजकल हमारी सारी योजनाएँ मिट्टी में क्यों मिली जा रही हैं? क्या हम ग़लत रास्ते पर चल रहे हैं? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, नहीं हो सकता! हमने सही रास्ता चुना था। तो फिर क्या कारण है? क्या रास्ता भूल गये हैं? भटक गये हैं? यह कब और कैसे हुआ? मिसाल के तौर पर स्पर्द्धा को ही लीजिये – सारे वादे काग़ज़ पर लिख लिये जाते हैं, फिर किसी को इसकी चिन्ता नहीं रहती कि तुम क्या कर रहे हो, तुम्हारा काम कैसा चल रहा है। पहले लाल और श्याम पट्ट हुआ करते थे। रोज़ लाल और श्याम पट्ट पर जिनके नाम होते थे, उनके बारे में बातचीत और बहस हुआ करती थी। यह लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। अब कहते हैं कि वह ज़माना बीत चुका है। लेकिन उसके बजाय कुछ किया गया? सिर्फ़ थोथी बातें और वादे। काम की कोई बात नहीं की गयी। ऐसा क्यों हो रहा है? इसका दोषी किसे ठहराया जाये?

तानाबाय इस तरह के अन्तहीन विचारों से थक गया। उसे विरक्ति होने लगी, वह निष्क्रिय हो गया। उसका सिर दुख रहा था। उसे नीन्द आ रही थी। उसने जवान मददगार औरत को दीवार का सहारा लेते देखा। वह नीन्द से जूझ रही थी, उसकी सूजी हुई आँखें मुंदी जा रही थीं। फिर वह धीरे-धीरे नीचे ढुलकती गयी और ज़मीन पर बैठकर घुटनों पर सिर टिकाये सो गयी। उसने उसे जगाने की कोशिश नहीं की। वह भी दीवार का सहारा लेकर खड़ा हो गया और धीरे-धीरे नीचे ढुलकने लगा। वह अपने आप पर और अपने कंधों पर पड़ रही, निरन्तर नीचे की ओर खींचती शक्ति पर किसी तरह क़ाबू नहीं पा रहा था...

उसकी नीन्द किसी की दबी चीख और धम-से गिरने की आवाज़ से खुल गयी। डरकर इधर-उधर भागती हुई भेड़ें उसके पैरों को रौंद रही थीं। वह कुछ न समझ पाते हुए एकदम उठ खड़ा हुआ। दिन निकल आया था।

"तानाबाय! तानाबाय! बचाओ!" उसकी पत्नी पुकार रही थी।

दोनों मददगार औरतें भागी भागी उसके पास पहुंचीं और वह उनके पीछे लपका। जयदार पर छत का एक शहतीर गिर पड़ा था। शहतीर का एक सिरा गली हुई दीवार में से निकल गया और छत के दबाव के कारण शहतीर नीचे गिर पड़ा। उसके होश उड़ गये।

"जयदार!" वह चिल्लाया और उसने शहतीर के नीचे अपना कंधा लगाकर उसे एक झटके में उठा लिया।

जयदार नीचे से निकल आयी और कराहने लगी। औरतें रोती हुई उसकी हड्डियों को छू-छूकर देखने लगीं। भयाकुल तानाबाय ने कुछ न समझ पाते हुए उन औरतों को धक्का देकर हटा दिया और कांपते हाथों से अपनी पत्नी के मिरज़ई के अन्दर हाथ डालकर टटोलने लगा,

"क्या हुआ तुम्हें? दर्द कहां हो रहा है?"

"उफ़, कमर में! कमर में!"

"चोट लगी है? अभी देखता हूँ!" उसने तुरन्त अपनी बरसाती उतार फेंकी। फिर वे लोग जयदार को बरसाती पर लिटाकर शेड से बाहर ले गये।

कनवास के तम्बू में उन्होंने उसे भली-भांति देखा। ऊपर से कहीं सूजन नज़र नहीं आ रही थी, लेकिन चोट गम्भीर आयी थी। वह हिल-डुल भी नहीं पा रही थी।

जयदार रो पड़ी,

"अब क्या होगा? इतनी मुसीबत का वक़्त है और मैं? अब तुम लोग क्या करोगे?"

"हाय अल्लाह!" तानाबाय के दिमाग़ में कौंधा। "इसे तो इसी की ख़ैर मनानी चाहिए कि जिन्दा बच गयी। लेकिन इसे देखो किसकी फ़िक्र लगी है। भाड़ में जाये यह काम! बस तुम सलामत रहो, मेरी प्यारी..."

"जयदार, घबराओ मत!" उसने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा। "तुम तो बस किसी तरह ठीक हो जाओ। बाक़ी सब बकवास है। हम किसी तरह कर लेंगे..."

उन तीनों को अब होश आया और वे जयदार को समझाने और तसल्ली दिलाने लगे। उसे भी उनकी बातों से कुछ चैन आया और वह डबडबाती आंखों से मुस्कराने लगी।

"अच्छा, अब छोड़ो भी। जो हुआ, उसके लिए मुझ पर नाराज मत होना। मैं बिस्तर में ज्यादा दिन नहीं पड़ी रहूँगी। देख लेना, एक-दो दिन में ठीक हो जाऊंगी।"

औरतें जयदार का बिस्तर लगाने और चूल्हा जलाने लगीं। तानाबाय विश्वास न कर पाते हुए कि मुसीबत टल गयी, वापस शेड में लौट आया।

सुबह हुई तो हर चीज पर ताजा हिम की हल्की परत बिछी दिखाई दी। तानाबाय को शेड में शहतीर के नीचे दबकर मरी एक भेड़ की लाश मिली। रात में उन लोगों ने उसे नहीं देखा था। मेमना मरी मां के थनों में मुंह मार रहा था। तानाबाय को कुछ डर भी लगा और कुछ इस बात की खुशी भी हुई कि उसकी पत्नी ज़िन्दा बच गयी। उसने अनाथ मेमने को उठा लिया और उसके लिए दूसरी मां खोजने लगा। बाद में जब वह शहतीर और दीवार के टेक लगा रहा था, तब उसे यही चिन्ता सता रही थी कि जाकर देखे, उसकी पत्नी कैसी है।

वह बाहर निकला, तो उसे कुछ दूरी पर एक रेवड़ बर्फ़ में धीरे-धीरे आता दिखाई दिया। कोई अनजाना गड़रिया उन्हें उसकी ओर हांकता ला रहा था। यह किस का रेवड़ है? वह उसे यहां क्यों ला रहा है? दोनों के रेवड़ मिल जायेंगे, भला कोई ऐसा करता है? तानाबाय अनजाने चरवाहे को चेतावनी देने गया कि वह किसी और के इलाक़े में आ रहा है।

वह थोड़ा नज़दीक पहुंचा, तो उसने देखा कि रेवड़ को बेकताय हांक रहा है।

"अरे, बेकताय, तुम हो क्या"?

उसने कोई जवाब नहीं दिया। बेकताय भेड़ों को संटी से मारता हुआ उसकी ओर हांक रहा था। "पागल हुआ है क्या? गाभिन भेड़ों को मार रहा है!" तानाबाय क्रोधित हो उठा।

"तुम कहां से आ रहे हो? कहां जा रहे हो? कैसे हो?"

"वहीं से आ रहा हूँ, जहां कभी वापस नहीं जाऊंगा। और जहां जा रहा हूँ, वह तुम देख ही रहे हो," बेकताय ने उसके निकट आते हुए कहा। उसने कमर में एक रस्सी का टुकड़ा कसकर बांधा हुआ था और बरसाती के नीचे सीने पर दस्ताने खोंसे हुए थे।

वह संटी पीठ के पीछे पकड़े उससे कुछ क़दमों की दूरी पर रुक गया, लेकिन दुआ-सलाम नहीं किया। उसने गुस्से में थूक दिया और उसे बर्फ़ में रौंद दिया। फिर सिर झटका। वह सांवला था, उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी जो उसके सुन्दर युवा चेहरे पर चिपकी हुई-सी लग रही थी। उसकी जंगली बिल्ली-सी घूरती आँखों में घृणा और चुनौती की चमक दिखाई दे रही थी। उसने एक बार और थूका और कांपते हाथ में संटी हिलाते हुए रेवड़ की ओर इशारा किया,

"संभालो। चाहो तो गिन लो, न चाहो तो न सही। तीन सौ पचासी भेड़ें हैं।"

"बात क्या है?"

"मैं छोड़कर जा रहा हूँ।"

"इसका क्या मतलब? कहां जा रहे हो?"

"कहीं भी।"

"फिर मेरे पास क्यों आये हो?"

"इसलिए कि तुम मेरे उस्ताद हो।"

"तो क्या हुआ? ठहरो, ठहरो, कहां जा रहे हो?" तानाबाय अब समझा कि उसके शागिर्द का इरादा क्या है। उसके सिर में ख़ून का दौरा तेज़ हो गया, उसका दम घुटने लगा और गर्मी महसूस होने लगी। "तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?" घबराहट के कारण वह बुदबुदाया।

"देख ही रहे हो। बहुत हो चुका। मैं ऊब गया हूँ। ऐसी जिन्दगी से मेरा जी भर चुका है।"

"तुम यह भी समझते हो या नहीं कि तुम क्या कह रहे हो? आजकल में तुम्हारी भेड़ें ब्यानेवाली हैं! भला ऐसा करना ठीक होगा?"

"हां। अगर हमारे साथ ऐसा किया जा सकता है, तो हम भी ऐसा कर सकते हैं। अच्छा, अलविदा!" बेकताय ने संटी सिर के ऊपर घुमाकर पूरी ताक़त से दूर फेंक दी और चला गया।

तानाबाय हक्का-बक्का हुआ खड़ा रह गया। उसे कुछ नहीं सूझ रहा था। और बेकताय था कि बिना पलटकर देखे चला जा रहा था।

"होश में आओ, बेकताय!" वह उसके पीछे भागा। "तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। तुम ज़रा सोचो तो सही कि तुम क्या कर रहे हो! सुन रहे हो?"

"मेरा पीछा छोड़ो!" बेकताय ने गुस्से में मुड़कर कहा। "तुम ही सोचते रहो। मैं तो और लोगों की तरह जीना चाहता हूँ। मैं किसी से कम नहीं। मैं भी शहर में नौकरी करके तनख्वाह पा सकता हूँ। क्या ज़रूरत पड़ी है मुझे इन भेड़ों के साथ अपनी जिन्दगी बरबाद करने की? न चारा है, न शेड, न रहने को तम्बू। मेरा पीछा छोड़ो! तुम जाओ और मेंगनियों में धंसकर अपनी जान दे दो। ज़रा अपनी सूरत तो देखो, तुम क्या बन गये हो। कुछ दिनों में तुम यहीं मर जाओगे। लेकिन तुम्हें यह भी कम लगता है। फिर भी नारे लगाते रहते हो। अपने साथ औरों को भी घसीटना चाहते हो। बस! बहुत देख लिया मैंने।" और वह अछूती बर्फ पर इतने ज़ोर-ज़ोर से डग भरता हुआ चलने लगा कि उसके पैरों के निशान तुरन्त पानी भरने से काले होने लगे...

"बेकताय, तुम मेरी बात तो सुन लो!" तानाबाय भागता हुआ उसके पास पहुंचा। "मैं तुम्हें सारी बात समझाता हूँ।"

"दूसरों को समझाते रहना। और कई बेवक़ूफ़ मिल जायेंगे!"

"बेकताय, ठहरो तो सही! मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

लेकिन बेकताय सुनने को तैयार नहीं था, वह चलता ही जा रहा था।

"तुम्हें गिरफ्तार कर लिया जायेगा!"

"ऐसी जिन्दगी से तो जेल बेहतर है!" बेकताय गुर्राया और उसने दुबारा मुड़कर नहीं देखा।

"तुम भगोड़े हो!"

लेकिन बेकताय चलता ही रहा।

"तुम जैसों को मोर्चे पर मौत की सज़ा दी जाती थी!"

लेकिन बेकताय चलता ही रहा।

"ठहरो, मैं कह रहा हूँ!" तानाबाय ने उसकी आस्तीन पकड़ ली।

वह हाथ छुड़ाकर आगे चल दिया।

"मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगा, तुम्हें ऐसा करने का हक़ नहीं है!" तानाबाय ने उसका कंधा पकड़कर अपनी ओर खींचा, लेकिन एकाएक उसकी आँखों के आगे चिनगारियाँ छूट गयीं, हिमाच्छादित चोटियाँ तैरती

हुई, अंधकार में विलीन होने लगीं। जबड़े में लगी अप्रत्याशित घूंसे की चोट से वह गिर गया।

जब तानाबाय ने अपना घूमता हुआ सिर उठाकर देखा, तब तक बेकताय टेकरी के पीछे ओझल हो चुका था।

उसके पीछे-पीछे बस उसके पद-चिन्हों की काली पंक्ति ही बनती चली जा रही थी।

"बरबाद हो गया यह लड़का, बरबाद हो गया," तानाबाय कराहता हुआ घुटनों और हाथों के बल खड़ा हुआ। फिर सीधा खड़ा हुआ। उसके हाथ बर्फ़ और कीचड़ में सन गये थे।

वह कुछ देर सुस्ताया और फिर बेकताय की भेड़ों को हांककर सिर लटकाये अपने बाड़े में ले आया।

सत्तरह

गांव से दो घुड़सवार पहाड़ियों की ओर रवाना हुए। उनमें से एक कुम्मैत घोड़े पर सवार था, दूसरा–लाखी पर। घोड़ों की पूंछें गांठ लगाकर बांधी हुई थीं, क्योंकि उन्हें काफ़ी लम्बा सफ़र तय करना था। घोड़ों की टापों से बर्फ़ से मिली कीचड़ में छपछप की आवाज़ के साथ ढेले और छींटे चारों तरफ़ उछट रहे थे।

गुलसारी की लगाम सवार ने कसकर पकड़ रखी थी और वह तेज़ चाल से दौड़ा जा रहा था। क़दमबाज़ मालिक की बीमारी के दौरान काफ़ी दिन बेकार खड़ा रहा था। लेकिन इस समय उस पर उसका मालिक नहीं, बल्कि कोई अनजान आदमी सवारी कर रहा था, जो चमड़े के ओवरकोट के ऊपर बरसाती पहने था। उसके कपड़ों से रंग और रबड़ की बू आ रही थी। चोरो उसके साथ-साथ दूसरे घोड़े पर चल रहा था। ऐसा अकसर हुआ करता था–वह ज़िला मुख्यालय से आनेवाले साथियों को क़दमबाज़ पर सवारी करने देता था। गुलसारी को अब इससे कोई मतलब नहीं रहा था कि उस पर कौन सवारी कर रहा है। जब से उसे उसके झुण्ड और पुराने मालिक से अलग किया गया था, तब से अब तक उस पर अनेक लोग सवारी कर चुके थे। उनमें हर तरह के लोग थे–भले भी

और बुरे भी, अच्छे घुड़सवार भी और ख़राब भी। कई बार वह तेज़ रफ़्तार को ही सब कुछ माननेवाले घुड़सवारों के हाथों में भी पड़ा। उफ़! कितने मूर्ख घुड़सवार थे वे! ऐसे लोग उसे पूरी रफ़्तार से भगाकर अचानक लगाम खींच लेते और उसे पिछली टांगों पर बैठने को मजबूर कर देते, फिर दौड़ाते और एक दम झटके से रोक देते। वे ख़ुद भी नहीं समझते थे कि क्या कर रहे हैं। उन्हें तो केवल यही चाहिए था कि लोग उन्हें क़दमबाज़ पर सवारी करते देखें। गुलसारी अब हर तरह की ज़िन्दगी का आदी हो चुका था। उसे बस अस्तबल में बेकार खड़ा रहना बिलकुल पसन्द नहीं था। उसका पुराना शौक़ अभी ज़िन्दा था—दौड़ना, दौड़ना, दौड़ना। उस पर कौन सवारी कर रहा है, इसकी उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी। यह तो सवार ही था जो इस बात का ख़्याल रखता था कि वह कैसे घोड़े पर सवारी कर रहा है। किसी को कुम्मैत घोड़े पर बिठाये जाने का अर्थ था कि लोग उस आदमी का सम्मान करते हैं, उससे डरते हैं। गुलसारी ताक़तवर और सुन्दर था। उस पर सवारी करनेवाला स्वयं को सुरक्षित महसूस करता था।

इस समय क़दमबाज़ पर ज़िला न्यायाधिकारी सेगिज़बायेव सवारी कर रहा था। जो सामूहिक फ़ार्म का निरीक्षण करने भेजा गया था। उसके साथ सामूहिक फ़ार्म का पार्टी-संगठनकर्त्ता था। यह भी उसके प्रति सम्मान का द्योतक था। वह सोच रहा था पार्टी-संगठनकर्त्ता मौन है, डर गया होगा, क्योंकि सामूहिक फ़ार्म में भेड़ प्रजनन की हालत बहुत ख़राब जो थी। उसकी बला से, चुप रहना चाहता है, चुप रहे, डरता है, डरता रहे। उसे व्यर्थ की बातें छेड़ने की ज़रूरत ही क्या है। अधीनस्थ कर्मचारियों को अपने प्रवर अधिकारियों से कुछ डरना ही चाहिए। नहीं तो किसी प्रकार का अनुशासन नहीं रहेगा। अभी कुछ ऐसे प्रवर अधिकारी भी हैं जो अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ बड़ी बेतकल्लुफ़ी से पेश आते हैं, लेकिन बाद में वही अधीनस्थ कर्मचारी उनका बख़िया उधेड़ देते हैं। हुकूमत चलाना एक महत्वपूर्ण और उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है और हर किसी के बस का नहीं है।

सेगिज़बायेव क़दमबाज़ की चाल की तान के साथ हिलता-डुलता यही सोचता चला जा रहा था। यह कहना मुश्किल था कि उसका मूड ख़राब था, हालांकि वह चरवाहों का काम देखने जा रहा था और जानता था

कि उनकी हालत ज़्यादा अच्छी नहीं है। शीत और वसन्त ऋतुओं में द्वंद्व हो रहा था, दोनों में से कोई भी हार मानने को तैयार नहीं था और इस द्वंद्व से सबसे ज़्यादा कष्ट भेड़ों को उठाना पड़ रहा था: मेमने मर रहे थे, सूखकर कांटा हुई गाभिन भेड़ें मर रही थीं और स्थिति पर किसी तरह क़ाबू नहीं पाया जा रहा था। हर साल यही होता था और यह सभी जानते थे। लेकिन इस बार ज़िला मुख्यालय के प्रतिनिधि के रूप में उसे भेजा गया था, इसका मतलब था कि वह किसी न किसी से जवाब ज़रूर तलब करेगा। उसके दिल में कहीं यह बात छिपी थी कि ज़िले में भेड़ों का इतनी बड़ी संख्या में मरना उसके हित में है। आख़िर वह महज़ ज़िला न्यायाधिकारी और ज़िला समिति के ब्यूरो का एक सदस्य मात्र था और पशु-पालन की स्थिति के लिए उत्तरदायी नहीं था। इसके लिए उत्तरदायी प्रथम सचिव होता है। वह ज़िले में नया आया था, इसलिए अच्छा है, वही सफ़ाई देता रहे। और सेगिज़बायेव तो बस देखता रहेगा। अच्छा है, ऊपरवालों को ज़रा सोचने का मौक़ा मिलेगा कि उन्होंने बाहर के आदमी को सचिव बनाकर ग़लती की है या नहीं। सेगिज़बायेव को इस बात से बड़ा धक्का लगा था कि उसे उस पद के योग्य नहीं समझा गया। वह मन ही मन कुढ़ रहा था। वह कई वर्षों से ज़िला न्यायाधिकारी के पद पर कार्य कर रहा था और अपने विचारानुसार अनेक बार अपनी योग्यता का प्रमाण दे चुका था। ख़ैर, कोई बात नहीं, उसके ऐसे दोस्त हैं, जो अवसर आने पर उसका समर्थन करेंगे। अब उसका पार्टी पदाधिकारी बनने का समय आ गया, वह न्यायाधिकारी की कुर्सी पर बहुत दिन बैठ लिया... हाँ, क़दमबाज़ बहुत बढ़िया घोड़ा है, लगता था, जैसे वह जहाज़ की तरह हिल-डुल रहा था, उसे न कीचड़ की कोई परवाह थी, न मिट्टी की। पार्टी-संगठनकर्त्ता के घोड़े के मुंह से झाग निकलने लगे थे और क़दमबाज़ के बदन पर तो पसीने की बूंदें ही छलकनी शुरू ही हुई थीं...

इस बीच चोरो अपने ही विचारों में खोया था। उसकी हालत काफ़ी ख़राब लग रही थी। उसके थके-हारे चेहरे पर मुर्दनी छायी हुई थी, आँखें धंसी हुई थीं। वह दिल की बीमारी से कई वर्षों से परेशान था और दिन-ब-दिन उसकी हालत बिगड़ती ही जा रही थी। उसके मन में विचार भी निराशाजनक उठ रहे थे। हाँ, तानाबाय की बात सच निकली। अध्यक्ष

चिल्लाता और शोर मचाता रहता है, लेकिन उससे फ़ायदा कुछ नहीं होता। वह अपना अधिकतर समय ज़िला मुख्यालय में ही गुज़ारता है और हमेशा उसे वहाँ कोई न कोई काम रहता है। चोरो पार्टी मीटिंग में उसका सवाल उठाना चाहता था, पर ज़िला मुख्यालय में उसे कुछ सब्र करने को कहा गया था। इन्तज़ार क्यों किया जाये? क्या इसीलिए कि अलदानोव के ख़ुद ही इस्तीफ़ा देकर चले जाने की अफ़वाह उड़ रही थी? चला जाये, तो बेहतर हो। अब चोरो का ख़ुद भी इस्तीफ़ा देकर चले जाने का समय आ गया है। अब वह किस काम का रह गया है? हमेशा बीमार रहता है। समसूर छुट्टियों में आया था, वह भी उसे इस्तीफ़ा देने की सलाह देता है। वह इस्तीफ़ा देने को तो दे दे, पर उसकी अन्तरात्मा इसकी गवाही नहीं देती है। समसूर समझदार लड़का है, वह अब अपने पिता से ज्यादा अच्छी तरह सब समझता है। वह यही समझाता रहता है कि खेती कैसे करनी चाहिए। उन्हें अच्छी शिक्षा मिल रही है और शायद कुछ समय बाद सब कुछ वैसा ही हो भी जायेगा, जैसा कि उनके प्रोफ़ेसर सिखाते हैं। लेकिन तब तक वह ज़िन्दा नहीं रह सकेगा। और वह अपनी समस्याओं से बचकर कहीं नहीं जा सकता। आदमी अपनी आत्मा से तो बचकर नहीं छिप सकता न! फिर लोग क्या कहेंगे? यही कि उसने इतने वादे किये, इतने सब्ज़ बाग़ दिखाये, सामूहिक फ़ार्म के सिर पर इतना क़र्ज़ चढ़ा दिया और ख़ुद अब आराम करना चाहता है। नहीं, अब उसे कभी चैन नहीं मिल सकेगा। इससे तो आख़िरी दम तक डटे रहना ही बेहतर होगा। हमें मदद ज़रूर मिलेगी, दुनिया में देर है अंधेर नहीं। लेकिन मदद जल्दी मिलनी चाहिए। सच्चे अर्थों में मदद मिलनी चाहिए, लेकिन यह तो इसका उल्टा ही कर रहा है। यह तो कहता है, "अस्त-व्यस्तता के लिए ज़िम्मेदार लोगों पर मुक़दमा चलाया जायेगा!" तो ठीक है, चलाओ मुक़दमे। मगर लोगों को सज़ा दिये जाने से तो हालत सुधरेगी नहीं। देखिये, कैसे भौंहें सिकोड़े हुए जा रहा है, जैसे पहाड़ों में सिर्फ़ अपराधी ही रहते हैं और सामूहिक फ़ार्म के भले की बात केवल यही सोच सकता है... वैसे इसे किसी चीज़ की फ़िक्र नहीं है, सिर्फ़ दिखावा कर रहा है। लेकिन यह सब कहकर तो देखिये!

अठारह

विशाल पहाड़ धूसर कोहरे के आवरण में लिपटे थे। वे सूरज द्वारा विस्मृत, उदास और रूठे दैत्यों के समान ऊपर खड़े थे। वसन्त की दशा ख़राब थी। चारों ओर नमी थी, अंधेरा फैला था।

तानाबाय अपने शेड में कष्ट भोग रहा था। वहाँ घुटन और बहुत ठण्ड थी। कई भेड़ें एक साथ ब्या रही थीं और उनके मेमनों को रखने के लिए जगह बिलकुल नहीं बची थी। चारों ओर होहल्ला हो रहा था, में-में और भगदड़ का शोर मचा था। सब भूखे-प्यासे थे और मक्खियों की तरह मर रहे थे। इसके अलावा उसकी पत्नी कमर में लगी चोट के कारण बिस्तर में पड़ी थी। एक बार उसने खड़े होने की कोशिश तो की, पर उससे उठा नहीं गया। अब जो हो, सो हो। ताक़त बिलकुल नहीं रही।

वह बेकताय को अपने दिमाग़ से नहीं निकाल पा रहा था और कुढ़ रहा था। इस कारण से नहीं कि बेकताय छोड़कर चला गया—उसे जाना ही था, इसलिए भी नहीं कि वह अपना रेवड़ इस तरह छोड़कर चला गया, जैसे कोयल अन्य चिड़ियों के घोंसलों में अपने अण्डे रखकर उड़ जाती है—आख़िर किसी न किसी को तो उसकी भेड़ें संभालने भेजा ही जायेगा, बल्कि इसलिए कि वह बेकताय को ऐसा जवाब न दे सका जिससे वह शर्म से पानी पानी हो जाता। बेवक़ूफ़! दुधमुंहा छोकरा! और वह, यानी तानाबाय, पुराना कम्युनिस्ट, जिसने अपनी सारी ज़िन्दगी सामूहिक फ़ार्म को समर्पित की, उसे ठीक से जवाब भी नहीं दे सका। अपनी संटी फेंककर चला गया, दुधमुंहा। तानाबाय ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि कोई ऐसा कर सकता है। क्या उसने कभी सोचा था कि कोई उसके प्यारे काम पर इस तरह थूककर जा सकता है?

"बस!" वह अपने आप पर नियंत्रण करने की कोशिश करता, लेकिन एक क्षण बाद ही फिर इन्हीं बातों के बारे में सोचने लगता।

एक और भेड़ ब्याई। उसके जुड़वां मेमने हुए थे, दोनों ही अच्छे थे। लेकिन वह उन्हें कहां रखे? भेड़ के थनों में दूध नहीं था, आख़िर हो भी कैसे सकता था? तो ये दोनों भी मर जायेंगे! उफ़, क्या मुसीबत

है! उधर ठण्ड से मरे मेमने पड़े हैं। तानाबाय लोथ उठाकर बाहर फेंकने जा ही रहा था कि उसकी बेटी हांफती हुई भागी आयी।

"अब्बा, हमारे यहाँ अफ़सर लोग आ रहे हैं।"

"आने दो," तानाबाय बड़बड़ाया। "तुम जाकर अपनी मां की देख-भाल करो।"

वह शेड से बाहर निकला, तो उसने दो घुड़सवारों को आते देखा। "ओहो, गुलसारी!" वह ख़ुश हो उठा। पुरानी यादें ताज़ा हो गयीं। "कितने दिन हो गये तुझे देखे हुए! देखो, बिलकुल भी नहीं बदला है!" उनमें से एक चोरो था, लेकिन जो आदमी चमड़े का ओवरकोट पहने गुलसारी पर सवार था, उसे वह नहीं पहचान पाया। शायद कोई ज़िला मुख्यालय से आया होगा।

"आइये, आइये! आख़िर कोई तो आया!" वह विद्वेषपूर्वक सोचने लगा। अब उसे शिकायत करने और अपने भाग्य को रोने का मौक़ा मिलेगा। नहीं, वह शिकायत कभी नहीं करेगा, उन्हें ख़ुद ही शर्म आनी चाहिए। भला, ऐसा किया जाता है? मुसीबत में कोई मदद नहीं दी और अब उसका हाल पूछने आ रहे हैं...

तानाबाय ने उनके आने का इन्तज़ार नहीं किया और शेड के पीछे जाकर मरे हुए मेमनों को घूरे पर डाल दिया। वह धीरे धीरे वापस लौटा। वे दोनों अहाते में पहुँच चुके थे। उनके घोड़े हांफ़ रहे थे। चोरो दयनीय और दोषी-सा लग रहा था। वह जानता था कि अब उसका दोस्त उससे जवाब तलब करेगा। लेकिन क़दमबाज़ पर बैठा आदमी ग़ुस्से में था, डरावना लग रहा था। उसने बिना दुआ-सलाम किये ही चिल्लाना शुरू कर दिया।

"बड़ी शर्म की बात है! हर जगह यही हाल है। देखो, यहाँ क्या हो रहा है!" वह चोरो पर झल्लाया। फिर तानाबाय की ओर मुड़कर बोला, "क्यों, कामरेड, यह क्या कर दिया?" उसने उस ढेर की ओर इशारा किया, जहाँ तानाबाय ने मरे हुए मेमनों को डाला था, "तुम कम्युनिस्ट हो और तुम्हारे मेमने मर रहे हैं!"

"उन्हें शायद मालूम नहीं है कि मैं कम्युनिस्ट हूँ," तानाबाय ने मुंह-तोड़ जवाब दिया और उसे लगा जैसे अचानक उसमें कोई तार टूट गया। दिल में विरक्ति और कड़ुवाहट की भावना उमड़ पड़ी।

"क्या मतलब?" सेगिज़बायेव ग़ुस्से से लाल हो उठा और चुप हो गया।

"तुमने समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा के अनुसार वादे किये थे?" आख़िर उसे कुछ सूझा और चेतावनी देते हुए उसने कदमबाज़ की लगाम खींच ली।

"हाँ।"

"तुमने क्या वादे किये थे?"

"मुझे याद नहीं।"

"इसलिए तो तुम्हारे मेमने मर रहे हैं!" सेगिज़बायेव ने ढीठ चरवाहे को सबक़ सिखाने का अवसर मिलते ही रक़ाबों में खड़े होकर चाबुक की मूठ से मरे मेमनों के ढेर की ओर इशारा करते हुए बड़े जोश से कहा। लेकिन पहले उसने अपना ग़ुस्सा चोरो पर उतारा, "आप इन लोगों का काम देखते हैं या नहीं? लोगों को अपने वादे तक मालूम नहीं हैं। सारी योजना मिट्टी में मिला दी, जानवरों को मार रहे हैं! आप यहाँ करते क्या रहते हैं? अपने कम्युनिस्टों को क्या शिक्षा देते हैं? यह कैसा कम्युनिस्ट है? मैं आपसे पूछ रहा हूँ!"

चोरो ने बिना कोई जवाब दिये सिर झुका लिया। वह अपने हाथों में लगाम मसलने लगा।

"मैं जैसा हूँ, वैसा ही हूँ," उसके स्थान पर तानाबाय ने शान्त स्वर में जवाब दिया।

"हूँ, देख रहा हूँ, कैसे हो। तुम अन्तर्ध्वंसक हो! तुम सामूहिक फ़ार्म की सम्पत्ति नष्ट कर रहे हो। तुम जनता के शत्रु हो। तुम्हारी जगह जेल में है, न कि पार्टी में! तुम हमारी समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा का मज़ाक़ उड़ाते हो।"

"ठीक है। मेरी जगह जेल में है," तानाबाय ने शान्त स्वर में उसका समर्थन किया। उसके दिल में उमड़ते ज़बरदस्त ग़ुस्से के कारण उसके होंठ फड़कने लगे। अपमान और कड़ुवाहट से उसके धैर्य का बांध टूट गया। "क्यों!" वह अपने फड़कते होंठों पर क़ाबू पाने की कोशिश करता हुआ सेगिज़बायेव को घूरने लगा। "तुम्हें और कुछ कहना है?"

"तानाबाय, तुम इस तरह बात क्यों कर रहे हो?" चोरो बीच में बोल पड़ा। "इसकी क्या ज़रूरत है? ज़रा ढंग से सारी बात समझाओ।"

"अच्छा! तो तुम्हें भी समझाने की जरूरत है? तुम यहाँ किस लिए आये हो, चोरो?" तानाबाय चीख उठा। "किस लिए आये हो? मैं तुमसे पूछता हूँ! क्या यही बताने कि मेरे मेमने मर रहे हैं? यह तो मैं ख़ुद भी जानता हूँ! क्या यह बताने कि मैं गर्दन तक गन्दगी में फंसा हूँ? यह भी मैं ख़ुद जानता हूँ! क्या यह बताने कि मैं बेवक़ूफ़ था जो सारी ज़िन्दगी सामूहिक फ़ार्म के लिए जान खपाता रहा? यह भी मैं ख़ुद जानता हूँ!.."

"तानाबाय! तानाबाय! होश में आओ!" चोरो का चेहरा फक हो गया और वह घोड़े से नीचे कूद पड़ा।

"भाग यहाँ से!" तानाबाय ने उसे धक्का दिया। "मैं अपने सारे वादों पर थूकता हूँ, अपनी सारी ज़िन्दगी पर थूकता हूँ! चले जाओ! मेरी जगह तो जेल में है! तुम चमड़े के ओवरकोटवाले इस नये मालिक को यहाँ क्यों लाये? क्या इसलिए कि यह मेरा मज़ाक़ उड़ाये? इसलिए कि मुझे जेल भेजे? चल, सूअर, भेज मुझे जेल में!" तानाबाय कुछ उठाने के लिए लपका। उसने दीवार के सहारे रखा कांटा उठा लिया और सेगिज़बायेव पर लपका। "चल, भाग यहाँ से, सूअर! निकल यहाँ से!" वह गुस्से से पागल हुआ कांटा घुमाने लगा।

बुरी तरह डरा हुआ सेगिज़बायेव क़दमबाज़ की लगाम कभी इधर कभी उधर खींचने लगा। कांटा चमकते हुए घोड़े के सिर से टकराकर झन्न से बज रहा था और फिर उसके सिर से टकरा रहा था। अपने गुस्से में तानाबाय यह न समझ सका कि गुलसारी क्यों इतने ज़ोर से सिर झटक रहा है, क्यों दहाना उसका लाल हुआ मुंह फाड़े डाल रहा है, क्यों उसकी आँखें बाहर निकली पड़ रही हैं।

"हट जा, गुलसारी, मेरे सामने से! मैं ज़रा इस चमड़े के ओवरकोटवाले मालिक की मरम्मत कर लूं!" तानाबाय बेक़सूर क़दमबाज़ के सिर पर चोट पर चोट मारता हुआ चिल्ला रहा था।

जवान मददगार औरत भागकर वहाँ पहुंची और उसके हाथ पकड़कर कांटा छीनने की कोशिश करने लगी, पर उसने उसे धक्का देकर गिरा दिया। इस बीच चोरो उछलकर अपने घोड़े पर सवार हो गया।

"वापस चलो! भागो! यह तुम्हें मार डालेगा!" चोरो सेगिज़बायेव को तानाबाय से बचाने के लिए फ़ौरन अपना घोड़ा उनके बीच में ले आया।

तानाबाय ने उस पर कांटा उठाया और दोनों घुड़सवार सरपट घोड़े दौड़ाते अहाते में से निकल गये। उसका कुत्ता भौंकता हुआ उनका पीछा करने लगा, वह कभी रक़ाबों को काटने की कोशिश कर रहा था, कभी घोड़ों की पूंछों को।

तानाबाय ठोकर खाता हुआ उनके पीछे भागा और भागते-भागते मिट्टी के ढेले उठा-उठाकर उनकी तरफ़ फेंकते हुए चिल्लाने लगा,

"मेरी जगह जेल में है? जेल में! भागो! निकलो यहाँ से! मेरी जगह जेल में है! जेल में!"

फिर वह हांफता और बड़बड़ाता वापस आया। "मेरी जगह जेल में है! जेल में!" उसका कुत्ता अपना कर्त्तव्य पालन करके गर्वपूर्वक उसके साथ साथ चल रहा था। वह सोच रहा था कि उसका स्वामी उसको प्यार से थपथपायेगा, लेकिन वह उसकी ओर ध्यान ही नहीं दे रहा था। जयदार लाठी के सहारे लंगड़ाती हुई उसकी तरफ़ आ रही थी। डर के मारे उसके चेहरे का रंग उड़ गया था,

"तुमने यह क्या किया? तुमने यह क्या किया?"

"बेकार।"

"बेकार क्या? जरूर बेकार किया!"

"मैंने बेकार ही गुलसारी को मारा।"

"तुम्हारा दिमाग तो ठीक है न? तुम जानते हो तुमने यह क्या कर डाला?"

"जानता हूँ। मैं अन्तर्ध्वंसक हूँ। मैं जनता का शत्रु हूँ," वह हांफता हुआ कहने लगा, फिर मौन हो गया और हथेलियों में चेहरा छिपाकर फूट-फूटकर रोने लगा।

"मत रोओ, तानाबाय, मत रोओ," उसकी पत्नी उसके साथ रोती हुई कहने लगी, लेकिन वह था कि फूट-फूटकर रोये ही जा रहा था। जयदार ने अपने पति को इतने पहले कभी रोते नहीं देखा था...

उन्नीस

पार्टी की ज़िला समिति के ब्यूरो की बैठक इस असाधारण घटना के तीन दिन बाद हुई।

जिस कमरे में तानाबाय बकासोव के मामले पर बहस हो रही थी, वह उसके स्वागत-कक्ष में बैठा भीतर बुलाये जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। इन दिनों में उसने बहुत सोचा, लेकिन यह फ़ैसला न कर पाया कि वह दोषी है या नहीं। वह समझता था कि उसने एक गम्भीर अपराध किया है, कि उसने सरकार के प्रतिनिधि पर हाथ उठाया था, लेकिन बात केवल इतने तक ही सीमित होती, तो मामला बड़ा आसान हो जाता। वह अपने अनुचित व्यवहार के लिए किसी तरह की भी सज़ा भुगतने को तैयार था। आख़िर उसने आवेश में आकर सामूहिक फ़ार्म के बारे में अपनी सारी चिन्ता उगल दी, उसके बारे में अपनी सारी आशंकाओं और विचारों को कलंकित कर दिया। अब उस पर कौन विश्वास करेगा। अब कौन उसकी बात समझेगा? "लेकिन हो सकता है, मेरी बात समझ ही जायें?" उसके दिल में आशा की किरण जागी। "मैं उन्हें सारी बातें बताऊँगा। इस वर्ष की कड़ी सर्दी, शेड और तम्बू, चारे की कमी, आँखों में काटी रातों, बेकताय की करतूत–सबके बारे में बताऊँगा... फिर ख़ुद ही जांच करें! भला इस तरह कभी काम होते हैं?" उसे अब अपने किये पर अफ़सोस नहीं हो रहा था। "मुझे सज़ा मिली, तो क्या हुआ?" वह सोच रहा था, "कम-से-कम दूसरों को तो शायद कुछ आराम हो जायेगा। शायद इसके बाद वे लोग चरवाहों की ज़िन्दगी और उन समस्याओं को ठीक से समझने की कोशिश करें।" लेकिन एक क्षण बाद ही अपने साथ गुज़री सारी बातें स्मरण हो आने पर फिर उसका क्रोध भड़क उठता और वह अपने घुटनों के बीच मट्ठियाँ कसकर हठपूर्वक मन ही मन दोहराने लगता, "नहीं, मैंने कोई ग़लती नहीं की, नहीं की!" लेकिन उसके मन में फिर शंका जाग उठती...

न जाने क्यों इब्राइम भी उसी स्वागत-कक्ष में बैठा था। "यह यहाँ क्या कर रहा है? मरे जानवर को खाने की ताक में गिद्ध की तरह मंडरा रहा है," तानाबाय खीज उठा और उसकी ओर पीठ करके बैठ गया। इब्राइम उसके झुके हुए सिर की ओर देखता ठण्डी सांसें लेता मौन बैठा रहा।

"इतनी देर क्यों लगा रहे हैं?" तानाबाय कुर्सी पर बैठा कुलबुला रहा था। "और कर ही क्या सकते हैं? मेरी जान ही लेनी है, तो ले लें!" लगता था कि बन्द कमरे में सब जमा हो चुके थे। चोरो कुछ मिनट पहले अन्दर जानेवाला अन्तिम आदमी था। तानाबाय ने उसे उसके बूट के ऊपरी हिस्सों में लगे बालों से पहचान लिया। वे क़म्मैत क़दमबाज़ के बाल थे। "इसको पहुँचने की बड़ी जल्दी होगी, इसीलिए इसने गुलसारी को दौड़ा-दौड़ाकर उसके मुंह से झाग निकाल दिया," उसने सोचा, मगर सिर नहीं उठाया। घोड़े के पसीने की बूंदें और बाल लगे बूट तानाबाय के पास कुछ क्षण ठिठककर ठक-ठक करते किवाड़ के पीछे ओझल हो गये। समय काटे नहीं कट रहा था। आख़िर सचिव लिपिक ने किवाड़ खोलकर झांका,

"अन्दर आइये, कामरेड बकासोव।"

तानाबाय चौंककर उठ खड़ा हुआ, उसे कानों में अपने दिल की धड़कनों के अलावा कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। वह उसी हालत में कमरे में चला गया। उसकी आँखें धुंधला गयीं। उसे कमरे में बैठे लोगों के चेहरे पहचानने में भी कठिनाई हो रही थी।

"बैठिये," पार्टी की ज़िला समिति के प्रथम सचिव ने बड़ी मेज़ के दूसरे सिरे पर रखी कुर्सी की ओर इशारा करते हुए तानाबाय से कहा।

तानाबाय अपने बोझिल हाथ घुटनों पर रखकर कुर्सी पर बैठ गया और आँखों की धुंधलाहट दूर होने का इन्तज़ार करने लगा। फिर उसने मेज़ के दोनों ओर नज़र डाली। प्रथम सचिव के दाहिने हाथ पर सेगिज़बायेव अकड़कर बैठा हुआ था। तानाबाय इस व्यक्ति के प्रति घृणा के कारण इतना तन गया कि उसकी आँखों को धुंधलाहट तुरन्त दूर हो गयी। अब उसे मेज़ पर बैठे लोगों के चेहरे बिलकुल स्पष्ट दिखाई देने लगे। सबसे लाल चेहरा सेगिज़बायेव का था और सबसे पीला चेहरा, चोरो का था, जिसमें ख़ून ही नहीं था। वह मेज़ के कोने पर बैठा था और तानाबाय के सबसे नज़दीक था। हरे मेज़पोश पर रखे उसके सूखे हाथ कांप रहे थे। चोरो के सामने बैठा सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष अलदानोव ज़ोर ज़ोर से नाक सुड़कता, भौंहें चढ़ाये अगल-बगल झांक रहा था। वह इस मामले में अपना रुख छिपा नहीं रहा था। दूसरे लोग शायद अभी प्रतीक्षा कर रहे थे। अन्त में प्रथम सचिव ने फ़ाइल पर से नज़र हटाई।

"अब हम कम्युनिस्ट बकासोव के मामले पर विचार करेंगे," उसने हर शब्द पर बल देते हुए कहा।

"हाँ, तथा-कथित कम्युनिस्ट के मामले पर, है न?" किसी ने कटाक्ष किया।

"जले बैठे हैं!" तानाबाय ने मन ही मन सोचा। "इनसे रहम की उम्मीद नहीं की जा सकती। लेकिन मुझे रहम की ज़रूरत ही क्या है? क्या मैं कोई मुजरिम हूँ?"

उसे यह मालूम नहीं था कि उसके मामले के फ़ैसले में आपस में गुप्त रूप से होड़ करनेवाले पक्षों की टक्कर होनेवाली है। दोनों ही पक्ष इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना का अपने ही ढंग से लाभ उठाना चाहते थे। एक ओर सेगिज़बायेव और उसके समर्थक थे, जो नये पार्टी सचिव की सहनशीलता का अन्दाज़ लगाना चाहते थे, देखना चाहते थे कि वह कम-से-कम उनके हत्थे चढ़ता है या नहीं। दूसरी ओर स्वयं काशकातायेव था, जो समझता था कि सेगिज़बायेव की निगाह उसके पद पर लगी है और वह इसी फ़िक्र में है कि किसी तरह उसकी प्रतिष्ठा पर भी आंच न आये और इन ख़तरनाक लोगों से उसके सम्बन्ध भी न बिगड़ें।

ज़िला समिति के सचिव ने सेगिज़बायेव की रिपोर्ट पढ़ी। उसमें "श्वेत पाषाण" सामूहिक फ़ार्म के चरवाहे तानाबाय बकासोव द्वारा वास्तविक और मौखिक रूप से किये गये सारे अपराधों का ब्योरेवार वर्णन किया गया था। रिपोर्ट में कोई आरोप ऐसा नहीं था, जिससे तानाबाय इन्कार कर सकता था, लेकिन उसके लहजे और भाषा से वह हताश हो गया। इस निष्ठुर रिपोर्ट के सामने अपने आप को पूर्णत: निस्सहाय पाकर तानाबाय पसीने पसीने हो उठा। सेगिज़बायव की रिपोर्ट स्वयं उससे कहीं ज़्यादा ख़तरनाक साबित हुई। वह रिपोर्ट पर तो कांटा चला नहीं सकता था। तानाबाय अपनी सफ़ाई में जो दलीलें देना चाहता था, वे सब एक पल में बेकार सिद्ध हो गयीं, उसकी नज़रों में उनका कोई महत्व न रहा और वे किसी चरवाहे द्वारा अपनी कठिनाइयों के बारे में की जानेवाली आम शिकायत बनकर रह गयीं। क्या उसने बेवक़ूफ़ी नहीं की? इस निष्ठुर रिपोर्ट के सामने उसकी दलीलों की क्या क़ीमत हो सकती है?! उसको किस से लड़ने की सूझी है?

"कामरेड बकासोव, क्या आप ब्यूरो के सदस्य कामरेड सेगिज़बायेव की रिपोर्ट में वर्णित तथ्यों की वस्तुगतता स्वीकार करते हैं?" कशकातायेव ने रिपोर्ट पढ़ लेने के बाद पूछा।

"हाँ," तानाबाय ने मन्द स्वर में जवाब दिया।

सब चुप थे। लगता था, जैसे सभी इस रिपोर्ट से ख़ौफ़ खाये हुए थे। अलदानोव ने मेज़ पर बैठे सब लोगों पर बड़े सन्तोष के साथ चुनौती भरी दृष्टि डाली, मानो कह रहा हो – आप देख रहे हैं, यहाँ क्या हो रहा है।

"कामरेडो, अगर आप आज्ञा दें, तो इस मामले के कुछ मुद्दे स्पष्ट कर दूं," सेगिज़बायेव ने दृढ़तापूर्वक कहा। "मैं कुछ साथियों को पहले ही आगाह कर देना चाहता हूं कि वे कम्युनिस्ट बकासोव की हरकतों को मात्र गुंडागर्दी क़रार देने की कोशिश न करें। अगर वास्तव में ऐसा ही होता, तो विश्वास रखिये, मैं यह सवाल ब्यूरो के सामने कभी नहीं रखता। गुंडों पर क़ाबू पाने के हमारे पास दूसरे तरीक़े हैं। और बेशक बात केवल मेरे व्यक्तिगत अपमान की नहीं है। मैं पार्टी की ज़िला समिति के ब्यूरो का प्रतिनिधित्व करता हूँ, और सच कहूँ तो इस मामले में मैं सारी पार्टी का प्रतिनिधित्व करता हूँ। मैं किसी हालत में किसी को भी पार्टी की प्रतिष्ठा धूल में नहीं मिलाने दे सकता। सबसे अहम बात यह है कि इससे ज़िला समिति के सैद्धान्तिक कार्यों की गम्भीर कमियों और कम्युनिस्टों व ग़ैर कम्युनिस्टों को दी जानेवाली राजनीतिक शिक्षा में बरती जा रही लापरवाही का पता चलता है। बकासोव जैसे साधारण कम्युनिस्टों की विचार-धारा के लिए हम सब को जवाब देना होगा। हमें यह भी पता लगाना होगा कि वह अकेला ही है या उसके सहविचारक भी हैं। उसके इन शब्दों का अर्थ समझने की कोशिश कीजिये, 'चमड़े के ओवरकोटवाला नया मालिक!' चलिये, ओवरकोट को छोड़िये। लेकिन बकासोव के शब्दों का यही अर्थ निकलता है कि मैं, जो कि एक सोवियत नागरिक और पार्टी का प्रतिनिधि हूँ, नया मालिक, जमींदार और जनता का शोषक हूँ! इसने यही कहा था! आप इन शब्दों के छिपे अर्थ को समझे? मेरे ख़्याल से इस पर टिप्पणी करने की ज़रूरत नहीं... अब इस मामले के दूसरे पहलू पर नज़र डालिये। मैं 'श्वेत पाषाण' सामूहिक फ़ार्म में पशु-पालन की शोचनीय स्थिति से बड़ा परेशान था। तिस पर बकासोव ने कह दिया कि उसे अपने समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा के वादे याद नहीं हैं। तब उस के शर्मनाक शब्दों के जवाब में, मैंने उसे अल्तर्ज्ञैसक, जनता का

शत्रु बताया और कहा कि उसकी जगह पार्टी में नहीं जेल में है। मैं मानता हूँ कि मैंने उसका अपमान किया और मैं उससे क्षमा मांगने को तैयार था। लेकिन अब मुझे पक्का विश्वास हो गया कि मैंने जो कहा वह बिलकुल सच है। मैं अपने शब्द वापस नहीं ले रहा हूँ और ज़ोर देकर कह रहा हूँ कि बकासोव एक ख़तरनाक आदमी है और हमारी शासन पद्धति का शत्रु है..."

तानाबाय ने युद्ध में क्या-क्या कष्ट नहीं भोगे, उसने युद्ध में आरम्भ से अन्त तक भाग लिया, लेकिन उसने कभी न सोचा था कि हृदय कभी इतने ज़ोर से चीख सकता है, जितने ज़ोर से वह इस समय चीख रहा था। उसके कानों में बराबर गूंजती इस चीख के साथ उसका दिल कभी रुक जाता, कभी फिर धड़कने लगता और फिर रुक जाता, कभी फड़फड़ाकर बाहर निकलने की कोशिश करने लगता, लेकिन गोलियाँ सीधी उसी में लगे जा रही थीं। "ऐ ख़ुदा," तानाबाय के दिमाग़ में गूंजने लगा, "मेरी ज़िन्दगी और अब तक जो काम मैं करता रहा हूँ उनका क्या यही नतीजा मुझे मिलना था? अब मैं जनता का शत्रु भी बन गया। और मैं उस मनहूस शेड, गंदगी में सने उन मेमनों और उस बेवक़ूफ़ बेकताय के बारे में ही परेशान हो रहा था। लेकिन किसी को इससे क्या मतलब!.."

"मैं अपनी रिपोर्ट के मुख्य मुख्य निष्कर्ष एक बार फिर आपके सामने रख रहा हूँ," सेगिज़बायेव ने एक निश्चित क्रम में अपना निष्ठुर प्रहार जारी रखते हुए कहा। "बकासोव हमारी पद्धति से घृणा करता है, सामूहिक फ़ार्म से घृणा करता है, समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा से घृणा करता है, हमारी जीवन-पद्धति से घृणा करता है, सब पर थूकता है। उसने यह सामूहिक फ़ार्म के पार्टी-संगठनकर्त्ता कामरेड सयाकोव के सामने खुले आम कहा। इसके अलावा उसकी हरकतें दण्ड-संहिता के अनुसार अपराध हैं—उसने अपना कर्तव्य-पालन कर रहे सरकारी प्रतिनिधि पर हमला किया। मैं आपसे मेरी बात ठीक से समझने की प्रार्थना करता हूँ। मैं आप से उस पर न्यायालय में मुक़दमा चलाये जाने और यहाँ से बाहर निकलते ही उसे हिरासत में लिये जाने की मांग करता हूँ। उसका अपराध दण्ड-संहिता की धारा ५८ के अन्तर्गत दण्डनीय है। और अब बकासोव का पार्टी का सदस्य बने रहने का तो सवाल ही नहीं उठता!.."

सेगिज़बायेव जानता था कि वह आवश्यकता से अधिक कड़ी सज़ा की मांग कर रहा था, फिर भी उसे आशा थी कि अगर ब्यूरो ने तानाबाय बकासोव पर क़ानूनी कार्रवाई करना उचित न भी समझा, तो भी हर हालत में उसका पार्टी से निष्कासित किया जाना निश्चित है। काशकातायेव उसकी इस मांग को तो कभी ठुकरा ही नहीं सकेगा और ऐसी स्थिति में उसकी यानी सेगिज़बायेव की प्रतिष्ठा और बढ़ जायेगी।

"कामरेड बकासोव, आपको इन आरोपों के बारे में क्या कहना है?" काशकातायेव ने, जो अब झुंझला उठा था, पूछा।

"कुछ नहीं। सारी बातें पहले ही बता दी गयी हैं," तानाबाय ने जवाब दिया। "इसका यही मतलब निकलता है कि मैं पहले भी अन्तर्ध्वंसक और जनता का शत्रु था और अभी भी हूँ। फिर किसी को इससे क्या मतलब कि मैं क्या सोच रहा हूँ? आपकी जो इच्छा हो, वही कीजिये, आप इन बातों को ज़्यादा अच्छी तरह जानते हैं..."

"तो क्या आप अपने को सच्चा कम्युनिस्ट मानते हैं?"

"यह मैं अब साबित नहीं कर सकता।"

"क्या आप अपना दोष स्वीकार करते हैं?"

"नहीं।"

"तो क्या आप अपने को सबसे ज़्यादा अक़्लमंद समझते हैं?"

"नहीं। इसका बिलकुल उल्टा—सबसे ज़्यादा बेवक़ूफ़।"

"क्या मैं कुछ कह सकता हूँ?" कोम्सोमोल का बिल्ला लगाये एक युवक अपनी कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ। वह वहाँ उपस्थित लोगों में सबसे छोटा था। उसका चेहरा छोटा था, शरीर दुबला-पतला था और देखने में वह किशोर ही लग रहा था।

तानाबाय ने केवल अब उसकी ओर ध्यान दिया। "करो आलोचना, लड़के, ज़रा भी रहम मत खाओ," उसने मन ही मन उसे सम्बोधित किया। "मैं भी कभी तुम्हारे जैसा था, किसी पर भी रहम नहीं खाता था..."

एकाएक जैसे कहीं दूर बादलों में बिजली कौंधी, तानाबाय को गेहूँ का वह खेत याद आ गया जिसके हरे-भरे पौधों को कुलबाय ने पैरों तले रौंदा और उखाड़ा था। सारा दृश्य उसकी आँखों के आगे घूम गया। वह सिहर उठा औ र मन ही मन निःशब्द चीखने लगा।

काशकातायेव की आवाज़ सुनकर उसे होश आया,

"हाँ, बोलिये, केरीमबेकोव..."

"मैं कामरेड बकासोव की कार्रवाई को उचित नहीं मानता। मेरी राय में उन्हें तदानरूप सज़ा पार्टी से मिलनी चाहिए। लेकिन मैं कामरेड सेगिज़बायेव से भी सहमत नहीं हूँ," केरीमबेकोव अपनी आवाज़ में घबराहट ज़ाहिर न होने देने की कोशिश कर रहा था। "मैं यह भी सोचता हूँ कि कामरेड सेगिज़बायेव के मामले पर विचार करना भी आवश्यक है..."

"वाह रे वाह!" किसी ने उसे टोक दिया। "क्या तुम्हारे युवा कम्युनिस्ट लीग में यही व्यवस्था है?"

"सब जगह व्यवस्था एक सी होती है," केरीमबेकोव ने और अधिक लाल होते और घबराते हुए जवाब दिया। वह उपयुक्त शब्दों की तलाश में सहमकर बोलते बोलते रुक गया, लेकिन फिर एकाएक उसने कटु और तीखे शब्दों की बौछार कर दी, "आपको किसान, चरवाहे और अनुभवी कम्युनिस्ट का अपमान करने का क्या अधिकार है? आप ज़रा मुझे जनता का शत्रु कहकर देखिये.... आप अपने व्यवहार को इसीलिए उचित बताते हैं कि आप सामूहिक फ़ार्म में पशु-पालन की शोचनीय स्थिति से बहुत परेशान थे, लेकिन कभी आपने यह भी सोचा कि चरवाहा आपसे भी ज़्यादा परेशान था? जब आप उसके पास पहुँचे, तो क्या आपने उससे यह पूछा कि वह कैसे हैं, उसका काम कैसा चल रहा है? मेमने क्यों मर रहे हैं? नहीं। आपकी रिपोर्ट से यही मालूम पड़ता है कि आपने तुरन्त उस पर चिल्लाना शुरू कर दिया। यह बात किसी से नहीं छिपी है कि सामूहिक फ़ार्मों को भेड़ों के ब्याने के समय कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मैं अकसर वहाँ जाता रहता हूँ। कोम्सोमोल चरवाहों के सामने मुझे बड़ी तकलीफ़ होती है, शर्म महसूस होती है कि हम उनसे बड़ी सख़्ती से जवाब तलब करते हैं पर उन्हें किसी भी प्रकार की सहायता नहीं देते हैं। क्या आपने सामूहिक फ़ार्मों के शेड देखे हैं? फिर चारा कितना होता है? मैं ख़ुद चरवाहे का बेटा हूँ। मैं जानता हूँ कि नवजात मेमनों का मरना क्या होता है। सामूहिक फ़ार्मों में अभी भी बाबा आदम के तरीक़ों से काम होता है, जब कि हमें कृषि संस्थान में कुछ और सिखाया जाता है। दिल कितना दुखता है यह हालत देखकर!.."

"कामरेड केरीमबेकोव," सेगिज़बायेव ने उसकी बात काट दी। "आप हमारे दिलों में इसके प्रति सहानुभूति जगाने की कोशिश मत कीजिये। भावना का अर्थ बहुत विशाल होता है। हमें तथ्य चाहिएं, तथ्य, न कि भावनाएँ।"

"क्षमा कीजिये, हम लोग किसी अपराधी पर मुक़दमा नहीं चला रहे हैं, बल्कि अपनी पार्टी के एक साथी के मामले की छान-बीन कर रहे हैं," केरीमबेकोव ने आगे कहा। "यहाँ एक कम्युनिस्ट के भाग्य का निर्णय किया जा रहा है। इसलिए आइये हम सब भली-भांति सोचें कि कामरेड बकासोव ने ऐसा व्यवहार क्यों किया। उन्होंने जो किया वह निस्सन्देह निन्दनीय है, लेकिन बकासोव, जो कि सामूहिक फ़ार्म के श्रेष्ठतम पशु-पालकों में से है, ऐसा करने को क्यों मजबूर हुआ?"

"आप बैठ जाइये," काशकातायेव ने असन्तोष प्रकट करते हुए कहा। "कामरेड केरीमबेकोव, आप हमें मुख्य समस्या से दूर ले जा रहे हैं। यहाँ बैठे सभी लोगों को यह अच्छी तरह स्पष्ट हो गया है कि कामरेड बकासोव ने अत्यन्त गम्भीर अपराध किया है। यह कोई अच्छी बात है? किसी ने कभी कहीं ऐसा होते देखा है? हम कभी किसी को हमारे प्रतिनिधि पर कांटा नहीं चलाने देंगे, हम कभी किसी को पार्टी कार्यकर्त्ताओं की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाने नहीं देंगे। कामरेड केरीमबेकोव, आप आत्मा और भावनाओं के बारे में व्यर्थ की बहस करने की बजाय अगर अपने कोम्सोमोल संगठन के कार्यों में सुधार लाने पर अधिक ध्यान दें, तो बेहतर होगा। भावनाएँ अपने स्थान पर ठीक हैं और काम अपने पर। बकासोव ने जो करने की हिमाक़त की है, उससे हम सबको वास्तव में सावधान हो जाना चाहिए। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अब उसके लिए पार्टी में कोई स्थान नहीं रहा है। कामरेड सयाकोव, क्या आप सामूहिक फ़ार्म के पार्टी-संगठनकर्त्ता की हैसियत से इस घटना की पुष्टि करते हैं?"

"हां, मैं इसकी पुष्टि करता हूँ," चोरो ने धीरे से कुर्सी से उठते हुए कहा। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। "लेकिन मैं कुछ बातें समझाना चाहूँगा..."

"क्या समझाना चाहते हैं?"

"पहली बात तो यह है कि हम बकासोव के मामले पर अपने पार्टी-

संगठन में विचार करना चाहते हैं और आपसे इसकी अनुमति चाहते हैं।"

"यह अनिवार्य नहीं है। आप ज़िला समिति के ब्यूरो के निर्णय के बारे में अपने पार्टी-संगठन के सदस्यों को बाद में सूचित कर सकते हैं। आप और क्या कहना चाहते हैं?"

"मैं कुछ बातें स्पष्ट करना चाहता हूँ..."

"आप क्या स्पष्ट करना चाहते हैं, कामरेड सयाकोव? बकासोव का पार्टी-विरोधी वक्तव्य स्वतः प्रमाणित हो चुका है। अब इसमें समझाने की कोई बात ही नहीं रही। इसके लिए आप स्वयं भी ज़िम्मेदार हैं। हम कम्युनिस्टों की शिक्षा में ढील बरतने के लिए आपको भी सज़ा देंगे। आपने कामरेड सेगिज़बायेव को यह मामला ब्यूरो के सामने न रखने के लिए मनाने की कोशिश क्यों की? आप इसे दबाना चाहते थे? बड़ी शर्म की बात है! बैठिये!"

बहस शुरू हो गयी। मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के निदेशक और ज़िले के समाचारपत्र के सम्पादक ने केरीमबेकोव का समर्थन किया। कुछ क्षणों के लिए तो ऐसा भी लगा कि वे तानाबाय को बचा लेंगे। लेकिन तानाबाय स्वयं इतना चकरा गया था और इतना हताश हो गया था कि उसे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। वह बार बार ख़ुद से यही सवाल कर रहा था, "वह सब कहाँ गया जिसके लिए मैं जी रहा था? यहाँ तो किसी को भी इस बात से मतलब ही नहीं दिखता कि भेड़ों और घोड़ों को किन हालात में रहना होता है। मैं भी कितना बेवक़ूफ़ हूँ! मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी सामूहिक फ़ार्म, भेड़ों और मेमनों के लिए गंवा दी। अब कोई इस पर ध्यान नहीं दे रहा है। अब मैं एक ख़तरनाक आदमी माना जाने लगा हूँ। भाड़ में जायें! मेरे साथ तुम्हारे जो मन में आये करो। अगर इससे कुछ फ़ायदा होता है, तो मुझे अफ़सोस नहीं होगा। मुझे ठोकर मारकर निकाल दो। मेरा अब कोई ठिकाना नहीं रहा, करो मेरी आलोचना, रहम मत करो..."

सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष अलदानोव ने बोलना शुरू किया। तानाबाय उसकी मुख-मुद्रा और चेष्टाओं से समझ रहा था कि वह किसी की कटु आलोचना कर रहा है, लेकिन किस की, यह उसकी समझ में तभी आया जब उसने "बेड़ियाँ... क़दमबाज़ गुलसारी" जैसे शब्द सुने।

"आपका क्या ख़याल है?" अलदानोव ने ग़ुस्से में कहा। "उसने खुले आम सिर्फ़ इसलिए मेरा सिर फोड़ने की धमकी दी कि हमें एक घोड़े के पैरों में बेड़ियाँ डालने को मजबूर होना पड़ा था। कामरेड काशकातायेव, ब्यूरो के सदस्यो, मैं सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष के नाते आप लोगों से प्रार्थना करता हूँ कि आप बकासोव से हमें छुटकारा दिला दें। इसे वास्तव में जेल में ही होना चाहिए। इसे सारे पदाधिकारियों से नफ़रत है। कामरेड काशकातायेव, बाहर वे गवाह मौजूद हैं, जो बकासोव की मुझे दी गयी धमकी की पुष्टि कर सकते हैं। क्या मुझे उन्हें यहाँ बुलाने की इजाज़त है?"

"नहीं, इसकी कोई आवश्यकता नहीं है," काशकातायेव ने घृणा प्रकट करते हुए कहा। "इसके लिए आपका बयान ही काफ़ी है। बैठिये।"

इसके बाद मतदान आरम्भ हुआ।

"कामरेड बकासोव को पार्टी से निष्कासित करने का प्रस्ताव मतदान के लिए आपके समक्ष रखा जा रहा है। जो इसके पक्ष में हैं..."

"एक मिनट, कामरेड काशकातायेव," केरीमबेकोव फिर फ़ुर्ती से उठ खड़ा हुआ। "ब्यूरो के माननीय सदस्यो, कहीं हम गम्भीर ग़लती तो करने नहीं जा रहे हैं? मैं एक अन्य प्रस्ताव रखता हूँ – बकासोव को लिखित चेतावनी दी जाये। इसके साथ साथ ब्यूरो के सदस्य सेगिज़बायेव की भी कम्युनिस्ट बकासोव का अपमान करने और ज़िला समिति के प्रतिनिधि की हैसियत से कार्य करने का अनुचित तरीक़ा अपनाने के लिए भर्त्सना की जाये।"

"यह क्या नेतागीरी है!" सेगिज़बायेव चिल्लाया।

"शान्ति रखिये, कामरेडो," काशकातायेव ने कहा। "आप लोग ज़िला समिति के ब्यूरो में बैठे हैं, न कि अपने घर में। कृपया अनुशासन का पालन कीजिये।" अब सब कुछ ज़िला समिति के प्रथम सचिव पर निर्भर करता था। और उसने बिलकुल वैसा ही किया जैसा कि सेगिज़बायेव ने सोचा था। "मैं बकासोव के विरुद्ध अदालती कार्रवाई करना आवश्यक नहीं समझता," उसने कहा, "लेकिन निस्सन्देह उसके लिए पार्टी में कोई स्थान नहीं रहा, कामरेड सेगिज़बायेव बिलकुल ठीक कहते हैं।

अब हम इस पर मतदान करेंगे। बकासोव के निष्कासन के पक्ष में कौन कौन हैं ?"

"ब्यूरो के सात सदस्य थे। तीन ने निष्कासन के पक्ष में मत दिये और बाक़ी तीन ने—विरुद्ध। निर्णायक मत काशकातायेव को देना था। उसने कुछ क्षण रुककर प्रस्ताव के पक्ष में वोट दिया। तानाबाय ने यह दृश्य बिलकुल नहीं देखा। उसे अपने भाग्य का निर्णय तभी मालूम पड़ा, जब काशकातायेव को अपनी सेक्रेटरी से यह कहते सुना,

"कार्यवृत्त में लिखिये: पार्टी की जिला समिति के ब्यूरो के निर्णयानुसार कामरेड बकासोव को पार्टी से निष्कासित किया जाता है।"

"खेल ख़त्म हो गया!" तानाबाय ने मन ही मन कहा और जड़वत् हो गया।

"मैं सेगिज़बायेव की भर्त्सना किये जाने का आग्रह करता हूँ," केरीमबेकोव हार मानने को तैयार न था।

इस प्रस्ताव को मतदान के लिए रखना आवश्यक नहीं था, इसे अस्वीकार किया जा सकता था, लेकिन काशकातायेव ने उस पर मतदान करने का निर्णय लिया। इसका भी एक गुप्त कारण था।

"केरीमबेकोव के प्रस्ताव के पक्ष में कौन कौन हैं? कृपया हाथ खड़े कीजिये!"

इस बार भी तीन प्रस्ताव के पक्ष में थे और तीन विरोध में, और काशकातायेव ने फिर चौथा निर्णायक मत देकर सेगिज़बायेव को भर्त्सना से बचा लिया। "क्या पता यह मेरे उपकार का महत्व समझेगा या नहीं? कौन जाने... यह है बड़ा चालाक और विश्वासघाती..."

लोग चलने की तैयारी में कुर्सियाँ खिसकाकर खड़े होने लगे। तानाबाय समझ गया कि बैठक ख़त्म हो चुकी है और वह उठकर बिना किसी की ओर देखे चुपचाप दरवाज़े की ओर बढ़ा।

"आप कहां जा रहे हैं, बकासोव?" काशकातायेव ने उसे रोक लिया। "आप अपना पार्टी-कार्ड हमारे हवाले कर दीजिये।"

"क्या?" तानाबाय को अब सारी कार्रवाई का अर्थ समझ में आया।

"हाँ। अपना कार्ड मेज़ पर रख दीजिये। अब आप पार्टी के सदस्य नहीं हैं और आपको पार्टी-कार्ड रखने का कोई अधिकार नहीं है..."

तानाबाय कार्ड निकालने लगा। उसे वहाँ छायी चुप्पी में कार्ड निकालने में काफ़ी देर लगी। उसका कार्ड कोट के नीचे जयदार की सिली चमड़े की थैली में था जिसे वह पट्टी से बांधकर कंधे पर पहने रहता था। अन्त

में उसने सीने की गर्मी से गर्म और शरीर की गंध से महकता पार्टी-कार्ड निकालकर काशकातायेव की ठण्डी और चमचमाती मेज़ पर रख दिया। वह सिहर उठा, उसे ठण्ड लगने लगी थी। वह फिर बिना किसी की ओर देखे थैली कोट के नीचे डालने लगा और जाने की तैयारी करने लगा।

"कामरेड बकासोव," उसे पीछे से केरीमबेकोव का सहानुभूतिपूर्ण स्वर सुनाई दिया। "क्या आपको कुछ नहीं कहना है? आपने तो यहाँ एक शब्द भी नहीं कहा। आपको बहुत मुसीबतें उठानी पड़ी होंगी? हमें आशा है कि आपके लिए पार्टी का दरवाज़ा खुला रहेगा और आप देर-सवेर पार्टी में वापस शामिल हो जायेंगे। अब आप अपने मन की बात बताइये।"

तानाबाय दुखित मन से शशोपंज की हालत में इस अपरिचित युवक की ओर मुड़ा जो अभी तक उस पर टूटी मुसीबत का दुःख कम करने की कोशिश कर रहा था।

"अब मुझे कहने को रह ही क्या गया है?" उसने उदासी से कहा। "यहाँ सबके मुंह बन्द करना तो मुश्किल है। मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि मैंने भले ही उस पर हाथ उठाया था, उस को गाली दी थी, पर मैं बिलकुल बेक़सूर हूँ। लेकिन मैं यह आपको समझा नहीं सकता। मुझे बस इतना ही कहना था।"

बड़ी कष्टकर चुप्पी छा गयी।

"हूँ। यानी तुम पार्टी से नाराज़ हो?" काशकातायेव ने खीजते हुए कहा। "बड़ा आया। पार्टी ने तुम्हें सच्चा रास्ता दिखाया है, तुम्हें जेल जाने से बचाया है और फिर भी तुम असंतुष्ट हो, नाराज़ हो रहे हो! इस का मतलब है कि तुम वास्तव में पार्टी के सदस्य कहलाने योग्य नहीं हो। मुझे तो शक है कि पार्टी का दरवाज़ा तुम्हारे लिए खुला रहेगा!"

तानाबाय ज़िला समिति से बाह्य रूप से शान्त मुख-मुद्रा में निकला। अत्यन्त शान्त मुख-मुद्रा में। और यह बहुत बुरा था। गर्मी थी, धूप खिली थी, शाम होनेवाली थी। लोग अपने अपने कामों से जा रहे थे। बच्चे क्लब के सामने के चौक में खल रहे थे। उसके लिए चारों ओर देखना दूभर हो गया और स्वयं से भी नफ़रत होने लगी। उसे इच्छा हुई कि वह यहाँ से जल्दी से जल्दी पहाड़ों में अपने घर पहुँच जाये। कहीं उसके साथ कुछ और बुरा न हो जाये।

उसके घोड़े के साथ गुलसारी भी खूंटे से बंधा खड़ा था। वह बड़ा

श्रौर तगड़ा था। तानाबाय जब उसके पास पहुँचा, तो उसने अपना पैर बदला और उसकी ओर अपनी शान्त व विश्वासभरी काली आँखों से देखा। क़दमबाज़ यह भूल चुका था कि तानाबाय ने कभी उसके सिर में कांटे से मारा था। आख़िर वह एक घोड़ा ही तो था।

"मुझे माफ़ कर दे, गुलसारी, नाराज़ मत हो," तानाबाय फुसफुसाया। "मुझ पर तो भारी मुसीबत टूट पड़ी है। बहुत भारी," वह घोड़े की गर्दन में बाँहें डालकर सिसकियाँ भरने लगा, पर उसे राहगीरों के सामने रोने में शर्म महसूस हुई और उसने अपने आप पर नियंत्रण किया।

वह अपने घोड़े पर सवार होकर घर के लिए रवाना हो गया।

अलेक्सांद्रोवका की चढ़ाई पार करने के बाद चोरो उसके पास आ पहुँचा। पीछे से क़दमबाज़ की परिचित टापों की आवाज़ सुनते ही तानाबाय ने अपने होंठ भींच लिये और भौंहें सिकोड़ लीं। उसने मुड़कर भी नहीं देखा। अपमान के कारण उसका मन उचट गया था, आँखों के आगे अंधेरा छा गया था। अब चोरो उसके लिए पहलेवाला चोरो नहीं रह गया था। आज भी काशकातायेव के ज़ोर से बोलते ही वह अनुशासित स्कूली लड़के की तरह चुपचाप अपनी कुर्सी पर बैठ गया। आगे क्या होगा? लोग उस पर विश्वास करते हैं, लेकिन वह सच्ची बात कहते डरता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखता है, नपे-तुले शब्द मुंह से निकालता है। उसे यह सब किसने सिखाया है? तानाबाय तो एक गंवार और सीधा-सादा मेहनती आदमी है, पर चोरो तो पढ़ा-लिखा है, सब समझता है, सारी ज़िन्दगी ऊँचे पदों पर काम करता रहा है। क्या चोरो ख़ुद नहीं देखता कि सब वैसा नहीं है जैसा कि ये सेगिज़बायेव और काशकातायेव बताते हैं! उनकी बातें तो ऊपर से ही अच्छी लगती हैं और वास्तव में थोथी और सफ़ेद झूठ होती हैं। वह किस को धोखा दे रहा है और किस लिए?

तानाबाय ने तब भी मुड़कर नहीं देखा, जब चोरो उत्तेजित क़दमबाज़ की लगाम खींचकर उसके साथ साथ चलने लगा।

"तानाबाय, मैंने तो सोचा था कि हम साथ निकलेंगे," उसने हांफते हुए कहा। "लेकिन जब मैं बाहर निकला, तो तुम जा चुके थे..."

"तुम्हें क्या चाहिए?" तानाबाय ने उसी तरह उसकी ओर देखे बिना कहा। "तुम अपने रास्ते जाओ।"

"मुझे तुमसे बात करनी है। ऐसे मुंह मत मोड़ो, तानाबाय। आओ हम पुराने दोस्तों, कम्युनिस्टों की तरह बात करें," चोरो ने कहा और अपनी ज़बान काट ली।

"मैं तुम्हारा दोस्त नहीं हूँ और अब कम्युनिस्ट भी नहीं हूँ। और तुम भी न जाने कब से कम्युनिस्ट नहीं हो। तुम सिर्फ़ कम्युनिस्ट होने का दिखावा करते हो..."

"तुम मज़ाक़ तो नहीं कर रहे हो?" चोरो ने हताश होकर पूछा।

"नहीं। मुझे अभी तक नपी-तुली बातें करना नहीं आया है। मैं यह भी नहीं जानता कि क्या, कहाँ और कैसे कहना चाहिए। अच्छा, अलविदा! तुम्हें सीधे जाना है और मुझे यहाँ मुड़ना है।" तानाबाय ने अपना घोड़ा मोड़ा और एक बार भी अपने दोस्त से नज़र मिलाये बिना खेत में से होकर सीधा पहाड़ की ओर चला गया।

उसने नहीं देखा कि कैसे चोरो के चेहरे पर मुर्दनी छा गयी, उसने कैसे हाथ उठाकर उसे रोकने की कोशिश की और फिर एकाएक सीना पकड़कर पीड़ा से तड़पता, हांफ़ता क़दमबाज़ की गर्दन पर ढुलक गया।

"उफ़! मेरी हालत ख़राब है," चोरो हृदय में हो रही असह्य पीड़ा से छटपटाता हुआ कराहा। "उफ़! मेरी हालत ख़राब है!" वह नीला पड़कर कराहा। "मुझे फ़ौरन घर ले चल, गुलसारी, फ़ौरन।"

क़दमबाज़ बड़ी तेज़ी से सुनसान और अंधेरी स्तेपी से होकर उसके गांव की ओर दौड़ रहा था। घोड़ा आदमी की आवाज़ से डर गया, उसकी आवाज़ उसे भयावह और दिल दहला देनेवाली लगी। गुलसारी ने अपने कान दबा लिये और डरकर फुफकारता हुआ भागने लगा। और सवार दर्द के मारे छटपटा रहा था, तड़प रहा था। उसने अपने हाथों से और दांतों से घोड़े की अयाल को कसकर पकड़ रखा था। भागते हुए गुलसारी की लगाम इधर-उधर लटक रही थी।

बीस

उस रात जब तानाबाय अभी अपने पहाड़ों के रास्ते में ही था, एक घुड़सवार गांव की गलियों में सरपट घोड़ा दौड़ा रहा था, हड़बड़ाये कुत्ते उसके पीछे-पीछे भौंकते भाग रहे थे।

"घर में कोई है? बाहर आइये!" वह हर घर के दरवाज़े पर आवाज़ दे रहा था। "दफ़्तर में पार्टी की मीटिंग हो रही है, चलिये।"

"क्या हुआ? इसी वक़्त मीटिंग करने की क्या ज़रूरत आ पड़ी?"

"मैं नहीं जानता," सन्देशवाहक जवाब में कह रहा था। "चोरो ने आप लोगों को जल्दी से जल्दी पहुंचने के लिए कहा है।"

चोरो ख़ुद उस समय सामूहिक फ़ार्म के दफ्तर में बैठा था। वह हांफता हुआ मेज़ पर कंधा टिकाये झुका और क़मीज़ के अन्दर हाथ डाले कसकर सीना दबाये हुए बैठा था। वह दर्द के मारे कराह रहा था और अपने होंठ काट रहा था। उसके पीले चेहरे पर ठण्डे पसीने की बूंदें छलछला आयी थीं और आँखें गढ़ों में धंस गयी थीं। उसे बीच-बीच में झपकी आ रही थी और फिर ऐसा लगने लगता था जैसे क़दमबाज़ उसे अंधेरी स्तेपी में भगाये लिये जा रहा है, वह तानाबाय को आवाज़ देना चाहता है; लेकिन वह उसे दहकते अंगारों से शब्द कहकर चला जा रहा है और मुड़-कर भी नहीं देख रहा है। तानाबाय के शब्दों से उसका दिल जल रहा है...

लोग पार्टी-संगठनकर्त्ता को दोनों तरफ़ से कंधा देकर अस्तबल से दफ्तर में लाये थे। वह अस्तबल में कुछ देर पुआल के ढेर पर लेटा रहा था। साईस उसे घर ले जाना चाहते थे, पर वह नहीं माना। उसने गांव के सारे कम्युनिस्टों को बुलवाने के लिए एक आदमी को भेजा था और अब बड़ी अधीरता से उनके आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

चौकीदारनी दफ्तर में चिराग़ जलाकर, चोरो को अकेला छोड़ दूसरे कमरे में चल्हा सुलगा रही थी और बीच-बीच में अधखुले दरवाज़े में झांक-कर सिर हिलाती हुई ठण्डी सासें ले रही थी।

चोरो अपने साथियों की प्रतीक्षा कर रहा था। समय पल पल करके बीतता जा रहा था। उसकी ज़िन्दगी का बचा समय हर दुःखदायी पल के साथ समाप्त होता जा रहा था। उसकी क़ीमत उसे अब मालूम हुई। उसके जीवन के दिन और वर्ष परिश्रम व चिन्ताओं में इतनी जल्दी बीत गये कि उसे उनका ध्यान ही नहीं रहा। जीवन में उसे असफलताएँ भी मिलीं, बहुत कुछ उसकी इच्छा के विपरीत हुआ। उसने कड़ा संघर्ष कि-या, कुछ मामलों में उसे कठिन मार्ग छोड़कर सरल मार्ग चुनने के लिए पीछे भी हटना पड़ा। फिर भी जिस शक्ति से वह हमेशा कतराता रहा था, उसने अब उसे पूरी तरह घेर लिया था, पीछे हटने का कोई रास्ता

नहीं रहा था, संघर्ष का अन्त निकट था। काश, वह कुछ समय पहले चेत जाता, कुछ समय पहले जीवन से आँखें बराबर करता!..

और समय पल पल करके शोर करता बीता जा रहा था। लोग कित-नी देर लगा रहे हैं! और इन्तज़ार करना दूभर होता जा रहा है!

"काश, मुझे मौक़ा मिल जाये!" आशंकित चोरो सोच रहा था। "काश, मैं उन्हें सब कुछ बता सकूं!" वह मौत की घड़ी को टालने के लिए निःशब्द और निराशापूर्ण स्वर में चीखा। वह अन्तिम संघर्ष के लिए कलेजा थामकर तैयार हो गया। "मैं उन्हें सब बता दूंगा कि वास्तव में यह कैसे हुआ, ब्यूरो की मीटिंग में क्या क्या हुआ और तानाबाय को पार्टी से कैसे निष्कासित किया गया। उन्हें यह मालूम हो जाना चाहिए कि मैं ब्यूरो के इस निर्णय से सहमत नहीं था। मैं तानाबाय को पार्टी से निष्कासित करने के पक्ष में नहीं हूँ। मैं उन्हें अलदानोव के बारे में अपनी राय बता दूंगा। मेरे बाद वे चाहें, तो उसकी बात भी सुन लें। फिर कम्युनिस्ट फ़ैसला करें। मैं अपने बारे में, मैं जैसा भी हूँ, सब बता दूंगा। हमारे सामूहिक फ़ार्म और लोगों के बारे में बता दूंगा... काश मुझे मौक़ा मिल जाये! बस लोग जल्दी से आ जायें!.."

सबसे पहले उसकी पत्नी दवाई लिये भागी आयी। उसकी हालत देखकर डर गयी, रोने-बिलखने लगी,

"तुम क्या पागल हुए हो? क्या अब भी इन मीटिंगों से तुम्हारा मन नहीं भरा? चलो, घर चलें। ज़रा अपनी हालत तो देखो। हाय अल्लाह, कम-से-कम कुछ अपना ही ख़्याल करो!"

चोरो उसकी बात मानने को तैयार नहीं हुआ। उसने दवाई पीते पीते से परे रहने का इशारा किया। उसके दांत गिलास पर बज उठे, कुछ पानी उसके सीने पर ढुल गया।

"कुछ नहीं हुआ, मेरी तबीयत अब ठीक है," उसने ठीक से सांस लेने की कोशिश करते हुए कहा। "तुम बाहर कुछ देर मेरा इन्तज़ार करो, फिर मुझे ले चलना। घबराओ मत, जाओ।"

और जब चोरो ने बाहर से लोगों के क़दमों की आहट सुनी, तो वह अपने दर्द को दबाकर, अपनी सारी शक्ति जुटाकर, जिस कार्य को वह अपना अन्तिम कर्त्तव्य समझता था, उसे पूरा करने के लिए मेज़ पर तनकर बैठ गया।

"क्या हुआ? तुम्हें क्या हुआ, चोरो?" लोग पूछने लगे।

"कुछ नहीं, सब लोग आ जायें, तब बताऊँगा," चोरो ने जवाब दिया। और समय पल पल करके शोर करता बीता जा रहा था।

जब सारे कम्युनिस्ट एकत्रित हो गये, तो पार्टी-संगठनकर्त्ता चोरो सया-कोव उठ खड़ा हुआ और उसने अपनी टोपी सिर से उतारकर पार्टी-मीटिंग की कार्रवाई आरम्भ करने की घोषणा की...

इक्कीस

तानाबाय रात गये घर लौटा। जयदार लालटेन लिये बाहर आयी। बाट जोहते जोहते उसकी आँखें पथरा गयीं।

वह पहली दृष्टि में ही समझ गयी कि उसके पति पर कैसी विपत्ति आ पड़ी है। वह बिना कुछ बोले घोड़े की लगाम और काठी खोलने लगा। जयदार उसे रोशनी दिखा रही थी, लेकिन उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। "ज़िले में शराब पीकर आता, तो कम-से-कम इसके दिल को तो कुछ राहत मिलती," उसने अपने मन में सोचा। लेकिन वह मौन था और उसके मौन से वह भयभीत हो उठी थी। वह तो उसे खुश-ख़बरी सुनाना चाहती थी कि उनके यहाँ कुछ चारा, पुआल और जौ का आटा भेजा गया है, मौसम कुछ गरम हो चला है और मेमने भी अब घास चरने लगे हैं।

"एक नया चरवाहा भेजा गया है। वह बेकताय का रेवड़ ले गया," उसने कहा।

"भाड़ में जायें बेकताय, उसका रेवड़ और तुम्हारा वह चरवाहा..."

"क्या बहुत थक गये हो?"

"थकूंगा क्यों? मुझे पार्टी से निकाल दिया गया!"

"ज़रा धीरे बोलो, वे औरतें सुन लेंगी।"

"क्यों धीरे बोलूं? क्यों छिपाऊँ? मुझे कुत्ते की तरह दुतकारकर निकाल दिया गया। मैं था ही इसी लायक़ और तुम भी। यह तो कम ही है। अब खड़ी क्यों हो? क्या देख रही हो?"

"जाओ, कुछ सुस्ता लो।"

"यह तो मैं खुद भी जानता हूँ।"

तानाबाय ने शेड में जाकर भेड़ों को देखा। फिर बाड़े में गया और थोड़ी देर अंधेरे में भटकने के बाद फिर शेड में लौट आया। उसे बिलकुल भी चैन नहीं था। उसने खाने से भी इनकार कर दिया और बात करने को भी तैयार नहीं हुआ। वह कोने में लगे पुआल के ढेर पर गिर पड़ा और निश्चल लेटा रहा। अब उसके जीवन, चिन्ताओं, आशंकाओं का कोई महत्व नहीं रह गया था। उसे किसी चीज़ में रुचि नहीं रही। अब वह न जीना चाहता था, न कुछ सोचना चाहता था और न ही कुछ देखना चाहता था।

वह करवटें बदलता हुआ सोने और सब कुछ भूलने की कोशिश कर रहा था, लेकिन आख़िर अपने आप से बचकर कहाँ जा सकता था? उसे फिर जाता हुआ बेकताय, उसके पीछे-पीछे सफ़ेद बर्फ़ पर पड़ते पैरों के काले निशान याद हो आये। वह कैसे उसको कुछ जवाब न दे पाया, यह भी स्मरण हो आया। उसकी आँखों के आगे क़दमबाज़ पर सवार सेगिज़बायेव के उसको डांटने-फटकारने, चिल्ला-चिल्लाकर गालियाँ देने, जेल में बन्द करने की धमकी देने का दृश्य घूम गया, फिर पार्टी की ज़िला समिति के ब्यूरो की बैठक में अन्तर्ध्वंसक और जनता के शत्रु के रूप में उसका सामने आना स्मरण हो आया, यहीं सब कुछ ख़त्म हो गया, उसकी सारी ज़िन्दगी बरबाद हो गयी। उसे फिर इच्छा हुई कि वह रात में कांटा उठाकर चिल्लाता हुआ तब तक भागता रहे जब तक कि खड्ड में गिरकर उसकी गर्दन न टूट जाये।

वह सोते-सोते यही सोच रहा था कि इस तरह की ज़िन्दगी से तो मरना बेहतर है। हाँ, हाँ इससे तो मरना बेहतर है!...

उसकी नीन्द खुली, तो उसका सिर बुरी तरह दुख रहा था। कुछ मिनट तक तो वह यह भी न समझ पाया कि वह कहाँ है और उसे क्या हुआ है। उसके आस-पास भेड़ें खांस रही थीं, मेमने मिमिया रहे थे। यानी वह शेड में था। दिन निकल रहा था। वह क्यों जागा? किस लिए? उसकी नीन्द कभी न खुलती, तो अच्छा होता। अब उसे मरने के सिवा कुछ करना बाक़ी नहीं रह गया। उसे आत्म-हत्या कर लेनी चाहिए...

...फिर वह अंजलियों में भर-भरकर नदी का पानी पी रहा था। पानी बहुत ठण्डा था, उस पर बर्फ़ के पतले-पतले टुकड़े तैर रहे थे। पानी छलछल करता उसकी कांपती उंगलियों के बीच से बह रहा था और वह उसे अंजलियाँ भर-भरकर पिये जा रहा था। कुछ देर सुस्ताने के बाद उसे जब होश आया, तब उसे आत्म-हत्या की सारी निरर्थकता और मूर्खता समझ में आयी। भला वह उस जीवन को कैसे समाप्त कर सकता है जो मनुष्य को केवल एक बार मिलता है? ! भला ये सेगिज़बायेव जैसे लोग इस लायक़ हैं कि इनके कारण कोई अपनी जान दे? नहीं, तानाबाय जियेगा, वह अभी न जाने कितने पहाड़ उठायेगा!

उसने घर लौटकर अपनी बन्दूक और कारतूसपेटी छिपा दी और पूरे दिन खूब डटकर काम किया। उसका मन कर रहा था कि वह अपनी पत्नी, बेटियों और मददगार औरतों के साथ और अधिक प्रेमपूर्ण व्यवहार करे, पर उन्हें कहीं कुछ सन्देह न होने लगे, इसलिए उसने अपने आप पर नियंत्रण रखा। वे आम दिनों की तरह काम कर रही थीं मानो कोई विशेष बात नहीं हुई हो, सब ठीक हो। तानाबाय इसके लिए उनका कृतज्ञ था और वह चुपचाप काम करता रहा। वह चरागाह गया और उसने रेवड़ को हांककर लाने में उनकी मदद की।

शाम होते होते मौसम बिगड़ गया। वर्षा या हिम पात के आसार दिखाई पड़ रहे थे। चारों ओर पहाड़ियों पर कोहरा छा गया, आसमान में काले बादल घिर आये। उन्हें फिर मेमनों को ठण्ड से बचाने के बारे में सोचना पड़ा। जानवर मरने न लगें, इसलिए एक बार फिर शेड साफ़ करके पुआल फैलाना था। तानाबाय उदास हो उठा, लेकिन जो उसके साथ हुआ था, उसे भूलने और हिम्मत न हारने की कोशिश करने लगा।

उनके अहाते में एक घुड़सवार आया, तब तक अंधेरा हो चुका था। जयदार उससे मिलने बाहर निकली। उनमें कुछ बातें हुईं। उस समय तानाबाय शेड में काम कर रहा था।

"एक मिनट के लिए बाहर आना," उसकी पत्नी ने आवाज़ दी। "कोई तुमसे मिलने आया है।" वह उसकी आवाज़ से ही समझ गया कि दाल में कुछ काला है।

तानाबाय ने बाहर निकलकर आगंतुक से दुआ-सलाम किया। वह पड़ोस में रहनेवाला चरवाहा था।

"अच्छा, तुम हो, ऐतबाय! घोड़े से उतर आओ। कहाँ से आ रहे हो?"

"मैं अपने काम से गांव गया था, वहीं से आ रहा हूँ। उन लोगों ने कहलाया है कि चोरो सख़्त बीमार है। तुम्हें वहाँ जाना है।"

"फिर चोरो!" उसका घाव फिर हरा हो गया। उससे मिलने की कोई इच्छा नहीं थी।

"मैं क्या डाक्टर हूँ? वह तो हमेशा बीमार रहता है। मेरा तो वैसे ही काम के मारे नाक में दम है। फिर मौसम बिगड़ गया है।"

"तुम्हारी मर्ज़ी। जाना न जाना तुम्हारे हाथ में है, तानाबाय। मैंने तो जो मुझसे कहा गया था, वह तुम्हें बता दिया है। अच्छा, मैं चलता हूँ, रात होनेवाली है।"

ऐतबाय ने घोड़े को एड़ लगायी, पर उसे फिर रोक लिया।

"फिर भी तुम सोच लेना, तानाबाय। उसकी तबीयत बहुत ख़राब है। उसने बेटे को भी संस्थान से बुलवा लिया है। पड़ोसी उसे लिवाने स्टेशन गये हैं।"

"ख़बर देने के लिए शुक्रिया। लेकिन मैं नहीं जाऊँगा।"

"जायेंगे," जयदार को शर्म महसूस हुई। "आप फ़िक्र न कीजिये, वह जायेंगे।"

तानाबाय चुप हो गया और जब ऐतबाय अहाते से निकल गया, तो वह पत्नी पर खीजा,

"तुम मेरी जगह जवाब देने की यह आदत छोड़ दो। मैं ख़ुद भी सब जानता हूँ। अगर मैं कहता हूँ कि नहीं जाऊँगा, तो इसका मतलब है — नहीं जाऊँगा।"

"ज़रा सोचो तो सही, तानाबाय, तुम क्या कह रहे हो!"

"मुझे सोचने की कोई ज़रूरत नहीं। बहुत हो चुका। सोचते-सोचते मुझे पार्टी से निकाल दिया गया। मेरा अब कोई नहीं है। अगर मैं बीमार भी पड़ जाऊँ, तो मुझे देखने कोई न आये। मैं अकेला ही मरूँगा!" वह हाथ झटककर शेड में चला गया।

लेकिन उसके दिल को चैन नहीं आया। ब्याती भेड़ों को संभालते, उनके मेमनों को उठाकर कोने में रखते, मिमियाती भेड़ों को चुप कराते और कोसते वह बराबर बड़बड़ाता रहा,

"अगर उसने पहले ही यह नौकरी छोड़ दी होती, तो इतना परेशान न हुआ होता। सारी ज़िन्दगी बीमार रहता है, हर वक़्त कराहता रहता है, दिल थामे रहता है, लेकिन सारे दिन घोड़े से उतरने का नाम नहीं लेता है। बड़ा आया है अफ़सर की तरह रोब जमानेवाला! रोब जमाता है, अब मैं तुम्हारी सूरत भी नहीं देखना चाहता। चाहे तुम बुरा मानो या भला, लेकिन मैं भी तुम से नाराज़ हूँ। किसी को भी इसकी परवाह नहीं..."

रात हो चुकी थी। हल्का हिमपात हो रहा था। चारों ओर इतना गहरा सन्नाटा छाया था कि सरसराते हिमलवों के रह-रहकर ज़मीन पर गिरने की आवाज़ तक सुनाई दे रही थी।

तानाबाय पत्नी से बात न करने के इरादे से तम्बू में नहीं गया, न ही वह उसके पास आयी। "बैठी रहो," वह सोच रहा था। "तुम मुझे जाने को मजबूर नहीं कर सकतीं। मुझे अब किसी की परवाह नहीं है। चोरो अब मेरा दोस्त नहीं रहा। उसे अपने रास्ते जाना है और मुझे अपने रास्ते। कभी हम दोस्त थे, लेकिन अब वह बात नहीं रही। अगर मैं उसका दोस्त हूँ, तो अब तक वह कहाँ था? नहीं, अब मुझे किसी की परवाह नहीं है..."

आख़िर जयदार उसके पास आयी। वह उसके लिए बरसाती, नये जूते, पेटी, दस्ताने और टोपी लेकर आयी थी, जो वह ख़ास मौक़ों पर पहना करता था।

"ये पहन लो," उसने कहा।

"तुम बेकार मुझे मनाने की कोशिश कर रही हो। मैं कहीं नहीं जानेवाला।"

"तुम वक़्त बरबाद मत करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम फिर सारी ज़िन्दगी पछताते रहो।"

"मैं कभी नहीं पछताऊँगा। उसे कुछ नहीं होनेवाला। बस, कुछ दिन बिस्तर में पड़ा रहेगा। यह कोई पहली बार थोड़े ही हुआ है उसके साथ।"

"तानाबाय, मैंने कभी तुमसे कुछ नहीं मांगा। लेकिन अब मांगती हूँ। तुम अपने सारे दुःख-दर्द मुझे दे दो। जाओ। इनसान की तरह पेश आओ।"

"नहीं।" तानाबाय ने हठपूर्वक सिर हिलाया। "नहीं जाऊँगा। मुझे अब किसी की परवाह नहीं है। तुम तो सिर्फ़ शिष्टाचार और फ़र्ज़ की ही सोचती हो। लोग क्या कहेंगे? मुझे अब इन बातों से कोई मतलब नहीं रहा।"

"होश में आओ, तानाबाय। मैं ज़रा तम्बू में जाकर चूल्हा संभालती हूं, कहीं अंगारे नमदे पर न गिर जायें।"

वह उसके कपड़े रखकर चली गयी, लेकिन तानाबाय अपनी जगह से नहीं हिला। वह कोने में बैठा रहा। न वह अपने आप पर क़ाबू कर पा रहा था, न ही उन शब्दों को भूल पा रहा था, जो उसने चोरो से कहे थे। और अब वह उसके पास जाकर कहे, "सलाम, तुम्हारी तबीयत पूछने आया हूँ, कैसे हो? कुछ काम हो, बताओ।" नहीं, वह ऐसा नहीं कर सकता, यह उसके लिए असम्भव है।

जयदार ने फिर आकर पूछा,

"तुमने अभी कपड़े नहीं बदले?"

"मुझे परेशान मत करो। मैंने कह तो दिया—नहीं जाऊँगा..."

"उठो!" वह गुस्से में चिल्लायी। वह तुरन्त एक सैनिक की तरह आदेश का पालन करके उठ खड़ा हुआ। वह लालटेन की मद्धम रोशनी में उसकी तरफ़ बढ़ी, उसकी आँखों में पीड़ा और रोष झलक रहे थे। "अगर तुम मर्द नहीं हो, इनसान नहीं हो, बल्कि लार गिराती बुढ़िया हो, तो तुम्हारी जगह मैं जाती हूँ और तुम यहाँ बैठे रोते रहो! मैं अभी जाती हूँ। जाओ फ़ौरन घोड़े पर ज़ीन कसो!"

उसकी आज्ञा का पालन करते हुए वह घोड़े पर ज़ीन कसने चल दिया। बाहर हलका हिम-पात हो रहा था। अंधेरा गहरे भंवर में चक्कर काटते पानी के समान चारों ओर निःशब्द मन्थर गति से घूम रहा था। अंधकार के कारण पहाड़ भी दिखाई नहीं दे रहे थे। "एक और मुसीबत आ पड़ी: अंधेरी रात में वह अकेली कहाँ जायेगी?" घोड़े पर ज़ीन कसते हुए वह सोच रहा था। "उसे मनाना भी मुश्किल है। नहीं, किसी हालत में नहीं मानेगी। चाहे जान से मार दो तो भी। और अगर रास्ता भूल गयी तो? तब इसके लिए वह ख़ुद ही ज़िम्मेदार होगी..."

घोड़े पर ज़ीन कसते कसते तानाबाय को ख़ुद पर शर्म आने लगी। "मैं आदमी नहीं, जानवर हूँ। मैं गुस्से के मारे पागल ही हो गया।

मैं सबको दिखाने लगा, देखो मैं कितना अभागा और दुःखी हू! मैंने अपनी पत्नी को भी सताया। उसका इससे क्या लेना-देना? मैं उसे क्यों सता रहा हूँ? इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। मैं निकम्मा हूँ। आदमी नहीं जानवर हूँ।"

तानाबाय हिचकिचा रहा था। अपनी कही बात को वापस लेना आसान नहीं होता। वह भौंहें चढ़ाये और आँखें झुकाये वापस गया।

"काठी कस दी?"

"हाँ।"

"तो फिर जाने की तैयारी करो," जयदार ने उसे कपड़े थमा दिये।

तानाबाय चुपचाप कपड़े बदलने लगा। उसे इस बात की ख़ुशी थी कि पत्नी ने उससे पहले मेल किया। फिर भी रोब जमाने के लिए बोला, "अगर सुबह जाऊँ, तो कैसा रहे?"

"नहीं, अभी जाओ। फ़िर देर हो जायेगी।"

पहाड़ों में रात धीरे-धीरे बीतती जा रही थी। वसन्त के अन्तिम हिम-पात के बड़े-बड़े हिमलव मंथर गति से ज़मीन पर गिर रहे थे। तानाबाय अपने परित्यक्त मित्र की पुकार सुन अपने घोड़े पर अकेला अंधेरी ढलानों से उतर रहा था। हिम-लव उसके सिर, कंधों, दाढ़ी और हाथों पर चिपक रहे थे। तानाबाय काठी पर जड़वत् बैठा था और बर्फ़ को झाड़ नहीं रहा था। इस स्थिति में उसे सोच-विचार करना अच्छा लग रहा था। वह चोरो, उसके साथ अपने पुराने सम्बन्धों के बारे में सोच रहा था। चोरो ने उसे लिखना-पढ़ना सिखाया था, वे साथ-साथ युवा कम्यु-निस्ट लीग में शामिल हुए थे, साथ साथ पार्टी के सदस्य बने थे। उसे स्मरण हो आया कि कैसे उन्होंने नहर के निर्माण-कार्य में साथ साथ भाग लिया था, कैसे चोरो ने सबसे पहले उसे वह समाचार-पत्र लाकर दिया था, जिसमें तानाबाय के बारे में लेख और उसका फ़ोटो छपे थे और उससे हाथ मिलाकर बधाई दी थी।

तानाबाय का दिल पिघलने लगा। उसे यही चिन्ता सताने लगी, "न जाने उसकी तबीयत कैसी होगी? शायद उसकी हालत बहुत ज्यादा ख़राब हो? नहीं तो बेटे को बुलवाने की क्या ज़रूरत थी? क्या वह मुझसे कुछ कहना चाहता है? क्या कुछ सलाह-मशविरा करना चाहता है?.."

पौ फटने लगी थी। बर्फ़ वैसे ही चक्कर खाती गिर रही थी। तानाबाय ने घोड़े को एड़ लगायी। उन टेकरियों को पार करते ही घाटी में गांव दिखाई देने लगेगा, न जाने चोरो कैसा होगा? उसे जल्दी से जल्दी वहाँ पहुँचना चाहिए।

अचानक प्रातःकालीन सन्नाटे में उसे गांव की ओर से, कहीं दूर से एक दबी हुई आवाज़ आती सुनाई दी। यह किसी की चीख थी जो तुरन्त बन्द हो गयी थी। तानाबाय ने घोड़े को एक दम रोक दिया और कान लगाकर सुनने लगा। कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। शायद उसे भ्रम हुआ था।

तानाबाय का घोड़ा टेकरी के ऊपर चढ़ गया। नीचे हिमाच्छादित बाग़ों और साग़वाड़ियों के बीच से निकलती गांव की गलियां दिखाई देने लगीं, जो इतने सवेरे सुनसान पड़ी थीं। कहीं कोई नज़र नहीं आ रहा था। केवल एक घर के अहाते में ही उसे लोगों की काली-सी भीड़ और काठी कसे घोड़े दिखाई दिये। वह चोरो का घर था। वहाँ इतने लोग क्यों जमा हुए हैं? क्या हुआ? कहीं वह...

तानाबाय रकाबों में खड़ा हो गया। बर्फ़ीली हवा का झोंका गले में उतरने से वह सिहर उठा और एक क्षण के लिए स्तब्ध रह गया। उसने तुरन्त घोड़े को एड़ लगायी। "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता! यह कैसे हो सकता है? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!" उसे इतना बुरा महसूस हुआ, मानो जो कुछ हुआ उसके लिए वही जिम्मेदार हो। उसके एक मात्र दोस्त चोरो ने हमेशा के लिए बिछुड़ने से पहले उससे मिलने के लिए बुलवाया था, पर वह बुरा मानकर हठपूर्वक घर बैठा रहा। ऐसे आदमी को भला कोई इनसान कह सकता है? उसकी पत्नी ने उसके मुंह पर थूका क्यों नहीं? क्या किसी मरणासन्न आदमी की अन्तिम इच्छा पूरी करने से भी कोई ज्यादा ज़रूरी काम हो सकता है?

तानाबाय की आँखों के आगे वही दृश्य फिर घूम गया, जब चोरो क़दमबाज़ पर बैठा उसके पास पहुँचा था। उस समय उसने उसे क्या जवाब दिया था? क्या वह कभी अपने आप को इसके लिए माफ़ कर सकेगा?

तानाबाय बर्फ़ से ढके रास्ते पर अपनी ग़लती और शर्म के बोझ से दबा बेहोशी की सी हालत में चला जा रहा था। एकाएक उसे चोरो के घर से कुछ दूर घुड़सवारों का एक बड़ा झुण्ड दिखाई दिया। वे बिना कुछ बोले क़रीब आ रहे थे और एकाएक सब एक साथ हचकोले खाते ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे,

"ओयबाय, बाउरीमाय! ओयबायग्राय, बाउरीम!"*

"कज़ाख़ लोग आ गये," तानाबाय समझ गया कि अब कोई आशा नहीं रह गयी है। नदी पार से आये कज़ाख़ चोरो को अपने भाई, पड़ोसी, ज़िले भर में प्रसिद्ध व्यक्ति के रूप में श्रद्धांजलि अर्पित करने आये थे।

"बहुत-बहुत शुक्रिया, भाइयो," तानाबाय उन क्षणों में सोच रहा था। "हम अपने दादों-पड़दादों के ज़माने से दुःख-सुख, शादी-ब्याहों में और खेलों में हमेशा साथ रहे हैं। आइये, अब हम लोग साथ रोयें!"

उनके साथ साथ वह भी दिल चीर देनेवाली चीख मारकर रो पड़ा, "चोरो ऽऽऽ! चोरो ऽऽऽ! चोरो ऽऽऽ!"

वह दुलकी चाल से भागते घोड़े पर इधर-उधर हिलता-डुलता अपने दोस्त की मृत्यु पर विलाप कर रहा था।

अन्त में वह घर भी आ गया जिसके बाहर खड़े गुलसारी पर काली झूल पड़ी थी। बर्फ़ उस पर गिरकर पिघल रही थी। क़दमबाज़ अनाथ हो गया था। अब उसकी काठी ख़ाली रखी जानी थी।

तानाबाय ने घोड़े की अयाल में मुंह छिपा लिया, सिर उठाया और फिर उस पर पटक दिया। उसके चारों ओर मानो कुहरे में तैरते लोगों के चेहरे थे। सब विलाप कर रहे थे। उसने किसी को यह कहते नहीं सुना,

"तानाबाय को घोड़े पर से उतारो। उसे चोरो के बेटे के पास ले चलो।"

एक साथ कई हाथ उसकी ओर बढ़ गये। लोग उसे घोड़े से उतारकर सहारा देते हुए ले गये।

"मुझे माफ़ कर दो, चोरो, मुझे माफ़ कर दो!" तानाबाय रो रहा था।

चोरो का पुत्र, विद्यार्थी समंसूर अहाते में दीवार की ओर मुंह किये खड़ा था। वह आंसू बहाता तानाबाय की ओर मुड़ा और वे रोते हुए गले मिले।

---

*ओयबायग्राय, बाउरीमाय–किसी की मृत्यु होने पर कज़ाख लोग इस प्रकार शोक-विलाप करते हैं।

"हाय, तुम्हारा बाप नहीं रहा, मेरा चोरो नहीं रहा! मुझे माफ़ कर दो, चोरो, मुझे माफ़ कर दो!" रोते रोते तानाबाय का कंठ रुंधने लगा।

फिर लोगों ने उन्हें अलग किया। तभी तानाबाय ने अपने नज़दीक खड़ी औरतों में ब्यूब्यूजान को देखा। वह उसकी ओर देखती हुई मौन रो रही थी। तानाबाय और ज़ोर से रोने लगा।

वह अपने भाग्य को रो रहा था, चोरो को रो रहा था। अपनी गलती के लिए रो रहा था, क्योंकि उसने रास्ते में चोरो को जो शब्द कहे थे, उन्हें अब वापस नहीं ले सकता था। वह उसके लिए रो रहा था, जो अब उसके पास ग़ैर की तरह खड़ी थी। उनके प्यार को और उस तूफ़ानी रात को याद करके रो रहा था, क्योंकि अब वह दुनिया में अकेली रह गयी थी और बूढ़ी होती जा रही थी। अपने क़दमबाज़ गुलसारी को देखकर रो रहा था, जो इस समय मातमी झूल से ढका खड़ा था। अपने अपमान और सारे दुख-दर्दों को याद करके रो रहा था, जो इतने दिनों से उसके दिल में घुट रहे थे।

"मुझे माफ़ कर दो, चोरो, मुझे माफ़ कर दो!" वह रोये जा रहा था। मानो इस प्रकार वह उससे भी क्षमा मांग रहा हो, जो उसके पास खड़ी थी।

उसे इच्छा हुई कि ब्यूब्यूजान उसके पास आकर सांत्वना दे, उसके आंसू पोंछे, लेकिन वह उसके पास नहीं आयी। वह वहीं खड़ी रोती रही।

उसे अन्य लोगों ने तसल्ली दिलायी,

"बस करो, तानाबाय। अब आंसू बहाने से कुछ नहीं हो सकता। धीरज रखो।"

लेकिन इससे उसका दुःख और बढ़ गया।

बाईस

चोरो को अपराह्न में दफ़नाया गया। सूरज का निश्चल विवर्ण बादलों से ढका धुंधला गोला अत्यन्त तेज़हीन दिख रहा था। कोमल, नम हिमलव हवा में अभी भी तैर रहे थे। जनाज़े का जलूस सफ़ेद खेत पर बहती शान्त काली नदी की तरह आगे बढ़ रहा था। ऐसा लग रहा था मानो

यह नदी यहाँ से पहली बार निकल रही हो। जलूस के आगे एक खुली ट्रक में चोरो का शव श्वेत नमदे के कफ़न में ले जाया जा रहा था। उसकी पत्नी, उसके बच्चे और सम्बन्धी उसके दोनों ओर बैठे थे। बाक़ी सब लोग घोड़ों पर सवार थे। ट्रक के पीछे-पीछे दो व्यक्ति पैदल चल रहे थे—चोरो का पुत्र समसूर और तानाबाय जो अपने स्वर्गीय दोस्त के घोड़े, क़दमबाज़ गुलसारी की लगाम थामे चल रहा था। गुलसारी पर ख़ाली ज़ीन था।

गाँव के पार रास्ते पर बर्फ़ की हल्की चादर बिछी थी। रास्ता घोड़ों की टापों से रुंदी चौड़ी काली पट्टी की तरह जलूस के पीछे छूटता जा रहा था। ऐसा लग रहा था, मानो वह चोरो की अन्तिम यात्रा की निशानी थी। यह रास्ता टेकरी पर स्थित क़ब्रिस्तान की ओर जाता था। वह यहीं पहुँचकर चोरो के लिए सदा के लिए समाप्त हो जाता था।

तानाबाय क़दमबाज़ की लगाम थामे चलता हुआ मन ही मन उससे कह रहा था, "देख, गुलसारी, हमारा दोस्त चोरो अब नहीं रहा। वह हमें छोड़कर चला गया... तूने मुझे उस वक़्त आवाज़ देकर रोका क्यों नहीं? ख़ुदा ने तुझे बेज़बान बनाया है। मैं तो आदमी होकर भी तुझ घोड़े से भी गया-गुज़रा साबित हुआ। मैं अपने दोस्त को रास्ते में छोड़ आया, न मैंने मुड़कर देखा, न अपना इरादा बदला। मैंने चोरो को मार डाला, अपनी बातों से उसे मार डाला..."

क़ब्रिस्तान पहुंचने तक तानाबाय सारे रास्ते चोरो से क्षमा प्रार्थना करता रहा। और समसूर के साथ चोरो को सदा के लिए धरती मां को सौंपने क़ब्र में उतरकर भी वह कहता रहा,

"मुझे माफ़ कर दो, चोरो। अलविदा। सुनते हो, चोरो, मुझे माफ़ कर देना!.."

जनाज़े में आये लोगों ने चोरो को मिट्टी दी, फिर क़ब्र को चारों ओर से बेलचों से मिट्टी गिराकर भर दिया। क़ब्र भर गयी और टेकरी पर एक नया टीला खड़ा हो गया।

मुझे माफ़ कर दो, चोरो!..

मृत्यु-भोज के बाद समसूर तानाबाय को एक ओर ले जाकर बोला,

"तानाबाय, मुझे आपसे कुछ ज़रूरी बात करनी है।"

वे लोगों और धुआं छोड़ते समोवारों व अलावों को छोड़कर अहाते

से होकर बाग़ में चले गये। फिर वे नाली के सहारे चलते-चलते सागबाड़ी से आगे एक गिरे हुए पेड़ के पास रुक गये। दोनों उस तने पर बैठ गये। दोनों अपने अपने विचारों में डूबे हुए मौन बैठे थे। "इसी का नाम ज़िन्दगी है," तानाबाय सोच रहा था, "समसूर को मैं बचपन से जानता हूँ, अब देखो कितना बड़ा हो गया है। दुःख ने इसे वयस्क बना दिया। अब यह चोरो की जगह है। अब हम दोनों समान आयु के लोगों की तरह हैं। यही तो होना चाहिए। बेटे अपने बापों की जगह ले लेते हैं। बेटे अपने ख़ानदान का नाम रोशन करते हैं, अपने पिता का काम जारी रखते हैं। ख़ुदा करे, यह भी अपने पिता जैसा बने। उससे भी आगे निकल जाये, अपनी बुद्धि और ज्ञान के बल से प्रगति करे, ख़ुद भी सुखी रहे और दूसरों को भी सुख दे। हम लोग इसीलिए तो पिता कहलाते हैं, इसीलिए तो हम बेटे पैदा करते हैं और आशा करते हैं कि वे हमसे बेहतर बनेंगे। यही तो जीवन का सार है।"

"समसूर, तुम अब अपने घर के मुखिया हो," तानाबाय ने बूढ़ों की तरह अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा। "तुम अब चोरो की जगह हो और मैं तुम्हारी बात वैसे ही सुनने को तैयार हूँ, जैसे कि चोरो की सुनता।"

"मैं आपको अपने पिता की अन्तिम इच्छा बताना चाहता हूँ," समसूर ने कहा।

समसूर की आवाज़ में उसके पिता की आवाज़ और लहजे का स्पष्ट आभास पाकर तानाबाय चौंक उठा। उसे पहली बार अनुभव हुआ कि वह बिलकुल अपने पिता पर गया है, उस युवक चोरो पर, जिसे पुत्र ने नहीं देखा था, लेकिन तानाबाय अच्छी तरह जानता था। कहते हैं आदमी तब तक जीवित रहता है जब तक कि उसे जाननेवाले लोग जीवित रहते हैं।

"कहो, बेटा, मैं सुन रहा हूँ।"

"मैं जब घर पहुँचा, तो पिता जी जिन्दा थे, तानाबाय। मैं कल उनके मरने से एक घंटा पहले घर पहुँच गया था। वह आख़िरी सांस तक होश में थे। आपका वह बड़ी बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे थे। बार बार पूछ रहे थे, 'तानाबाय कहाँ है? क्या वह अभी तक नहीं आया?' हम उन्हें तसल्ली दिलाते रहे कि आप रास्ते में होंगे और किसी भी क्षण वहाँ

पहुँच सकते हैं। शायद वह आपसे कुछ कहना चाहते थे, लेकिन कहने का मौक़ा ही नहीं मिल पाया।"

"हाँ, समंसूर। हमारा मिलना ज़रूरी था। बहुत ज़रूरी था। मैं अपने आप को कभी माफ़ नहीं कर सकूंगा। सारा दोष मेरा है। मैं ही समय पर नहीं पहुंचा।"

"उन्होंने मुझे आपसे यह कहने के लिए कहा था, 'बेटा, तानाबाय से कह देना कि मैं उससे माफ़ी मांगता हूँ। उससे कहना कि वह मुझ पर नाराज़ न हो और वह ख़ुद मेरा पार्टी-कार्ड पार्टी की ज़िला समिति में देकर आये। कहना कि वह अपने हाथों से मेरा पार्टी-कार्ड उन्हें दे। यह कहना भूलना मत।' मरते दम तक वह इस तरह देखते रहे मानो किसी के आने का इन्तज़ार कर रहे हों। वह रो रहे थे, लेकिन ज़बान लड़खड़ाने से उनकी बात समझ में नहीं आयी।"

तानाबाय सिसकियाँ भरता हुआ दाढ़ी मसलने लगा। उसने कुछ नहीं कहा। चोरो दुनिया से जा चुका था। वह अपने साथ आधा तानाबाय और उसकी ज़िन्दगी का एक हिस्सा ले गया।

"यह बताने के लिए शुक्रिया, समंसूर। और तुम्हारे पिता का भी शुक्रिया।" अपने आप पर नियंत्रण करके अन्त में तानाबाय ने मुंह खोला। "मुझे बस एक ही बात परेशान कर रही है। क्या तुम्हें मालूम है कि मुझे पार्टी से निकाल दिया गया है?"

"मालूम है।"

"मैं, पार्टी से निष्कासित आदमी, चोरो का पार्टी-कार्ड लेकर कैसे पार्टी की ज़िला समिति में जाऊँ? मुझे इसका अधिकार नहीं है।"

"मैं कुछ नहीं कह सकता, तानाबाय। आप ख़ुद ही फ़ैसला कीजिये। पिता की अन्तिम इच्छा पूरी करना मेरा कर्त्तव्य है। इसलिए मैं आपसे भी उनकी इच्छा पूरी करने की प्रार्थना करता हूँ।"

"मैं बड़ी ख़ुशी से यह काम कर देता, लेकिन मुझ पर यह मुसीबत टूट पड़ी। क्या तुम्हारा उसे ले जाना बेहतर नहीं रहेगा, समंसूर?"

"नहीं। पिता जी अच्छी तरह समझते थे कि वह क्या कह रहे हैं। अगर उन्हें आप पर विश्वास था, तो फिर मुझे क्यों न होगा? आप ज़िला समिति में कह दीजिये कि चोरो सयाकोव की अन्तिम इच्छा यही थी।"

तानाबाय तड़के जब गांव से निकला, तो अंधेरा छाया हुआ था। सुख और दुःख में समान रूप से साथ देनेवाला घोड़ा गुलसारी, शानदार क़दमबाज़ गलसारी, रास्ते में ठण्ड से जमे मिट्टी के ढेलों को अपनी टापों से तोड़ता भागा चला जा रहा था। इस बार उस पर तानाबाय सवार था, जो अपने स्वर्गीय मित्र कम्युनिस्ट चोरो सयाकोव के विशेष कार्य से जा रहा था।

दूर कहीं धरती के अदृश्य छोर पर धीरे-धीरे भोर हो रहा था। भोर की कोख से एक नया दिन जन्म लेने जा रहा था। वह धूमिल प्रकाश निरन्तर बढ़ता प्रतीत हो रहा था...

क़दमबाज़ भोर की ओर, उस एक मात्र चमकीले तारे की ओर भागा जा रहा था, जो अभी आसमान पर बुझा नहीं था। गुलसारी की लयबद्ध क़दमचाल की आवाज़ सुनसान रास्ते में गूंज रही थी। तानाबाय को उस पर काफ़ी अरसे से सवारी करने का मौक़ा नहीं मिला था। गुलसारी की चाल सदा की तरह तेज़ और विश्वसनीय थी। हवा के झोंके घोड़े की अयाल उड़ा रहे थे, सवार के चेहरे से टकरा रहे थे। गुलसारी शानदार घोड़ा था और अभी भी मज़बूत था।

तानाबाय सारे रास्ते यही सोचता रहा कि चोरो ने अपनी मृत्यु से पहले उसे यानी तानाबाय को ही क्यों उसका पार्टी-कार्ड ज़िला समिति में देने के लिए चुना, एक ऐसे आदमी को जिसे पार्टी से निकाला जा चुका था। वह क्या चाहता था? क्या उसकी परीक्षा लेना चाहता था? कहीं वह इस तरह तानाबाय को पार्टी से निकाले जाने के प्रति विरोध तो नहीं प्रकट करना चाहता था? अब इसका पता कभी भी नहीं लग सकेगा। चोरो अब नहीं बता सकेगा। "हरगिज़ नहीं!" कितने भयावह शब्द हैं! उनसे अधिक भयानक शब्द हो ही नहीं सकते...

एक बार फिर उसके दिमाग़ में तरह तरह के विचार कौंधने लगे। जो वह भूल जाना चाहता था, अपने मस्तिष्क से हमेशा के लिए निकाल फेंकना चाहता था, वही फिर याद आने लगा था। इसका मतलब था कि अभी सब कुछ ख़त्म नहीं हुआ था। उसे अभी चोरो की अन्तिम इच्छा पूरी करनी थी। वह उसका पार्टी-कार्ड लेकर जायेगा और उन्हें चोरो के बारे में सच सच बता देगा कि वह लोगों की निगाहों में कैसा आदमी था।

और वह अपने बारे में भी बतायेगा, क्योंकि चोरो और वह दोनों एक प्राण दो शरीर की तरह थे।

उन्हें मालूम हो जाना चाहिए कि वे अपनी जवानी के दिनों में कैसे थे और उन्होंने कैसी ज़िन्दगी बितायी थी। तब शायद वे यह समझ जायें कि तानाबाय को चोरो से न उसके जीवन में जुदा करना चाहिए था, न उसके मरने के बाद। बस वे उसकी बात सुन लें, उसे अपनी बात कहने का मौक़ा दें!

तानाबाय कल्पना कर रहा था कि वह कैसे ज़िला समिति के सचिव के कमरे में जायेगा, कैसे उसकी मेज़ पर चोरो का पार्टी-कार्ड रखेगा और उसे सारी बात बतायेगा। वह अपनी ग़लती मानकर माफ़ी मांगेगा, वे उसे बस पार्टी में वापस शामिल कर लें, जिसके बिना उसका जीना दूभर हो गया है।

अगर उन्होंने कहा कि उसे, पार्टी से निकाले गये व्यक्ति को पार्टी-कार्ड लाकर देने का क्या हक़ है, तो? "तुम्हें किसी कम्युनिस्ट का पार्टी-कार्ड छूना भी नहीं चाहिए था। तुम्हें यह काम हाथ में लेना ही नहीं चाहिए था। और कोई भी ला सकता था।" लेकिन मरणासन्न चोरो की अन्तिम इच्छा यही थी! उसने सबके सामने ऐसा कहा था। उसका बेटा समसूर इसकी पुष्टि कर सकता है। "तो क्या हुआ? आदमी मरते समय प्रलापावस्था और बेहोशी की हालत में न जाने क्या क्या कह सकता है।" तब वह क्या जवाब देगा।

इस बीच गुलसारी जमे हुए गूंजते रास्ते पर दौड़ता हुआ स्तेपी पार कर अलेक्सांद्रोवका की ढलान पर उतर रहा था। क़दमबाज़ ने तानाबाय को बड़ी जल्दी पहुँचा दिया। उसे मालूम भी नहीं पड़ा कि वह कब वहाँ पहुँच गया।

तानाबाय जब ज़िला मुख्यालय में पहुंचा, तब कार्यालयों में काम शुरू हुआ ही था। वह सीधा ज़िला समिति के दफ़्तर गया। उसने पसीने से तर क़दमबाज़ को खूंटे से बांधा और धूल झाड़कर धड़कते दिल से भीतर गया। न जाने उसे क्या कहें? पता नहीं उससे कैसे मिलें? गलियारे ख़ाली पड़े थे। अभी गांवों के लोग वहाँ नहीं पहुँचे थे। तानाबाय काशकातायेव के स्वागत-कक्ष में गया।

"सलाम," उसने सेक्रेटरी से कहा।

"सलाम।"

"कामरेड काशकातायेव क्या, अपने कमरे में हैं?"

"हाँ।"

"मुझे उनसे मिलना है। मैं 'श्वेत पाषाण' सामूहिक फ़ार्म का चरवाहा हूँ। मेरा कुल-नाम बकासोव है," उसने कहा।

"मैं आपको जानती हूँ," वह व्यंग्यपूर्वक मुस्करायी।

"कृपा करके उनसे कह दीजिए कि हमारे पार्टी संगठनकर्त्ता चोरो सयाक़ोव की मृत्यु हो गयी है और उसने मरने से पहले मुझे उसका पार्टी-कार्ड ज़िला समिति में दे आने को कहा था। मैं इसी काम से आया हूँ।"

"अच्छा। एक मिनट ठहरिये।"

हालाँकि सेक्रेटरी काशकातायेव के कमरे में ज्यादा देर नहीं रुकी, पर तानाबाय उसकी प्रतीक्षा करते करते परेशान हो उठा।

"कामरेड काशकातायेव व्यस्त हैं," उसने अपने पीछे कसकर किवाड़ बन्द करते हुए कहा। "उन्होंने कहा है कि आप सयाकोव का कार्ड पंजीकरण विभाग में जमा करा दें। वह इस गलियारे में दायीं ओर मुड़कर है।"

"'पंजीकरण विभाग... गलियारे में दायीं ओर मुड़कर है।' इसका क्या मतलब हुआ?" तानाबाय समझ नहीं पाया। फिर एकाएक सारी बात उसकी समझ में आ गयी और उसे धक्का लगा। क्या ऐसा हो सकता है? क्या यह इतना आसान काम है? वह तो सोच रहा था....

"मुझे उनसे कुछ कहना है। आपसे विनती करता हूँ, ज़रा उन्हें बता दीजिये। मुझे उनसे बहुत ज़रूरी बात करनी है।"

सेक्रेटरी हिचकिचाती हुई कमरे में गयी और वापस लौटकर बोली, "वह बहुत व्यस्त हैं।" फिर उसने अपनी ओर से सहानुभूति जताते हुए कहा, "आपका मामला तो पहले ही ख़त्म हो चुका है।" फिर और धीमे स्वर में बोली, "वह आपसे नहीं मिलेंगे। इन्तज़ार करना बेकार है।"

तानाबाय गलियारे में जाकर दायें मुड़ा। किवाड़ पर "पंजीकरण विभाग" लिखा था। उसने किवाड़ में बनी खिड़की को खटखटाया। खिड़की खुली।

"कहिये?"

"मैं आपको पार्टी-कार्ड देने आया हूँ। हमारे सामूहिक फ़ार्म 'श्वेत पाषाण' का पार्टी-संगठनकर्त्ता चोरो सयाकोव की मृत्यु हो गयी है।"

विभागाध्यक्ष धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रही थी। तानाबाय ने कोट के नीचे बंधी चमड़े की थैली निकाली, जिसमें वह कुछ समय पहले अपना पार्टी-कार्ड रखा करता था और इस बार चोरो का पार्टी-कार्ड रखकर लाया था। उसने कार्ड खिड़की में दे दिया। "अलविदा, चोरो!"

वह एक रजिस्टर में चोरो के पार्टी-कार्ड का नम्बर, उसका कुल-नाम, नाम, उसके पिता का नाम, उसके पार्टी में शामिल होने की तारीख़ लिख रही थी। तानाबाय खड़ा-खड़ा देख रहा था। यह चोरो की आख़िरी निशानी थी। फिर उसने तानाबाय से रजिस्टर में हस्ताक्षर करवाये।

"बस?" तानाबाय ने पूछा।

"हाँ।"

"सलाम।"

"सलाम।" खिड़की खट से बन्द हो गयी।

तानाबाय बाहर निकला। वह खूंटे से बंधे घोड़े की रस्सी खोलने लगा। "बस, गुलसारी," उसने घोड़े से कहा। "अब सब ख़त्म हो गया।" अथक क़दमबाज़ उसे वापस उसके गांव ले चला। निस्सीम वसन्तकालीन स्तेपी घोड़े की गूंजती टापों की लय में हवा के संग उनकी ओर दौड़ रही थी। केवल घोड़े की तेज़ चाल से ही तानाबाय का दर्द कुछ कम हुआ।

तानाबाय उसी शाम पहाड़ों में अपने डेरे पर लौट आया।

उसकी पत्नी उससे बिना कुछ बोले मिली। उसने घोड़े की लगाम थाम ली और पति को हाथ का सहारा देकर घोड़े से नीचे उतारा।

तानाबाय ने उसकी ओर मुड़कर उसका आलिंगन किया और उसके कंधे पर सिर रख दिया। वह भी उसका आलिंगन करके रोने लगी।

"हमने दफ़ना दिया चोरो को! अब वह नहीं रहा, जयदार। मेरा दोस्त नहीं रहा।" तानाबाय फिर फूट-फूटकर रो पड़ा।

इसके बाद वह तम्बू के बाहर रखे पत्थर पर मौन बैठा रहा। उसका मन कुछ देर अकेला रहने को कर रहा था। वह चांद को निकलते देखना चाहता था जो हिमाच्छादित पर्वत-माला के पीछे से धीरे-धीरे निकल रहा था। उसकी पत्नी तम्बू में लड़कियों को सुला रही थी। तानाबाय को चूल्हे

में लकड़ियों के चटकने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। फिर तेमीर-कोमुज़ के तार का मर्मभेदी स्वर गूंज उठा। लगा जैसे पवन भयभीत हो आर्त-नाद कर उठा। जैसे एक मनुष्य मैदान में विलाप करता और शोक-गीत गाता भाग रहा हो, चारों ओर निस्तब्धता छायी हुई हो, प्रकृति सांस रोके मौन हो और ऐसे में केवल इनसान का दुःख-दर्द भरा अकेला स्वर दूर जाता प्रतीत हो रहा हो। लगता था जैसे वह समझ नहीं पा रहा था कि अपने दुःख को लेकर कहाँ जाये, कैसे इस निस्तब्धता और निर्जनता में अपने चित्त को शान्त करे। वह अपना ही अरण्य-रोदन सुनता रहा। तानाबाय समझ गया कि उसकी पत्नी उसके लिए "बूढ़े शिकारी का गीत" तेमीर-कोमुज़ पर बजा रही है...

...बहुत दिन हुए एक बूढ़ा रहता था। उसका एक बेटा था, जो बड़ा बहादुर शिकारी था। पिता ने स्वयं अपने पुत्र को शिकार खेलने में निपुण बनाया। पुत्र पिता से भी उत्तम शिकारी साबित हुआ।

उसका निशाना कभी नहीं चूकता था। कोई भी पशु-पक्षी उसके अचूक और घातक निशाने से जीवित नहीं बच पाता था। उसने आस-पास के पहाड़ों के सारे जीवों का शिकार कर डाला। वह गाभिन पशुओं और उनके बच्चों पर भी दया नहीं करता था। उसने बकरे वंश की पूर्वजा भूरी बकरी के सारे रेवड़ को मार डाला। केवल भूरी बकरी और बूढ़ा भूरा बकरा ही बचे थे। भूरी बकरी ने युवा शिकारी से भूरे बकरे के जीवन की भीख मांगी, उस पर दया करने की विनती की, जिससे वे अपनी वंशवृद्धि कर सकें। लेकिन वह नहीं माना और उसने एक ही गोली से भीमकाय बूढ़े बकरे को मार गिराया। भूरा बकरा चट्टान से नीचे गिर पड़ा। भूरी बकरी विलाप करने लगी और शिकारी की ओर अपनी बग़ल करके बोली, "मेरे दिल का निशाना लगा! मैं हिलूंगी भी नहीं। लेकिन तेरा निशाना चूक जायेगा और यह तेरी आख़िरी गोली होगी।" युवा शिकारी पागल हुई भूरी बकरी की बात पर हंसने लगा। उसने निशाना साधकर गोली चलायी। लेकिन भूरी बकरी नहीं गिरी। गोली केवल उसके एक पैर को छूती हुई निकल गयी। शिकारी डर गया, ऐसा उसके साथ कभी नहीं हुआ था। "देखा!" भूरी बकरी बोली। "अब मैं लंगड़ी हो गयी हूँ, पर ज़रा मुझे पकड़ के तो देख!" युवा शिकारी फिर हंसा, "ठीक है, तू भागकर तो देख। अगर मैंने तुझे पकड़ लिया, तो फिर मुझसे

दया की आशा मत करना। मैं तेरे टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा, बड़बोला!"

लंगड़ी भूरी बकरी भागी। शिकारी भी उसके पीछे लपका। वह अनेक दिन और अनेक रात खड़ी चट्टानों, ढलानों, बर्फ़ और पत्थरों को पार करता उसका पीछा करता रहा। लेकिन भूरी बकरी उसकी पकड़ में नहीं आयी। शिकारी की बन्दूक पहले ही कहीं गिर चुकी थी और उसके सारे कपड़े तार तार हो चुके थे। भूरी बकरी उसे कब अगम्य चट्टानों पर ले आयी, उसे पता ही नहीं चला। वहाँ से न ऊपर चढ़ने का कोई रास्ता था, न नीचे उतरने का, न वह ऊपर चढ़ सकता था, न नीचे कूद सकता था। भूरी बकरी ने उसे वहीं छोड़कार उसे शाप दिया, "तू यहाँ से कभी न खुद निकल सकेगा, न ही कोई तुझे यहाँ से निकाल सकेगा। तेरा पिता भी तेरे मरने पर वैसे ही रोये, जैसे मैं अपने बच्चों के मरने और अपने वंश के नष्ट होने पर रो रही हूँ। तेरा पिता भी इन चट्टानों और ठण्डे पहाड़ों में वैसे ही रोये-चीखे जैसे मैं बकरे वंश की पूर्वजा भूरी बकरी रो रही हूँ। क़ारागुल, मैं तुझे शाप देती हूँ।" इसके बाद भूरी बकरी रोती हुई एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर और एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर छलांगें लगाती हुई वहाँ से ग़ायब हो गयी।

युवा शिकारी सिर चकरा देनेवाली ऊँचाई पर खड़ा रह गया। वह चट्टान से मुंह सटाये खड़ा था। उसे अग़ल-बग़ल देखने में भी डर लग रहा था, न वह दायें जा सकता था, न बायें, न नीचे, न ऊपर। उसे न आकाश दिखाई दे रहा था, न धरती।

इस बीच उसका पिता उसे सारे में ढूंढ़ रहा था। उसने उसे हर पहाड़ पर चढ़कर खोजा। जब उसे एक जगह उसके पुत्र की बन्दूक पड़ी हुई दिखाई दी, तो वह समझ गया कि उसके पुत्र के साथ कोई दुर्घटना हो गयी है। वह गहरे खड्डों और अंधेरी तंग दरारों में उसे खोजने भागा। "क़ारागुल, तू कहाँ है? क़ारागुल, आवाज़ दे!" उसकी आवाज़ के उत्तर में उसे केवल चट्टानों से टकराकर आती प्रतिध्वनि ही सुनाई दी, "...कहाँ है, क़ारागुल, आवाज दे!..."

"पिता जी, मैं यहाँ हूँ!" उसे अचानक कहीं ऊपर से आती आवाज़ सुनाई दी। बूढ़े ने आँखें उठाकर ऊपर देखा और अपने पुत्र को अगम्य चट्टान के कगार पर कौवे के बच्चे की तरह सिकुड़े-सिमटे खड़ा पाया।

वह दुनिया की ओर पीठ किये खड़ा था और मुड़ भी नहीं पा रहा था।

"तू वहाँ कैसे पहुंचा, मेरे बदनसीब बेटे?" उसके भयाकुल पिता ने पूछा।

"यह न पूछिये, पिता जी। मैं यहाँ अपने पापों की सज़ा भुगत रहा हूँ। मुझे बूढ़ी भूरी बकरी ने यहाँ फंसा दिया। उसने मुझे बहुत भयंकर शाप दिया है। मैं यहाँ बहुत दिनों से खड़ा हूँ, न सूरज देख पा रहा हूँ, न आकाश, न धरती। मैं आपका चेहरा भी कभी नहीं देख पाऊँगा, पिता जी। आप मुझ पर दया कीजिये, पिता जी। मुझे मारकर इस कष्ट से छुटकारा दिला दीजिये। मैं आपसे विनती करता हूँ। मुझे मारकर दफ़ना दीजिये।"

पिता क्या कर सकता था? वह रोया, फड़फड़ाया, लेकिन उसका पुत्र यही विनती करता रहा, "मुझे फ़ौरन मार डालिये। गोली चलाइये, पिता जी! मुझ पर दया करके गोली चलाइये!" उसका पिता शाम तक फ़ैसला न कर पाया। अन्त में सूर्यास्त से कुछ पहले उसने निशाना लगाकर गोली चला दी। इसके बाद उसने अपनी बन्दूक पत्थरों पर पटक-पटककर तोड़ डाली और अपने पुत्र के शव के पास खड़े होकर यह शोक-गीत गाया,

मैंने तुझ को मार डाला मेरे बेटे क़ारागुल
हूँ मैं अब दुनिया में तन्हा मेरे बेटे क़ारागुल
दी सज़ा क़िस्मत ने, मारा मेरे बेटे क़ारागुल
चोट से हूँ मैं तड़पता मेरे बेटे क़ारागुल
तुझ को यह गुण क्यों बताया मेरे बेटे क़ारागुल
क्यों शिकारी ही बनाया मेरे बेटे क़ारागुल
तूने क्यों चिड़ियों को मारा मेरे बेटे क़ारागुल
जानवर कोई न छोड़ा मेरे बेटे क़ारागुल
नष्ट उनको क्यों किया था मेरे बेटे क़ारागुल
था जिन्हें धरती पर जीना मेरे बेटे क़ारागुल
अपनी नस्लों को बढ़ाना मेरे बेटे क़ारागुल?
रह गया अब मैं अकेला मेरे बेटे क़ारागुल

सुन के कोई मेरा रोना मेरे बेटे क़ारागुल
अब न रो कर साथ देगा मेरे बेटे क़ारागुल
मैंने तुझ को मार डाला मेरे बेटे क़ारागुल
अपने ही हाथों से मारा मेरे बेटे क़ारागुल

...तानाबाय तम्बू के बाहर बैठा इस प्राचीन किर्गीज़ शोक-गीत को सुन रहा था। शान्त व धुंधले पहाड़ों के ऊपर मंथर गति से निकलकर चांद हिमाच्छादित शिखरों व ऊँची चट्टानों के ऊपर पहुंचकर टंग गया। वह फिर बार-बार अपने स्वर्गीय मित्र से क्षमा मांग रहा था। और तम्बू के भीतर बैठी जयदार तेमीर-क़ोमुज़ पर महान शिकारी कारागुल के बारे में रचित शोक-गीत की धुन बजा रही थी,

मैंने तुझ को मार डाला मेरे बेटे क़ारागुल
रह गया अब मैं अकेला मेरे बेटे क़ारागुल

तेईस

भोर होनेवाला था। अलाव के पास मरणासन्न क़दमबाज़ के सिरहाने बैठे बूढ़े तानाबाय को इसके बाद की सारी घटनाएँ स्मरण हो आयीं।

उन दिनों वह प्रांतीय केन्द्र में गया था। इस बारे में कोई नहीं जानता था। यह उसकी आख़िरी कोशिश थी। वह पार्टी की प्रांतीय समिति के सचिव से मिलना और उसे अपनी सारी तकलीफ़ों के बारे में बताना चाहता था। उसने ज़िला मुख्यालय में आयोजित एक कान्फ़्रेंस में उसका भाषण सुना था। उसे विश्वास था कि वह आदमी उसे समझ सकता है और उसकी सहायता कर सकता है। चोरो ने भी उसे भला आदमी बताया था और अन्य लोगों ने भी उसकी प्रशंसा की थी। लेकिन प्रांतीय समिति में पहुंचकर उसे इस बात का पता चला कि उस सचिव का तबादला दूसरे प्रांत में कर दिया गया है।

"क्या आपने इसके बारे में नहीं सुना था?"

"नहीं।"

"ख़ैर, अगर आपका काम बहुत ज़रूरी है, तो मैं हमारे नये सचिव से बात करूँ, शायद वह आपसे मिलने को मान जायेंगे," स्वागत-कक्ष में सेक्रेटरी ने उसे सुझाव दिया।

"नहीं, शुक्रिया," तानाबाय ने इनकार कर दिया। "मैं तो बस ऐसे ही अपने निजी मामले के बारे में बात करना चाहता था। वह मुझे जानते थे और मैं उन्हें। नहीं तो मैं उन्हें कभी तकलीफ़ नहीं देता। शुक्रिया, मैं चलता हूँ।" स्वागत-कक्ष से निकलते समय उसे पक्का विश्वास था कि वह सचिव से भली-भांति परिचित है और वह भी चरवाहे तानाबाय बकासोव को जानता है। और जानता भी क्यों नहीं? उसे इसमें सन्देह नहीं था कि वे एक दूसरे को याद रख सकते थे और एक दूसरे का सम्मान कर सकते थे। इसलिए उसने ऐसा कहा था।

तानाबाय बस-स्टैंड की ओर जा रहा था। बियर के बूथ के बाहर दो आदमी एक ट्रक में बियर के ख़ाली ड्रम चढ़ा रहे थे। उनमें से एक ट्रक में खड़ा था। दूसरे आदमी ने, जो नीचे से एक तख़्ते पर से ड्रम ऊपर चढ़ा रहा था, संयोगवश उसके पास से गुज़रते तानाबाय की ओर मुड़कर देखा और अवाक् रह गया, उसके चेहरे का रंग उड़ गया। वह बेकताय था। वह तख़्ते पर रखे ड्रम को संभालता हुआ अपनी बिल्ली की सी आँखों से तानाबाय को घूरने लगा। उसकी आँखों में घृणा का भाव था और वह यह प्रतीक्षा कर रहा था कि तानाबाय क्या कहता है।

"तुम ऊंघ रहे हो क्या?" ट्रक में खड़े आदमी ने खीजकर बेकताय से कहा।

ड्रम नीचे लुढ़कने लगा, तो बेकताय उसे संभालते हुए उसके वज़न से झुक गया, पर तानाबाय को अनिमेष देखता रहा। लेकिन तानाबाय ने उससे दुआ-सलाम नहीं किया। "अच्छा, तो तुम यहाँ काम कर रहे हो। बहुत ख़ूब। बियर के धंधे में लग गये," तानाबाय ने चलते चलते सोचा और बिना वहाँ रुके आगे बढ़ गया। "लड़का यहाँ बिगड़ जायेगा," उसने अपनी चाल धीमी करते हुए सोचा। "एक अच्छा आदमी बन सकता था। इससे बात की जाये?" उसने मुड़ना चाहा, उसे बेकताय पर दया आयी। वह उसे क्षमा करने को तैयार था, बशर्ते बेकताय ठीक रास्ते पर

चलने लगे। लेकिन वह मुड़ा नहीं। वह समझ गया कि अगर बेकताय को उसको पार्टी से निष्कासित किये जाने की ख़बर मालूम पड़ गयी, तो फिर बात कुछ बन नहीं पायेगी। तानाबाय इस ज़बानदराज़ लड़के को अपने आप पर, अपनी क़िस्मत पर, अपने उद्देश्य पर जिसके प्रति वह सदा निष्ठावान रहा था, हंसने का मौक़ा नहीं देना चाहता था। वह बिना मुड़े ही आगे बढ़ गया।

अपने गांव की ओर जानेवाली ट्रक में लौटते समय भी वह बेकताय के बारे में ही सोचता रहा। उसे नीचे लुढ़कते हुए ड्रम को संभालते और उसके बोझ से झुके-झुके उसकी ओर आशा भरी नजरों से उसका ताकना याद था।

बेकताय पर जब बाद में मुक़दमा चलाया गया, तो तानाबाय ने न्यायालय में केवल यही कहा कि वह रेवड़ छोड़कर चला गया था। उसने और कुछ नहीं कहा। उसकी तीव्र इच्छा थी कि बेकताय किसी तरह अपनी ग़लती मान ले और उसका प्रायश्चित करे। लेकिन लगता था कि बेकताय का प्रायश्चित करने का इरादा बिलकुल भी नहीं था।

"अपनी सज़ा काटने के बाद मेरे पास आना। फिर सोचेंगे कि आगे क्या किया जाये।" तानाबाय ने बेकताय से कहा। लेकिन उसने न कोई जवाब दिया और न ही आँखें उठाकर देखा। तब तानाबाय चला आया। पार्टी से निष्कासन के बाद से उसका आत्म-विश्वास कुछ डगमगा गया था और वह सबकी निगाहों में अपने आप को दोषी समझने लगा था। वह कुछ संकोची हो गया था। उसने कभी सोचा भी न था कि उस पर ऐसी बीतेगी। उस पर कोई ताने नहीं कसता था, लेकिन फिर भी वह स्वयं ही लोगों से मिलने, उनसे बातचीत करने से कतराने लगा था और अधिकतर चुप ही रहता था।

चौबीस

क़दमबाज़ गुलसारी अलाव के पास ज़मीन पर सिर रखे जड़वत लेटा था। उसके प्राण धीरे-धीरे निकल रहे थे। उसका गला घरघरा रहा था, आग की लपटों को एकटक ताकती आँखें खुली थीं और उनकी ज्योति मंद पड़ती जा रही थी, लट्ठों की तरह फैले हुए पैर अकड़ गये थे।

तानाबाय क़दमबाज़ से सदा के लिए बिछड़ते समय उससे अन्तिम बार बात कर रहा था, "तू एक महान घोड़ा था, गुलसारी। तू मेरा दोस्त था। मेरी ज़िन्दगी के सबसे अच्छे वर्ष तेरे साथ बीते, गुलसारी, और अब तू उन्हें अपने साथ ले जा रहा है। मैं तुझे कभी नहीं भूलूंगा, गुलसारी। मैं तुझे अब तेरे सामने इसलिए याद कर रहा हूँ, क्योंकि तू मुझे हमेशा के लिए छोड़कर जा रहा है, मेरे प्यारे गुलसारी। हम परलोक में कभी न कभी ज़रूर मिलेंगे। लेकिन वहाँ मैं तेरी टापों की आवाज़ नहीं सुन सकूंगा। वहाँ न सड़कें हैं, न ज़मीन, न घास और न ही ज़िन्दगी। लेकिन जब तक मैं ज़िन्दा रहूँगा, तू कभी नहीं मरेगा, क्योंकि मैं तुझे सदा याद करूँगा, गुलसारी। तेरी क़दमचाल की आहट हमेशा मेरा प्रिय गीत रहेगी..."

बूढ़ा तानाबाय यही सोचकर उदास हो रहा था कि समय क़दमबाज़ की तेज़ चाल की तरह बीत गया। वे दोनों ही कितनी जल्दी बूढ़े हो गये थे! वैसे शायद तानाबाय का अभी अपने आप को बूढ़ा मानने का समय नहीं आया। लेकिन आदमी तो अपनी बढ़ती उम्र के कारण इतना नहीं बुढ़ाता जितना कि यह महसूस करके कि वह बूढ़ा हो गया है, उसका वक़्त गुज़रता जा रहा है और वह बस अपने जीवन के अन्तिम दिन काट रहा है...

उस रात में जब क़दमबाज़ अपनी आख़िरी सांसें ले रहा था, तानाबाय ने एक बार फिर अपने अतीत का बड़े ध्यान से सिंहावलोकन किया। उसे इस बात का अफ़सोस हुआ कि वह इतनी जल्दी बुढ़ापे से हार मान बैठा और उसने उस आदमी की सलाह नहीं मानी, जो उसे भूला नहीं था और स्वयं उसे खोजकर उसके पास आया था।

यह तानाबाय के पार्टी से निष्कासन के सात वर्ष बाद की बात है। तानाबाय उस समय सरीगोऊ घाटी में सामूहिक फ़ार्म के जोत-क्षेत्र का रक्षक था और वहाँ एक झोंपड़ी में अपनी पत्नी जयदार के साथ रहता था। उसकी बेटियाँ पढ़ने गयीं और फिर उनका विवाह हो गया। उसका पुत्र टेकनीकल स्कूल पास करने के बाद ज़िला मुख्यालय में नौकरी करने गया और उसका भी अपना परिवार बन चुका था।

गर्मियों में एक दिन तानाबाय नदी के किनारे पर घास काट रहा था। दिन गर्म और साफ़ थे और घास काटने के लिए बहुत अच्छा था। टिड्डे

झिंगार रहे थे। तानाबाय अपनी बढ़ों की सी चौड़ी पतलून और क़मीज़ पहने झनझनाता हंसिया चला-चलाकर घास काटता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था। वह बड़ी लगन से काम कर रहा था। कब एक जीप आकर उससे कुछ दूर रुकी और दो आदमी निकलकर कब उसके पास आये, उसे मालूम ही नहीं पड़ा।

"सलाम, तानाबाय! अल्लाह आपकी मदद करे!" उसे अपने पास ही आवाज़ सुनाई दी। उसने मुड़कर देखा – इब्राइम खड़ा था। वह पहले जैसा फ़ुर्तीला था, उसके गाल भरे-भरे थे और तोंद निकली हुई थी।

"देखिये, हमने आपको आख़िर ढूंढ़ ही लिया, तानाबाय," इब्राइम ने खीसें निकाल दीं। "पार्टी की ज़िला समिति के सचिव ख़ुद आपसे मिलने आये हैं।"

"वाह रे घाघ!" तानाबाय ने अनचाहे ही उसकी प्रशंसा की। "किसी भी समय हर जगह अपने पैर जमा लेता है। कैसी ठकुरसुहाती कर रहा है। मानो बहुत ही नेक आदमी हो। किसी की भी चपलूसी कर सकता है, किसी की भी नौकरी बजा सकता है!"

"सलाम," तानाबाय ने उनसे हाथ मिलाया।

"आप ने पहचाना नहीं, बड़े मियां?" इब्राइम के साथ आये आदमी ने उसका हाथ अपने मज़बूत हाथ में थामे हुए कहा।

तानाबाय उसे पहचानने की कोशिश करने लगा। "मैंने इसे कहीं देखा है," वह सोचने लगा। उसका चेहरा जाना-पहचाना, किन्तु काफ़ी बदला हुआ लग रहा था। वह एक स्वस्थ युवक था, उसका रंग धूप से सांवला हो गया था, उसकी आंखों में आत्म-विश्वास की चमक थी। वह लिनेन का भूरे रंग का सूट और स्ट्रा-हैट पहने हुए था। "लगता है कोई शहरी आदमी है," तानाबाय ने सोचा।

"अरे, यह तो कामरेड..." इब्राइम कहने लगा कि तानाबाय ने उसे टोक दिया।

"ठहरो, ठहरो, मैं ख़ुद अभी बताता हूँ," तानाबाय मन ही मन मुस्कराया। "मैं तुम्हें पहचान गया, मेरे बेटे। भला क्यों न पहचानूंगा! सलाम! तुमसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई।"

यह केरीमबेकोव था। यह वही युवा कम्युनिस्ट लीग का सचिव था, जिसने ज़िला समिति के ब्यूरो की उस बैठक में पार्टी से निष्कासित किये जाते समय तानाबाय का निधड़क पक्ष लिया था।

"जब आपने मुझे पहचान ही लिया, तानाबाय, तो आइये आपसे कुछ बात करनी है। उधर नदी के किनारे चलते हैं।" फिर उसने इब्राइम से कहा, "तब तक आप यहाँ कुछ घास ही काटिये।"

इब्राइम जैसे इसके लिए तैयार ही खड़ा था। वह फ़ौरन कोट उतारकर बोला, "ज़रूर, बड़ी ख़ुशी से काटूंगा, कामरेड केरीमबेकोव।"

तानाबाय और केरीमबेकोव घास का मैदान पार कर नदी के किनारे जा बैठे।

"आप शायद समझ गये होंगे, तानाबाय, कि मैं आपके पास किस काम से आया हूँ," केरीमबेकोव ने बात छेड़ी। "आप तो वैसे ही तगड़े दिख रहे हैं और जब घास काट रहे हैं, तो इसका मतलब है कि आपका स्वास्थ्य अच्छा है। मुझे इसकी बहुत ख़ुशी है।"

"कहो, बेटा। मुझे भी तुम्हारी तरक़्क़ी देखकर बहुत ख़ुशी हुई।"

"मैं आपको थोड़े में सारी बात समझाये देता हूँ, तानाबाय। आप तो जानते ही हैं कि अब स्थिति में काफ़ी सुधार हो चुका है।"

"हां। तुम ठीक कहते हो। मुझे अपने सामूहिक फ़ार्म की हालत से ही इसका अन्दाज़ा हो रहा है। लगता है कि हालत अब पहले से बेहतर है। कभी-कभी तो मुझे विश्वास ही नहीं होता। कुछ दिन हुए मैं पांच पेड़ोंवाली घाटी में गया था, जहाँ उस साल मुझे चरवाहे की हैसियत से न जाने कितनी मुसीबतें उठानी पड़ी थीं। मुझे तो उन लोगों से डाह होने लगी। वहाँ एक नया शेड बना दिया गया है। उसमें कोई पांच सौ भेड़ें आसानी से रखी जा सकती हैं। चरवाहे के लिए घर भी बना दिया गया है। उसके पास ही एक ओसारा और अस्तबल भी हैं। अब वहाँ कायापलट हो गया। जाड़े के अन्य चरागाहों में भी ऐसा ही कर दिया गया है। गांव में भी लोगों के नये घर बन रहे हैं। मैं जब भी वहाँ जाता हूँ, मुझे एक न एक नया घर ज़रूर दिखाई देता है। ख़ुदा करे, ऐसा ही होता रहे।"

"हमें तो इस काम को जारी रखने की ही फ़िक्र रहती है, तानाबाय। अभी हमारे सामने काफ़ी समस्याएँ हैं। लेकिन कुछ समय बाद उन्हें भी सुलझा लेंगे। हां, तो मैं आपसे यही कहने आया था कि आप पार्टी में

वापस शामिल हो जायें। हम आपके मामले की दुबारा जांच करेंगे। ब्यूरो में आपके बारे में बात हुई थी। देर आयद दुरुस्त आयद।"

तानाबाय ने कुछ नहीं कहा। वह व्याकुल हो उठा। उसे खुशी भी हुई और दुःख भी। उसे सारी आप बीती याद हो आयी। अपमान का पुराना घाव फिर हरा हो गया। वह अतीत को छेड़ना नहीं चाहता था, उसके बारे सोचना तक नहीं चाहता था।

"तुम्हारा बहुत बहुत शुक्रिया कि तुमने मेरा इतना ख्याल रखा और मुझ बूढ़े आदमी को भूले नहीं," तानाबाय ने ज़िला समिति के सचिव से कहा। फिर कुछ सोचकर अपने दिल की बात कही, "मैं बुड्ढा हो गया हूँ। अब मैं पार्टी के क्या काम आ सकता हूँ? पार्टी को क्या फ़ायदा पहुँचा सकता हूँ? अब मैं किसी काम का नहीं रहा। मेरा वक्त तो गुज़र गया। तुम बुरा मत मानना। मुझे कुछ सोचने का वक़्त दो।"

तानाबाय बहुत दिनों तक फ़ैसला नहीं कर पाया। उसका काफ़ी समय आज-कल करते बीत गया। वह कुछ सुस्त भी हो गया था।

एक बार आखिर उसने जाने का फ़ैसला किया और घोड़े पर ज़ीन कसकर रवाना भी हो गया, पर आधे रास्ते से लौट आया। क्यों लौटा? वह समझता था कि वह अपनी बेवकूफ़ी के कारण लौट आया था। वह अपने आप को कोसने लगा, "बेवक़ूफ़ हूँ, बचपना कर रहा हूँ।" वह सब समझता था, लेकिन अपने आप पर क़ाबू नहीं कर पा रहा था।

उसने स्तेपी में क़दमबाज़ को धूल के गुबार उड़ाते देखा। वह गुलसारी को तुरन्त पहचान गया। उन दिनों वह उसे विरले ही देख पाता था। क़दमबाज़ ग्रीष्मकालीन सूखी स्तेपी में अपने पीछे सफ़ेद लीक छोड़ता दौड़ा जा रहा था। तानाबाय उसे दूर से देखकर उदास हो गया। पहले क़दमबाज़ की टापों से उड़ती धूल कभी उस तक नहीं पहुँच पाती थी। वह एक तेज़ उड़नेवाली काली चिड़िया की तरह अपने पीछे धूल की लम्बी लीक छोड़ता निकल जाता था। लेकिन अब वह अकसर धूल से ढक रहा था। वह ज़ोर लगाकर आगे निकलता, पर एक मिनट बाद ही फिर अपनी ही टापों से उड़ी धूल के गुबार से ढक जाता था। नहीं, वह अब उड़ती धूल से आगे नहीं निकल सकता था। इसका मतलब यही था कि वह बुड्ढा और कमज़ोर हो गया है। "तेरी हालत बहुत ख़राब हो गयी, गुलसारी," तानाबाय बहुत दुःखी होकर सोचने लगा।

वह समझ रहा था कि थल में घोड़े का दम कितनी बुरी तरह घुट रहा होगा और उसे दौड़ने में कितनी मुश्किल हो रही होगी और ऐसे में उसका सवार गुस्से में चाबुक बरसाये जा रहा था। उसकी आँखों के आगे क़दमबाज़ की घबरायी हुई आँख नाच उठीं। वह यह महसूस कर रहा था कि घोड़ा धूल के गुबार से निकलने के लिए पूरा ज़ोर लगा रहा है, पर निकल नहीं पा रहा है। हालांकि घुड़सवार तानाबाय से काफ़ी दूर था और उसकी आवाज़ नहीं सुन सकता था, फिर भी तानाबाय चिल्लाया, "ठहरो, घोड़े को ऐसे मत दौड़ाओ!" और उसे रोकने के लिए अपना घोड़ा भी सरपट दौड़ाने लगा।

लेकिन शीघ्र ही तानाबाय रुक गया। अगर वह आदमी उसकी बात समझ जाये, तो अच्छा होगा, और अगर नहीं समझा तो? और अगर वह उसे ऐसा जवाब दे:

"तुम्हें इससे क्या मतलब? तुम कौन होते हो मुझे सीख देनेवाले? मेरा जैसा मन करेगा, वैसे इसे दौड़ाऊँगा। दफ़ा हो जाओ, बेवक़ूफ़ बुड्ढे!"

इस बीच क़दमबाज़ कभी तेज़, तो कभी धीमी चाल से बीच बीच में धूल के ग़ुबार से ढकता और ज़ोर लगाकर फिर निकलता दूर होता जा रहा था। तानाबाय उसे काफ़ी देर तक जाते देखता रहा। फिर अपना घोड़ा मोड़कर पीछे चल दिया। "हम बहुत दौड़ लिये, गुलसारी," उसने मन ही मन कहा। "अब दोनों ही बुड्ढे हो गये हैं। अब किसको हमारी ज़रूरत रह गयी है? मैं भी अब दौड़-भाग नहीं कर सकता। अब तो हमें किसी तरह अपनी ज़िन्दगी के बाक़ी बचे दिन काटने हैं, गुलसारी..."

एक साल बाद तानाबाय ने क़दमबाज़ को एक गाड़ी में जुता देखा। उसे फिर बड़ा दुःख हुआ। घुड़दौड़ के घोड़े को बूढ़ा होने पर अब जीर्ण-शीर्ण साज़ में एक खटारा खींचना पड़ रहा था, यह देख उसका दिल बहुत दुखा। तानाबाय से यह देखा न गया, उसने उसकी तरफ़ पीठ कर ली।

इसके बाद तानाबाय ने क़दमबाज़ को एक बार फिर देखा। जांघिया और फटी बनियान पहने कोई सात साल का लड़का उस पर सवारी कर रहा था। वह अपने नंगे पैरों से घोड़े को एड़ लगा रहा था। वह ख़ुशी के मारे फूला नहीं समा रहा था, क्योंकि वह अकेला घोड़े पर सवारी

कर रहा था। शायद वह छोकरा पहली बार घोड़े पर सवारी कर रहा था, इसलिए उसे सबसे शांत और समझदार मरियल घोड़े पर बिठा दिया गया था।

किसी ज़माने के मशहूर क़दमबाज़ गुलसारी की अब यह हालत हो गयी थी।

"बाबा, ज़रा देखो तो मेरी तरफ़!" लड़के ने बूढ़े तानाबाय के सामने डींग मारी। मैं चपायेव हूँ! नदी पार करने जा रहा हूँ।"

"अच्छा, जाओ, मैं देख रहा हूँ!" तानाबाय ने उसका हौसला बढ़ाया।

लड़का बेधड़क लगाम फटकारता हुआ नदी पार करने लगा। लेकिन जब घोड़ा दूसरे किनारे पर चढ़ने लगा, तो लड़के का सन्तुलन बिगड़ गया और वह छपाक से पानी में गिर पड़ा।

"मां, मां!" वह डर के मारे चिल्ला पड़ा।

तानाबाय उसे पानी से निकालकर घोड़े के पास लाया। गुलसारी किनारे पर पैर बदलता हुआ शान्त खड़ा था। "घोड़े की हड्डियों में दर्द है, इसकी हालत बहुत ख़राब है," तानाबाय समझ गया। उसने लड़के को बूढ़े क़दमबाज़ पर बिठा दिया।

"जाओ, फिर मत गिरना।"

गुलसारी धीरे-धीरे आगे चल पड़ा।

इसके बाद क़दमबाज़ तानाबाय को मिला। उसने उसका इलाज कराया और जब घोड़ा बिलकुल ठीक हो गया, तो उसे आख़िरी बार अलेक्सांद्रोवका ले गया और अब वह रास्ते में मर रहा था।

तानाबाय पोते के जन्म के अवसर पर अपने बेटे व बहू से मिलने गया था। यह उनका दूसरा बालक था। वह उनके लिए एक भेड़, एक बोरी आलू, अनाज और जयदार की पकाई हुई कुछ खाने की चीजें लेकर आया था। जयदार बीमारी का बहाना करके वहाँ नहीं गयी। इसका कारण उसे बाद में समझ में आया। हालांकि वह किसी से नहीं कहती थी, लेकिन उसे अपनी पुत्र-वधू पसन्द नहीं थी। उनका बेटा वैसे ही ढीला-ढाला और दब्बैल था, तिस पर उसे बड़ी पत्थरदिल और रोब जमानेवाली बीवी मिल गयी थी। वह घर में उसे अपने अगूंठे के तले रखती थी। दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जिनके लिए केवल अपनी नाक ऊँची रखने और रोब जमाने के लिए किसी आदमी के दिल को चोट पहुंचाना, उसका अपमान करना कोई माने नहीं रखता।

इस बार भी यही हुआ। उसके बेटे की पदोन्नति होनी थी, लेकिन बाद में न जाने क्यों वह पद दूसरे आदमी को दे दिया गया। बस इसीलिए वह अपने बेक़सूर ससुर पर बरस पड़ी,

"आपको सारी ज़िन्दगी घोड़े और भेड़ें ही चरानी थीं, तो फिर पार्टी में क्यों शामिल हुए? आख़िर इसके बावजूद भी आपको निकाल ही दिया गया न? इसी वजह से अब आपके बेटे की तरक़्क़ी रुकी हुई है। अब वह सारी ज़िन्दगी एक ही पद पर नौकरी करता रहेगा। आप तो अपने पहाड़ों में रहते हैं, आप जैसे बूढ़ों को और चाहिए भी क्या, लेकिन यहाँ हमें आपकी वजह से परेशानी उठानी पड़ती है।"

उसने इस तरह की न जाने कितनी बातें कीं...

तानाबाय आकर पछता रहा था। उसने बहू को किसी तरह शांत करने के लिए हिचकिचाते हुए कहा,

"अगर यही बात है, तो मैं दुबारा पार्टी में शामिल हो जाऊँगा।"

"उन्हें आपकी बड़ी जरूरत है न। जैसे वे आपके इन्तज़ार में बैठे हैं। जैसे क्या उनका ऐसे बुड्ढे के बग़ैर काम नहीं चलेगा न?" उसने तुनककर जवाब दिया।

अगर वह उसके बेटे की पत्नी न होकर कोई और होती, तो भला तानाबाय उसे इस ढंग से बात करने दे सकता था? लेकिन रिश्तेदारों से बचकर, चाहे वे भले हों या बुरे, आदमी कहीं नहीं जा सकता। बूढ़े ने कोई जवाब नहीं दिया। वह उससे बहस नहीं करना चाहता था। उसने यह भी नहीं कहा कि उसके पति की तरक़्क़ी इसलिए नहीं हो रही है कि उसके पिता का कोई दोष है, बल्कि इसलिए कि वह ख़ुद निकम्मा है और उसे बीवी भी ऐसी मिली है, जिससे वास्ता पड़ने पर किसी भी भले आदमी को अपने सिर पर पैर रखकर भागना पड़ सकता है। बुज़ुर्गों ने ठीक ही कहा है कि अच्छी पत्नी अपने निकम्मे पति को औसत दर्जे का आदमी बना देती है, औसत दर्जे के आदमी को अच्छा और अच्छे आदमी का नाम सारी दुनिया में रोशन कर देती है। लेकिन अपने बेटे को उसकी पत्नी के सामने शर्मिन्दा करने की तानाबाय की इच्छा नहीं हुई। उसे दोषी ठहराते रहें, उसकी बला से!

तानाबाय इसीलिए वहाँ से जल्दी से जल्दी चला आया। उनके यहाँ उसका दम घुटने लगा था।

"तुम बेवकूफ़ हो, बेवक़ूफ़ ही रहोगी!" अब वह अलाव के पास बैठा बहू को गाली दे रहा था। "समझ में नहीं आता कि ऐसे लोग आते कहाँ से हैं? किसी आदमी की इज़्ज़त करना, किसी का भला करना जानते ही नहीं हैं। सिर्फ़ अपने ही भले की सोचते रहते हैं। हर किसी को खुद जैसा बदनीयत समझते हैं। लेकिन तुम्हारी नहीं चलेगी। पार्टी को अभी भी मेरी ज़रूरत है और आगे भी ज़रूरत रहेगी..."

पच्चीस

दिन निकल रहा था। पहाड़ आकाश की बुलन्दियों को छूते दिखाई देने लगे थे। चारों ओर फैली निस्सीम स्तेपी स्पष्ट दिखाई देने लगी थी। खड्ड के किनारे बुझे हुए अलाव के अंगारे अभी राख के नीचे सुलग रहे थे। उसके पास सफ़ेद बालोंवाला बूढ़ा आदमी कंधों के ऊपर पोस्तीन डाले खड़ा था। अब कदमबाज को ओढ़ाने की आवश्यकता नहीं रह गयी थी। गुलसारी अब परलोक सिधार चुका था, खुदा के घोड़ों के झुण्ड में शामिल हो चुका था...

तानाबाय को मरे हुए घोड़े को देखकर विश्वास नहीं हो रहा था कि यह उसका गुलसारी है। वह करवट लिये पड़ा था। उसका सिर आड़ा पड़ा था। उसके गालों पर लगाम से पड़े गहरे गड्ढे दिखाई दे रहे थे। उसके पैर तन गये थे, फटे हुए सुमों पर लगी नालें काफ़ी घिस चुकी थीं। अब वे फिर कभी ज़मीन पर नहीं पड़ेंगे, कभी अपने चिन्ह रास्ते में नहीं छोड़ेंगे। तानाबाय के जाने का समय हो गया था। उसने अन्तिम बार घोड़े पर झुककर उसकी ठण्डी पलकें बन्द कीं और लगाम उठाकर पीछे देखे बिना चल दिया।

वह स्तेपी पार करता हुआ पहाड़ों की ओर जा रहा था। अब भी वह अपने विचारों में मग्न था। वह सोच रहा था कि वह अब बुड्ढा हो चुका है और उसकी ज़िन्दगी के इने-गिने दिन बचे हैं। वह अपने तेज़ पंखोंवाले झुण्ड से बिछड़ी चिड़िया की तरह अकेला नहीं मरना चाहता था। वह उड़ते-उड़ते मरना चाहता था, ताकि वे, जिनके साथ वह एक घोंसले में बड़ा हुआ, जिनके साथ उसने एक ही रास्ता तय किया, उसके ऊपर मंडराते हुए उसे विदाई दें।

"मैं समंसूर को लिखूंगा," तानाबाय ने फ़ैसला किया। "साफ़-साफ़ लिखूँगा: तुम्हें क़दमबाज़ गुलसारी की याद होगी? ज़रूर होगी। मैं उस पर सवार होकर तुम्हारे पिता का पार्टी-कार्ड पार्टी की ज़िला समिति में देने गया था। मुझे तुम्हीं ने वहाँ भेजा था। कल रात अलेक्सांद्रोवका से लौटते समय मेरा क़दमबाज़ रास्ते में मर गया। मैं सारी रात घोड़े के पास बैठा रहा। इस दौरान मेरी सारी ज़िन्दगी मेरी आँखों के आगे घूम गयी। किसी भी क्षण मैं भी क़दमबाज़ गुलसारी की तरह रास्ते में गिरकर मर सकता हूँ। बेटे समंसूर, तुम्हें मुझे पार्टी में दुबारा शामिल होने में मदद देनी चाहिए। मुझे कुछ ही दिन जीना रह गया है। मैं जैसा पहले था, वैसा ही जाना चाहता हूँ। अब मेरी समझ में आया कि तुम्हारे पिता ने अपना पार्टी-कार्ड मेरे ही हाथों ज़िला समिति में भिजवाने का फ़ैसला क्यों किया था। तुम उसके बेटे हो और मुझ बूढ़े तानाबाय बकासोव को अच्छी तरह जानते हो..."

तानाबाय कंधे पर लगाम डाले स्तेपी पार कर रहा था। आंसू उसके गालों पर से ढुलककर उसकी दाढ़ी भिगो रहे थे। लेकिन वह उन्हें पोंछ नहीं रहा था। ये आंसू वह क़दमबाज़ गुलसारी के लिए बहा रहा था। वृद्ध आंसू बहाते बहाते नये दिन और तराई के ऊपर तेज़ी से उड़ते हुए एकाकी हंस को देख रहा था। हंस अपने झुण्ड में जा मिलने की जल्दी में था।

"जल्दी कर! तू थकने से पहले अपने साथियों के पास पहुँच जा," तानाबाय फुसफुसाया। फिर वह एक ठण्डी सांस लेकर बोला, "अलविदा, गुलसारी!"

वह चल रहा था और उसके कानों में एक प्राचीन गीत का संगीत गूंज रहा था।

...ऊंटनी कई दिनों से भटक रही है। अपने बच्चे को ढूँढ़ रही है, उसे आवाज़ दे रही है। "मेरे काली-काली आँखोंवाले बच्चे, तू कहाँ है? आवाज़ दे! दूध भरे थनों में से पैरों पर बह रहा है। तू कहाँ है? आवाज दे! दूध भरे थनों में से नीचे बह यहा है। मेरा सफ़ेद दूध...